पर्याप्त संख्या में
वस्तुनिष्ठ प्रश्न
सहित

बोर्ड द्वारा
कम किये गए
पाठ्यक्रम
पर आधारित

परीक्षा अध्ययन

2022

कक्षा X

हिन्दी

- नवीनतम् ब्लू प्रिण्ट पर आधारित चार सेट आदर्श प्रश्न-पत्र (हल सहित)
- म.प्र. बोर्ड द्वारा अंगीकृत एनसीईआरटी पुस्तकों पर आधारित महत्वपूर्ण प्रश्नों का परीक्षोपयोगी संग्रह

शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी

Scanned with CamScanner

परीक्षा अध्ययन 2022

कक्षा X

मुख्य आकर्षण

- सफलता एवं उच्चतम अंक प्राप्त करने का एक सरल साधन
- नवीन ब्लू प्रिण्ट पर आधारित आदर्श प्रश्न-पत्र के चार सेट हल सहित
- निर्धारित पाठ्यक्रम पर आधारित परीक्षोपयोगी प्रश्नों के स्पष्ट एवं सटीक उत्तर
- 2022 बोर्ड परीक्षा के लिए सर्वश्रेष्ठ पुस्तक

Amarwah unity Mr. hacker

हिन्दी

बोर्ड द्वारा कम किए गए पाठ्यक्रम पर आधारित

वरिष्ठ एवं अनुभवी शिक्षकों की समिति द्वारा रचित

कोविड परिस्थितियों के चलते बोर्ड द्वारा वार्षिक/बोर्ड परीक्षा 2022 के लिए कम किए गए पाठ्यक्रम की विषयवस्तु

क्र.सं.	पुस्तक का नाम	पाठ का नाम	लेखक/कवि का नाम
1.	क्षितिज भाग–2 (काव्य खंड)	पाठ–3 : पाँयनि नूपुर ..... , डार द्रुम पलना ..... , फटिक सिलानि	देव
2.	क्षितिज भाग–2 (काव्य खंड)	पाठ–6 : यह दंतुरित मुसकान, फसल	नागार्जुन
3.	क्षितिज भाग–2 (काव्य खंड)	पाठ–9 : संगतकार	मंगलेश डबराल
4.	क्षितिज भाग–2 (गद्य खंड)	पाठ–12 : लखनवी अंदाज़	यशपाल
5.	क्षितिज भाग–2 (गद्य खंड)	पाठ–16 : नौबतखाने में इबादत	यतीन्द्र मिश्र
6.	कृतिका भाग–2	पाठ–3 : साना–साना हाथ जोड़ि	मधु कांकरिया
7.	कृतिका भाग–2	पाठ–4 : एही ठैयाँ झुलनी हेरानी हो रामा!	शिवप्रसाद मिश्र

शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी

पुस्तक प्रकाशक, खजूरी बाजार, इन्दौर

[मूल्य : ₹ 60·00]

2022 बोर्ड परीक्षा हेतु मान्य नवीन ब्लू प्रिण्ट

हिन्दी : कक्षा X

समय : 3 घण्टा] [पूर्णांक : 80

क्र.	इकाई एवं विषय-वस्तु	इकाई पर आबंटित अंक	वस्तुनिष्ठ प्रश्न	अंकवार प्रश्नों की संख्या			कुल
			1 अंक	2 अंक	3 अंक	4 अंक	
1	**क्षितिज भाग–2** **काव्य खण्ड**—पद्य साहित्य का इतिहास, भक्ति काल, आधुनिक काल—छायावाद, प्रयोगवाद, नई कविता, कवि परिचय, भावार्थ, सौन्दर्य बोध तथा भाव एवं विषय-वस्तु पर आधारित प्रश्न	17	07	03	–	01	04
2	**काव्य बोध—** काव्य की परिभाषा एवं भेद, रस की परिभाषा व प्रकार उदाहरण सहित, छंद—मात्रिक छंद में दोहा, चौपाई, अलंकार—अनुप्रास, रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा, मानवीकरण, पुनरुक्तिप्रकाश	14	07	02	01	–	03
3	**क्षितिज भाग–2** **गद्य खण्ड**—गद्य की विधाओं का परिचय, लेखक परिचय, व्याख्या, विषय-वस्तु एवं विचार बोधर पर आधारित प्रश्न	16	06	03	–	01	04
4	**भाषा बोध—** निपात शब्द, वाच्य, क्रिया के भेद व क्रिया-विशेषण, समुच्चय बोधक, मुहावरे व लोकोक्ति, अनेकार्थी शब्द, समास, विज्ञापन लेखन, सूचना लेखन	11	06	01	01	–	02
5	**कृतिका भाग–2** पूरक पाठ्य पुस्तक से विविध पाठों पर आधारित प्रश्न, आंचलिक भाषा के पाठों में से प्रश्न	08	06	01	–	–	01
6	**अपठित बोध—** अपठित काव्यांश/अपठित गद्यांश	03	–	–	01	–	01
7	**पत्र लेखन—** औपचारिक पत्र/अनौपचारिक पत्र	04	–	–	–	01	01
8	**निबंध लेखन** किसी एक विषय पर, किसी एक शीर्षक पर अनुच्छेद लेखन व संवाद लेखन	07	–	–	01	01	02
	कुल योग	**80**	**5(32)**	**10**	**4**	**4**	**18+5 = 23**

निर्देश—

1. प्रश्न क्रमांक 1 से 5 तक 32 वस्तुनिष्ठ प्रश्न होंगे। *सही विकल्प* 06 अंक, *रिक्त स्थान* 07 अंक, *सही जोड़ी* 06 अंक, *एक वाक्य में उत्तर* 07 अंक, *सत्य/असत्य* 06 अंक, संबंधी प्रश्न होंगे। प्रत्येक प्रश्न पर 01 अंक निर्धारित है। वस्तुनिष्ठ प्रश्नों को छोड़कर सभी प्रश्नों में आंतरिक विकल्प का प्रावधान होगा। यह विकल्प समान इकाई/उप-इकाई से तथा समान कठिनाई स्तर वाले होंगे। इन प्रश्नों की उत्तर सीमा निम्नानुसार होगी—

अति लघु उत्तरीय प्रश्न	02 अंक	—	लगभग 30 शब्द
लघु उत्तरीय प्रश्न	03 अंक	—	लगभग 75 शब्द
विश्लेषणात्मक प्रश्न	04 अंक	—	लगभग 120 शब्द

2. 40 प्रतिशत *वस्तुनिष्ठ प्रश्न*, 40 प्रतिशत *पाठ्यवस्तु पर आधारित प्रश्न*, 20 प्रतिशत *विश्लेषणात्मक प्रश्न* होगें।

Scanned with CamScanner

विषय-सूची

अध्याय		पृष्ठ संख्या
❑	आदर्श प्रश्न-पत्र, सेट–I (हल सहित) : 2022	5
❑	आदर्श प्रश्न-पत्र, सेट–II (हल सहित) : 2022	9
❑	आदर्श प्रश्न-पत्र, सेट–III (हल सहित) : 2022	14
❑	आदर्श प्रश्न-पत्र, सेट–IV (हल सहित) : 2022	19
1.	हिन्दी पद्य साहित्य का इतिहास	25
2.	काव्य खण्ड : परीक्षोपयोगी पद्यांशों का संदर्भ, प्रसंग एवं भावार्थ	31
3.	काव्य खण्ड पर आधारित महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर	39
4.	कवियों का साहित्यिक परिचय	50
5.	गद्य की विधाओं का परिचय	57
6.	गद्य खण्ड : परीक्षोपयोगी गद्यांशों की संदर्भ, प्रसंग सहित व्याख्याएँ	63
7.	गद्य खण्ड पर आधारित महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर	71
8.	लेखकों का साहित्यिक परिचय	83
9.	पूरक पाठ्य-पुस्तक : कृतिका-2	88
10.	भाषा बोध	95
11.	काव्य बोध	118
12.	अपठित बोध	127
13.	पत्र-लेखन	132
14.	संवाद लेखन	137
15.	अनुच्छेद लेखन	142
16.	निबन्ध लेखन	145

Scanned with CamScanner

हिन्दी : कक्षा X

आदर्श प्रश्न-पत्र : सेट–I

समय : 3 घण्टे] [पूर्णांक : 80

निर्देश : (1) प्रश्न 1 से 5 तक वस्तुनिष्ठ प्रश्न हैं। प्रत्येक उप प्रश्न के लिए 1 अंक निर्धारित हैं।

(2) प्रश्न 6 से 15 तक अति लघु उत्तरीय प्रश्न हैं। प्रत्येक के लिए 2 अंक निर्धारित हैं। उत्तर लगभग 30 शब्द।

(3) प्रश्न 16 से 19 तक लघु उत्तरीय प्रश्न हैं। प्रत्येक के लिए 3 अंक निर्धारित हैं। उत्तर लगभग 75 शब्द।

(4) प्रश्न 20 से 23 तक विश्लेषणात्मक प्रश्न हैं। प्रत्येक के लिए 4 अंक निर्धारित हैं। उत्तर लगभग 120 शब्द।

प्रश्न 1. सही विकल्प चुनकर लिखिए– 1 × 6 = 6

Amarwah unity

(i) उद्धव ने गोपियों को क्या संदेश दिया ?

(क) योग साधना का, (ख) प्रेम का,

(ग) भक्ति का, (घ) कर्म का।

(ii) शृंगार रस का स्थायी भाव क्या है ?

(क) हास, (ख) रति,

(ग) निर्वेद, (घ) विस्मय।

(iii) कस्बे के चौराहे पर किसकी प्रतिमा लगी थी ?

(क) महात्मा गाँधी की, (ख) सुभाषचन्द्र बोस की,

(ग) सरदार पटेल की, (घ) लाल बहादुर शास्त्री की।

(iv) बालगोबिन भगत 'साहब' किसे कहते थे ?

(क) तुलसी को, (ख) सूरदास को,

(ग) कबीर को, (घ) गुरुनानक को।

(v) 'मुँह की खाना' का क्या अर्थ है ?

(क) भोजन करना, (ख) स्वागत करना,

(ग) चुगली करना, (घ) पराजित होना।

(vi) भोलानाथ का वास्तविक नाम क्या था ?

(क) तारकेश्वर नाथ, (ख) दामोदर प्रसाद,

(ग) राजेश कुमार, (घ) शिव कुमार।

उत्तर–(i) (क), (ii) (ख), (iii) (ख), (iv) (ग), (v) (घ), (vi) (क)।

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए– 1 × 7 = 7

(i) श्रीकृष्ण ..... पढ़ आए हैं।

(ii) ..... कैसे गाऊँ मधुर चाँदनी रातों की।

(iii) महाकाव्य में जीवन का ..... चित्रण होता है।

(iv) शृंगार रस का स्थायी भाव ..... है।

(v) 'नेताजी का चश्मा' गद्य की ..... विधा की रचना है।

(vi) कर्मवाच्य में क्रिया ..... के अनुसार होती है।

(vii) जॉर्ज पंचम की मूर्ति पर ..... नहीं थी।

उत्तर–(i) राजनीति, (ii) उज्ज्वल गाथा, (iii) समग्र, (iv) रति, (v) कहानी, (vi) कर्त्ता, (vii) नाक।

प्रश्न 3. सही जोड़ी बनाइए— $1 \times 6 = 6$

'अ'	'ब'
(i) गिरिजाकुमार माथुर	(क) उत्साह स्थायी भाव
(ii) वीर रस	(ख) नई कविता के कवि
(iii) स्त्री शिक्षा से	(ग) द्वन्द्व समास
(iv) माता-पिता	(घ) देश का गौरव बढ़ेगा
(v) आटे की गोलियाँ	(ङ) रेलगाड़ी में लिखी गई
(vi) 'हिरोशिमा' कविता	(च) मछलियों के लिए

उत्तर—(i) → (ख), (ii) → (क), (iii) → (घ), (iv) → (ग), (v) → (च), (vi) → (ङ)।

प्रश्न 4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक शब्द या एक वाक्य में लिखिए— $1 \times 7 = 7$

(i) गोपियाँ किसे प्रेम करती हैं ?
(ii) 'साहित्य लहरी' किसकी रचना है।
(iii) रसों की संख्या कितनी मानी गई है ?
(iv) भारत किस वर्ष में स्वतंत्र हुआ था ?
(v) जिन शब्दों से करने या होने का बोध होता है, वे क्या कहे जाते हैं ?
(vi) 'यथाशक्ति' में कौन-सा समास है ?
(vii) 'माता का अँचल' में कहाँ की संस्कृति का अंकन हुआ है ?

उत्तर—(i) श्रीकृष्ण को, (ii) सूरदास की, (iii) नौ, (iv) सन् 1947 में, (v) क्रिया, (vi) अव्ययी भाव (vii) देहाती संस्कृति।

प्रश्न 5. निम्नलिखित वाक्यों में सत्य/असत्य लिखिए— $1 \times 6 = 6$

(i) श्रीकृष्ण ने गोपियों के पास उद्धव को भेजा था।
(ii) अस्थिर मनोविकार स्थायी भाव कहलाते हैं।
(iii) वीर रस का स्थायी भाव क्रोध होता है।
(iv) बालगोबिन भगत गृहस्थ नहीं थे।
(v) जिस क्रिया का प्रभाव कर्म पर पड़ता है, वह सकर्मक क्रिया होती है।
(vi) मूर्तिकार को पहाड़ों पर नाक का पत्थर मिल गया था।

उत्तर—(i) सत्य, (ii) असत्य, (iii) असत्य, (iv) असत्य, (v) सत्य, (vi) असत्य।

प्रश्न 6. गोपियों द्वारा उद्धव को भाग्यवान कहने में क्या व्यंग निहित है ? 2

उत्तर—पृष्ठ 39 पर, प्रश्न संख्या 1 देखिए।

अथवा

कवि की आँख फाल्गुन की सुन्दरता से क्यों नहीं हट रही है ?

उत्तर—पृष्ठ 44 पर, प्रश्न संख्या 2 देखिए।

प्रश्न 7. भक्तिकाल को हिन्दी साहित्य का स्वर्णयुग क्यों कहते हैं ? 2

उत्तर—पृष्ठ 26 पर, प्रश्न संख्या 6 देखिए।

अथवा

नई कविता की दो विशेषताएँ लिखते हुए दो कवियों के नाम लिखिए।

उत्तर—पृष्ठ 29 पर, प्रश्न संख्या 25 देखिए।

प्रश्न 8. गिरिजाकुमार माथुर *अथवा* सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' में से किसी एक की दो रचनाओं के नाम लिखिए। 2

उत्तर—पृष्ठ 53 पर, *अथवा* पृष्ठ 52 पर देखिए।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 9. महाकाव्य किसे कहते हैं ? दो महाकाव्यों के नाम लिखिए। **2**

उत्तर–पृष्ठ 119 पर, प्रश्न संख्या 4 देखिए।

अथवा

वीर रस की परिभाषा लिखते हुए एक उदाहरण दीजिए।

उत्तर–पृष्ठ 121 पर, प्रश्न संख्या 7 देखिए।

प्रश्न 10. दोहा छंद की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए। **2**

उत्तर–पृष्ठ 122 पर, प्रश्न संख्या 2 देखिए।

अथवा

अनुप्रास अलंकार की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।

उत्तर–पृष्ठ 123 पर, प्रश्न संख्या 2 देखिए।

प्रश्न 11. "भई खूब क्या आइडिया है।" इस वाक्य को ध्यान में रखते हुए बताइए कि एक भाषा में दूसरी भाषा के शब्दों के आने से क्या लाभ होते हैं ? **2**

उत्तर–पृष्ठ 72 पर, प्रश्न संख्या 7 देखिए।

अथवा

लेखक ने फादर बुल्के को 'मानवीय करुणा की दिव्य चमक' क्यों कहा है ?

उत्तर–पृष्ठ 75 पर, प्रश्न संख्या 4 देखिए।

प्रश्न 12. निबन्ध शब्द का अर्थ बताते हुए बाबू गुलाबराय के अनुसार निबंध की परिभाषा लिखिए। **2**

उत्तर–पृष्ठ 58 पर, प्रश्न संख्या 3 देखिए।

अथवा

नाटक और एकांकी में कोई दो अंतर लिखिए।

उत्तर–पृष्ठ 59 पर, प्रश्न संख्या 9 देखिए।

प्रश्न 13. निम्नलिखित में से किसी एक गद्यांश की व्याख्या, संदर्भ-प्रसंग सहित कीजिए– **2**

बार-बार सोचते, क्या होगा उस कौम का जो अपने देश की खातिर घर-गृहस्थी-जवानी-जिन्दगी सब कुछ होम देने वालों पर भी हँसती है और अपने लिए बिकने के मौके ढूँढ़ती है। दुःखी हो गए।

उत्तर–पृष्ठ 64 पर, व्याख्या संख्या 3 देखिए।

अथवा

फादर को याद करना एक उदास शांत संगीत को सुनने जैसा है। उनको देखना करुणा के निर्मल जल में स्नान करने जैसा था और उनसे बात करना कर्म के संकल्प से भरना था।

उत्तर–पृष्ठ 66 पर, व्याख्या संख्या 2 देखिए।

प्रश्न 14. क्रिया किसे कहते हैं ? उदाहरण सहित बताइए। **2**

उत्तर–पृष्ठ 98 पर, प्रश्न संख्या 3 देखिए।

अथवा

समुच्चयबोधक किसे कहते हैं ? उदाहरण सहित समझाइए।

उत्तर–पृष्ठ 100 पर, प्रश्न संख्या 1 देखिए।

प्रश्न 15. आपके विचार से भोलानाथ अपने साथियों को देखकर सिसकना क्यों भूल जाता है ? **2**

उत्तर–पृष्ठ 88 पर, प्रश्न संख्या 2 देखिए।

अथवा

नाक मान-सम्मान और प्रतिष्ठा का द्योतक है। यह बात पूरी व्यंग्य रचना में किस तरह उभरकर आई है ?

उत्तर–पृष्ठ 90 पर, प्रश्न संख्या 4 देखिए।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 16. महाकाव्य और खण्डकाव्य में अंतर स्पष्ट कीजिए। 3

उत्तर—पृष्ठ 119 पर, प्रश्न संख्या 6 देखिए।

अथवा

रस के अंगों के नाम लिखिए।

उत्तर—पृष्ठ 120 पर, प्रश्न संख्या 2 देखिए।

प्रश्न 17. निम्नलिखित के समास-विग्रह कीजिए तथा समास का नाम बताइए— 3

महानगर, लाभ-हानि, जलराशि।

उत्तर—पृष्ठ 110 पर, प्रश्न संख्या 3 देखिए।

अथवा

निम्नलिखित में निर्देशानुसार वाच्य बदलिए—

1. शिवचरण से पाठ पढ़ा जाएगा। **(कर्तृ वाच्य)**

2. मोहन खूब सोया। **(भाव वाच्य)**

3. शिक्षक ने हिन्दी की परीक्षा ली। **(कर्म वाच्य)**

उत्तर—पृष्ठ 97 पर, प्रश्न संख्या 6 देखिए।

प्रश्न 18. निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए— 3

मानव का अकारण ही मानव के प्रति अनुदार हो उठना न केवल मानवता के लिए लज्जाजनक है वरन् अनुचित है। वस्तुत: यथार्थ मनुष्य वही है जो मानवता का आदर करना जानता है, कर सकता है। केवल इसलिए कि कोई मनुष्य बुद्धिमान है अथवा दरिद्र, वह घृणा का तो दूर उपेक्षा का भी पात्र नहीं होना चाहिए। मानव तो इसलिए सम्मान के योग्य है कि वह मानव है, भगवान की सर्वश्रेष्ठ रचना है।

प्रश्न—(i) उपर्युक्त गद्यांश का सटीक शीर्षक दीजिए।

(ii) यथार्थ मनुष्य किसे कहा गया है ?

(iii) उक्त गद्यखण्ड का सारांश लिखिए।

उत्तर—पृष्ठ 127 पर, अपठित संख्या 1 देखिए।

प्रश्न 19. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर संवाद लिखिए— 3

(i) कम्प्यूटर का आविष्कार,

(ii) आतंकवाद,

(iii) स्वतन्त्रता दिवस।

उत्तर—पृष्ठ 137, 138 एवं 140 पर देखिए।

अथवा

निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर अनुच्छेद लिखिए—

(i) मूल्य वृद्धि,

(ii) बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ,

(iii) पुस्तकालय।

उत्तर—पृष्ठ 143 पर देखिए।

प्रश्न 20. निम्नलिखित में से किसी एक पद्यांश का भावार्थ लिखिए तथा काव्य सौन्दर्य बताइए— 4

नाथ संभुधनु भंजनिहारा। होइहि कोउ एक दास तुम्हारा॥
आयेसु काह कहिऊ किन मोही। सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही॥
सेवक सो जो करै सेवकाई। अरि करनी करि करिअ लराई॥
सुबहु राम जेहि सिवधनु तोरा। सहसबाहु सम सो रिपु मोरा॥

Scanned with CamScanner

सो बिलगाई बिहाइ समाजा। न त मारे जैहहि सब राजा॥
सुनि मुनि वचन लखन मुसकाने। बोले परसु धरहिं अवमाने॥
बहु धनुही तोरी लरिकाई। कबहु न असि रिस कीन्हि गोसाई॥
येहि धनु पर ममता केहि हेतू। सुनि रिसाइ कह भृगुकुल केतू॥
रे नृप बालक कालबस बोलत तोहि न सँभार।
धनुही सम त्रिपुरारि धनु विदित सकल संसार॥

अथवा

उज्ज्वल गाथा कैसे गाऊँ, मधुर चाँदनी रातों की।
अरे खिल-खिला कर हँसते होने वाली उन बातों की।
मिला कहाँ वह सुख जिसका मैं स्वप्न देखकर जाग गया।
आलिंगन में आते-आते मुसक्या कर जो भाग गया।

उत्तर–पृष्ठ 32 पर भावार्थ संख्या 1 *अथवा* पृष्ठ 35 पर भावार्थ संख्या 2 देखिए।

प्रश्न 21. महावीरप्रसाद द्विवेदी *अथवा* रामवृक्ष बेनीपुरी में से किसी एक का साहित्यिक परिचय निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर लिखिए– **4**

(i) दो रचनाएँ, (ii) भाषा-शैली, (iii) साहित्य में स्थान।

उत्तर–पृष्ठ 85 पर अथवा पृष्ठ 83 पर देखिए।

प्रश्न 22. परीक्षा की तैयारी की जानकारी देते हुए अपने पिताजी को पत्र लिखिए। **4**

उत्तर–पृष्ठ 132 पर, प्रश्न संख्या 1 देखिए।

अथवा

अपने विद्यालय के प्राचार्य को शुल्क मुक्ति के लिए आवेदन पत्र लिखिए।

उत्तर–पृष्ठ 134 पर, प्रश्न संख्या 1 देखिए।

प्रश्न 23. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर संक्षिप्त किन्तु सारगर्भित निबंध लिखिए– 4

(i) विद्यार्थी और अनुशासन,
(ii) विज्ञान : वरदान या अभिशाप,
(iii) वृक्षारोपण,
(iv) जीवन में खेलों का महत्व,
(v) नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति।

उत्तर–पृष्ठ 145, 146, 148, 149 एवं 156 पर देखिए।

आदर्श प्रश्न-पत्र : सेट–II

प्रश्न 1. सही विकल्प चुनकर लिखिए– **1 × 6 = 6**

(i) 'आत्मकथ्य' के कवि हैं–
(क) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', (ख) जयशंकर प्रसाद,
(ग) गिरिजाकुमार माथुर, (घ) ऋतुराज।

(ii) 'रसात्मकं वाक्यं काव्यं' परिभाषा किसकी है ?
(क) भामह की, (ख) दंडी की,
(ग) विश्वनाथ की, (घ) पंडितराज जगन्नाथ की।

(iii) एकांकी में कितने अंक होते हैं ?
(क) एक, (ख) दो,
(ग) तीन, (घ) चार।

Scanned with CamScanner

(iv) फादर कामिल बुल्के भारत की राष्ट्रभाषा किसे चाहते थे ?
(क) अंग्रेजी को, (ख) संस्कृत को,
(ग) उर्दू को, (घ) हिन्दी को।

(v) एक से अधिक अर्थ व्यक्त करने वाले शब्द क्या कहलाते हैं ?
(क) अनेकार्थी शब्द, (ख) एकार्थी शब्द,
(ग) विलोम शब्द, (घ) विपरीतार्थक शब्द।

(vi) नाक किसकी प्रतीक मानी जाती है ?
(क) धनवान होने की, (ख) मान, सम्मान की,
(ग) शक्तिशाली होने की, (घ) नेतागीरी की।

उत्तर—(i) (ख), (ii) (ग), (iii) (क), (iv) (घ), (v) (क), (vi) (ख)।

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए— 1 × 7 = 7

(i) राम ने ..... भंग करके सीता से विवाह किया।
(ii) वस्त्र-आभूषण स्त्री जीवन के ..... हैं।
(iii) 'चरण सरोज पखारन लागा' ..... अलंकार का उदाहरण है।
(iv) दोहा छंद में कुल ..... मात्राएँ होती हैं।
(v) बालगोबिन भगत ..... के पद गाया करते थे।
(vi) 'टेढ़ी खीर' मुहावरे का अर्थ ..... है।
(vii) साँप को देखते ही ..... गिरते पड़ते, रोते-चिल्लाते भाग चले।

उत्तर—(i) शिव धनुष, (ii) बंधन, (iii) रूपक, (iv) चौबीस, (v) कबीर, (vi) कठिन कार्य, (vii) बच्चे।

प्रश्न 3. सही जोड़ी बनाइए— 1 × 6 = 6

'अ'	'ब'
(i) उद्धव	(क) महाकाव्य
(ii) कामायनी	(ख) योग का संदेश
(iii) महाभोज	(ग) निपात शब्द
(iv) मात्र, भी, ही	(घ) मन्नू भंडारी
(v) रामजी की चिरई	(ङ) अज्ञेय
(vi) हिरोशिमा	(च) राम जी का खेत

उत्तर—(i) → (ख), (ii) → (क), (iii) → (घ), (iv) → (ग), (v) → (च), (vi) → (ङ)।

प्रश्न 4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक शब्द या एक वाक्य में लिखिए— 1 × 7 = 7

(i) सीता स्वयंवर में राम-लक्ष्मण किसके साथ गए थे ?
(ii) भक्तिकालीन काव्य का प्रधान विषय कौन-सा है ?
(iii) करुण रस का स्थायी भाव क्या है ?
(iv) फादर कामिल बुल्के का निधन किस बीमारी से हुआ था ?
(v) समास के कितने प्रकार होते हैं ?
(vi) एक से अधिक अर्थ देने वाले शब्द क्या कहलाते हैं ?
(vii) अज्ञेय ने जापान में हुआ विस्फोट पर कौन-सी कविता लिखी है ?

उत्तर—(i) विश्वामित्र के साथ, (ii) भक्ति भावना, (iii) शोक, (iv) जहरबाद से, (v) छः, (vi) अनेकार्थी शब्द, (vii) हिरोशिमा।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 5. निम्नलिखित वाक्यों में सत्य/असत्य लिखिए– **1 × 6 = 6**

(i) परशुराम के क्रोध को देखकर लक्ष्मण डर गए।

(ii) प्रबंध काव्य में पूर्वापर सम्बन्ध होता है।

(iii) शृंगार रस का स्थायी भाव हास है।

(iv) मानव संस्कृति अविभाज्य है।

(v) सप्तऋषि में कर्मधारय समास है।

(vi) भोलानाथ पिताजी के साथ ज्यादा रहता था।

उत्तर–(i) असत्य, (ii) सत्य, (iii) असत्य, (iv) सत्य, (v) असत्य, (vi) सत्य।

प्रश्न 6. परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष टूट जाने के लिए कौन-कौन से तर्क दिए ? **2**

उत्तर–पृष्ठ 40 पर, प्रश्न संख्या 1 देखिए।

अथवा

कवि ने कठिन यथार्थ के पूजन की बात क्यों कही है ?

उत्तर–पृष्ठ 45 पर, प्रश्न संख्या 1 देखिए।

प्रश्न 7. रामभक्ति शाखा की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए। **2**

उत्तर–पृष्ठ 26 पर, प्रश्न संख्या 11 देखिए।

अथवा

प्रयोगवादी काव्य की विशेषताएँ संक्षेप में बताइए।

उत्तर–पृष्ठ 28 पर, प्रश्न संख्या 23 देखिए।

प्रश्न 8. तुलसीदास *अथवा* जयशंकर प्रसाद की दो-दो रचनाओं के नाम लिखिए। **2**

उत्तर–पृष्ठ 50 पर, *अथवा* पृष्ठ 51 पर देखिए।

प्रश्न 9. खण्डकाव्य की परिभाषा एवं एक खण्डकाव्य का नाम लिखिए। **2**

उत्तर–पृष्ठ 119 पर, प्रश्न संख्या 5 देखिए।

अथवा

शांत रस की परिभाषा लिखते हुए एक उदारण दीजिए।

उत्तर–पृष्ठ 122 पर, प्रश्न संख्या 12 देखिए।

प्रश्न 10. चौपाई छंद की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए। **2**

उत्तर–पृष्ठ 123 पर, प्रश्न संख्या 3 देखिए।

अथवा

उत्प्रेक्षा अलंकार की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।

उत्तर–पृष्ठ 124 पर, प्रश्न संख्या 5 देखिए।

प्रश्न 11. भगत ने अपने बेटे की मृत्यु पर अपनी भावनाएँ किस तरह व्यक्त कीं ? **2**

उत्तर–पृष्ठ 73 पर, प्रश्न संख्या 3 देखिए।

अथवा

पाठ में आए उन प्रसंगों का उल्लेख कीजिए, जिनमें फादर बुल्के का हिन्दी प्रेम प्रकट होता है।

उत्तर–पृष्ठ 75 पर, प्रश्न संख्या 3 देखिए।

प्रश्न 12. कहानी में कौन-कौन से तत्व होते हैं ? **2**

उत्तर–पृष्ठ 60 पर, प्रश्न संख्या 14 देखिए।

अथवा

जीवनी और आत्मकथा में कोई दो अन्तर बताइए।

उत्तर–पृष्ठ 60 पर, प्रश्न संख्या 21 देखिए।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 13. निम्नलिखित गद्यांशों में से किसी एक की संदर्भ, प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए— 2

बालगोबिन भगत गाए जा रहे हैं। हाँ, गाते-गाते कभी-कभी पतोहू के नजदीक भी जाते और उसे रोने के बदले उत्सव मनाने को कहते। आत्मा-परमात्मा के पास चली गई, विरहिणी अपने प्रेमी से जा मिली, भला इससे बढ़कर आनंद की कौन बात ? मैं, कभी-कभी सोचता यह पागल तो नहीं हो गए। किन्तु नहीं, वह जो कुछ कह रहे थे उसमें उनका विश्वास बोल रहा था—वह चरम विश्वास जो हमेशा ही मृत्यु पर विजयी होता आया है।

उत्तर—पृष्ठ 65 पर, व्याख्या संख्या 3 देखिए।

अथवा

केवल बाहरी भिन्नता के आधार पर अपनी परम्परा और पीढ़ियों को नकारने वालों को क्या सचमुच इस बात का बिल्कुल अहसास नहीं होता कि उनका आसन्न अतीत किस कदर उनके भीतर जड़ जमाए बैठा रहता है। समय का प्रवाह भले ही हमें दूसरी दिशाओं में बहाकर ले जाए ..... स्थितियों का दबाव भले ही हमारा रूप बदल दे, हमें पूरी तरह उससे मुक्त तो नहीं ही कर सकता।

उत्तर—पृष्ठ 67 पर, व्याख्या संख्या 2 देखिए।

प्रश्न 14. निपात शब्द किसे कहते हैं ? स्पष्ट कीजिए। 2

उत्तर—पृष्ठ 95 पर, प्रश्न संख्या 1 देखिए।

अथवा

निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ बताते हुए वाक्य प्रयोग कीजिए—

अन्धे की लाठी, दाँत खट्टे करना।

उत्तर—पृष्ठ 105 पर, प्रश्न संख्या 1 देखिए।

प्रश्न 15. जॉर्ज पंचम की लाट की नाक को पुनः लगाने के लिए मूर्तिकार ने क्या-क्या यत्न किए ? 2

उत्तर—पृष्ठ 90 पर, प्रश्न संख्या 3 देखिए।

अथवा

एक संवेदनशील युवा नागरिक की हैसियत से विज्ञान का दुरुपयोग रोकने में आपकी क्या भूमिका है ?

उत्तर—पृष्ठ 92 पर, प्रश्न संख्या 6 देखिए।

प्रश्न 16. पाठ्य-मुक्तक और गेय मुक्तक में कोई तीन अंतर लिखिए। 3

उत्तर—पृष्ठ 119 पर, प्रश्न संख्या 8 देखिए।

अथवा

रस किसे कहते हैं ? इसकी परिभाषा लिखिए तथा बताइए कि रस की निष्पत्ति कैसे होती है ?

उत्तर—पृष्ठ 119 पर, प्रश्न संख्या 1 देखिए।

प्रश्न 17. निम्नलिखित वाक्यों में समुच्चयबोधक छाँटिए— 3

(i) तुम सो जाओ ताकि मैं चला जाऊँ।

(ii) राजीव खाना खा ले तो लेट लेगा।

(iii) तुम उसका सहयोग करो जिससे वह पास हो जाए।

उत्तर—पृष्ठ 101 पर, प्रश्न संख्या 8 देखिए।

अथवा

भी, ही तथा भर निपात शब्दों का प्रयोग करते हुए वाक्य बनाइए।

उत्तर—पृष्ठ 95 पर, प्रश्न संख्या 4 देखिए।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 18. निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए– 3

मनुष्य का जीवन बहुत संघर्षमय होता है। उसे पग-पग पर कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। फिर भी ईश्वर के द्वारा जो मनुष्य रूपी वरदान की निर्मिति इस पृथ्वी पर हुई है मानो धरती का रूप ही बदल गया है। यह संसार कर्म करने वाले मनुष्यों के आधार पर ही टिका हुआ है। देवता भी उनसे ईर्ष्या करते हैं। मनुष्य अपने कर्म बल के कारण श्रेष्ठ है। धन्य है मनुष्य का जीवन।

प्रश्न–(i) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।

(ii) उपर्युक्त गद्यांश का सारांश लिखिए।

(iii) मनुष्य किस कारण श्रेष्ठ माना गया है ?

उत्तर–पृष्ठ 129 पर, अपठित संख्या 7 देखिए।

प्रश्न 19. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर संवाद लिखिए– 3

(i) कम्प्यूटर का उपयोग,

(ii) दीपावली,

(iii) कोरोना वाइरस।

उत्तर–पृष्ठ 138, 140 एवं 141 पर देखिए।

अथवा

निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर अनुच्छेद लिखिए–

(i) स्वच्छ भारत अभियान,

(ii) परोपकार,

(iii) बेरोजगारी समस्या।

उत्तर–पृष्ठ 144 पर देखिए।

प्रश्न 20. निम्नलिखित में से किसी एक पद्यांश का भावार्थ लिखिए तथा उसका काव्य सौन्दर्य बताइए– 4

हमारैं हरि हारिल की लकरी।
मन क्रम वचन नंद-नंदन उर, यह दृढ़ करि पकरी।
जागत सोवत स्वप्न दिवस-निसि कान्ह-कान्ह जक री।
सुनत जोग लागत है ऐसौ, ज्यौं करुई ककरी।
सुतौ ब्याधि हमकौं लौ आए, देखी सुनी न करी।
यह तौ 'सूर' तिनाहिं लै सौंपौ, जिनके मन चकरी॥

अथवा

कहेउ लखन मुनि सीलु तुम्हारा। को नहिं जान बिदित संसारा॥
माता पितहि उरिन भए नीकें। गुररिनु रहा सोचु बड़ जी कें॥
सो जनु हमरेहि माथे काढ़ा। दिन चलि गये ब्याज बड़ बाढ़ा॥
अब आनिअ ब्यवहरिआ बोली। तुरत देउँ मैं थैली खोली॥
सुनि कटु वचन कुठार सुधारा। हाय हाय सब सभा पुकारा॥
भृगुवर परसु देखाबहु मोही। बिप्र बिचारि बचौं नृपद्रोही॥
मिले न कबहुँ सुभट रन गाढ़े। द्विजदेवता घरहिं के बाढ़े॥
अनुचित कहि सब लोगु पुकारे। रघुपति सयनहि लखनु नेवारे॥
लखनु उतर आहुति सरिस भृगुबरकोपु कृसानु।
बढ़त देखि जल सम बचन बोले, रघकुल भानु॥

उत्तर–पृष्ठ 32 पर, भावार्थ संख्या 2 *अथवा* पृष्ठ 33 पर भावार्थ संख्या 3 देखिए।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 21. मन्नू भंडारी *अथवा* महावीरप्रसाद द्विवेदी में से किसी एक का साहित्यिक परिचय निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर लिखिए— 4

(i) दो रचनाएँ, (ii) भाषा-शैली, (iii) साहित्य में स्थान।

उत्तर—पृष्ठ 85 पर देखिए।

प्रश्न 22. अपने बड़े भाई को पत्र लिखिए और उन्हें बताइए कि गर्मी की छुट्टियाँ किस प्रकार व्यतीत करना चाहते हैं ? 4

उत्तर—पृष्ठ 132 पर, प्रश्न संख्या 2 देखिए।

अथवा

अपने प्राचार्य को शाला छोड़ने पर स्थानान्तरण प्रमाण-पत्र (T.C.) देने हेतु आवेदन-पत्र लिखिए।

उत्तर—पृष्ठ 135 पर, प्रश्न संख्या 2 देखिए।

प्रश्न 23. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर संक्षिप्त किन्तु सारगर्भित निबन्ध लिखिए— 4

(i) राष्ट्रीय एकता और अखण्डता,

(ii) नारी शिक्षा का महत्व,

(iii) समाचार-पत्र,

(iv) पर्यावरण प्रदूषण,

(v) बिन पानी सब सून।

उत्तर—पृष्ठ संख्या 151, 152, 150, 151 एवं 149 पर देखिए।

आदर्श प्रश्न-पत्र : सेट—III

प्रश्न 1. सही विकल्प चुनकर लिखिए— **1 × 6 = 6**

(i) तुलसीदास की कौन-सी रचना है ?

(क) विनय पत्रिका, (ख) साहित्य लहरी,

(ग) आँसू, (घ) अनामिका।

(ii) काव्य की शोभा बढ़ाने वाले धर्म (तत्व) क्या कहलाते हैं ?

(क) छंद, (ख) अलंकार,

(ग) शब्द शक्ति, (घ) काव्य गुण।

(iii) स्त्री शिक्षा के बारे में महावीरप्रसाद द्विवेदी का मत था—

(क) स्त्रियाँ पढ़कर गृह क्लेश का कारण बनती हैं,

(ख) स्त्रियों को नहीं पढ़ाना चाहिए,

(ग) स्त्रियों को पढ़ाना चाहिए,

(घ) स्त्रियों के पढ़ाना अनर्थ है।

(iv) रामवृक्ष बेनीपुरी की रचना है—

(क) संस्कृति, (ख) महाभोज,

(ग) उन्माद, (घ) गेहूँ और गुलाब।

(v) किस समास में दोनों पद प्रधान होते हैं—

(क) द्वन्द्व में, (ख) द्विगु में,

(ग) तत्पुरुष में, (घ) कर्मधारय में।

(vi) अज्ञेय ने हिरोशिमा कविता कहाँ बैठे-बैठे लिखी थी ?

(क) जहाज में, (ख) रेलगाड़ी में,

(ग) होटल में, (घ) घर के कमरे में।

उत्तर—(i) (क), **(ii)** (ख), **(iii)** (ग), **(iv)** (घ), **(v)** (क), **(vi)** (ख)।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए– $1 \times 7 = 7$

(i) छायावाद के कवि ..... हैं।
(ii) आभा फागुन की ..... है।
(iii) जिसके कारण स्थायी भाव उत्पन्न होता है, वह ..... कहलाता है।
(iv) कामायनी एक ..... है।
(v) मन्नू भंडारी के पिता रसोई को ..... कहते थे।
(vi) 'पंचवटी' ..... समास का उदाहरण है।
(vii) कभी-कभी लेखक ..... दबाव में भी लिखता है।

उत्तर–(i) जयशंकर प्रसाद, **(ii)** अट नहीं रही, **(iii)** आलम्बन, **(iv)** महाकाव्य, **(v)** भटियारखाना, **(vi)** द्विगु, **(vii)** बाहरी।

प्रश्न 3. सही जोड़ी बनाइए– $1 \times 6 = 6$

'अ'	'ब'
(i) छाया मत छूना	(क) रति स्थायी भाव
(ii) शृंगार रस	(ख) मन होगा दुःख दूना
(iii) बालगोबिन भगत	(ग) संयुक्त क्रिया
(iv) क्रिया एवं सहायक क्रिया के योग से	(घ) कबीर पंथी
(v) दिल्ली में सब कुछ था परन्तु	(ङ) अज्ञेय
(vi) मैं क्यों लिखता हूँ	(च) नाक नहीं थी

उत्तर–(i) → (ख), (ii) → (क), (iii) → (घ), (iv) → (ग), (v) → (च), (vi) → (ङ)।

प्रश्न 4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक शब्द या एक वाक्य में लिखिए– $1 \times 7 = 7$

(i) आपके पाठ्यक्रम में जयशंकर प्रसाद की कौन-सी रचना है ?
(ii) आग किसके लिए होती है ?
(iii) शांत रस का स्थायी भाव बताइए।
(iv) नेताजी की मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा किसने लगाया होगा ?
(v) क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्द क्या कहलाते हैं ?
(vi) "मोहन भी आज आ रहा है।" वाक्य में निपात शब्द कौन-सा है ?
(vii) नाक किसकी द्योतक है ?

उत्तर–(i) आत्मकथ्य, **(ii)** रोटी सेकने के लिए, **(iii)** निर्वेद, **(iv)** किसी बच्चे ने, **(v)** क्रिया- विशेषण, **(vi)** भी, **(vii)** मान-सम्मान की।

प्रश्न 5. निम्नलिखित वाक्यों में सत्य/असत्य लिखिए– $1 \times 6 = 6$

(i) कन्यादान कविता में माँ बेटी को परम्परा से हटकर सीख देती है।
(ii) चौपाई छंद में अठारह मात्राएँ होती हैं।
(iii) कामायनी आधुनिक काल का श्रेष्ठ महाकाव्य है।
(iv) अत्रि की पत्नी धर्म पर व्याख्यान नहीं दे पाती थीं।
(v) 'आँख का तारा' का अर्थ अत्यन्त प्रिय होता है।
(vi) लेखक की प्रत्येक रचना श्रेष्ठ होती है।

उत्तर–(i) सत्य, **(ii)** असत्य, **(iii)** सत्य, **(iv)** असत्य, **(v)** सत्य, **(vi)** असत्य।

प्रश्न 6. "उज्ज्वल गाथा कैसे गाऊँ मधुर चाँदनी रातों की" कथन के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है ? 2

उत्तर–पृष्ठ 43 पर, प्रश्न संख्या 5 देखिए।

Scanned with CamScanner

अथवा

गोपियों ने उद्धव से योग की शिक्षा कैसे लोगों को देने की बात कही ?

उत्तर—पृष्ठ 39 पर, प्रश्न संख्या 6 देखिए।

प्रश्न 7. दो प्रयोगवादी कवियों के नाम तथा उनकी एक-एक रचना का नाम लिखिए। 2

उत्तर—पृष्ठ 28 पर, प्रश्न संख्या 24 देखिए।

अथवा

कृष्णभक्ति शाखा की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर—पृष्ठ 26 पर, प्रश्न संख्या 10 देखिए।

प्रश्न 8. निम्नलिखित में से किसी एक पद्यांश का भावार्थ लिखिए— 2

यश है न वैभव है, मान है न सरमाया,
जितना ही दौड़ा तू उतना ही भरमाया।
प्रभुता का शरण-बिंब केवल मृगतृष्णा है,
हर चंद्रिका में छिपी एक रात कृष्णा है।
जो है यथार्थ कठिन उसका तू कर पूजन,
छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना।

उत्तर—पृष्ठ 37 पर, व्याख्या संख्या 2 देखिए।

अथवा

ऊधौ तुम हौ अति बड़भागी।
अपरस रहत सनेह तगा तैं, नाहिन मन अनुरागी।
पुरइनि पात रहत जल भीतर, ता रस देह न दागी।
ज्यौं जल माँह तेल की गागरि, बूँद न ताकौं लागी।
प्रीति नदी में पाउँ न बोरयौ, दृष्टि न रूप परागी।
'सूरदास' अबला हम भोरी, गुर चाँटी ज्यों पागी॥

उत्तर—पृष्ठ 31 पर, व्याख्या संख्या 1 देखिए।

प्रश्न 9. मुक्तक काव्य किसे कहते हैं ? 2

उत्तर—पृष्ठ 119 पर, प्रश्न संख्या 7 देखिए।

अथवा

वीभत्स रस की परिभाषा करते हुए एक उदाहरण दीजिए।

उत्तर—पृष्ठ 121 पर, प्रश्न संख्या 10 देखिए।

प्रश्न 10. रूपक अलंकार की परिभाषा लिखिए तथा उदाहरण दीजिए। 2

उत्तर—पृष्ठ 123 पर, प्रश्न संख्या 3 देखिए।

अथवा

संचारी भाव किसे कहते हैं ? इनकी कितनी संख्या मानी गई है ?

उत्तर—पृष्ठ 120 पर, प्रश्न संख्या 3 देखिए।

प्रश्न 11. भगत की पुत्रवधू उन्हें अकेले क्यों नहीं छोड़ना चाहती थी ? 2

उत्तर—पृष्ठ 73 पर, प्रश्न संख्या 2 देखिए।

अथवा

लेखिका (मन्नू भंडारी) के व्यक्तित्व पर किन-किन व्यक्तियों का किस रूप में प्रभाव पड़ा ?

उत्तर—पृष्ठ 76 पर, प्रश्न संख्या 1 देखिए।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 12. एकांकी किसे कहते हैं ? दो एकांकियों के नाम उनके लेखक सहित लिखिए। 2

उत्तर–पृष्ठ 58 पर, प्रश्न संख्या 7 देखिए।

अथवा

कहानी और उपन्यास में कोई दो अन्तर लिखिए।

उत्तर–पृष्ठ 60 पर, प्रश्न संख्या 15 देखिए।

प्रश्न 13. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना *अथवा* स्वयं प्रकाश में से किसी एक की दो रचनाओं के नाम लिखिए। 2

उत्तर–पृष्ठ 84 पर, *अथवा* पृष्ठ 83 पर देखिए।

प्रश्न 14. क्रिया-विशेषण किसे कहते हैं ? उदाहरण सहित लिखिए। 2

उत्तर–पृष्ठ 98 पर, प्रश्न संख्या 1 देखिए।

अथवा

निम्नलिखित शब्दों के दो-दो अर्थ लिखिए– 2

(क) उत्तर, (ख) कर।

उत्तर–पृष्ठ 109 पर, प्रश्न संख्या 3 देखिए।

प्रश्न 15. हिरोशिमा की घटना विज्ञान का भयंकरतम दुरुपयोग है। आपकी दृष्टि में विज्ञान का दुरुपयोग कहाँ तक और किस तरह हो रहा है ? 2

उत्तर–पृष्ठ 92 पर, प्रश्न संख्या 5 देखिए।

अथवा

जॉर्ज पंचम की लाट पर किसी भी भारतीय नेता, यहाँ तक कि भारतीय बच्चे की नाक फिट न होने की बात से लेखक किस ओर संकेत करना चाहता है ?

उत्तर–पृष्ठ 90 पर, प्रश्न संख्या 5 देखिए।

प्रश्न 16. स्थायी भाव एवं संचारी भाव में अंतर बताइए। 3

उत्तर–पृष्ठ 120 पर, प्रश्न संख्या 4 देखिए।

अथवा

उपमा अलंकार की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए तथा उसके भेद भी बताइए।

उत्तर–पृष्ठ 123 पर, प्रश्न संख्या 4 देखिए।

प्रश्न 17. आदर्श शिक्षा निकेतन का अध्यापकों की नियुक्ति हेतु विज्ञापन तैयार कीजिए। 3

उत्तर–पृष्ठ 111 पर, प्रश्न संख्या 1 देखिए।

अथवा

क्रिया-विशेषण के कितने प्रकार होते हैं ?

उत्तर–पृष्ठ 99 पर, प्रश्न संख्या 2 देखिए।

प्रश्न 18. निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए– 3

आप हमेशा अच्छी जिन्दगी जीते आ रहे हैं। आप हमेशा बढ़िया कपड़े, बढ़िया जूते, बढ़िया घड़ी, बढ़िया मोबाइल जैसे दिखावों पर बहुत खर्च करते हैं मगर आप अपने शरीर पर कितना खर्च करते हैं ? इसका मूल्यांकन जरूरी है। यह शरीर अनमोल है। अगर शरीर स्वस्थ नहीं होगा तो आप ये सारे सामान किस पर टाँगेंगे ? अत: स्वयं का स्वस्थ रहना सबसे जरूरी है एवं स्वस्थ रहने में हमारे खान-पान का सबसे बड़ा योगदान है।

प्रश्न–(i) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।

(ii) अनमोल क्या है ?

(iii) शुद्ध व असली शब्दों के विलोम शब्द लिखिए।

उत्तर–पृष्ठ 130 पर, अपठित संख्या 9 देखिए।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 19. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर संवाद लिखिए— 3

(i) इण्टरनेट : आज की आवश्यकता,

(ii) किसी त्यौहार का वर्णन,

(iii) राष्ट्रीय पर्व : 15 अगस्त।

उत्तर—पृष्ठ 139 एवं 140 पर देखिए।

अथवा

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर अनुच्छेद लिखिए—

(i) महँगाई समस्या,

(ii) स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत,

(iii) परहित सरिस धर्म नहि भाई।

उत्तर—पृष्ठ 143 एवं 144 पर देखिए।

प्रश्न 20. सूरदास *अथवा* जयशंकर प्रसाद की काव्यगत विशेषताएँ निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर लिखिए— 4

(i) दो रचनाएँ, (ii) भावपक्ष व कलापक्ष, (iii) साहित्य में स्थान।

उत्तर—पृष्ठ 50 पर *अथवा* पृष्ठ 51 पर देखिए।

प्रश्न 21. निम्नलिखित में से किसी एक गद्यांश की संदर्भ, प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए— 4

पढ़ने-लिखने में स्वयं कोई बात ऐसी नहीं जिससे अनर्थ हो सके। अनर्थ का बीज उसमें हरगिज नहीं। अनर्थ पुरुषों से भी होते हैं। अनपढ़ों और पढ़े-लिखे दोनों से। अनर्थ, दुराचार और पापाचार के कारण और ही होते हैं और वे व्यक्ति विशेष का चाल-चलन देखकर जाने भी जा सकते हैं। अतएव स्त्रियों को अवश्य पढ़ाना चाहिए।

अथवा

नवाबी आदतें, अधूरी महत्त्वाकांक्षाएँ, हमेशा शीर्ष पर रहने के बाद हाशिए पर सरकते जाने की यातना क्रोध बनकर हमेशा माँ को कंपाती-थरथराती रहती थी। अपनों के हाथों विश्वासघात की जाने कैसी गहरी चोटें होंगी वे जिन्होंने आँख मूँदकर सबका विश्वास करने वाले पिता को बाद के दिनों में इतना शक्की बना दिया था कि जब-तब हम लोग भी उसकी चपेट में आते ही रहते।

उत्तर—पृष्ठ 69 पर *अथवा* पृष्ठ 66 पर देखिए।

प्रश्न 22. अपने बड़े भाई के विवाह में सम्मिलित होने के लिए अपने मित्र को आमंत्रण पत्र लिखिए। 4

उत्तर—पृष्ठ 133 पर, प्रश्न संख्या 3 देखिए।

अथवा

अपने प्राचार्य महोदय को बुक-बैंक से पुस्तकें देने के लिए प्रार्थना पत्र लिखिए।

उत्तर—पृष्ठ 135 पर, प्रश्न संख्या 3 देखिए।

प्रश्न 23. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर संक्षिप्त किन्तु सारगर्भित निबन्ध लिखिए— 4

(i) दहेज प्रथा : एक सामाजिक समस्या,

(ii) विद्यार्थी जीवन,

(iii) किसी खेल का आँखों देखा वर्णन-क्रिकेट मैच,

(iv) विज्ञान के बढ़ते चरण,

(v) वन संरक्षण।

उत्तर—पृष्ठ 145, 153, 154, 147 एवं 148 पर देखिए।

Scanned with CamScanner

आदर्श प्रश्न-पत्र : सेट–IV

प्रश्न 1. सही विकल्प चुनकर लिखिए— **1 × 6 = 6**

(i) 'अट नहीं रही है' कविता में वर्णन हुआ है—

(क) वसंत ऋतु का, (ख) ग्रीष्म ऋतु का,
(ग) वर्षा ऋतु का, (घ) शरद ऋतु का।

(ii) 'पीपर पात सरिस मन डोला' में अलंकार है—

(क) रूपक, (ख) उपमा,
(ग) उत्प्रेक्षा, (घ) मानवीकरण।

(iii) लेखिका मन्नू भंडारी की साहित्यिक रुचि को किसने विस्तार दिया ?

(क) उनके पिता ने, (ख) उनकी माँ ने,
(ग) शीला अग्रवाल ने, (घ) उनके भाई ने।

(iv) प्रकाश की आवश्यकता तथा भूख ने किसका आविष्कार कराया ?

(क) हथियारों का, (ख) सुई धागे का,
(ग) सभ्यता का, (घ) आग का।

(v) वाच्य के कितने प्रकार होते हैं ?

(क) तीन, (ख) चार,
(ग) पाँच, (घ) छः।

(vi) भारत के दौरे पर कौन आ रही थी ?

(क) राजकुमारी डायना, (ख) रानी [illegible]जाबैथ द्वितीय,
(ग) राजकुमारी हैलन, (घ) रानी क्रिस्टल।

उत्तर—(i) (क), **(ii)** (ख), **(iii)** (ग), **(iv)** (घ), **(v)** (क), **(vi)** (ख)।

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए— **1 × 7 = 7**

(i) पत्तों से लदी .... कहीं हरी कहीं लाल।
(ii) 'धूप के धान' .... का कविता संग्रह है।
(iii) काव्य की शोभा बढ़ाने वाले धर्म .... कहलाते हैं।
(iv) वीर रस का स्थायी भाव .... है।
(v) पुराने जमाने में स्त्रियों के लिए .... नहीं थे।
(vi) एक से अधिक अर्थ देने वाले शब्द .... कहलाते हैं।
(vii) देखते ही देखते दिल्ली का .... होने लगा।

उत्तर—(i) डाल, **(ii)** गिरिजाकुमार माथुर, **(iii)** अलंकार, **(iv)** उत्साह, **(v)** विश्वविद्यालय, **(vi)** अनेकार्थी, **(vii)** कायापलट।

प्रश्न 3. सही जोड़ी बनाइए— **1 × 6 = 6**

'अ'	'ब'
(i) उज्ज्वल गाथा कैसे गाऊँ	[illegible]
(ii) काव्य की आत्मा	[illegible] रातों की
(iii) फादर कामिल बुल्के	[illegible]
(iv) उल्लू बनाना	[illegible]
(v) जॉर्ज पंचम की मूर्ति की	[illegible] मानव छाया दिखी
(vi) अज्ञेय को	[illegible]

उत्तर—(i) → (ख), **(ii)** → (क), **(iii)** → [illegible], **(iv)** → [illegible], **(v)** → [illegible]च), **(vi)** → (ङ)।

Mr. Hacker

Scanned with CamScanner

प्रश्न 4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक शब्द या एक वाक्य में लिखिए— $1 \times 7 = 7$

(i) चाँदनी रात के बाद क्या आती है ?
(ii) कड़वी ककड़ी सा क्या लगता है ?
(iii) एक शब्द की एक से अधिक बार आवृत्ति होने पर कौन-सा अलंकार होता है ?
(iv) हिन्दू वेदों को किसकी रचना मानते हैं ?
(v) "मेरे द्वारा पुस्तक पढ़ी जा रही है।" में कौन-सा वाच्य है ?
(vi) हाथ मलना का क्या अर्थ है ?
(vii) भोलानाथ सिसकना क्यों भूल गया ?

उत्तर—(i) अंधेरी रात, (ii) योग का संदेश, (iii) अनुप्रास, (iv) ईश्वर की, (v) कर्मवाच्य, (vi) पछताना, (vii) अपने साथियों को खेलता देखकर।

प्रश्न 5. निम्नलिखित वाक्यों में सत्य/असत्य लिखिए— $1 \times 6 = 6$

(i) छायावाद के जनक सुमित्रानन्दन पंत हैं।
(ii) चौपाई छंद में सोलह मात्राएँ होती हैं।
(iii) जहाँ नायक-नायिका के वियोग का वर्णन हो वहाँ संयोग शृंगार होता है।
(iv) फादर की निकटता में ऐसा लगता था जैसे किसी देवदास की छाया में खड़े हैं।
(v) स्थानवाचक क्रिया-विशेषण से क्रिया के काल का बोध होता है।
(vi) 'मैं क्यों लिखता हूँ' अज्ञेय की रचना है।

उत्तर—(i) असत्य, (ii) सत्य, (iii) असत्य, (iv) सत्य, (v) असत्य, (vi) सत्य।

प्रश्न 6. माँ ने अपनी बेटी को क्या-क्या सीख दीं ? 2

उत्तर—पृष्ठ 46 पर, प्रश्न संख्या 4 देखिए।

अथवा

लक्ष्मण ने वीर योद्धा की क्या-क्या विशेषताएँ बताईं ?

उत्तर—पृष्ठ 40 पर, प्रश्न संख्या 3 देखिए।

प्रश्न 7. भक्तिकाल की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। 2

उत्तर—पृष्ठ 25 पर, प्रश्न संख्या 4 देखिए।

अथवा

छायावाद के दो कवियों तथा उनकी एक-एक रचना का नाम लिखिए।

उत्तर—पृष्ठ 28 पर, प्रश्न संख्या 20 देखिए।

प्रश्न 8. निम्नलिखित में से एक पद्यांश का भावार्थ लिखिए— 2

कहीं साँस लेते हो,
घर-घर भर देते हो,
उड़ने को नभ में तुम,
पर-पर कर देते हो
आँख हटाता हूँ तो
हट नहीं रही है।

उत्तर—पृष्ठ 36 पर, व्याख्या संख्या 1 देखिए।

अथवा

कितना प्रामाणिक था उसका दुख
लड़की को दान में देते वक्त
जैसे वही उसकी अंतिम पूँजी हो।

उत्तर—पृष्ठ 38 पर, व्याख्या संख्या 1 देखिए।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 9. प्रबन्ध काव्य किसे कहते हैं ? इसके भेद बताइए। 2

उत्तर–पृष्ठ 118 पर, प्रश्न संख्या 3 देखिए।

अथवा

रौद्र रस की परिभाषा लिखिए और एक उदाहरण दीजिए।

उत्तर–पृष्ठ 121 पर, प्रश्न संख्या 8 देखिए।

प्रश्न 10. पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए। 2

उत्तर–पृष्ठ 124 पर, प्रश्न संख्या 7 देखिए।

अथवा

छंद किसे कहते हैं ? इनके कितने प्रकार होते हैं ?

उत्तर–पृष्ठ 122 पर, प्रश्न संख्या 1 देखिए।

प्रश्न 11. "स्त्रियों को पढ़ाने में अनर्थ होते हैं"–कुतर्कवादियों की इस दलील का खण्डन द्विवेदी जी ने कैसे किया है ? अपने शब्दों में लिखिए। 2

उत्तर–पृष्ठ 78 पर, प्रश्न संख्या 2 देखिए।

अथवा

वास्तविक अर्थों में संस्कृत व्यक्ति किसे कहा जा सकता है ?

उत्तर–पृष्ठ 79 पर, प्रश्न संख्या 3 देखिए।

प्रश्न 12. रेखाचित्र किसे कहते हैं ? 2

उत्तर–पृष्ठ 60 पर, प्रश्न संख्या 18 देखिए।

अथवा

कहानी किसे कहते हैं ? दो कहानीकारों के नाम लिखिए।

उत्तर–पृष्ठ 59 पर, प्रश्न संख्या 13 देखिए।

प्रश्न 13. मन्नू भंडारी *अथवा* रामवृक्ष बेनीपुरी में से किसे एक की दो रचनाओं के नाम लिखिए। 2

उत्तर–पृष्ठ 85 पर *अथवा* पृष्ठ 83 पर देखिए।

प्रश्न 14. निम्नलिखित में निर्देशानुसार वाक्य बदलिए– 2

(1) तुलसीदास ने रामचरितमानस की रचना की। **(कर्म वाच्य)**

(2) आओ घर चलें। **(भाव वाच्य)**

उत्तर–पृष्ठ 97 पर, प्रश्न संख्या 7 देखिए।

अथवा

अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य की ओर से दीपावली के अवकाश की सूचना लिखिए।

उत्तर–पृष्ठ 114 पर, प्रश्न संख्या 1 देखिए।

प्रश्न 15. भोलानाथ और उसके साथियों के खेल और खेलने की सामग्री आपके खेल और खेलने की सामग्री से किस प्रकार भिन्न है ? 2

उत्तर–पृष्ठ 88 पर, प्रश्न संख्या 3 देखिए।

अथवा

लेखक ने अपने आपको हिरोशिमा के विस्फोट का भोक्ता कब और किस तरह महसूस किया ?

उत्तर–पृष्ठ 91 पर, प्रश्न संख्या 2 देखिए।

प्रश्न 16. शृंगार रस की परिभाषा लिखते हुए उदाहरण दीजिए और उसके भेद बताइए। 3

उत्तर–पृष्ठ 120 पर, प्रश्न संख्या 6 देखिए।

Scanned with CamScanner

अथवा

अलंकार की परिभाषा लिखिए तथा उसके भेद बताइए।

उत्तर—पृष्ठ 123 पर, प्रश्न संख्या 1 देखिए।

प्रश्न 17. निम्नलिखित लोकोक्तियों का अर्थ बताते हुए वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

(i) सौ सुनार की एक लुहार की, (ii) मन चंगा तो कठौती में गंगा, (iii) जल में रहकर मगर बैर।

उत्तर—पृष्ठ 106 पर, प्रश्न संख्या 5 देखिए।

अथवा

निम्नलिखित वाक्यों में क्रिया-विशेषण पहचान कर लिखिए—

1. वह ध्यानपूर्वक सुनता है।

2. यह कहाँ तक जाएगा ?

3. राम की परीक्षा कब होगी ?

उत्तर—पृष्ठ 100 पर, प्रश्न संख्या 6 देखिए।

प्रश्न 18. निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

क्षमा पृथ्वी का गुण-धर्म है। क्षमा वीरों का भूषण है। मनुष्य से स्वाभाविक रूप से अपराध होते रहते हैं, गलतियाँ होती रहती हैं। हमारी दृष्टि में कोई अपराधी है तो हम किसी की दृष्टि में अपराधी हैं। यहाँ निर्दोष कोई भी नहीं है, इसलिए परस्पर क्षमा-भावना की अति आवश्यकता है। क्षमा के अभाव में क्रोध, हिंसा, संघर्ष का साम्राज्य छा जायेगा जिसे कोई भी स्वीकार नहीं करता है। माता-पिता, गुरु सभी क्षमाशील होते हैं। मानव जीवन में क्षमा के अवसर आते रहते हैं। क्षमा के अभाव में मानव जीवन चलना दूभर हो जाता है। अहिंसा, करुणा, दया, मैत्री, क्षमा आदि दैवीय गुण हैं। ये गुण मानव-जीवन के लिए आवश्यक हैं।

प्रश्न—(i) उपर्युक्त गद्यांश का सटीक शीर्षक दीजिए।

(ii) उपर्युक्त गद्यांश का सारांश लिखिए।

(iii) क्षमा के अभाव में किसका साम्राज्य छा जाता है।

उत्तर—पृष्ठ 128 पर, अपठित संख्या 4 देखिए।

प्रश्न 19. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर संवाद लिखिए— 3

(i) जनसंख्या समस्या,

(ii) प्रिय खेल क्रिकेट,

(iii) दूरदर्शन।

उत्तर—पृष्ठ 141 एवं 142 पर देखिए।

अथवा

निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर अनुच्छेद लिखिए—

(i) राष्ट्रीय एकता,

(ii) मेरा विद्यालय,

(iii) आधुनिक भारत।

उत्तर—पृष्ठ 142, 143 पर देखिए।

प्रश्न 20. तुलसीदास *अथवा* सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की काव्यगत विशेषताएँ निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर लिखिए— 4

(i) दो रचनाएँ, (ii) भावपक्ष-कलापक्ष, (iii) साहित्य में स्थान।

उत्तर—पृष्ठ 50 *अथवा* पृष्ठ 52 पर देखिए।

प्रश्न 21. निम्नलिखित गद्यांशों में से किसी एक की संदर्भ, प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए— 4

फादर को जहरबाद से नहीं मरना चाहिए था। जिसकी रगों में दूसरों के लिए मिठास भरे अमृत के

Scanned with CamScanner

अतिरिक्त कुछ नहीं था उसके लिए इस जहर का विधान क्यों ? यह सवाल किस ईश्वर से पूछें ? प्रभु की आस्था ही जिसका अस्तित्व था। वह देह की इस यातना की परीक्षा उम्र की आखिरी देहरी पर क्यों दे ?

अथवा

जिस समय आचार्यों ने नाट्यशास्त्र सम्बन्धी नियम बनाए थे उस समय सर्वसाधारण की भाषा संस्कृत न थी। चुने हुए लोग ही संस्कृत बोलते या बोल सकते थे। इसी से उन्होंने उनकी भाषा संस्कृत और दूसरे लोगों तथा स्त्रियों की भाषा प्राकृत रखने का नियम कर दिया।

उत्तर–पृष्ठ 65 *अथवा* पृष्ठ 68 पर देखिए।

प्रश्न 22. प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होने पर अपने मित्र को बधाई पत्र लिखिए। **4**

उत्तर–पृष्ठ 133 पर, प्रश्न संख्या 4 देखिए।

अथवा

परीक्षा काल में ध्वनि-विस्तारक यंत्रों के बजाने पर रोक लगाने हेतु जिलाधिकारी महोदय को पत्र लिखिए।

उत्तर–पृष्ठ 136 पर, प्रश्न संख्या 4 देखिए।

प्रश्न 23. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर संक्षिप्त किन्तु सारगर्भित निबंध लिखिए– 4

(i) साहित्य और समाज,

(ii) जल ही जीवन है,

(iii) जीवन और खेल,

(iv) विज्ञान एवं प्रौद्यागिकी,

(v) आधुनिक भारत में नारी।

उत्तर–पृष्ठ 148, 149, 147 एवं 154 देखिए।

Scanned with CamScanner

अध्याय 1

हिन्दी पद्य साहित्य का इतिहास
(भक्तिकाल एवं आधुनिक काल)

प्रश्न 1. हिन्दी पद्य साहित्य को कितने कालों में विभाजित किया गया है ? इन काल खण्डों की समय-सीमा भी बताइए।

उत्तर—आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हिन्दी साहित्य का प्रारम्भ संवत् 1050 (सन् 993) से मानते हैं। हिन्दी के विद्वानों ने इस विभाजन को ही प्रामाणिक मान लिया है। उन्होंने जो काल विभाजन किया है वह निम्न प्रकार है—

क्रम	काल-विभाजन	समय सीमा
(1)	आदिकाल (वीरगाथा काल)	सन् 993 ई. से सन् 1318 ई. तक।
(2)	भक्तिकाल (पूर्व मध्यकाल)	सन् 1318 ई. से सन् 1643 ई. तक।
(3)	रीतिकाल (उत्तर मध्यकाल)	सन् 1643 ई. से सन् 1843 ई. तक।
(4)	आधुनिक काल	सन् 1843 ई. से निरन्तर।

प्रश्न 2. भक्तिकाल में भक्ति के कौन-कौन से रूप थे।

उत्तर—भक्तिकाल में भक्ति के दो रूप मिलते हैं—(1) निर्गुण भक्ति, (2) सगुण भक्ति।

प्रश्न 3. भक्तिकाल की काव्य धाराओं का विभाजन करते हुए उनके एक-एक प्रतिनिधि कवि का नाम लिखिए।

उत्तर—भक्तिकाल के काव्य को दो धाराओं में विभाजित किया गया है—

(1) निर्गुण भक्ति काव्य धारा, (2) सगुण भक्ति काव्य धारा।

(1) निर्गुण भक्ति की दो शाखाएँ हैं—(i) ज्ञानमार्गी भक्ति शाखा, प्रतिनिधि कवि—**कबीरदास,** (ii) प्रेममार्गी भक्तिशाखा, प्रतिनिधि कवि—**जायसी।**

(2) सगुण भक्ति की दो शाखाएँ हैं—(i) राम भक्ति शाखा, प्रतिनिधि कवि—**तुलसीदास,** (ii) कृष्ण भक्ति शाखा, प्रतिनिधि कवि—**सूरदास।**

प्रश्न 4. भक्तिकाल की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

अथवा

भक्तिकाल की दो विशेषताएँ लिखकर दो कवियों के नाम लिखिए।

उत्तर—भक्तिकाल की प्रमुख विशेषताएँ निम्न प्रकार हैं—

(1) भक्ति-भावना की प्रधानता। (2) किसी भी राजा के दरबार में आश्रय प्राप्त न करना। (3) काव्य सृजन का उद्देश्य केवल स्वान्तः सुखाय ही था। (4) धर्म, जाति, साहित्यिक विधाओं एवं काव्य स्वरूप में समन्वय की भावना। (5) काव्य सौन्दर्य के कला एवं भावपक्ष दोनों का सफलतापूर्वक निर्वाह। (6) जीवन को आदर्श प्रधान यथार्थता से जोड़ना। (7) कवि द्वारा अपने इष्ट के प्रति पूर्ण समर्पण के भाव की अभिव्यक्ति।

इस काल के दो प्रमुख कवि *सूरदास* तथा *तुलसीदास* हैं।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 5. भक्तिकाल के चार कवियों के नाम लिखिए तथा उनकी एक-एक रचना का नाम बताइए।

उत्तर—भक्तिकाल में अनेक कवि हुए हैं जिनमें से चार प्रमुख कवि एवं उनकी रचनाएँ निम्न प्रकार हैं—

कवि	रचना	कवि	रचना
सूरदास	*'सूरसागर'*	कबीरदास	*'बीजक'*
तुलसीदास	*'रामचरितमानस'*	मलिक मोहम्मद जायसी	*'पद्मावत'*

प्रश्न 6. भक्तिकाल को हिन्दी साहित्य का स्वर्णयुग क्यों कहते हैं ?

उत्तर—भक्तिकाल में कबीर, तुलसी, सूरदास, मीराबाई आदि महान विभूतियों का आविर्भाव हुआ। इनकी अमृतवाणी से जन-सामान्य को अभूतपूर्व शान्ति तथा सुख का अनुभव हुआ। इस काल का साहित्य अनुपम एवं आदर्श है। जिस युग में कबीर, जायसी, तुलसी, सूर जैसे प्रसिद्ध कवियों और महात्माओं की अमृतवाणी उनके अन्त:करण से निकलकर देश के कौने-कौने में फैली थी, उसे साहित्य के इतिहास में भक्ति-काल कहते हैं। वह युग वास्तव में स्वर्ण युग के साहित्य से पूर्ण था।

प्रश्न 7. निर्गुण भक्ति काव्य की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर—निर्गुण भक्ति काव्य की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं—(1) निराकार ब्रह्म में विश्वास, (2) गुरु का विशेष महत्व, (3) माया से सावधान रहने का सन्देश, (4) विरह भाव की प्रधानता, (5) अज्ञात सत्ता के प्रति रहस्यवादी दृष्टिकोण।

प्रश्न 8. ज्ञानमार्गी भक्ति शाखा की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर—ज्ञानमार्गी भक्ति शाखा की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं—(1) निराकार ब्रह्म में विश्वास, (2) गुरु के महत्व का बखान, (3) अन्धविश्वासों तथा आडम्बरों का विरोध, (4) हिन्दू-मुस्लिम एकता पर बल, (5) छुआछूत, जातिवाद एवं साम्प्रदायिकता का विरोध, (6) काव्य के द्वारा आशावादी सन्देश देना, (7) मुक्तक काव्य रचना, (8) सधुक्कड़ी भाषा का प्रयोग।

प्रश्न 9. प्रेममार्गी भक्ति शाखा की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर—प्रेममार्गी भक्ति शाखा की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं—(1) प्रेम के माध्यम से परमात्मा से साक्षात्कार, (2) लौकिक वर्णन के द्वारा अलौकिक का सन्देश, (3) हिन्दू प्रेम गाथाओं का मसनवी शैली में चित्रण, (4) हिन्दू-मुस्लिम एकता पर बल, (5) रहस्यवाद का सरस अंकन, (6) अवधी भाषा एवं प्रबन्ध शैली, (7) नायक को जीवात्मा तथा नायिका को परमात्मा चित्रित करना।

प्रश्न 10. कृष्णभक्ति काव्य की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—(1) कृष्ण को ईश्वर का अवतार माना गया। (2) उनकी पूजा पर विशेष बल दिया। (3) कृष्ण के लोकरंजक स्वरूप का चिन्तन व वर्णन किया जाना। (4) सखाभाव की भक्ति की अवधारणा। (5) ज्ञान से बढ़कर प्रेम को अधिक महत्व दिया जाना। (6) मुक्तक शैली के गेय पदों की रचना। (7) प्राय: कृष्णभक्ति काव्य की रचना ब्रजभाषा में तथा कृष्ण की बाल-लीलाओं के वर्णन की प्रधानता।

प्रश्न 11. रामभक्ति शाखा की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर—रामभक्ति शाखा की प्रमुख विशेषताएँ निम्न प्रकार हैं—

(1) रामभक्ति शाखा के कवियों के इष्टदेव मर्यादा पुरुषोत्तम राम हैं। (2) इनकी भक्ति दास्य भाव की है। (3) इस शाखा के काव्य में राम के लोक रक्षक रूप का चित्रण हुआ है। (4) रामभक्त कवियों ने समन्वय पर जोर देकर लोक मंगल का विधान करने का प्रयत्न किया है। (5) इस शाखा के कवियों ने प्रबन्ध तथा मुक्तक काव्यों की रचना की है।

प्रश्न 12. भक्तिकाल के काव्य की दो विशेषताएँ लिखकर दो कवियों के नाम लिखिए।

अथवा

भक्तिकाल के दो कवियों के नाम, दो-दो रचनाएँ लिखकर इस काल की दो विशेषताएँ लिखिए।

Scanned with CamScanner

उत्तर–(1) भक्तिकाल के कवियों ने साकार एवं निराकार ब्रह्म की उपासना से सम्बन्धित कविताएँ लिखीं।

(2) इस काल की दो कविताओं में समाज को आध्यात्मिकता और सदाचार की प्रेरणा दी गई।

इस काल के दो प्रमुख कवि व उनकी रचनाएँ हैं–तुलसीदास (*'रामचरितमानस', 'विनयपत्रिका'*) तथा मीराबाई (*'राग गोविन्द', 'राग सोरठा के पद'*)।

प्रश्न 13. भक्तिकाल के दो कवियों के नाम, उनकी दो-दो रचनाएँ लिखिए तथा इस काल की दो विशेषताएँ बताइए।

उत्तर– भक्ति काल के दो कवि	**दो-दो रचनाएँ**
तुलसीदास	*'रामचरितमानस', 'विनय पत्रिका'*।
सूरदास	*'सूरसागर', 'सूर सारावली'*।

भक्तिकाल की दो विशेषताएँ–(1) भक्ति भाव से ओतप्रोत काव्य, (2) गुरु की महिमा का वर्णन।

प्रश्न 14. दो महाकाव्यों के नाम उनके रचनाकारों सहित लिखिए।

उत्तर– महाकाव्य	**रचनाकार**
'रामचरितमानस'	तुलसीदास
'कामायनी'	जयशंकर प्रसाद

प्रश्न 15. भक्तिकाल का मूल उद्देश्य क्या है ?

उत्तर–भक्तिकाल का मूल उद्देश्य लोकहित है। निराश तथा हताश जन-सामान्य को ईश्वर की भक्ति का संबल देकर उनमें आशा तथा विश्वास का संचार किया गया है। भक्तिकालीन काव्य में जीवन के प्रति आशावादी सन्देश विद्यमान है।

प्रश्न 16. आधुनिक काल को कितने युगों में विभाजित किया गया है? उनकी समय सीमा भी लिखिए।

उत्तर– युग का नाम	**समयावधि**	**प्रमुख कवि**
(1) भारतेन्दु युग	सन् 1850 से 1900 तक	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
(2) द्विवेदी युग	सन् 1900 से 1920 तक	अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
(3) छायावादी युग	सन् 1920 से 1936 तक	जयशंकर प्रसाद
(4) प्रगतिवादी युग	सन् 1936 से 1943 तक	रामधारीसिंह 'दिनकर'
(5) प्रयोगवादी युग	सन् 1943 से 1950 तक	अज्ञेय
(6) नई कविता	सन् 1950 से आज तक	भवानीप्रसाद मिश्र

प्रश्न 17. भारतेन्दु युग के चार प्रमुख कवियों और उनकी प्रमुख रचनाएँ लिखिए।

उत्तर– **कवि**	**रचनाएँ**
(1) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	*'प्रेमसरोवर', 'वेणु गीति'*।
(2) प्रताप नारायण मिश्र	*'प्रेम पुष्पावली', 'शृंगारविलास'*।
(3) अम्बिका दत्त व्यास	*'भारत धर्म', 'पावस पचासा'*।
(4) राधाचरण गोस्वामी	*'नवभक्तमाल'*।

प्रश्न 18. द्विवेदी युग के चार प्रमुख कवि और उनकी प्रमुख रचनाएँ लिखिए।

उत्तर– **प्रमुख कवि**	**रचनाएँ**
(1) अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	*'प्रियप्रवास', 'वैदेही वनवास'*।
(2) महावीर प्रसाद द्विवेदी	*'काव्यमंजूषा', 'सुमन'*।
(3) मैथिलीशरण गुप्त	*'पंचवटी', 'साकेत'*।
(4) माखनलाल चतुर्वेदी	*'हिमकिरीटनी', 'समर्पण'*।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 19. छायावादी काव्य की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर—छयावादी काव्य की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(1) व्यक्तिवाद की प्रधानता—इसमें व्यक्ति की भावनाओं का आदर हुआ है।

(2) शृंगार की भावना—छयावादी काव्य में शृंगार उपभोग की वस्तु नहीं बल्कि कौतूहल का विषय है।

(3) प्रकृति-चित्रण—प्रकृति का मानवीकरण इसकी विशेषता है।

(4) सौन्दर्यानुभूति—छयावादी कवियों की दृष्टि आन्तरिक सौन्दर्य में अधिक रमी है।

(5) वेदना और करुणा की अधिकता—वेदना एवं करुणा को स्पष्ट रूप से उजागर किया गया है।

(6) अज्ञात सत्ता से प्रेम—कवियों ने अज्ञात सत्ता को कभी प्रेयसी के रूप में कभी प्रकृति के रूप में देखा है।

(7) नारी के प्रति भावना—छयावाद में शृंगार और सौन्दर्य का सम्बन्ध सुकुमार नारी से है।

प्रश्न 20. छायावादी चार प्रमुख कवि और उनकी दो-दो रचनाएँ लिखिए।

अथवा

छायावाद के दो कवियों तथा उनकी एक-एक रचना का नाम लिखिए।

उत्तर—

कवि	**रचनाएँ**
(1) जयशंकर प्रसाद	*'कामायनी', 'आँसू'।*
(2) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'	*'अनामिका', 'परिमल'।*
(3) सुमित्रानन्दन पन्त	*'वीणा', 'युगवाणी'।*
(4) महादेवी वर्मा	*'नीहार', 'रश्मि'।*

प्रश्न 21. प्रगतिवादी काव्य की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर—प्रगतिवादी काव्य की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(1) शोषितों से सहानुभूति। (2) आर्थिक व सामाजिक समानता पर बल। (3) नारी शोषण के प्रति मुक्ति की आवाज। (4) ईश्वर के प्रति अनास्था। (5) सामाजिक यथार्थ का चित्रण। (6) प्रतीकों का प्रयोग। (7) भाग्यवाद की अपेक्षा कर्मवाद की श्रेष्ठता पर बल।

प्रश्न 22. चार प्रगतिवादी कवि और उनकी एक-एक रचना का नाम लिखिए।

उत्तर—

कवि का नाम	**रचना**
(1) नागार्जुन	*'युगधारा'।*
(2) केदारनाथ अग्रवाल	*'युग की गंगा'।*
(3) शिवमंगलसिंह 'सुमन'	*'हिल्लोल'।*
(4) त्रिलोचन	*'धरती'।*

प्रश्न 23. प्रयोगवादी काव्य की विशेषताएँ संक्षेप में बताइए।

उत्तर—प्रयोगवादी काव्य की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(1) नवीन उपमानों का प्रयोग किया है।

(2) प्रेम की भावनाओं का खुला चित्रण है।

(3) बुद्धि की प्रधानता है।

(4) निराशावाद की प्रधानता है।

(5) अहंकार की भावना का समावेश इस समय की कविता में हुआ है।

(6) मुक्त छंदों का चयन किया गया है।

प्रश्न 24. चार प्रयोगवादी कवियों और उनकी एक-एक रचना का नाम लिखिए।

अथवा

दो प्रयोगवादी कवियों के नाम तथा उनकी एक-एक रचना का नाम लिखिए।

Scanned with CamScanner

उत्तर—

कवि का नाम	रचना
(1) अज्ञेय	*'हरी घास पर क्षण भर'।*
(2) मुक्तिबोध	*'चाँद का मुँह टेढ़ा है'।*
(3) धर्मवीर भारती	*'अन्धा युग'।*
(4) सर्वेश्वरदयाल सक्सेना	*'बाँस के पुल'।*

प्रश्न 25. नई कविता की प्रमुख विशेषताएँ संक्षेप में लिखिए।

अथवा

नई कविता की दो विशेषताएँ लिखते हुए दो कवियों के नाम लिखिए।

उत्तर—नई कविता की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(1) लघुमानववाद की प्रतिष्ठा। (2) प्रयोगों में नवीनता। (3) क्षणवाद को महत्व—जीवन के प्रत्येक क्षण के महत्व को माना है। (4) अनुभूतियों का वास्तविक चित्रण। (5) कुंठा, संत्रास, मृत्युबोध—इनका मनोवैज्ञानिक ढंग से चित्रण किया गया है। (6) बिम्ब—नए बिम्बों की खोज की है। (7) व्यंग्य प्रधान रचनाएँ।

नई कविता के प्रमुख कवि—भवानीप्रसाद मिश्र, डॉ. जगदीश चन्द्र गुप्त, दुष्यन्त कुमार।

प्रश्न 26. नई कविता के चार प्रमुख कवियों के नाम और उनकी दो-दो रचनाओं के नाम लिखिए।

उत्तर—

कवि का नाम	रचनाएँ
(1) भवानीप्रसाद मिश्र	*'सन्नाटा', 'गीतफरोस'।*
(2) कुँवर नारायण	*'चक्रव्यूह', 'आमने-सामने'।*
(3) दुष्यन्त कुमार	*'सूर्य का स्वागत', 'आवाजों के घेरे'।*
(4) नरेश मेहता	*'वनपांखी सुनो', 'उत्सव'।*

महत्वपूर्ण वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

❖ बहु-विकल्पीय प्रश्न

1. भक्तिकाल की समय सीमा मानी गई है—
(क) सन् 1318 से 1643 तक, (ख) सन् 1643 से 1843 तक,
(ग) सन् 1843 से 1960 तक, (घ) सन् 1960 से अब तक।

2. भक्तिकाल के काव्य का मुख्य विषय है—
(क) युद्धों का वर्णन, (ख) भक्ति भावना,
(ग) शृंगार वर्णन, (घ) पूँजीवाद का विरोध।

3. तुलसीदास किस काव्यधारा के कवि हैं ?
(क) ज्ञानमार्गी काव्यधारा, (ख) प्रेममार्गी काव्यधारा,
(ग) कृष्णभक्ति काव्यधारा, (घ) रामभक्ति काव्यधारा।

4. कृष्ण भक्ति शाखा के प्रतिनिधि कवि हैं—
(क) कबीरदास, (ख) सूरदास,
(ग) जायसी, (घ) तुलसीदास।

5. मैथिलीशरण गुप्त की रचना है—
(क) पंचवटी, (ख) भाव विलास,
(ग) अनामिका, (घ) भस्मांकुर।

6. छायावाद के प्रवर्तक माने जाते हैं—
(क) श्रीधर पाठक, (ख) जयशंकर प्रसाद,
(ग) रामचन्द्र शुक्ल, (घ) सुमित्रानन्दन पन्त।

Scanned with CamScanner

7. छायावादी कविता का मुख्य विषय रहा है—
(क) युद्धों का वर्णन,
(ख) रूढ़ियों का विरोध,
(ग) प्रकृति चित्रण,
(घ) प्रयोगशीलता।

8. प्रयोगवाद के जनक माने जाते हैं—
(क) हरिऔध,
(ख) निराला,
(ग) नरेश मेहता,
(घ) अज्ञेय।

9. प्रगतिवादी काव्य का मूल स्वर है—
(क) शोषण के प्रति विद्रोह,
(ख) देशप्रेम की भावना,
(ग) शृंगार वर्णन,
(घ) नीतिपरक सन्देश देना।

10. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' किसके कवि माने जाते हैं ?
(क) द्विवेदी युग,
(ख) छायावाद,
(ग) प्रयोगवाद,
(घ) नई कविता।

11. नई कविता के कवि कौन-से हैं ?
(क) जयशंकर प्रसाद,
(ख) सुमित्रानन्दन पन्त,
(ग) गिरिजाकुमार माथुर,
(घ) रामधारीसिंह 'दिनकर'।

12. प्रयोगवाद के कवि हैं—
(क) श्याम नारायण पांडे,
(ख) हरिऔध,
(ग) गोपालदास 'नीरज',
(घ) भवानीप्रसाद मिश्र।

उत्तर—1. (क), **2.** (ख), **3.** (घ), **4.** (ख), **5.** (क), **6.** (ख), **7.** (ग), **8.** (घ), **9.** (क), **10.** (ख), **11.** (ग), **12.** (घ)।

❖ रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित 'कामायनी' एक ..... है।
2. छायावाद के कवि ..... हैं।
3. प्रयोगवाद के जनक ..... माने जाते हैं।
4. आधुनिक हिन्दी साहित्य के जन्मदाता ..... हैं।
5. जगदीश गुप्त ..... कवि माने गये हैं।
6. भक्तिकाल की रचनाओं का प्रधान विषय ..... है।
7. तुलसीदास ..... के प्रमुख कवियों में से एक है।
8. आधुनिक हिन्दी कविता का प्रारम्भ संवत् ..... से माना जाता है।

उत्तर—1. महाकाव्य, **2.** सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', **3.** अज्ञेय, **4.** भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, **5.** नई कविता **6.** भक्ति भावना, **7.** रामभक्ति शाखा, **8.** 1900।

❖ सत्य/असत्य

1. सुमित्रानन्दन पन्त छायावाद के कवि हैं।
2. सूरदास के काव्य का मुख्य विषय कृष्णभक्ति है।
3. छायावाद के जनक सुमित्रानन्दन पन्त माने जाते हैं।
4. प्रगतिवादी कवियों ने अनेक नवीन प्रयोग किये हैं।
5. छायावादी काव्य में प्रकृति का मानवीकरण किया गया है।
6. जयशंकर प्रसाद छायावाद के प्रमुख कवि हैं।

उत्तर—1. सत्य, **2.** सत्य, **3.** असत्य, **4.** असत्य, **5.** सत्य, **6.** सत्य।

Scanned with CamScanner

❖ **सही जोड़ी मिलाइए**

'अ'	'ब'
1. भवानीप्रसाद मिश्र कवि हैं	(क) छायावाद
2. छायावाद की प्रतिनिधि कवयित्री	(ख) नई कविता के कवि
3. जयशंकर प्रसाद	(ग) महादेवी वर्मा
4. गिरिजाकुमार माथुर	(घ) प्रयोगवाद
5. अज्ञेय	(ङ) प्रयोगवाद के

उत्तर—1. → (ङ), 2. → (ग), 3. → (क), 4. → (ख), 5. → (घ)।

❖ **एक शब्द/वाक्य में उत्तर**

1. भक्तिकालीन काव्य का प्रधान विषय कौन-सा है ?
2. केदारनाथ अग्रवाल किस काव्यधारा के कवि हैं ?
3. मुक्तिबोध की कविताएँ किस काव्यधारा में लिखी हैं ?
4. नई कविता का प्रारम्भ कब से हुआ ?
5. द्विवेदी युग के प्रवर्तक कौन माने जाते हैं ?

उत्तर—1. भक्ति, **2.** प्रगतिवादी, **3.** प्रयोगवादी, **4.** सन् 1950 में, **5.** आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी।

क्षितिज—भाग 2

अध्याय 2

काव्य खण्ड : परीक्षोपयोगी पद्यांशों का संदर्भ, प्रसंग एवं भावार्थ

1 पद

—सूरदास

(1) *ऊधौ तुम हौ अति बड़भागी।*
अपरस रहत सनेह तगा तैं, नाहिन मन अनुरागी।
पुरइनि पात रहत जल भीतर, ता रस देह न दागी।
ज्यौं जल माँह तेल की गागरि, बूँद न ताकौं लागी।
प्रीति नदी में पाउँ न बोरयौ, दृष्टि न रूप परागी।
'सूरदास' अबला हम भोरी, गुर चाँटी ज्यौं पागी॥

संदर्भ—यह पद्य हमारी पाठ्य-पुस्तक के 'पद' पाठ से लिया गया है। इसके कवि सूरदास हैं।

प्रसंग—कृष्ण के द्वारा भेजे गए उद्धव से गोपियाँ कहती हैं कि तुम तो बहुत भाग्यवान हो जो कृष्ण के पास रहकर भी उनके प्रेम में बँध नहीं पाए हो।

भावार्थ—गोपियाँ उद्धव से कहती हैं कि तुम तो बड़े भाग्यशाली हो। जो कृष्ण के साथ रहकर भी उनके प्रेम बन्धन में नहीं बँधे हो। तुम उनके प्रेम से इसी प्रकार अछूते रह गए हो जिस प्रकार कमल के पत्ते पानी में तो रहते हैं पर उन पर पानी का दाग भी नहीं लग पाता है, तुम कृष्ण के प्रेम बंधन से उसी प्रकार मुक्त हो जिस प्रकार तेल की मटकी पानी में डूब जाने पर भी पानी से दूर रह रहती है। तुमने तो प्रेम की नदी में पैर भी नहीं डुबोया है। तुम्हारी दृष्टि प्रेम के आनन्द में पगी ही नहीं है। गोपियाँ कहती हैं कि हम तो भोली-भाली अबला नारी हैं इसीलिए गुड़ से चिपक जाने वाली चींटियों की तरह श्रीकृष्ण के प्रेम में लिप्त हो गई हैं।

काव्य सौन्दर्य—(1) प्रेम से अछूते उद्धव पर गोपियाँ व्यंग्यात्मक प्रहार कर रही हैं। (2) अनुप्रास, रूपक अलंकार तथा ब्रजभाषा।

(2) ***हमारैं हरि हारिल की लकरी।***
मन क्रम वचन नंद-नंदन उर, यह दृढ़ करि पकरी।
जागत सोवत स्वप्न दिवस-निसि कान्ह-कान्ह जक री।
सुनत जोग लागत है ऐसौ, ज्यौं करुई ककरी।
सुतौ ब्याधि हमकौ लौ आए, देखी सुनी न करी।
यह तौ 'सूर' तिनहिं लै सौंपौ, जिनके मन चकरी॥

संदर्भ—पूर्ववत्।

प्रसंग—अपनी प्रेम भावना को प्रकट करते हुए यहाँ गोपियों ने कहा है कि हम श्रीकृष्ण के प्रेम के बिना जीवित नहीं रह सकती हैं।

भावार्थ—गोपियाँ उद्धव को बताती हैं कि हमारे लिए श्रीकृष्ण हारिल पक्षी की लकड़ी की तरह हैं। हम श्रीकृष्ण के प्रेम के बिना क्षण भर भी नहीं रह सकती हैं। हमने अपने मन, कर्म और वाणी से नन्द के पुत्र श्रीकृष्ण को अपने हृदय में जकड़कर स्थिर कर रखा है। यही कारण है कि हम जागते हुए, सोते समय और स्वप्नावस्था में श्रीकृष्ण के नाम की रट लगाए रहती हैं। हम उन्हें एक क्षण के लिए भी नहीं भूल पाती हैं। गोपियों को उद्धव का योग का सन्देश कड़वी ककड़ी जैसा लगता है। वे योग को स्वीकार करने को तैयार नहीं हैं। गोपियाँ कहती हैं कि उद्धव जो फेंकने योग्य योग का रोग है उसी को तुम हमारे लिए लेकर आ गए हो। यह योग हमने न तो कभी सुना है न कभी अपनाया है और न हमारे यहाँ किसी ने इसे स्वीकार किया है। इसलिए हम इसे नहीं अपना पायेंगी। सूरदास के शब्दों में गोपियों ने उद्धव से स्पष्ट कह दिया कि इसको तो तुम उनको जाकर दे दो जिनके मन चंचल, चलायमान हैं।

काव्य सौन्दर्य—(1) गोपियों का एकनिष्ठ प्रेम व्यक्त हुआ है। (2) गोपियाँ योग को फेंकने योग्य मानती हैं। (3) अनुप्रास, पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार तथा ब्रजभाषा का प्रयोग हुआ है।

2 राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद

—तुलसीदास

(1) ***नाथ संभुधनु भंजनिहारा। होइहि केउ एक दास तुम्हारा॥***
आयेसु काह कहिअ किन मोही। सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही॥
सेवकु सो जो करै सेवकाई। अरि करनी करि करिअ लराई॥
सुनहु राम जेहि सिवधनु तोरा। सहसबाहु सम सो रिपु मोरा॥
सो बिलगाउ बिहाइ समाजा। न त मारे जैहहिं सब राजा॥
सुनि मुनि बचन लखन मुसुकाने। बोले परसु धरहि अवमाने॥
बहु धनुही तोरी लरिकाईं। कबहुँ न असि रिस कीन्हि गोसाईं॥
येहि धनु पर ममता केहि हेतू। सुनि रिसाइ कह भृगुकुलकेतू॥
रे नृप बालक कालबस बोलत तोहि न सँभार।
धनुही सम त्रिपुरारि धनु विदित सकल संसार॥

Scanned with CamScanner

संदर्भ—यह पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक के *'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद'* नामक पाठ से लिया गया है। इसके कवि *तुलसीदास* हैं।

प्रसंग—सीता के स्वयंवर के समय शिव-धनुष के टूटने की सूचना पाते ही परशुराम क्रोध से भर उठे। उन्हें उग्र देखकर राम ने सादर निवेदन किया किन्तु लक्ष्मण ने व्यंग्य-प्रहार किया।

भावार्थ—परशुराम को क्रोधित देखकर राम बोले, हे नाथ! इस शिव-धनुष को तोड़ने वाला आपका कोई सेवक ही है, आप आज्ञा दीजिए। यह सुनते ही क्रोधी परशुराम ने कहा कि जो सेवक होता है वह तो सेवा का कार्य करता है। यह तो शत्रु का कार्य किया है इसलिए लड़ने को तैयार हो जाओ। हे राम! जिसने इस शिव-धनुष को तोड़ा है वह मेरा सहस्त्रबाहु की तरह शत्रु है। उसको इस समाज से चला जाना चाहिए नहीं तो उसके कारण ये सभी राजा मारे जायेंगे। मुनि परशुराम की यह बात सुनकर लक्ष्मण मुस्कराये और उन्हें अपमानित करते हुए बोले कि हमने बचपन में ऐसे अनेक छोटे-छोटे धनुष तोड़े हैं लेकिन हे स्वामी! आपने कभी ऐसा क्रोध नहीं किया। इस धनुष पर आपकी क्या ममता है, इसका कारण बताएँ। यह सुनते ही परशुराम और क्रोधित हो उठे और बोले हे राजपुत्र! तुम मृत्यु के वशीभूत हो इसलिए सँभलकर नहीं बोल रहे हो। सारी दुनिया जानती है कि शिवजी का यह धनुष कोई छोटा धनुष नहीं है।

काव्य सौन्दर्य—(1) क्रोधित परशुराम के प्रति राम का विनम्र उत्तर है किन्तु लक्ष्मण तीखे प्रहार करते हैं। (2) अनुप्रास, उपमा अलंकार तथा अवधी भाषा का प्रयोग हुआ है।

(2) *लखन कहा हँसि हमरे जाना। सुनहु देव सब धनुष समाना॥*
का छति लाभु जून धनु तोरे। देखा राम नयन के भोरें॥
छुअत टूट रघुपतिहु न दोसू। मुनि बिनु काज करिअ कत रोसू॥
बोले चितै परशु की ओरा। रे सठ सुनेहि सुभाउ न मोरा॥
बालकु बोलि बधौं नहिं तोही। केवल मुनि जड़ जानहि मोही॥
बाल ब्रह्मचारी अति कोही। बिस्वविदित क्षत्रियकुल द्रोही॥
भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्हीं। बिपुल बार महिदेवन्ह दीन्हीं॥
सहस्त्रबाहु भुज छेदनिहारा। परसु बिलोकु महीपकुमारा॥
मातु पितहिं जनि सोचबस करसि महीसकिसोर।
गर्भन्ह के अर्भक दलन परसु मोर अति घोर॥

संदर्भ—पूर्ववत्।

प्रसंग—यहाँ लक्ष्मण के व्यंग्यों और परशुराम के क्रोधपूर्ण कथनों के क्रम में दोनों के संवाद प्रस्तुत हैं।

भावार्थ—लक्ष्मण ने परशुराम से मुस्कराते हुए कहा कि हे देव! हमारे लिए तो छोटे-बड़े सभी धनुष एक समान हैं। इस पुराने धनुष के टूटने से क्या लाभ-हानि है। श्रीराम ने इसे नया समझकर देखा था यह तो उनके छूते ही टूट गया। इसमें राम का कोई दोष नहीं है। आप बिना किसी कारण के क्यों क्रोधित हो रहे हैं। लक्ष्मण की इस बात को सुनकर फरसे की ओर देखते हुए परशुराम बोले, अरे ! दुष्ट तुमने मेरे क्रोधी स्वभाव के बारे में नहीं सुना है। तुमको बालक जानकर मैं नहीं मार रहा हूँ। हे जड़ बुद्धि! तुम मुझे मुनि मात्र ही मत समझो। मैं बाल ब्रह्मचारी हूँ तथा अत्यधिक क्रोधी स्वभाव वाला हूँ। समस्त संसार जानता है कि मैं क्षत्रियों का विरोधी हूँ। मैंने अपनी भुजाओं के बल से समस्त पृथ्वी को अनेक बार राजाओं से रहित कर दिया है और कई बार इसको ब्राह्मणों को दे दिया है। सहस्त्रबाहु की भुजाओं को काटने वाला मैं ही हूँ। हे राजकुमार ! मेरे इस फरसे को ध्यानपूर्वक देख लो।

काव्य सौन्दर्य—(1) लक्ष्मण के कटु प्रहारों से आहत परशुराम की उग्र उक्तोतियाँ देखने योग्य हैं। (2) अनुप्रास अलंकार तथा अवधी भाषा का सौन्दर्य दर्शनीय है।

(3) *कहेउ लखन मुनि सीलु तुम्हारा। को नहि जान बिदित संसारा॥*
माता पितहि उरिन भए नीकें। गुररिनु रहा सोचु बड़ जी कें॥
सो जनु हमरेहि माथे काढ़ा। दिन चलि गये ब्याज बड़ बाढ़ा॥

Scanned with CamScanner

अब आनिअ ब्यवहरिआ बोली। तुरत देउँ मैं थैली खोली॥
सुनि कटु वचन कुठार सुधारा। हाय हाय सब सभा पुकारा॥
भृगुवर परसु देखाबहु मोही। बिप्र बिचारि बचौं नृपद्रोही॥
मिले न कबहुँ सुभट रन गाढ़े। द्विजदेवता घरहि के बाढ़े॥
अनुचित कहि सबु लोगु पुकारे। रघुपति सयनहि लखनु नेवारे॥
लखन उतर आहुति सरिस भृगुवरकोपु कृसानु।
बढ़त देखि जल सम बचन बोले रघुकुलभानु॥

संदर्भ—पूर्ववत्।

प्रसंग—लक्ष्मण के व्यंग्य से क्रोधित परशुराम ने फरसा सँभाला तो समस्त सभा हाय-हाय कर उठी। तब श्रीराम ने लक्ष्मण को संकेत से रोका।

भावार्थ—लक्ष्मण ने परशुराम से कहा कि मुनिवर आपके स्वभाव को कौन नहीं जानता है ? आप माता-पिता के कर्ज से तो अच्छी तरह मुक्त हो गए हैं। अब आप पर गुरु का ऋण रह गया है। उसी की चिन्ता आपको लगी है। वह मानो हमारे मत्थे ही लिखा था। बहुत दिन बीत गए हैं इसलिए ब्याज भी बहुत बढ़ गया होगा। अब किसी व्यापारी को हिसाब के लिए बुला लीजिए, मैं थैली खोलकर उसका भुगतान कर दूँगा। लक्ष्मण के कड़वे वचन सुनकर परशुराम ने अपना फरसा सँभाला। यह देखकर समस्त सभा हाय-हाय पुकारने लगी। लक्ष्मण ने कहा कि हे भृगु श्रेष्ठ! आप मुझे फरसा दिखा रहे हैं। मैं आपको ब्राह्मण समझकर बचा रहा हूँ। आपको युद्ध में कभी महायोद्धा नहीं मिले हैं। आप अपने घर में ही बढ़े हुए हैं। यह सुनकर सभी अनुचित है, अनुचित हैं पुकारने लगे। तब राम ने संकेत से लक्ष्मण को रोक दिया और परशुराम के क्रोध को बढ़ता हुआ देखकर जल के समान शीतल वचन कहे।

काव्य सौन्दर्य—(1) लक्ष्मण के व्यंग्य बाणों से परशुराम क्रोधित होकर फरसा सँभालते हैं। (2) राम लक्ष्मण को शान्त करते हैं। (3) अनुप्रास, उपमा अलंकार तथा मुहावरे युक्त अवधी भाषा का प्रयोग हुआ है।

3 सवैया/कवित्त

—देव

विशेष— *कोविड परिस्थितियों के चलते यह पाठ वार्षिक/बोर्ड परीक्षा 2022 के लिए बोर्ड द्वारा पाठ्यक्रम में से हटा दिया गया है।*

4 आत्मकथ्य

—*जयशंकर प्रसाद*

(1) *मधुप गुन-गुना कर कह जाता कौन कहानी यह अपनी,*
मुरझाकर गिर रहीं पत्तियाँ देखो कितनी आज घनी।
इस गंभीर अनंत-नीलिमा में असंख्य जीवन-इतिहास।
यह लो, करते ही रहते हैं अपना व्यंग्य-मलिन उपहास,
तब भी कहते हो-कह डालूँ दुर्बलता अपनी बीती।
तुम सुनकर सुख पाओगे, देखोगे—यह गागर रीती।

संदर्भ—प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक के *'आत्मकथ्य'* पाठ से लिया गया है। इसके कवि *जयशंकर प्रसाद* हैं।

प्रसंग—इसमें बताया गया है कि इस संसार में अनेक दु:खी करने वाली घटनाएँ हुई हैं उन्हें आत्मकथा में लिखना उचित नहीं है।

भावार्थ—कवि प्रसाद कहते हैं कि भौंरे गुंजार करके पता नहीं अपनी कौन-सी दु:खपूर्ण कथा सुनाना चाहते हैं। आज पता नहीं कितनी पत्तियाँ सूखकर डालियों से गिर रही हैं। इस असीमित नीले आसमान के

Scanned with CamScanner

नीचे कितने ही दुखद वृत्तान्त लिखे गए हैं, उन लिखने वालों का लोगों ने मजाक ही बनाया है। क्या तुम यह सब जानने पर भी मुझसे अपनी दुर्बलताओं का वर्णन आत्मकथा में करने को कहते हो। मेरी खाली गगरी जैसी जिन्दगी की आत्मकथा को पढ़कर क्या तुम सुखी होंगे।

काव्य सौन्दर्य—(1) नश्वर संसार दुःख से ही परिपूर्ण है इसलिए आत्मकथा लिखना व्यर्थ है। (2) अनुप्रास, रूपक अलंकार और शुद्ध खड़ी बोली का प्रयोग हुआ है।

(2) ***उज्ज्वल गाथा कैसे गाऊँ, मधुर चाँदनी रातों की।***
अरे खिल-खिला कर हँसते होने वाली उन बातों की।
मिला कहाँ वह सुख जिसका मैं स्वप्न देखकर जाग गया।
आलिंगन में आते-आते मुसक्या कर जो भाग गया।

संदर्भ—पूर्ववत्।

प्रसंग—कवि जयशंकर प्रसाद की प्रेमपूर्ण मधुर जीवन जीने की इच्छा के पूर्ण न हो पाने की पीड़ा यहाँ पर अभिव्यक्त हुई है।

भावार्थ—कवि प्रसाद कहते हैं कि मैंने अपने प्रिय के साथ जो सुखद समय बिताया था। चाँदनी रातों में मीठी-मीठी बातें करते-करते वह खिलखिलाकर हँसती थी उस सबका वर्णन किस प्रकार करूँ। मुझे मिठास भरा जीवन मिल ही नहीं पाया। जिस सुखद जीवन का स्वप्न मैंने देखा था वह तो मुझे प्राप्त होते-होते मुझसे दूर भाग गया।

काव्य सौन्दर्य—(1) प्रेममय जीवन के इच्छुक कवि का स्वप्न पूर्ण नहीं हो सका। (2) अनुप्रास अलंकार तथा साहित्यिक खड़ी बोली का प्रयोग हुआ है।

(3) ***छोटे से जीवन की कैसे बड़ी कथाएँ आज कहूँ ?***
क्या यह अच्छा नहीं कि औरों की सुनता मैं मौन रहूँ ?
सुनकर क्या तुम भला करोगे मेरी भोली आत्म-कथा ?
अभी समय भी नहीं, थकी सोई है मेरी मौन व्यथा।

संदर्भ—पूर्ववत्।

प्रसंग—सामान्य जीवन जीने वाले कवि प्रसाद जी कहते हैं कि मेरे जीवन की आत्मकथा लिखने की आवश्यकता ही नहीं है।

भावार्थ—कवि कहते हैं कि मेरा जीवन बहुत साधारण है। इसलिए आत्मकथा में अपनी प्रशंसा मैं कैसे करूँ। ऐसी स्थिति में यही उचित है कि मैं औरों की ही आत्मकथा सुनता रहूँ। मित्रो, मेरे भोले-भाले जीवन की सीधी-सादी आत्मकथा सुनकर तुम भला क्या करोगे ? अभी आत्मकथा लिखने का समय भी नहीं है। क्योंकि मेरे अन्तर की जो पीड़ा थी, थककर चुप हो गई है।

काव्य सौन्दर्य—(1) सामान्य जीवन जीने वाले प्रसाद जी अपने बारे में बढ़ा-चढ़ाकर लिखने में असमर्थ हैं। (2) अनुप्रास अलंकार तथा साहित्यिक खड़ी बोली का प्रयोग हुआ है।

5 उत्साह/अट नहीं रही है

—सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

उत्साह

(1) ***बादल, गरजो !***
घेर घेर घोर गगन, धराधर ओ ?
ललित ललित, काले घुँघराले,
बाल कल्पना के-से पाले,
विद्युत-छाँव उर में, कवि नवजीवन वाले,
वज्र छिपा, नूतन कविता

Scanned with CamScanner

फिर भर दो—
बादल, गरजो।

संदर्भ—यह पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक की '*उत्साह*' कविता से लिया गया है। इसके कवि सूर्यकांत *त्रिपाठी 'निराला'* हैं।

प्रसंग—यहाँ कवि बादलों से गर्ज-तर्ज कर घनघोर वर्षा करने के लिए कह रहे हैं।

भावार्थ—कवि कहते हैं कि हे बादलो ! तुम घनघोर गर्जना से समस्त आकाश को भर दो और सघन रूप में चारों ओर छा जाओ। तुम बच्चे की कल्पना की तरह विस्तृत बन जाओ और बिजली की सी सुन्दरता अपने हृदय में भरकर नवीन जीवन का संचार करने वाले बन जाओ। तुम अपने कठोर रूप को छिपा लो और नवीन कविता का वातावरण सभी ओर बना दो।

काव्य सौन्दर्य—(1) कवि बादलों से वर्षा करने का आग्रह करते हैं जिससे नए जीवन का संचार हो। (2) अनुप्रास, पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार और शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली का प्रयोग हुआ है।

(2) *विकल विकल, उन्मन थे उन्मन*
विश्व के निदाघ के सकल जन,
आए अज्ञात दिशा से अनंत के घन ?
तप्त धरा, जल से फिर
शीतल कर दो—
बादल, गरजो।

संदर्भ—पूर्ववत्।

प्रसंग—यहाँ कवि ने गर्मी से व्याकुल संसार को शीतलता प्रदान करने का आग्रह किया है।

भावार्थ—तीव्र गर्मी के कारण संसार के सभी प्राणी बहुत बैचेन तथा परेशान हैं। ऐसी हालत में बादल आ जाओ और तेज ताप से तपती हुई धरती को ठण्डी कर दो। तुम घनघोर गर्जना करते हुए तेज वर्षा करो।

काव्य सौन्दर्य—(1) भीषण ताप से व्याकुल संसार को शीतल करने के लिए बादलों से बरसने का आग्रह किया गया है। (2) अनुप्रास, पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार और शुद्ध खड़ी बोली का प्रयोग हुआ है।

अट नहीं रही है

(1) *कहीं साँस लेते हो,*
घर-घर भर देते हो,
उड़ने को नभ में तुम
पर-पर कर देते हो,
आँख हटाता हूँ तो
हट नहीं रही है।

संदर्भ—यह पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक की '*अट नहीं रही है*' कविता से लिया गया है। इसके कवि *सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'* हैं।

प्रसंग—इस पद्यांश में फाल्गुन के सुगन्ध भरे मनमोहक वातावरण का आकर्षक चित्रण हुआ है।

भावार्थ—कवि फाल्गुन से कहते हैं कि तुम जहाँ भी साँस लेते हो वहाँ प्रत्येक घर को सुगन्ध से भर देते हो। इस मदमस्त वातावरण में सभी का मन होता है कि उनके पंख लग जाएँ और वे आकाश में विचरण करें। फाल्गुन में प्रकृति की सुन्दरता से आँख हटती ही नहीं है।

काव्य सौन्दर्य—(1) आनन्द और सुगन्ध से मदमाते फाल्गुन मास का सुन्दर चित्रण हुआ है। (2) अनुप्रास तथा पुनरुक्तिप्रकाश अलंकारों और साहित्यिक खड़ी बोली का प्रयोग किया गया है।

Scanned with CamScanner

6 यह दंतुरित मुसकान/फसल

–नागार्जुन

विशेष– *कोविड परिस्थितियों के चलते यह पाठ वार्षिक/बोर्ड परीक्षा 2022 के लिए बोर्ड द्वारा पाठ्यक्रम में से हटा दिया गया है।*

7 छाया मत छूना

–गिरिजाकुमार माथुर

(1) *छाया मत छूना*
मन, होगा दुख दूना।
जीवन में हैं सुरंग सुधियाँ सुहावनी
छवियों की चित्र-गंध फैली मनभावनी;
तन-सुगंध शेष रही, बीत गई यामिनी,
कुंतल के फूलों की याद बनी चाँदनी।
भूली-सी एक छुअन बनता हर जीवित क्षण–
छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना।

संदर्भ–यह पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक में संकलित *'छाया मत छूना'* कविता से लिया गया है। इसके कवि *गिरिजाकुमार माथुर* हैं।

प्रसंग–यहाँ कवि पुरानी यादों में पड़ने के लिए मना कर रहे हैं क्योंकि ये यादें अच्छी तो लगती हैं परन्तु इनके कारण वर्तमान का दु:ख और गहरा हो जाता है।

भावार्थ–कवि कहते हैं कि बीते समय की सुखद यादों की दुविधा में मत पड़ना, नहीं तो इन सुख देने वाली यादों से वर्तमान दु:ख दोगुना हो जाएगा। अतीत में जिनके साथ पल बिताए थे उनके शरीर की सुगन्ध का अनुभव होगा। जिस चाँदनी रात में प्रिय से मिलन हुआ था वह तो समाप्त हो गई, अब मात्र उसकी स्मृति की गन्ध है। उस समय चाँदनी रात में चन्द्रमा बालों में जो फूल लगे थे उनकी याद दिला रहा है। हमारे जीवन का वर्तमान समय जैसे-जैसे बीतता जाता है वह पुरानी यादें बनता जाता है। इसको याद करने से दु:ख ही महसूस होता है। इसकी याद से वर्तमान का दुख और ज्यादा हो जायेगा।

काव्य सौन्दर्य–(1) पुरानी यादें वर्तमान दुख को बढ़ाती हैं इसलिए इन्हें भूल जाना चाहिए।
(2) अनुप्रास अलंकार तथा साहित्यिक खड़ी बोली का प्रयोग हुआ है।

(2) *यश है न वैभव है, मान है न सरमाया;*
जितना ही दौड़ा तू उतना ही भरमाया।
प्रभुता का शरण-बिंब केवल मृगतृष्णा है,
हर चंद्रिका में छिपी एक रात कृष्णा है।
जो है यथार्थ कठिन उसका तू कर पूजन–
छाया मत छूना
मन, होगा दु:ख दूना।

संदर्भ–पूर्ववत्।

प्रसंग–यहाँ बताया गया है कि सांसारिक ख्याति, धन-दौलत, मान-प्रतिष्ठा आदि भ्रम मात्र हैं इसलिए इनके पीछे दौड़ना व्यर्थ है।

भावार्थ–प्रसिद्धि, सम्पन्नता, सम्मान, धन-दौलत आदि के पीछे व्यक्ति जितना अधिक दौड़ता है वह उतना ही भ्रमित होता है। इस संसार में बड़प्पन का अहसास भी एक भ्रम है क्योंकि प्रत्येक चाँदनी रात के बाद काली रात्रि आती है। इसलिए जो कठोर वास्तविकता है उसे स्वीकार कर लेना चाहिए। अतीत की सुखद यादों के भ्रम में पड़ना ठीक नहीं है।

Scanned with CamScanner

काव्य सौन्दर्य—(1) सांसारिक यश, वैभव, मान, प्रतिष्ठा आदि व्यर्थ हैं। इनके लिए परेशान होना ठीक नहीं है। क्योंकि सुख-दु:ख तो आते-जाते रहते हैं। (2) अनुप्रास अलंकार एवं साहित्यिक भाषा का प्रयोग हुआ है।

8 कन्यादान

—ऋतुराज

(1) ***कितना प्रामाणिक था उसका दुख***
लड़की को दान में देते वक्त
जैसे वही उसकी अंतिम पूँजी हो।

संदर्भ—यह पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक में संकलित *'कन्यादान'* कविता से अवतरित है। इसके रचनाकार *ऋतुराज* हैं।

प्रसंग—इसमें भावुकता के साथ ही माँ के जीवन के अनुभवों का दर्द भी व्यक्त किया गया है। यहाँ माँ की मानसिक स्थिति का चित्रण हुआ है।

भावार्थ—लड़की का कन्यादान करते समय उसकी माँ की पीड़ा प्रामाणिक थी। वह लड़की ही उसके जीवन की अन्तिम पूँजी है। माँ के सुख-दु:ख की सर्वाधिक निकट की साथी बेटी ही होती है इसीलिए वह उसकी अन्तिम पूँजी है।

काव्य सौन्दर्य—(1) कन्यादान के समय माँ की मन:स्थिति का स्वाभाविक अंकन हुआ है। (2) सहज, स्वाभाविक शैली तथा साहित्यिक भाषा का प्रयोग हुआ है।

(2) ***माँ ने कहा पानी में झाँककर***
अपने चेहरे पर मत रीझना
आग रोटियाँ सेंकने के लिए है
जलने के लिए नहीं
वस्त्र और आभूषण शाब्दिक भ्रमों की तरह
बंधन हैं स्त्री जीवन के।

संदर्भ—पूर्ववत्।

प्रसंग—इसमें कन्यादान के समय माँ अपनी बेटी को समझाती है। इस शिक्षा में परम्परागत आदर्श न होकर यथार्थ सत्य उजागर किया गया है।

भावार्थ—कन्यादान के समय माँ अपनी बेटी को समझाती है कि तुम अपनी सुन्दरता पर मुग्ध मत होना। सौन्दर्य अस्थायी है, तुम कोमल तथा नाजुक मत बनना क्योंकि स्त्री के जीवन में मजबूती आवश्यक है। वह बताती है कि आग रोटियाँ सेंकने के लिए होती है, शरीर जलाने के लिए नहीं। तुम्हें जलाने का प्रयास किया जाए तो डटकर विरोध करना। माँ बेटी को सावधान करती है कि तुम वस्त्रों और गहनों के आकर्षण में मत बँधना। ये स्त्री जीवन के बन्धन हैं।

काव्य सौन्दर्य—(1) माँ अपनी बेटी को जीवन के कटु सत्य से परिचित करा रही है। (2) सरल, सुबोध भाषा का प्रयोग हुआ है।

9 संगतकार

—मंगलेश डबराल

***विशेष**—कोविड परिस्थितियों के चलते यह पाठ वार्षिक/बोर्ड परीक्षा 2022 के लिए बोर्ड द्वारा पाठ्यक्रम में से हटा दिया गया है।*

Scanned with CamScanner

अध्याय 3

काव्य खण्ड पर आधारित महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

1 पद

प्रश्न 1. गोपियों द्वारा उद्धव को भाग्यवान कहने में क्या व्यंग्य निहित है ?

उत्तर—उद्धव श्रीकृष्ण के पास रहते हुए भी उनसे प्रेम नहीं कर सके हैं इसलिए गोपियों को वे भाग्यहीन लगते हैं। यही व्यंग्य भाग्यवान कहने में व्यक्त है। विपरीत लक्षण से भाग्यवान का अर्थ भाग्यहीन है।

प्रश्न 2. गोपियों ने किन-किन उदाहरणों के माध्यम से उद्धव को उलाहने दिए हैं ?

उत्तर—गोपियों ने कमल के पत्तों, तेल की गागर, कड़वी ककड़ी आदि उदाहरणों से उद्धव को उलाहने दिए हैं। वे कृष्ण से प्रेम न कर पाने वाले उद्धव को भाग्यहीन मानती हैं।

प्रश्न 3. उद्धव द्वारा दिए गए योग के संदेश ने गोपियों की विरहाग्नि में घी का काम कैसे किया ?

उत्तर—श्रीकृष्ण के लौटने की आशा कर रही गोपियों को जब उद्धव ने योग का संदेश दिया तथा श्रीकृष्ण के प्रेम को भूल जाने की बात कही तो गोपियों की विरह की आग धधक उठी। वे बैचेन हो उठीं। इस तरह उद्धव के योग के संदेश ने गोपियों की विरह की आग में घी का काम किया।

प्रश्न 4. 'मरजादा न लही' के माध्यम से कौन-सी मर्यादा न रहने की बात की जा रही है ?

उत्तर—प्रेम की मर्यादा है कि प्रेम के बदले प्रेम किया जाना चाहिए। किन्तु श्रीकृष्ण गोपियों में प्रेम भाव जगाकर स्वयं मथुरा चले गए। वहाँ से उन्होंने जिन उद्धव को भेजा उन्होंने योग का संदेश दिया, कृष्ण के लौटने या उन्हें याद करने की बात ही नहीं की। इससे स्पष्ट है कि श्रीकृष्ण ने प्रेम की मर्यादा का पालन नहीं किया उसी को 'मरजादा न लही' कहा गया है।

प्रश्न 5. कृष्ण के प्रति अपने अनन्य प्रेम को गोपियों ने किस प्रकार अभिव्यक्त किया है ?

उत्तर—गोपियों ने श्रीकृष्ण के प्रति अपने प्रेम को गुड़ में लिप्त चीटियों के और हारिल पक्षी की लकड़ी के उदाहरणों द्वारा अभिव्यक्त किया है। वे जागते, सोते या स्वप्न में कृष्ण का नाम जपती हैं। वे कृष्ण से एकनिष्ठ भाव से प्रेम करती हैं।

प्रश्न 6. गोपियों ने उद्धव से योग की शिक्षा कैसे लोगों को देने की बात कही है ?

उत्तर—गोपियों ने उद्धव से योग की शिक्षा चंचल मन वाले लोगों को देने की बात कही है। जिनका मन कभी कहीं और कभी कहीं रहता हो उन्हें योग की शिक्षा दी जानी चाहिए जिससे उनकी चंचलता समाप्त हो सके। गोपियाँ कहती हैं कि हमारा मन तो श्रीकृष्ण के प्रेम में एकनिष्ठ है, वह चंचल नहीं है। इसलिए हमारे लिए योग व्यर्थ है।

प्रश्न 7. गोपियों के अनुसार राजा का धर्म क्या होना चाहिए ?

उत्तर—गोपियों के अनुसार राजा का धर्म प्रजा के हित का पूरा ध्यान रखना होना चाहिए। प्रजा को किसी प्रकार से नहीं सताया जाना चाहिए। राजा का दायित्व प्रजा की भलाई का ध्यान रखना है।

प्रश्न 8. गोपियों को कृष्ण में ऐसे कौन-से परिवर्तन दिखाई दिए जिनके कारण वे अपना मन वापस पा लेने की बात कहती हैं ?

उत्तर—गोपियों को श्रीकृष्ण में कई परिवर्तन दिखे जिनके कारण वे अपना मन वापस लेने की बात कहती हैं। (1) उन्हें आशा थी कि श्रीकृष्ण अवश्य लौटेंगे किन्तु वे नहीं लौटे। (2) योग का संदेश भेजा और प्रेम को भूलने की बात कही है। (3) उन्होंने छल-कपट की राजनीति करना सीख लिया है। (4) वे प्रेम की मर्यादा को भूल गए हैं। इसीलिए वे अपने मन को वापिस लेने की बात कहती हैं।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 9. गोपियों ने अपने वाक्चातुर्य के आधार पर ज्ञानी उद्धव को परास्त कर दिया, उनके वाक्चातुर्य की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर—गोपियों का वाक्चातुर्य अनोखा है—वे उद्धव को भाग्यहीन कहना चाहती हैं पर भाग्यवान कहती हैं क्योंकि वे कृष्ण के पास रहकर भी प्रेम के आनन्द से अछूते रहते हैं। वे सटीक उदाहरण देती हैं—पानी में रहने वाले कमल के पत्ते पर पानी का न ठहरना, तेल की गगरी पर पानी की बूँद न होना आदि। वे प्रेम की मर्यादा को भूलने, राजनीति करने आदि के तीखे प्रहार करती हैं। अपने दृढ़ प्रेम की बात कहते हुए योग के उपदेश चंचल मन वालों को भेजने की बात कहती हैं। उन्होंने योग को कड़वी ककड़ी के समान त्याज्य कहा है। वे राजधर्म का भी ध्यान दिलाती हैं।

प्रश्न 10. उद्धव ज्ञानी थे, नीति की बातें जानते थे; गोपियों के पास ऐसी कौन-सी शक्ति थी जो उनके वाक्चातुर्य से मुखरित हो उठी ?

उत्तर—उद्धव बुद्धिमान, ज्ञानवान तथा नीति निपुण थे। गोपियाँ भोली-भाली सरल निर्बल स्त्रियाँ थीं। शिक्षा-दीक्षा, ज्ञान आदि के न होते हुए भी उनके पास एक ऐसी शक्ति थी जो उनकी शक्ति बनी। वह शक्ति उनका श्रीकृष्ण के प्रति निश्छल, निर्मल तथा एकनिष्ठ प्रेम है। एकनिष्ठ प्रेम की शक्ति ही उनके वाक्चातुर्य से मुखरित हो उठी। उनके तर्कों के सामने ज्ञानी उद्धव की एक न चली। वे परास्त हो गए।

प्रश्न 11. गोपियों ने यह क्यों कहा कि हरि अब राजनीति पढ़ आए हैं ? क्या आपको गोपियों के इस कथन का विस्तार समकालीन राजनीति में नजर आता है, स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—गोपियों ने 'हरि' अब राजनीति पढ़ आए हैं इसलिए कहा है कि राजनीति में छल-कपट आदि का सहारा लिया जाता है श्रीकृष्ण स्वयं तो लौटे नहीं बल्कि उन्होंने संदेशवाहक उद्धव द्वारा गोपियों को प्रेम को भूल जाने का संदेश भिजवाया। समकालीन राजनीति में भी माध्यम ही अधिक काम करते हैं। छल-कपट का सहारा भी आज की राजनीति में लिया जाता है। इस तरह समकालीन भ्रष्ट राजनीति की झलक इसमें साफ दिखाई देती है।

2 राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद

प्रश्न 1. परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष टूट जाने के लिए कौन-कौन से तर्क दिए ?

उत्तर—परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष टूट जाने के लिए निम्नांकित तर्क दिए—

(1) राम का धनुष के टूटने में कोई दोष नहीं है। उन्होंने जैसे ही इसे छुआ वैसे ही टूट गया। (2) राम ने इस धनुष को नया समझा था किन्तु यह पुराना तथा जर्जर था इसलिए टूट गया। (3) लक्ष्मण ने कहा कि बचपन में हमने ऐसी अनेक धनुहियाँ तोड़ी थीं तब तो आप नाराज नहीं हुए थे। (4) इस धनुष के टूटने से कोई लाभ या हानि नहीं है इसलिए इस पर नाराज होने की आवश्यकता नहीं है।

प्रश्न 2. परशुराम के क्रोध करने पर राम और लक्षण की जो प्रतिक्रियाएँ हुईं उनके आधार पर दोनों के स्वभाव की विशेषताएँ अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर—परशुराम के क्रोध करने पर राम और लक्ष्मण की जो प्रतिक्रियाएँ हुईं हैं उनके आधार पर दोनों का स्वभाव अलग-अलग है। राम विनम्र, धैर्यवान तथा मधुर वाणी में उत्तर देते हैं। वे परशुराम से कहते हैं कि धनुष को तोड़ने वाला कोई आपका दास ही होगा। वे परशुराम को अधिक उत्तेजित देखकर संकेत से लक्ष्मण को रोकते हैं और परशुराम जी के क्रोध को शान्त करने का प्रयास करते हैं। किन्तु लक्ष्मण का स्वभाव उग्र तथा तीखा है। वे धनुष के टूटने को सामान्य बात मानते हैं तथा परशुराम के क्रोधित होने को निरर्थक। वे परशुराम को उत्तेजित करने वाले व्यंग्यात्मक उत्तर देते हैं। उनके कथन सभा के लोगों को भी अनुचित लगते हैं।

प्रश्न 3. लक्ष्मण ने वीर योद्धा की क्या-क्या विशेषताएँ बताईं ?

उत्तर—लक्ष्मण ने वीर योद्धा की निम्न विशेषताएँ बताई—

(1) वीर कभी अपनी वीरता का वर्णन नहीं करते।

(2) वीर योद्ध युद्ध स्थल में अपनी वीरता का प्रमाण देते हैं।

Scanned with CamScanner

(3) वीर योद्धा विनम्र, धैर्यवान तथा गम्भीर होते हैं।

(4) वीर कभी भी अपने ऊपर अभिमान नहीं करते हैं।

(5) वीरों में दूसरों के प्रति आदर, सम्मान का भाव होता है।

प्रश्न 4. साहस और शक्ति के साथ विनम्रता हो तो बेहतर है। इस कथन पर अपने विचार लिखिए।

उत्तर—वीर पुरुष में साहस और शक्ति का होना आवश्यक है। यदि उनके साथ विनम्रता भी हो तो सोने पर सुहागा है। विनम्रता, धैर्य, संयम तथा गम्भीरता का परिचय देती है। विनम्र व्यवहार दूसरों को प्रसन्न करने के साथ-साथ स्वयं को भी आनन्द की अनुभूति कराता है। इससे कटु विरोधी भी झुक जाते हैं। विनम्रता व्यक्ति के कार्यों को सरल तथा सहज बनाती है। इसलिए साहस और शक्ति के साथ विनम्रता हो तो बेहतर है।

प्रश्न 5. भाव स्पष्ट कीजिए—

(क) *बिहसि लखनु बोले मृदुबानी। अहो मुनीसु महाभट मानी।*
पुनि-पुनि मोहि देखाव कुठारू। चहत उड़ावन फूँकि पहारू॥

(ख) *इहाँ कुम्हड़बतिया कोउ नाहीं। जे तरजनी देखि मरि जाहीं।*
देखि कुठारु सरासन बाना। मैं कछु कहा सहित अभिमाना॥

उत्तर—(क) इन पंक्तियों के द्वारा लक्ष्मण परशुराम के स्वभाव पर तीखा व्यंग्य करते हैं। वे मुस्कुराते हुए कहते हैं कि आप बार-बार फरसे को दिखाकर डराना चाहते हैं। आपका यह व्यवहार ऐसा है कि जैसे आप फूँक से पर्वत को उड़ाना चाह रहे हों।

(ख) इन पंक्तियों में लक्ष्मण परशुराम से कहते हैं कि हम कोई कुम्हड़ (काशीफल) के छोटे से फूल नहीं हैं जो तरजनी को देखते ही मर जाएँ अर्थात् हममें वीरता, साहस और धैर्य है। हम कायर या कमजोर नहीं हैं, जो तुम्हारे फरसे से डर जाएँ। तुम्हारे फरसे और धनुष-बाण को देखकर स्वाभिमानपूर्वक कहता हूँ कि हमें उनका कोई भय नहीं है।

प्रश्न 6. राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद में व्यंग्य का अनूठा सौन्दर्य है। उदाहरण के साथ लिखिए।

उत्तर—रामचरितमानस के बालकाण्ड में राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद में व्यंग्य काव्य का अद्भुत सौन्दर्य विद्यमान है। धनुष टूटने पर क्रोधित परशुराम से लक्ष्मण व्यंग्य में कहते हैं—

बहु धनुही तोरी लरिकाई।
कबहुँ न असि रिस कीन्हि गोसाईं॥

इसके उत्तर में परशुराम उग्र हो उठते हैं और कहते हैं—

रे नृप बालक काल बस बोलत तेहि न सँभार।
धनुही सम त्रिपुरारि धनु बिदित सकल संसार॥

इन व्यंग्यों में चुटीलापन, तीखापन तथा आकर्षण भरा है। ये व्यंग्य पाठक के हृदय को चमत्कृत करने के साथ-साथ आनन्दित कर देते हैं। ये संवाद के अनूठे उदाहरण हैं।

प्रश्न 7. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार पहचान कर लिखिए—

(क) *बालकु बोलि बधौं नहिं तोही।*

(ख) *कोटि कुलिस सम बचनु तुम्हारा।*

(ग) *तुम तो कालु हाँकि जनु लावा।*
बार-बार मोहि लागि बुलावा॥

उत्तर—(क) अनुप्रास अलंकार, **(ख)** अनुप्रास अलंकार तथा उपमा अलंकार, **(ग)** उत्प्रेक्षा अलंकार तथा पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार।

प्रश्न 8. "सामाजिक जीवन में क्रोध की जरूरत बराबर पड़ती है। यदि क्रोध न हो तो मनुष्य दूसरे के द्वारा पहुँचाए जाने वाले बहुत से कष्टों की चिर-निवृत्ति का उपाय ही न कर सके।"

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी का यह कथन इस बात की पुष्टि करता है कि क्रोध हमेशा नकारात्मक भाव लिए नहीं होता बल्कि कभी सकारात्मक भी होता है। इसके पक्ष या विपक्ष में अपना मत प्रकट कीजिए।

Scanned with CamScanner

उत्तर—क्रोध के सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों पक्ष होते हैं—

सकारात्मक पक्ष—व्यक्ति को क्रोध तब आता है जब कोई अनुचित कार्य हो। अनुचित कार्यों को चुपचाप सहन कर लेना व्यक्ति तथा समाज दोनों के लिए हानिकारक है। क्योंकि इससे गलत प्रवृत्तियों को बढ़ावा मिलता है। इसलिए अनुचित के प्रति क्रोध आना स्वाभाविक है। क्रोध के द्वारा उसे उचित पर लाना चाहिए। अनुचित का विरोध होगा तो गलत कार्य रुकेंगे तथा समाज का हित होगा। सात्विक क्रोध सकारात्मक होता है।

नकारात्मक पक्ष—क्रोध आने से व्यक्ति अपना विवेक तथा संयम खो बैठता है। उसमें अभिमान तथा गर्व का भाव जाग उठता है। क्रोध से विवेकहीन हो जाने पर उचित-अनुचित का भी ज्ञान नहीं रहता है। क्रोध से व्यक्ति की बुद्धि विकृत हो जाती है। उसमें नकारात्मकता आ जाती है। क्रोध से कार्यक्षमता क्षीण होती है।

प्रश्न 9. उन घटनाओं को याद करके लिखिए जब आपने अन्याय का प्रतिकार किया हो।

उत्तर—मैं बाजार जा रहा था। मैंने देखा कि दो आवारा लड़के रास्ते जाती लड़की को छेड़ रहे थे। लड़की डर के मारे किनारे पर चल रही थी। तभी उनमें से एक ने उसे धक्का मारकर गिरा दिया। यह देखते ही मेरा खून खौल उठा और मैंने धक्का देने वाले मजनू को दबोच लिया। मेरी चिल्लाहट सुनकर दूसरा सकपकाने लगा। मैंने उसकी धुनाई शुरू कर दी। तब तक लड़की खड़ी हो गई थी। वह भी आ गई तथा हिम्मत जुटाकर दूसरे लड़के पर टूट पड़ी। वे दोनों हाथ जोड़ने लगे, माफी माँगने लगे। तभी पुलिस वाले आ गए। हमने उन दोनों को उन्हें सौंप दिया। लड़की बार-बार धन्यवाद दे रही थी।

प्रश्न 10. अवधी भाषा आज किन-किन क्षेत्रों में बोली जाती है ?

उत्तर—अवधी भाषा आज भी उत्तर प्रदेश के पूर्वी जिलों में बोली जाती है। अयोध्या, उन्नाव, लखनऊ, रायबरेली, सुल्तानपुर, प्रयागराज, हरदोई, सीतापुर, लखीमपुर, कौशाम्बी, प्रतापगढ़, गोंडा, बस्ती, श्रावस्ती आदि जिलों में अवधी बोली जाती है।

3 सवैया/कवित्त

***विशेष**—कोविड परिस्थितियों के चलते यह पाठ वार्षिक/बोर्ड परीक्षा 2022 के लिए बोर्ड द्वारा पाठ्यक्रम में से हटा दिया गया है।*

4 आत्मकथ्य

प्रश्न 1. कवि आत्मकथा लिखने से क्यों बचना चाहते हैं ?

उत्तर—कवि जयशंकर प्रसाद के मित्रों ने उनसे आत्मकथा लिखने को कहा परन्तु वे राजी नहीं हुए। उनके अनुसार उनका जीवन साधारण रहा है उन्होंने कोई महान कार्य नहीं किया है जिसका उल्लेख आत्मकथा में किया जाए। उनका जीवन दु:खों और आघातों से पूर्ण रहा है इसलिए आत्मकथा लिखकर वे उन दु:खों को याद नहीं करना चाहते हैं।

प्रश्न 2. आत्मकथा सुनाने के संदर्भ में 'अभी समय भी नहीं' कवि ऐसा क्यों कहता है ?

उत्तर—'आत्मकथा' कविता से स्पष्ट होता है कि जयशंकर प्रसाद बहुत ही सरल तथा विनम्र स्वभाव वाले थे। उन्हें दिखावा पसन्द न था। इसलिए 'अभी समय भी नहीं' कहने का एक कारण तो यह है कि उन्होंने कोई महान कार्य नहीं किया है जिसका उल्लेख अपनी आत्मकथा में करें। अन्य कारण यह हो सकता है कि उनका जीवन दु:खों और आपदाओं से पूर्ण है। इन आपदाओं से छुटकारा मिले तो आत्मकथा के बारे में सोचें वे दु:खों को याद नहीं करना चाहते हैं।

प्रश्न 3. स्मृति को पाथेय बनाने से कवि का क्या आशय है ?

उत्तर—कवि प्रसाद जी के दु:ख भरे जीवन में कुछ स्मृतियाँ ऐसी रहीं हैं जो उन्हें प्रेरणा, ऊर्जा तथा जीवन्तता प्रदान करती रहीं। वे स्मृतियाँ उनकी अपनी सम्पत्ति रहीं, वे उन्हें उजागर नहीं करना चाहते हैं। जो प्रिय

Scanned with CamScanner

के साथ मधुर रातें व्यतीत हुईं जिनमें उन्होंने खिल-खिलाकर हँसते हुए वार्तालाप किया वह उन्हें आज भी याद है। ऐसी यादें ही उनके भावी जीवन की पाथेय, सहारा हैं। उन्हीं के सहारे अपना जीवन पथ सरस बनाना चाहते हैं।

प्रश्न 4. भाव स्पष्ट कीजिए—

(क) ***मिला कहाँ वह सुख जिसका मैं स्वप्न देखकर जाग गया।***
आलिंगन में आते-आते मुसक्या कर जो भाग गया॥

(ख) ***जिसके अरुण कपोलों की मतवाली सुन्दर छाया में।***
अनुरागिनी उषा लेती थी निज सुहाग मधुमाया में॥

उत्तर—(क) कवि ने जितने सुख पाने का स्वप्न देख रखा था अर्थात् वे जितना आनन्द पाने के इच्छुक थे। वह उन्हें नहीं मिल सका। बहुत बार तो ये सुखद स्थितियाँ मिलते-मिलते रह गईं, अर्थात् प्राप्त होते-होते चली गईं।

(ख) कवि की प्रिया के लाल गाल अत्यन्त सुन्दर तथा मदमस्त बनाने वाले थे। उसके मधुर गालों की मदमस्त बनाने वाली ललाई से ही प्रेममयी भोर अपने सौभाग्य के सिन्दूर की लाली लेती थी।

प्रश्न 5. ''उज्ज्वल गाथा कैसे गाऊँ मधुर चाँदनी रातों की'' कथन के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है ?

उत्तर—इस कथन के माध्यम से कवि प्रसाद कहना चाहते हैं कि मधुर चाँदनी रात में मैंने प्रिय के साथ जो पल बिताए थे वह मेरी निजी सम्पत्ति हैं। उसका कथन सबके लिए नहीं किया जा सकता है। इसलिए आत्मकथा में ये सभी बातें नहीं कही जा सकती हैं। वे स्मृतियाँ मेरी प्रेरक हैं। मुझे उनसे प्रेरणा मिलती है।

प्रश्न 6. 'आत्मकथ्य' कविता की काव्यभाषा की विशेषताएँ उदाहरण सहित लिखिए।

उत्तर—'आत्मकथ्य' छायावाद के जनक जयशंकर प्रसाद की कविता है। इसकी भाषा में तत्सम शब्द प्रधान शब्दावली का प्रयोग हुआ है। कवि ने प्रकृति के विभिन्न उपमानों का सटीक प्रयोग किया है। जैसे मधुर पत्तियाँ, अनन्त नीलिमा, चाँदनी रात इत्यादि। इसके साथ ही बिम्ब, प्रतीकों तथा रीति का सहज प्रयोग हुआ है। इसकी भाषा में भावों को प्रकट करने की अद्‌भुत शक्ति है।

प्रश्न 7. कवि ने जो सुखद स्वप्न देखा था उसे कविता में किस रूप में अभिव्यक्त किया है ?

उत्तर—कवि प्रसाद जी ने जो सुख के स्वप्न संजोए थे वे उन्हें प्राप्त नहीं हो सके। इस तरह वे स्वप्न अधूरे ही रह गए। फिर भी उन सुख के स्वप्नों की स्मृति उनके हृदय में आज भी मौजूद है। कवि उन्हें भूल नहीं पा रहे हैं वे सुख के स्वप्न देख रहे थे किन्तु जब उन्होंने उन्हें पाने को बाँहें फैलाईं तो नींद टूट गई और स्वप्न चूर-चूर हो गए। इस कविता में सुख के स्वप्न की मधुर स्मृतियों को अंकित किया गया है।

प्रश्न 8. इस कविता के माध्यम से प्रसाद जी के व्यक्तित्व की जो झलक मिलती है, उसे अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर—'आत्मकथ्य' कविता से प्रसाद जी की जो झलक मिलती है, वह बहुत प्रभावित करती है। जयशंकर प्रसाद विनम्र तथा सरल स्वभाव के थे। वे जो थे उसी को दिखाने में विश्वास करते थे। बढ़-चढ़कर दिखाने का स्वभाव उनमें न था। उन्हें जीवन में सुख नहीं मिल सका। उन्होंने जीवन के जो सुखद स्वप्न देखे थे वे अधूरे ही रह गए। किन्तु जो प्रेम और माधुर्य के क्षण उनके जीवन में रहे, उन्हें वे अपनी स्मृति में रखकर उनसे प्रेरणा पाना चाहते हैं।

प्रश्न 9. आप किन व्यक्तियों की आत्मकथा पढ़ना चाहेंगे और क्यों ?

उत्तर—हम उन व्यक्तियों की आत्मकथा पढ़ना चाहेंगे जिन्होंने अपनी साधना से विशेष पहचान बनाई हो। उन्होंने समाज तथा देश के लिए सराहनीय कार्य किया हो। यह आवश्यक नहीं है कि वे बड़े या महान रहे हों किन्तु उनका जीवन प्रेरणा देने वाला होना चाहिए। बहुत बार साधारण व्यक्ति भी अपनी लगन से उत्कृष्ट कार्य कर देते हैं। प्रेरणा देने वाली आत्मकथा पढ़ना हमारे लिए हितकर होगा।

Scanned with CamScanner

5 उत्साह/अट नहीं रही है

उत्साह

प्रश्न 1. कवि बादल से फुहार, रिमझिम या बरसने के स्थान पर 'गरजने' के लिए कहता है, क्यों ?

उत्तर—कवि निराला ने बादल से फुहार, रिमझिम या बरसने की न कहकर गरजने के लिए कहा है। क्योंकि बादलों के गर्जन में क्रान्ति के उत्साह का उद्‌बोधन छिपा है। सामाजिक क्रान्ति लाने के लिए इसी गर्जन की आवश्यकता है। विनम्रता या शालीनता से क्रान्ति सम्भव नहीं और बिना क्रान्ति के परिवर्तन सम्भव नहीं है। बादलों की गर्जना से सारा समाज जागरूक हो जाता है इसीलिए बादलों से गरजने के लिए कहा गया है।

प्रश्न 2. कविता का शीर्षक 'उत्साह' क्यों रखा गया है ?

उत्तर—सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' को बादल बहुत प्रिय रहे हैं। वे उन्हें क्रान्ति, नवचेतना के दूत मानते हैं। क्रान्ति या चेतना बिना उत्साह के सम्भव नहीं हैं। इसीलिए कवि ने कविता का शीर्षक उत्साह रखा है। वैसे भी बादलों की गर्जन उत्साहवर्द्धक होती है। बादलों की गर्जना से लोगों में उत्साह का संचार हो जाता है।

प्रश्न 3. कविता में बादल किन-किन अर्थों की ओर संकेत करता है ?

उत्तर—'उत्साह' कविता में बादल कई अर्थों की ओर संकेत करता है—(1) बादल वर्षा करके ताप से तपती धरती को शीतल करते हैं। (2) बैचेन तथा अनमने लोगों को शान्ति प्रदान करते हैं। (3) बादल बरसने पर ही किसान अपनी खेती-बाड़ी करना प्रारम्भ करते हैं। (4) बादल जल देते हैं, जल को जीवन माना गया है। (5) बादल क्रान्ति के दूत हैं और सामाजिक परिवर्तन के प्रेरक हैं।

अट नहीं रही है

प्रश्न 1. छायावाद की एक खास विशेषता है अन्तर्मन के भावों का बाहर की दुनिया से सामंजस्य बिठना। कविता की किन पंक्तियों को पढ़कर यह धारणा पुष्ट होती है ? लिखिए।

उत्तर—छायावाद की प्रमुख विशेषता है कि अन्तर्मन के भावों का बाहर की दुनिया से सामंजस्य बिठना। 'अट नहीं रही है' कविता में भी यह विशेषता है। उदाहरणार्थ कुछ पंक्तियाँ प्रस्तुत हैं—

कहीं साँ लेते हो
घर-घर भर देते हो
उड़ने को नभ में तुम
पर-पर कर देते हो

प्रश्न 2. कवि की आँख फाल्गुन की सुन्दरता से क्यों नहीं हट रही है ?

उत्तर—फाल्गुन मास में प्रकृति का सौन्दर्य अपने चरम पर है। पेड़-पौधे पत्तों से लदे हैं। चारों तरफ रंग-बिरंगे फूलों की शोभा बिखरी है। भीनी-भीनी सुगन्ध सभी ओर से आ रही है। प्रकृति की सुन्दरता इतनी मनोरम है कि उससे कवि की आँख हटना नहीं चाहती है।

प्रश्न 3. फाल्गुन में ऐसा क्या होता है जो बाकी ऋतुओं से भिन्न होता है ?

उत्तर—फाल्गुन में वसंत ऋतु आती है। इस समय पेड़-पौधे हरे-लाल पत्तों, रंग-बिरंगे फूलों से लदे होते हैं। चारों ओर भीनी-भीनी सुगन्धित हवा चलती है। न सर्दी होती है न गर्मी, मौसम मनोहर होता है। पक्षी चहचहाते रहते हैं। यह ऋतु ऋतुओं की राजा मानी गई है। इतना सुहावना तथा मनोहर वातावरण अन्य किसी ऋतु में नहीं होता है। इसीलिए फाल्गुन अन्य ऋतुओं से भिन्न होता है।

प्रश्न 4. इन कविताओं के आधार पर निराला के काव्य-शिल्प की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर—काव्य शिल्प के अध्ययन के लिए इन कविताओं के अनुभूति पक्ष तथा अभिव्यक्ति पक्ष पर विचार करना होगा। निराला जी छायावाद के श्रेष्ठ कवि हैं। इसलिए इन कविताओं में भी छायावाद का प्रकृति चित्रण, मानवीकरण, मानव मन के भावों का प्रकृति से सामंजस्य आदि विशेषताएँ विद्यमान हैं। इन कविताओं

Scanned with CamScanner

में संगीतात्मकता, प्रवाहमयता, भावात्मकता एवं सहजता के दर्शन होते हैं। इनमें अनुप्रास, रूपक, उपमा आदि अलंकारों का स्वाभाविक प्रयोग हुआ है। इनकी भाषा शुद्ध साहित्यिक है। तत्सम शब्दों का सुन्दर प्रयोग इस भाषा में हुआ है।

प्रश्न 5. होली के आसपास प्रकृति में जो परिवर्तन दिखाई देते हैं, उन्हें लिखिए।

उत्तर–होली का त्यौहार रंग रंग का होता है। इस समय प्रकृति अपने यौवन पर होती है। इसके प्रभावस्वरूप समाज में भी उल्लास, हर्ष के भाव भर जाते हैं। इस समय हरियाली, सरसाई होती है। पेड़-पौधे, लताएँ रंग-बिरंगे फूलों से लद जाते हैं। भौंरों की गुंजार चारों ओर सुनाई देती है। आम पर बौर छाया होता है, अनार पक रहे होते हैं। मटर, टमाटर, धनिया, पालक आदि की क्यारियाँ भरी होती हैं। भीनी-भीनी सुरभित हवा मन को मस्त बना रही होती है। इस तरह होली पर प्रकृति में अनोखे परिवर्तन दिखाई देते हैं।

6 यह दंतुरित मुसकान/फसल

विशेष– *कोविड परिस्थितियों के चलते यह पाठ वार्षिक/बोर्ड परीक्षा 2022 के लिए बोर्ड द्वारा पाठ्यक्रम में से हटा दिया गया है।*

7 छाया मत छूना

प्रश्न 1. कवि ने कठिन यथार्थ के पूजन की बात क्यों कही है ?

उत्तर–कवि गिरिजाकुमार माथुर का मत है कि वर्तमान का जो यथार्थ है उसको ही स्वीकार करके उसको हल करने में लगना चाहिए। व्यक्ति को वर्तमान दुख से घबराकर पुरानी सुख की यादों के झमेले में नहीं पड़ना चाहिए। इससे वर्तमान दु:ख समाप्त नहीं होगा। इसलिए वर्तमान को ही महत्व देना चाहिए।

प्रश्न 2. भाव स्पष्ट कीजिए–

प्रभुता का शरण-बिंब केवल मृगतृष्णा है
हर चंद्रिका में छिपी एक रात कृष्णा है।

उत्तर–इन पंक्तियों का भाव है कि पुराने बड़प्पन की अनुभूति मृगमरीचिका की तरह एक भ्रम मात्र है। जैसे रेगिस्तान में हिरण को चमकते रेत में पानी का भ्रम होता है। वैसे ही पुरानी यादें भी भ्रम हैं, वह वास्तविकता नहीं है। सुख और दु:ख का क्रम तो चलता ही रहता है। प्रकृति का सत्य है कि चाँदनी रात के बाद काली (अंधेरी) रात आती ही है। इसलिए यथार्थ का साहस के साथ सामना करना चाहिए।

प्रश्न 3. 'छाया' शब्द यहाँ किस अर्थ में प्रयुक्त हुआ है ? कवि ने उसे छूने के लिए मना क्यों किया है ?

उत्तर–'छाया' शब्द यहाँ पुराने समय के सुख देने वाली स्थितियों की याद के लिए प्रयोग हुआ है। वर्तमान दु:ख में अतीत की सुखद स्मृतियाँ कोई लाभ नहीं देती हैं क्योंकि स्मृतियों से मुक्त होते ही दु:ख और अधिक बढ़ जाता है। इसलिए कवि ने उन यादों को छूने अर्थात् ध्यान में रखने के लिए मना किया है। ये यादें वर्तमान दु:ख को बढ़ाती हैं, कम नहीं करती हैं।

प्रश्न 4. 'मृगतृष्णा' किसे कहते हैं ? कविता में इसका प्रयोग किस अर्थ में हुआ है ?

उत्तर–रेगिस्तान में चिलचिलाती धूप में प्यासा हिरण सूर्य की किरणों से चमकते रेत को पानी समझकर वहाँ पहुँचता है किन्तु वहाँ पानी नहीं होता। यह पानी का भ्रम मात्र है। इसी को 'मृगतृष्णा' कहते हैं। प्रस्तुत कविता में इसका प्रयोग अतीत के बड़प्पन के अहसास के अर्थ में हुआ है। अतीत के बड़प्पन का अहसास भी एक भ्रम है, वास्तविकता नहीं।

प्रश्न 5. 'बीती ताहि बिसार दे आगे की सुधि ले' यह भाव कविता की किस पंक्ति में झलकता है ?

उत्तर–'बीती ताहि बिसार दे आगे की सुधि ले' का भाव कविता की निम्नलिखित पंक्तियों में झलकता है–

'जो न मिला भूल उसे कर तू भविष्य वरण'

Scanned with CamScanner

प्रश्न 6. "क्या हुआ जो खिला फूल रस बसंत जाने पर ?" कवि का मानना है कि समय बीत जाने पर भी उपलब्धि मनुष्य को आनंद देती है। क्या आप ऐसा मानते हैं ? तर्क सहित लिखिए।

उत्तर—कवि मानते हैं कि उपलब्धि तो मनुष्य को आनंदित करती ही है। भले ही वह समय बीत जाने पर मिले। यह ठीक है कि समय पर उपलब्धि मिली होती तो और अधिक आनन्द देती, किन्तु उपलब्धि तो कभी भी मिले आनन्ददायक होती है।

8 कन्यादान

प्रश्न 1. आपके विचार से माँ ने ऐसा क्यों कहा कि लड़की होना पर लड़की जैसी मत दिखाई देना ?

उत्तर—पुरुष प्रधान समाज में लड़कियों के लिए आचरण आदि के ऐसे आदर्श बना दिए हैं कि लड़की इन्हीं में फँसकर रह जाती है। लड़की की सुन्दरता, कोमलता तथा भावुकता को उसकी निर्बलता मान लिया जाता है। इसी कारण माँ ने बेटी को सावधान किया है कि लड़की होना पर लड़की जैसी कमजोर मत दिखाई देना।

प्रश्न 2. 'आग रोटियाँ सेंकने के लिए है जलाने के लिए नहीं।'

(क) इन पंक्तियों में समाज में स्त्री की किस स्थिति की ओर संकेत किया है ?

(ख) माँ ने बेटी को सचेत करना क्यों जरूरी समझा ?

उत्तर—(क) 'आग रोटियाँ सेंकने के लिए है जलाने के लिए नहीं' में माँ ने बेटी को इसलिए सावधान किया है कि समाज में लड़कियों के प्रति निष्ठुर दृष्टिकोण रहा है। अन्यान्य आदि कारणों से बहुएँ ससुराल में जला दी जाती हैं।

(ख) माँ ने बेटी को सचेत करना इसलिए जरूरी समझा कि कहीं उसकी बेटी भी जलाने की विकृत मानसिकता का शिकार न हो जाए। माँ चाहती है कि बेटी अपने हित-अहित की जानकारी रखे।

प्रश्न 3. माँ को अपनी बेटी 'अन्तिम पूँजी' क्यों लग रही थी ?

उत्तर—बेटी माँ के सर्वाधिक निकट होती है। वह ही उसके सुख-दुःख की साथी होती है। माँ के दुःख में बेटी ही सहारा बनती है। यही कारण है कि माँ को अपनी बेटी 'अन्तिम पूँजी' लग रही थी। अन्तिम पूँजी ही दुःख में काम आती है।

प्रश्न 4. माँ ने बेटी को क्या-क्या सीख दीं ?

उत्तर—माँ ने अपनी भोली-भाली, सीधी लड़की को दुनियादारी की कई सीख दीं—(i) माँ ने समझाया कि अपनी सुन्दरता और कोमलता पर मुग्ध मत होना क्योंकि यह स्त्री की कमजोरी बन जाती है। (ii) आग रोटियाँ सेंकने के लिए है स्वयं को जलाने के लिए नहीं। (iii) वस्त्र और आभूषण स्त्री जीवन के बन्धन हैं इसलिए इनके मोह में मत पड़ना। (iv) लड़की के जो गुण होते हैं उन सभी को अपनाना किन्तु अबला और निरीह मत बनना, अनाचार का विरोध करना। (v) अपने कर्तव्य का पालन करना और अपनी शक्ति तथा अधिकारों का पूरा ध्यान रखना किन्तु कमजोर बनकर मत रहना।

प्रश्न 5. आपकी दृष्टि में कन्या के साथ दान की बात कहाँ तक उचित है ?

उत्तर—विवाह हो जाने पर कन्या वर के साथ ससुराल चली जाती है। माता-पिता प्रसन्नता से अपनी पुत्री को वर पक्ष को सौंप देते हैं किन्तु विवाह के बाद भी उनका रिश्ता बना रहता है जबकि दान कर दी गई चीज से देने वाले का सम्बन्ध नहीं रहता है। इस तरह कन्या के साथ दान का प्रयोग पूरी तरह सही नहीं है।

9 संगतकार

***विशेष**—कोविड परिस्थितियों के चलते यह पाठ वार्षिक/बोर्ड परीक्षा 2022 के लिए बोर्ड द्वारा पाठ्यक्रम में से हटा दिया गया है।*

Scanned with CamScanner

महत्वपूर्ण वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

❖ बहु-विकल्पीय प्रश्न

1. उद्धव ने गोपियों को क्या सन्देश दिया ?
(क) योग साधना का, (ख) प्रेम का,
(ग) भक्ति का, (घ) कर्म का।

2. गोपियों का मन चुरा ले गए थे—
(क) बलराम, (ख) श्रीकृष्ण,
(ग) उद्धव, (घ) ग्वाला।

3. उद्धव किसके मित्र थे ?
(क) रसखान के, (ख) नंदबाबा के,
(ग) श्रीकृष्ण के, (घ) बलदाऊ के।

4. सीता के विवाह की स्वयंवर में शर्त रखी गई थी—
(क) रूपवान वर की, (ख) बलवान वर की,
(ग) ज्ञानवान वर की, (घ) शिव धनुष तोड़ने की।

5. शिव-धनुष के टूटने पर कौन क्रोधित हो गए ?
(क) विश्वामित्र, (ख) दुर्वासा,
(ग) परशुराम, (घ) सहस्त्रबाहु।

6. परशुराम ने किसकी भुजाएँ काटी थीं ?
(क) सहस्त्रबाहु की, (ख) रावण की,
(ग) मेघनाद की, (घ) खर-दूषण की।

7. 'आत्मकथ्य' के कवि हैं—
(क) सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, (ख) जयशंकर प्रसाद,
(ग) ऋतुराज, (घ) गिरिजाकुमार माथुर।

8. प्रसाद जी 'उज्ज्वल गाथा' किसे मानते हैं ?
(क) बचपन की यादों को, (ख) धन सम्पत्ति को,
(ग) मित्रों के साथ के क्षणों को, (घ) प्रिया के साथ की मधुर स्मृतियों को।

9. 'कंथा' कहते हैं—
(क) गुदड़ी को, (ख) सोने को,
(ग) पंथ को, (घ) कथा को।

10. फाल्गुन माह में कौन-सी ऋतु आती है ?
(क) वर्षा, (ख) वसंत,
(ग) शरद, (घ) गर्मी।

11. गर्मी के भयंकर ताप को शीतल करते हैं—
(क) तड़तड़ाती बिजली, (ख) मधुर स्वर में बोलती कोयल,
(ग) गरजकर बरसते बादल, (घ) मोर की कुहक।

12. 'अट नहीं रही है' कविता में वर्णन हुआ है—
(क) ग्रीष्म ऋतु का, (ख) शरद ऋतु का,
(ग) वर्षा ऋतु का, (घ) वसंत ऋतु का।

Scanned with CamScanner

13. गिरिजाकुमार माथुर के अनुसार अतीत मधुर यादों को—
(क) संजोकर रखना है,
(ख) नहीं छूना है,
(ग) सभी को बताना है,
(घ) किसी को नहीं बताना है।

14. यश, वैभव आदि को गिरिजाकुमार मानते हैं—
(क) वास्तविक जीवन,
(ख) शाही जीवन,
(ग) मृगतृष्णा, भ्रम,
(घ) जीवन का सत्य।

15. अवसर निकलने के बाद मिलने वाली उपलब्धि—
(क) व्यर्थ है,
(ख) सारहीन है,
(ग) निरर्थक होती है,
(घ) आनन्द देती है।

16. माँ की सबसे निकट की साथी होती है—
(क) उसकी ननद,
(ख) उसकी सास,
(ग) उसकी सहेली,
(घ) उसकी बेटी।

17. 'कन्यादान' कविता है—
(क) यथार्थवादी,
(ख) आदर्शवादी,
(ग) आदर्शोन्मुख,
(घ) इनमें से कोई नहीं।

18. 'कन्यादान' कविता के कवि हैं—
(क) जयशंकर प्रसाद,
(ख) ऋतुराज,
(ग) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'
(घ) गिरिजाकुमार माथुर।

उत्तर—1. (क), 2. (ख), 3. (ग), 4. (घ), 5. (ग), 6. (क), 7. (ख), 8. (घ), 9. (क), 10. (ख), 11. (ग), 12. (घ), 13. (ख), 14. (ग), 15. (घ), 16. (घ), 17. (क), 18. (ख)।

❖ रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. गोपियाँ योग को ..... के समान मानती हैं।
2. श्रीकृष्ण ..... पढ़ आए हैं।
3. राम ने ..... भंग करके सीता से विवाह किया।
4. ..... ने परशुराम पर तीखे व्यंग्य प्रहार किए।
5. ..... कैसे गाऊँ मधुर चाँदनी रातों की।
6. 'आत्मकथ्य' के कवि ..... हैं।
7. पत्रों से लदी ..... कहीं हरी, कहीं लाल।
8. आभा फाल्गुन की ..... है।
9. 'छाया मत छूना' के कवि ..... हैं।
10. अतीत के सुख की यादें वर्तमान दुःख को ..... कर देती हैं।
11. वस्त्र, आभूषण स्त्री जीवन के ..... हैं।
12. आग ..... सेंकने के लिए है।

उत्तर—1. कड़वी ककड़ी, व्याधि, 2. राजनीति, 3. शिव-धनुष, 4. लक्ष्मण, 5. उज्ज्वल गाथा, 6. जयशंकर प्रसाद, 7. डाल, 8. अट नहीं रही, 9. गिरिजाकुमार माथुर, 10. दोगुना, 11. बन्धन, 12. रोटी।

❖ सत्य/असत्य

1. श्रीकृष्ण ने गोपियों के पास उद्धव को भेजा था।
2. गोपियों ने उद्धव के सन्देश को स्वीकार कर लिया।
3. सीता स्वयंवर में राम-लक्ष्मण मुनि विश्वामित्र के साथ गए।
4. जयशंकर प्रसाद ने जो मधुर स्वप्न देखे थे पूरे हो गए थे।
5. जयशंकर प्रसाद औरों के द्वारा लिखी गई कथाएँ सुनना चाहते हैं।

Scanned with CamScanner

6. परशुराम के क्रोध को देखकर लक्ष्मण डर गए।
7. निराला ने बादलों से रिमझिम बरसने के लिए कहा है।
8. फाल्गुन साँस लेता है तो हर घर को सुगन्ध से भर देता है।
9. मनुष्य को यश, वैभव के पीछे दौड़ना चाहिए।
10. समय बीतने पर मिली उपलब्धि भी आनन्द देती है।
11. 'कन्यादान' कविता में माँ बेटी को परम्परा से हटकर सीख देती है।
12. माँ ने बेटी से कहा लड़की हो इसलिए लड़की की तरह रहना।

उत्तर–1. सत्य, 2. असत्य, 3. सत्य, 4. असत्य, 5. सत्य, 6. असत्य, 7. असत्य, 8. सत्य, 9. असत्य, 10. सत्य, 11. सत्य, 12. असत्य।

❖ सही जोड़ी मिलाइए

I.

'अ'	'ब'
1. श्रीकृष्ण	(क) उद्धव
2. योग का सन्देश	(ख) गोपियाँ
3. राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद	(ग) परशुराम
4. फरसा	(घ) तुलसीदास
5. उज्ज्वल गाथा कैसे गाऊँ ?	(ङ) पूरा नहीं हो सका
6. मधुर सुख का स्वप्न	(च) मधुर चाँदनी रातों की

उत्तर–1. → (ख), 2. → (क), 3. → (घ), 4. → (ग), 5. → (च), 6. → (ङ)।

II.

'अ'	'ब'
1. उत्साह	(क) कहीं हरी कहीं लाल
2. पत्तों से लदी डाल	(ख) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'
3. छाया मत छूना	(ग) मृगतृष्णा है
4. प्रभुता का शरण बिंब	(घ) मन होगा दु:ख दूना
5. लड़की होना	(ङ) जलने के लिए नहीं
6. आग रोटियाँ सेकने को है	(च) पर लड़की जैसी मत दिखना

उत्तर–1. → (ख), 2. → (क), 3. → (घ), 4. → (ग), 5. → (च), 6. → (ङ)।

❖ एक शब्द/वाक्य में उत्तर

1. कड़वी ककड़ी सा क्या लगता है ?
2. गोपियाँ किसे प्रेम करती हैं ?
3. सीता स्वयंवर में राम-लक्ष्मण किसके साथ गए थे ?
4. सीता के विवाह के लिए क्या शर्त रखी गई थी ?
5. आपके पाठ्यक्रम में जयशंकर प्रसाद की कौन-सी रचना है ?
6. जयशंकर प्रसाद के आलिंगन में आते-आते क्या भाग गया ?
7. निराला की आँख कहाँ से नहीं हट रही है ?
8. 'उत्साह' कविता के कवि का क्या नाम है ?
9. चाँदनी रातों के बाद क्या आती है ?
10. गिरिजाकुमार माथुर किसका पूजन करने के लिए कहते हैं ?
11. आग किसके लिए होती है ?
12. स्त्री जीवन के बन्धन क्या होते हैं ?

उत्तर–1. योग का सन्देश, 2. श्रीकृष्ण को, 3. विश्वामित्र के साथ, 4. शिव-धनुष को तोड़ने की, 5. आत्मकथ्य कविता, 6. मधुर जीवन का आनन्द, 7. फाल्गुन की सुन्दरता से, 8. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', 9. अंधेरी रात, 10. यथार्थ का, 11. रोटी सेंकने के लिए, 12. वस्त्र और आभूषण।

Scanned with CamScanner

अध्याय 4

कवियों का साहित्यिक परिचय

1. सूरदास

● **जीवन परिचय**—सूरदास का जन्म आगरा के पास रुनकता (गऊ घाट) में सन् 1478 ई. में हुआ था। कुछ विद्वान उनका जन्म स्थान दिल्ली के पास 'सीही' नामक गाँव को मानते हैं। एक बार बल्लभाचार्य जी गऊ घाट पर रुके तो सूरदास ने एक पद गाकर सुनाया। बल्लभाचार्य जी बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने उनको अपना शिष्य बनाकर श्रीनाथ जी के मन्दिर के कीर्तन की सेवा सौंप दी। 'अष्टछाप' के कवियों में सूरदास महत्वपूर्ण स्थान है। इन्होंने कृष्ण लीलाओं का मार्मिक वर्णन किया। सन् 1583 में गोवर्धन के पास 'पारसौली' गाँव में उनका निधन हुआ।

● **रचनाएँ**—(1) '*सूरसागर*', (2) '*साहित्य लहरी*', (3) '*सूर सारावली*'।

● **काव्यगत विशेषताएँ**

(अ) भावपक्ष—(1) वात्सल्य वर्णन—सूरदास ने वात्सल्य रस के दोनों पक्षों—संयोग और वियोग का विस्तृत वर्णन किया है। कृष्ण का घुटनों चलना, अपनी छाँह को पकड़ना आदि लीलाओं का मनोहारी चित्रण सूर के काव्य में हुआ है।

(2) शृंगार वर्णन—सूरदास ने शृंगार के संयोग और वियोग दोनों रूपों का वर्णन किया है; यथा—

संयोग—"खेलनि हरि निकसे ब्रज खोरी।"

वियोग—"बिनु गोपाल बैरिन भई कुंजैं।"

(3) भक्ति-भावना—सूरदास उच्चकोटि के भक्त थे। उनके आराध्य कृष्ण हैं। उनके मन में कृष्ण के प्रति अनन्य भाव हैं।

(4) प्रकृति-चित्रण—इन्होंने प्रकृति का बड़ा सुन्दर वर्णन किया है।

(ब) कलापक्ष—(1) भाषा—सूरदास की भाषा सुललित, माधुर्यमयी ब्रजभाषा है। उसमें संस्कृत के तत्सम और तद्भव दोनों रूप मिलते हैं। लोकोक्तियों और मुहावरों का प्रयोग हुआ है।

(2) शैली—सूरदास ने गेय पद शैली का प्रयोग किया है।

(3) अलंकार—उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक, अनुप्रास आदि सभी अलंकारों का इन्होंने स्वाभाविक प्रयोग किया है।

● **साहित्य में स्थान**—भाव-सौन्दर्य की दृष्टि से सूरदास का स्थान सर्वोपरि है। इनका वात्सल्य वर्णन अद्वितीय है। सूरदास को 'वात्सल्य सम्राट' माना गया है। उनकी गोपियाँ बहुत चतुर हैं। उनमें कृष्ण के प्रति एकनिष्ठ प्रेम है। सूरदास विश्व साहित्य के महान कवि हैं।

2. तुलसीदास

● **जीवन परिचय**—तुलसीदास राम के अनन्य भक्त थे। इनकी जन्म तिथि और जन्म स्थान के बारे में मतभेद है। सामान्य रूप से इनका जन्म सन् 1532 ई. में माना जाता है। कुछ विद्वान इनका जन्म 1497 ई. में मानते हैं। इनका जन्म उत्तर प्रदेश के राजापुर ग्राम में हुआ था। कुछ विद्वान इनका जन्म सोरों, जिला एटा में मानते हैं। गुरु नरहरिदास ने इनकी पढ़ने की व्यवस्था की। बड़े होने पर इनका विवाह दीनबन्धु पाठक की पुत्री

Scanned with CamScanner

रत्नावली से हुआ। पत्नी के व्यंग्य बाणों से आहत होकर अयोध्या आ गए और 'रामचरितमानस' की रचना की। इनकी मृत्यु सन् 1623 ई. में हुई।

● **रचनाएँ**—'*रामचरितमानस*', '*विनयपत्रिका*', '*कवितावली*', '*गीतावली*', '*दोहावली*', '*बरवै रामायण*', '*हनुमान बाहुक*', '*जानकीमंगल*' आदि।

● **काव्यगत विशेषताएँ**

(अ) भावपक्ष—**(1) भक्ति भावना**—तुलसीदास सगुण ईश्वर को मानते थे। उनकी भक्ति में असीम दैन्य, अनन्य आत्म समर्पण है। राम ही एकमात्र भरोसा है। देखिए—

"एक भरोसो एक बल, एक आस विश्वास।
एक राम घनश्याम हित, चातक तुलसीदास॥

(2) समन्वयवादी विचार—इनका दृष्टिकोण समन्वयवादी रहा है। रामभक्त होते हुए भी सभी देवी-देवताओं की वन्दना की। इनके काव्य में कर्तव्यपरायणता और लोक-कल्याण का सन्देश मिलता है।

(3) लोकमंगल का भाव—तुलसी के काव्य में लोकमंगल की भावना व्यक्त है। उन्होंने भील, कोल, शबरी आदि को अपनाया है।

(4) तुलसी रससिद्ध कवि हैं। उनकी कविताओं में शृंगार, शान्त, वीर रसों का सुन्दर चित्रण हुआ है। रौद्र, करुण एवं अद्‌भुत रसों का भी वर्णन हुआ है।

(ब) कला पक्ष—**(1) भाषा**—तुलसी ने ब्रज और अवधी भाषा को अपनाया है। जहाँ-तहाँ अरबी, फारसी, भोजपुरी, बुन्देलखण्डी भाषाओं के शब्द भी मिल जाते हैं।

(2) अलंकार योजना—तुलसी का अलंकार विधान अनुपम है। इन्होंने उपमा अलंकार को ही नहीं बल्कि कहीं रूपक, कहीं उत्प्रेक्षा तो कहीं दृष्टान्त का भी प्रयोग किया है।

(3) छंद—तुलसीदास ने चौपाई, दोहा, पद, सवैया, कवित्त आदि छंदों में काव्य रचना की है।

(4) शैली—तुलसी ने प्रबन्ध एवं मुक्तक दोनों शैलियों में काव्य रचना की है।

● **साहित्य में स्थान**—लोक कल्याण के भाव से काव्य रचना करने वाले तुलसीदास विश्वविख्यात कवि हैं। उनके बारे में उक्ति है—"कविता करके तुलसी न लसे, कविता लसी या तुलसी की कला"। वे संसार के अमर कवि हैं।

3. जयशंकर प्रसाद

● **जीवन परिचय**—जयशंकर प्रसाद का जन्म वाराणसी (उत्तर प्रदेश) के जाने-माने सुंघनी शाहू परिवार में सन् 1889 ई. में हुआ था। बचपन में ही इनके माता-पिता का देहान्त हो गया। आपने आठवीं कक्षा तक ही स्कूल में पढ़ाई की। इसके बाद घर पर ही हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू, संस्कृत की शिक्षा प्राप्त की। आपने वेद, उपनिषद्, इतिहास, दर्शन आदि का स्वाध्याय किया। संघर्षमय जीवन में आपने अनेक कठिनाइयों का सामना किया। सन् 1937 ई. में आपका निधन हो गया।

● **रचनाएँ**—(1) '*कामायनी*' (महाकाव्य), (2) '*लहर*', (3) '*करुणालय*', (4) '*आँसू*', (5) '*झरना*', (6) '*महाराणा का महत्व*', (7) '*चित्राधार*', (8) '*प्रेम पथिक*', (9) '*कानन कुसुम*' आदि आपकी प्रमुख काव्य कृतियाँ हैं।

● **काव्यगत विशेषताएँ**

(अ) भावपक्ष—प्रसाद जी के काव्य के भावपक्ष की विशेषताएँ निम्न प्रकार हैं—

(1) समरसता का सन्देश—प्रसाद जी ने अपने महाकाव्य 'कामायनी' में समरसता का सन्देश दिया है। जैसे-जैसे मानव, जगत् एवं जीवन के अखण्ड रूप से परिचित होने लगेगा, वैसे ही मनु की तरह विषमता समाप्त होने लगेगी तथा समरसता का संचार प्रारम्भ होगा।

Scanned with CamScanner

(2) छायावाद के जनक—हिन्दी काव्य में छायावाद का शुभारम्भ करने का श्रेय प्रसाद जी को ही जाता है। उनकी कविता में छायावाद की सम्पूर्ण विशेषताएँ तथा चरमोत्कर्ष विद्यमान है।

(3) प्रेम-वेदना की मर्मस्पर्शी झाँकी—प्रसाद जी के काव्य में प्रेम एवं वेदना के मार्मिक चित्र अंकित किये गये हैं। प्रिय के विरह में जिन्दगी की वाटिका नष्ट हो चुकी है। कलियाँ बिखर गई हैं तथा पराग चारों ओर फैल रहा है। अनुराग-सरोज शुष्क हो रहा है।

(4) दार्शनिकता—प्रसाद जी के काव्य में दार्शनिकता का पुट भी देखा जा सकता है। प्रसाद जी मूलत: एक दार्शनिक कवि हैं। काव्य में आनन्दवाद की बहुत ही सशक्त अभिव्यक्ति है। दार्शनिकता की वजह से काव्य में रहस्यात्मकता का स्वाभाविक ही सामंजस्य हो गया है।

(5) प्रकृति चित्रण—प्रसाद जी ने अपने काव्य में प्रकृति के मृदु एवं कर्कश (कठोर) दोनों रूपों का जीवन्त वर्णन प्रस्तुत किया है।

(6) राष्ट्रीयता—प्रसाद जी ने राष्ट्र के प्रति भी अपने कर्तव्य का निर्वाह किया है। वे प्रेम की मदिरा का पान करके भी राष्ट्र के प्रति उदासीन नहीं हुए हैं।

(ब) कलापक्ष—**(1) भाषा**—प्रसाद जी की भाषा परिमार्जित, व्याकरण सम्मत, संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली है। आपने भाव के अनुरूप भाषा का प्रयोग किया है।

(2) अलंकार—जयशंकर प्रसाद की कविताओं में प्राचीन तथा नवीन अलंकारों का स्वाभाविक प्रयोग हुआ है। विशेषण विपर्यय तथा मानवीकरण जैसे पाश्चात्य अलंकारों का भी आपने सफल प्रयोग किया है।

(3) छंद—प्रसाद जी ने प्राचीन छंदों के साथ-साथ नवीन छंदों में भी काव्य रचना की है।

(4) शैली—प्रसाद जी ने प्रबन्ध तथा मुक्तक दोनों शैली अपनाई हैं। आपकी '*कामायनी*' आधुनिक काल की श्रेष्ठ रचना है।

● **साहित्य में स्थान**—आधुनिक हिन्दी साहित्य में जयशंकर प्रसाद का शीर्ष स्थान है। आपके काव्य में संगीत का मधुर नाद उल्लास पैदा करता है। महाकाव्यकार, कवि, नाटककार, कथाकार आदि सभी रूपों में जयशंकर प्रसाद महान साहित्यकार सिद्ध होते हैं वे विश्व साहित्य के श्रेष्ठ रचनाकार हैं।

4. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

● **जीवन परिचय**—सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का जन्म सन् 1899 ई. में वसन्त पंचमी के दिन बंगाल के मेदिनीपुर जिले की महिषादल नामक रियासत में हुआ था। उनके पिता रामसहाय त्रिपाठी मूलत: उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले के गढ़ाकोला के रहने वाले थे किन्तु नौकरी के कारण वे बंगाल चले गए थे। इनकी माता का निधन तीन वर्ष बाद ही हो गया। पिता के कठोर स्वभाव के कारण निराला का बचपन ममता रहित ही बीता। इनकी शिक्षा-दीक्षा बंगाल में ही हुई। पत्नी मनोरमा की प्रेरणा से निराला जी को हिन्दी साहित्य तथा संगीत में रुचि उत्पन्न हुई। इन्होंने स्वाध्याय से संस्कृत, बंगला तथा अंग्रेजी का ज्ञान प्राप्त किया। रामकृष्ण परमहंस तथा विवेकानन्द के विचारों से विशेष प्रभावित हुए। जीवन भर संघर्ष करते रहने वाले निराला जी का सन् 1961 में निधन हो गया।

● **रचनाएँ**—सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की प्रमुख काव्य कृतियाँ इस प्रकार हैं—

(1) '*अनामिका*', (2) '*परिमल*', (3) '*गीतिका*', (4) '*तुलसीदास*', (5) '*अणिमा*', (6) '*बेला*', (7) '*आराधना*', (8) '*अपरा*', (9) '*गीत गूँज*', (10) '*कुकुरमुत्ता*', (11) '*नये पत्ते*' आदि।

● **काव्यगत विशेषताएँ**

(अ) भावपक्ष—**(1) प्रेम और सौन्दर्य वर्णन**—निराला के काव्य में प्रेम और सौन्दर्य के मोहक चित्र मिलते हैं। उनके सौन्दर्य वर्णन में ताजगी, आकर्षण और स्वच्छन्दता है।

Scanned with CamScanner

(2) प्रकृति-चित्रण—निराला ने प्रकृति के सजीव चित्र अंकित किये हैं। उनका प्रकृति वर्णन अत्यन्त मधुर और हृदयस्पर्शी है।

(3) भक्ति एवं दर्शन—जीवन के अन्तिम वर्षों में लिखी गयी निराला की कविताओं में कबीर जैसी भक्ति-भावना, लोक-कल्याण, रहस्यवाद का स्वर विद्यमान है।

(4) प्रगतिवादी दृष्टिकोण—महाप्राण निराला के काव्य में दीन हीन निर्धन किसानों के प्रति गहरी सहानुभूति है। निराला की '*कुकुरमुत्ता*', '*तोड़ती पत्थर*', '*दीन*' आदि कविताएँ इसी की पुष्टि करती हैं।

(5) राष्ट्रीयता—निराला जी का काव्य देश-प्रेम और राष्ट्रीयता की भावनाओं से परिपूर्ण है। कविताओं में राष्ट्रीय प्रेम ओज के साथ उमड़कर आया है।

(ब) कलापक्ष—(1) भाषा—निराला जी की भाषा भावों के अनुरूप बदलती जाती है। देश-प्रेम तथा भक्तिपरक कविताओं में इनकी भाषा सरल है। गम्भीर रचनाओं में आपकी भाषा क्लिष्ट एवं संस्कृतनिष्ठ हो गयी है।

(2) शैली—'निराला' की दो शैलियाँ स्पष्ट हैं—(1) उत्कृष्ट छायावादी गीतों में प्रयुक्त, लम्बी तत्सम एवं दुरूह शैली और (2) सरल, प्रवाहपूर्ण, प्रचलित उर्दू के शब्द लिए व्यंग्यपूर्ण और चुटीली शैली।

(3) छंद—निराला ने छंदों के क्षेत्र में नये-नये प्रयोग किये हैं। आपने तुकान्त एवं अतुकान्त दोनों प्रकार के छंद लिखे हैं। मुक्तक छंद को आपने ही जन्म दिया।

● **साहित्य में स्थान**—आधुनिक कवियों में महाप्राण निराला का उत्कृष्ट स्थान है। वे मुक्तक के जनक थे। निराला जी ने हिन्दी कविता को नयी दिशा प्रदान की। इन्होंने हिन्दी कविता को नवीन विषयों और शैलियों से समृद्ध किया। निराला जी हिन्दी के मूर्धन्य रचनाकार हैं।

5. गिरिजाकुमार माथुर

● **जीवन परिचय**—गिरिजाकुमार माथुर का जन्म सन् 1919* में मध्य प्रदेश के अशोक नगर में हुआ। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा घर पर हुई। झाँसी, ग्वालियर से माध्यमिक शिक्षा प्राप्त की तथा लखनऊ विश्वविद्यालय से एम. ए. (अंग्रेजी) की उपाधि प्राप्त की। कुछ समय वकालत करने के बाद आपने आकाशवाणी और दूरदर्शन में नौकरी कर ली। आकाशवाणी का विविध भारती कार्यक्रम आपकी परिकल्पना थी। उनका निधन सन् 1994 में हुआ।

● **रचनाएँ**—गिरिजाकुमार माथुर की प्रमुख काव्य रचनाएँ हैं—'*मंजीर*', '*नाश और निर्माण*', '*धूप के धान*', '*शिलापंख चमकीले*', '*भीतरी नदी की यात्रा*', '*छाया मत छूना*' आदि।

● **काव्यगत विशेषताएँ**—गिरिजाकुमार माथुर के काव्य की भाव एवं कला की विशेषताएँ निम्न प्रकार हैं—

(अ) भावपक्ष—(1) सरसता एवं रागात्मकता—गिरिजाकुमार माथुर का काव्य सरसता एवं रागात्मकता से परिपूर्ण है। राग एवं ध्वनियों के संयोग से आपने अनुपम रागात्मकता उत्पन्न की है।

(2) मानव मन की अभिव्यक्ति—माथुर के काव्य में मानव मन की सहज अभिव्यक्ति हुई है। अपनी अनुभूतियों का विश्लेषण भी वे करते जाते हैं।

(3) प्रेम एवं सौन्दर्य—प्रयोगवादी कवि माथुर के काव्य में प्रेम एवं सौन्दर्य को वर्ण्य विषय के रूप में स्वीकार किया गया है।

(4) प्रकृति चित्रण—माथुर जी के काव्य में प्रकृति का जो चित्रण हुआ है, वह विलक्षण है।

(5) नवीन चिन्तनधारा—माथुर के काव्य में नवीन चिन्तनधारा की अभिव्यक्ति हुई है। बुद्धि तत्व की प्रधानता तथा व्यंग्यात्मकता ने आपके काव्य को प्रभावी बना दिया है।

---

* NCERT की पाठ्य-पुस्तक में 1918 प्रकाशित।

Scanned with CamScanner

(ब) कलापक्ष—**(1) भाषा**—शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली में काव्य सृजन करने वाले माथुर ने चित्रोपमता का अद्‌भुत विधान किया है।

(2) छंद—प्रारम्भ में प्राचीन छंदों में काव्य रचना करने वाले माथुर ने लोक धुनों पर प्रयोग कर नवीन छंदों की रचना की है।

(3) अलंकार—अनुप्रास, रूपक आदि के साथ-साथ मानवीकरण, विशेषण विपर्यय आदि अलंकारों का सुन्दर प्रयोग गिरिजाकुमार माथुर ने किया है।

(4) शैली—प्रयोगधर्मा कवि गिरिजाकुमार माथुर ने सहज, सरस एवं सरल शैली में काव्य रचना की है।

● **साहित्य में स्थान**—प्रथम तारसप्तक के प्रमुख कवि गिरिजाकुमार माथुर प्रयोगवाद के महत्वपूर्ण कवि हैं। आपने अपने नवीन दृष्टिकोण के माध्यम से साहित्य को नई प्रेरणा तथा दिशा प्रदान की है। हिन्दी साहित्य में आप निरन्तर स्मरण किए जाते रहेंगे।

6. ऋतुराज

● **जीवन-परिचय**—ऋतुराज का जन्म सन् 1940 में राजस्थान के भरतपुर में हुआ। प्रारम्भिक एवं माध्यमिक शिक्षा पूर्ण कर आपने राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर से एम. ए. (अंग्रेजी) करने के बाद अध्यापन कार्य किया। अब अवकाश प्राप्त कर साहित्य रचना कर रहे हैं।

● **रचनाएँ**—ऋतुराज की काव्य कृतियों में '*मैं आंगिरस*', '*पुल पर पानी*', '*एक मरण-धर्मा और अन्य*', '*सुरत निरत*', '*लीला मुखारबिन्द*', '*कितना थोड़ा वक्त*' आदि आपकी प्रमुख काव्य कृतियाँ हैं।

● **काव्यगत विशेषताएँ**

(अ) भावपक्ष—ऋतुराज ने अलग-अलग हाशिए के समाज की समस्याओं को अपनी रचनाओं का विषय बनाया है। उन्होंने परम्परागत रूढ़ियों तथा अन्धविश्वासों पर प्रहार किया है। वे समय के साथ बदलते रूपों के पक्षधर हैं। जागरूक साहित्यकार के रूप में उन्होंने समाज को सही दिशा देने का प्रयास किया है।

(ब) कलापक्ष—**(1) भाषा**—ऋतुराज ने शुद्ध खड़ी बोली में काव्य रचना की है। आप लोक जीवन की भाषा को महत्व देते हैं। आवश्यकतानुसार आपने संस्कृत के तत्सम, तद्‌भव, देशज एवं विदेशी शब्दों का प्रयोग किया है।

(2) अलंकार—ऋतुराज को अलंकारों का मोह नहीं है फिर भी आपके काव्य में अनुप्रास, रूपक, उपमा आदि अलंकार देखे जा सकते हैं।

(3) छंद—आपने मुक्त छंद को महत्व दिया है। भाव के अनुसार आरोहण-अवरोहण आपकी कविता की विशेषता है।

● **साहित्य में स्थान**—समाज के हाशिए के लोगों की वाणी को स्वर देने वाले ऋतुराज का वर्तमान हिन्दी कवियों में महत्वपूर्ण स्थान है। उनहोंने अछूते विषयों को अपने काव्य का विषय बनाया है। ऋतुराज आज भी अपनी रचनाओं से हिन्दी साहित्य को सम्पन्न कर रहे हैं।

महत्वपूर्ण वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

❖ बहु-विकल्पीय प्रश्न

1. निम्नलिखित में सूरदास की रचना है—
   (क) साहित्य लहरी,
   (ख) विनय पत्रिका,
   (ग) काव्य रसायन,
   (घ) पदावली।
2. सूरदास के पदों की भाषा कौन-सी है ?
   (क) अवधी,
   (ख) ब्रजभाषा,
   (ग) राजस्थानी,
   (घ) बुन्देलखण्डी।

Scanned with CamScanner

3. तुलसीदास की रचना है—
(क) रामचन्द्रिका, (ख) प्रेम पच्चीसी,
(ग) रामचरितमानस, (घ) रसविलास।

4. 'विनय पत्रिका' के कवि का क्या नाम है ?
(क) सूरदास, (ख) केशवदास,
(ग) रसखान, (घ) तुलसीदास।

5. जयशंकर प्रसाद का जन्म कहाँ हुआ था ?
(क) प्रयाग, (ख) वाराणसी,
(ग) इन्दौर, (घ) ग्वालियर।

6. जयशंकर प्रसाद किसके प्रवर्तक माने जाते हैं ?
(क) छायावाद के, (ख) प्रगतिवाद के,
(ग) प्रयोगवाद के, (घ) नई कविता के।

7. निम्नलिखित में कौन-सी रचना सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की है ?
(क) झरना, (ख) कवि और कोकिल,
(ग) उत्साह, (घ) संगतकार।

8. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का जन्म किस प्रदेश में हुआ था ?
(क) मध्य प्रदेश, (ख) पश्चिमी बंगाल,
(ग) राजस्थान, (घ) गुजरात।

9. 'छाया मत छूना' किसकी रचना है ?
(क) निराला की, (ख) मंगलेश डबराल की,
(ग) ऋतुराज की, (घ) गिरिजाकुमार माथुर की।

10. गिरिजाकुमार माथुर की रचना है—
(क) अणिमा, (ख) नाश और निर्माण,
(ग) घर का रास्ता, (घ) कुकुरमुत्ता।

11. 'सुरत निरत' किसकी रचना है ?
(क) ऋतुराज, (ख) मंगलेश डबराल,
(ग) गिरिजाकुमार माथुर, (घ) नागार्जुन।

12. 'कन्यादान' किस कवि की रचना है ?
(क) गिरिजाकुमार माथुर की, (ख) मंगलेश डबराल की,
(ग) ऋतुराज की, (घ) नागार्जुन की।

उत्तर—1. (क), 2. (ख), 3. (ग), 4. (घ), 5. (ख), 6. (क), 7. (ग), 8. (ख), 9. (घ), 10. (ख), 11. (क), 12. (ग)।

❖ रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. 'साहित्य लहरी' ..... की रचना है।
2. सूरदास ..... के सम्राट माने जाते हैं।
3. तुलसीदास ..... शाखा के श्रेष्ठ कवि हैं।
4. कवितावली ..... की रचना है।
5. 'आँसू' ..... द्वारा रचित विरह काव्य है।
6. जयशंकर प्रसाद की ..... कविता हमारी पाठ्य-पुस्तक में संकलित है।
7. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ..... के कवि माने जाते हैं।

Scanned with CamScanner

8. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का जन्म सन् ..... में हुआ था।
9. 'धूप के धान' ..... का कविता संग्रह है।
10. गिरिजाकुमार माथुर का निधन ..... में हुआ था।
11. ऋतुराज का जन्म सन् ..... में हुआ।
12. 'पुल पर पानी' ..... की कविता है।

उत्तर–1. सूरदास, **2.** वात्सल्य रस, **3.** रामभक्ति, **4.** तुलसीदास, **5.** जयशंकर प्रसाद, **6.** आत्मकथ्य, **7.** छायावाद, **8.** 1899 ई., **9.** गिरिजाकुमार माथुर, **10.** 1964 ई., **11.** 1940 ई., **12.** ऋतुराज।

❖ सत्य/असत्य

1. 'सूरसागर' के कवि सूरदास हैं।
2. 'साहित्य लहरी' तुलसीदास की कृति है।
3. तुलसीदास के काव्य में लोकमंगल का भाव है।
4. तुलसीदास की मृत्यु प्रयाग में हुई थी।
5. जयशंकर प्रसाद छायावाद के कवि हैं।
6. 'उत्साह' कविता के कवि जयशंकर प्रसाद हैं।
7. 'अट नहीं रही है' सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की रचना है।
8. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' पूँजीवाद के समर्थक थे।
9. गिरिजाकुमार माथुर छायावादी कवि हैं।
10. 'शिला पंख चमकीले' गिरिजाकुमार माथुर की रचना है।
11. समाज के हाशिए के लोगों की समस्याओं को ऋतुराज ने महत्व दिया है।
12. 'फसल' ऋतुराज की कविता है।

उत्तर–1. सत्य, **2.** असत्य, **3.** सत्य, **4.** असत्य, **5.** सत्य, **6.** असत्य, **7.** सत्य, **8.** असत्य, **9.** असत्य, **10.** सत्य, **11.** सत्य, **12.** असत्य।

❖ सही जोड़ी मिलाइए

I.

'अ'	'ब'
1. सूरदास	(क) उद्धव
2. योग का सन्देश	(ख) सूर सारावली
3. विनय पत्रिका	(ग) कवितावली
4. तुलसीदास	(घ) तुलसीदास
5. वाराणसी (उत्तर प्रदेश)	(ङ) कामायनी
6. जयशंकर प्रसाद	(च) जयशंकर प्रसाद

उत्तर–1. → (ख), **2.** → (क), **3.** → (घ), **4.** → (ग), **5.** → (च), **6.** → (ङ)।

II.

'अ'	'ब'
1. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'	(क) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'
2. छायावाद	(ख) अनामिका
3. शिलापंख चमकीले	(ग) नई कविता के कवि
4. गिरिजाकुमार माथुर	(घ) गिरिजाकुमार माथुर
5. ऋतुराज का जन्म स्थान	(ङ) ऋतुराज
6. सुरत निरत	(च) भरतपुर (राजस्थान)

उत्तर–1. → (ख), **2.** → (क), **3.** → (घ), **4.** → (ग), **5.** → (च), **6.** → (ङ)।

Scanned with CamScanner

❖ एक शब्द/वाक्य में उत्तर

1. 'सूर सारावली' के कवि का क्या नाम है ?
2. सूरदास ने किस भाषा में काव्य रचना की ?
3. 'गीतावली' किसकी रचना है ?
4. 'रामचरितमानस' की रचना किस भाषा में हुई है ?
5. जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित महाकाव्य का क्या नाम है ?
6. 'लहर' के रचनाकार का क्या नाम है ?
7. 'उत्साह' कविता किस कवि की है ?
8. 'कुकुरमुत्ता' के कवि का नाम बताइए।
9. गिरिजाकुमार माथुर किस काव्य धारा के कवि हैं ?
10. ऋतुराज की कौन-सी कविता आपकी पाठ्य-पुस्तक में है ?
11. 'नाश और निर्माण' के कवि का क्या नाम है ?
12. 'पुल पर पानी' के कवि का क्या नाम है ?

उत्तर—1. सूरदास, 2. ब्रजभाषा, 3. तुलसीदास, 4. अवधी में, 5. कामायनी, 6. जयशंकर प्रसाद, 7. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', 8. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', 9. नई कविता के, 10. कन्यादान, 11. गिरिजाकुमार माथुर, 12. ऋतुराज।

अध्याय 5

गद्य की विधाओं का परिचय

प्रश्न 1. गद्य किसे कहते हैं ?

अथवा

गद्य के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए महत्व को बताइए।

उत्तर—गद्य हमारी स्वाभाविक अभिव्यक्ति है। गद्य के माध्यम से ही हम अपने दैनिक जीवन में सभी कार्यों को सम्पन्न करते हैं। निजी जीवन पत्र, डायरी आदि साहित्य में कहानी, उपन्यास, निबन्ध, नाटक, जीवनी आदि लेखन का माध्यम गद्य ही होता है। गद्य का क्रमिक विकास हिन्दी के आधुनिक काल के आरम्भ से हुआ।

गद्य का प्रयोग व्याख्या, तर्क, वर्णन एवं कथा के लिए होता है। गद्य में किसी कथ्य को सहजता से, सरलता से एवं स्पष्टता से व्याख्या करने की क्षमता है। व्याकरण के नियमों का प्रयोग भी आसानी से ग्रहण किया जा सकता है।

गद्य प्रयोग और प्रयोजन की दृष्टि से तीन प्रकार की होती है—(1) दैनिक कार्यकलाप की भाषा, (2) शास्त्र या तर्क की भाषा, (3) साहित्यिक भाषा।

प्रश्न 2. हिन्दी गद्य कितने रूपों में उपलब्ध है ?

अथवा

गद्य की चार विधाओं के नाम लिखिए।

उत्तर—हिन्दी गद्य की अनेक विधाएँ (रूप) हैं जो निम्नलिखित हैं—(1) निबन्ध, (2) नाटक, (3) एकांकी, (4) उपन्यास, (5) कहानी, (6) जीवनी, (7) आत्मकथा, (8) संस्मरण, (9) रेखाचित्र, (10) रिपोर्ताज, (11) गद्यकाव्य, (12) आलोचना, (13) यात्रावृत्त, (14) डायरी, (15) पत्र, (16) भेंटवार्ता आदि।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 3. 'निबन्ध' शब्द का अर्थ बताते हुए बाबू गुलाबराय के अनुसार निबन्ध की परिभाषा लिखिए।

अथवा

बाबू गुलाबराय के अनुसार निबन्ध की परिभाषा देते हुए हिन्दी साहित्य के दो निबन्धकारों के नाम लिखिए।

उत्तर—'निबन्ध' शब्द नि + बन्ध से मिलकर बना है जिसका अर्थ अच्छी तरह बँधी हुई परिमार्जित प्रौढ़ रचना से है। निबन्ध अपने आधुनिक रूप में 'ऐसे' (Essay) शब्द का पर्याय है। अंग्रेजी में इसका अर्थ है प्रयत्न, प्रयोग अथवा परीक्षण। अभिप्राय यह है कि किसी विषय का भली-भाँति प्रतिपादन करना या परीक्षण करना निबन्ध कहलाता है।

प्रश्न 4. निबन्ध किसे कहते हैं ? इसके कितने प्रकार होते हैं ?

अथवा

निबन्ध की परिभाषा लिखते हुए किन्हीं दो निबन्धकारों के नाम एवं रचनाएँ लिखिए।

उत्तर—निबन्ध उस गद्य रचना को कहते हैं जिसमें सीमित आकार के भीतर किसी विषय का वर्णन या प्रतिपादन एक विशेष निजीपन, स्वच्छन्दता, सौष्ठव और सजीवता तथा आवश्यक संगति और सम्बद्धता के साथ किया गया हो।

निबन्ध के निम्नलिखित प्रकार हैं—(1) कथात्मक, (2) वर्णनात्मक, (3) विचारात्मक, (4) भावात्मक।

कथात्मक निबन्धों में काल्पनिक वृत्त, आत्मचरित्रात्मक एवं पौराणिक आख्यानों का प्रयोग किया जाता है। **वर्णनात्मक** निबन्धों में प्रकृति या मनुष्य जीवन की घटनाओं का वर्णन होता है। **विचारात्मक** निबन्धों में अपने विचारों को सुसम्बद्धता से व्यक्त किया जाता है। **भावात्मक** निबन्धों में लेखक के हृदय से निकले भावों को एक वैचारिक सूत्र में नियन्त्रित करके लिखा जाता है।

दो निबन्धकार एवं उनकी रचनाएँ इस प्रकार हैं—(1) रामधारी सिंह 'दिनकर' (मिट्टी की ओर), (2) भगवती शरण सिंह (मानव के मूल में)।

प्रश्न 5. नाटक किसे कहते हैं ? नाटक के तत्व भी लिखिए।

उत्तर—रंगमंच पर प्रस्तुत करने के लिए किसी कथा को जब केवल पात्रों के संवादों के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है, तो वह रचना नाटक कहलाती है। नाटक में अभिनय का विशेष महत्व होता है।

नाटक के निम्नलिखित छः तत्व माने जाते हैं—(1) कथावस्तु, (2) पात्र, (3) कथोपकथन (संवाद), (4) देशकाल, (5) उद्देश्य, (6) रंगमंचीयता।

प्रश्न 6. हिन्दी के प्रसिद्ध नाटककारों के नाम बताइए।

अथवा

कोई दो प्रमुख नाटककारों के नाम लिखिए।

उत्तर—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, जयशंकर प्रसाद, हरिकृष्ण 'प्रेमी', उदयशंकर भट्ट, सेठ गोविन्ददास, रामकुमार वर्मा, लक्ष्मीनारायण मिश्र, लक्ष्मीनारायण लाल, उपेन्द्रनाथ 'अश्क', विष्णु प्रभाकर, जगदीशचन्द्र माथुर, धर्मवीर 'भारती' आदि ने इस नाटक विधा को आगे बढ़ाया।

प्रश्न 7. एकांकी किसे कहते हैं ? दो एकांकियों के नाम उनके लेखक सहित लिखिए।

उत्तर—एकांकी दृश्य काव्य की एक विधा है। एकांकी में एक अंक होता है। यह अंक दृश्यों में विभाजित हो सकता है। कम-से-कम समय में अधिक-से-अधिक प्रभाव एकांकी का लक्ष्य होता है। दो एकांकी निम्न प्रकार हैं—

(1) *'दीपदान'*—डॉ. रामकुमार वर्मा।

(2) *'बहू की विदा'*—विनोद रस्तोगी।

प्रश्न 8. एकांकी के कितने तत्व माने गये हैं ?

उत्तर—एकांकी के तत्व निम्नलिखित बताये गये हैं—(1) कथावस्तु, (2) कथोपकथन या संवाद, (3) पात्र या चरित्र-चित्रण, (4) देशकाल-वातावरण, (5) भाषा-शैली, (6) उद्देश्य, (7) रंगमंचीयता।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 9. नाटक और एकांकी में चार अन्तर लिखिए।

अथवा

नाटक और एकांकी में कोई दो अन्तर लिखिए।

उत्तर—नाटक और एकांकी में प्रमुख अन्तर निम्न प्रकार हैं—

क्र.सं.	नाटक	एकांकी
1.	नाटक में अनेक अंक हो सकते हैं।	एकांकी में एक अंक होता है।
2.	नाटक में अधिकारिक के साथ सहायक और गौण कथाएँ भी होती हैं।	एकांकी में एक ही कथा या घटना रहती है।
3.	कथानक की विकास प्रक्रिया धीमी रहती है।	कथानक आरम्भ से ही चरम लक्ष्य की ओर द्रुतगति से बढ़ता है।
4.	नाटक के कथानक में फैलाव और विस्तार रहता है। **उदाहरण**—'आषाढ़ का एक दिन' (मोहन राकेश)	एकांकी के कथानक में घनत्व रहता है। **उदाहरण**—'अंधेर नगरी' (भारतेन्दु हरिश्चन्द्र)

प्रश्न 10. उपन्यास किसे कहते हैं ? चार उपन्यासकारों के नाम लिखिए।

उत्तर—उपन्यास कथा का वह रूप है जिसमें जीवन का विशद् चित्रण होता है। पात्रों के जीवन की विस्तृत झाँकी प्रस्तुत कर उपन्यासकार एक ओर तो मानव चरित्र को व्यक्त करता है और दूसरी ओर अपने समय की प्रवृत्तियों का चित्रण करते हुए हमें कुछ सोचने पर विवश कर देता है। प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, यशपाल, मन्नू भंडारी चार प्रसिद्ध उपन्यासकार हैं।

प्रश्न 11. उपन्यास के कितने तत्व होते हैं ? उनके नाम लिखिए।

उत्तर—उपन्यास के छः तत्व होते हैं—(1) कथावस्तु, (2) पात्र तथा चरित्र चित्रण, (3) संवाद, (4) देशकाल वातावरण, (5) भाषा-शैली, (6) उद्देश्य।

प्रश्न 12. चार उपन्यासकारों के नाम लिखिए तथा उनके एक-एक उपन्यास का नाम लिखिए।

उत्तर— उपन्यासकार	**उपन्यास**
(1) प्रेमचंद	'*गोदान*'
(2) जयशंकर प्रसाद	'*तितली*'
(3) जैनेन्द्र	'*सुनीता*'
(4) मन्नू भंडारी	'*महाभोज*'

प्रश्न 13. कहानी किसे कहते हैं ? दो कहानीकारों के नाम लिखिए।

अथवा

कहानी किसे कहते हैं ? प्रसिद्ध कहानीकारों के नाम लिखिए।

उत्तर—कहानी एक कलात्मक छोटी रचना है। यह किसी घटना, भाव, संवेदना आदि की मार्मिक व्यंजना करती है। इसका आरम्भ और अन्त बहुत कलात्मक तथा प्रभावपूर्ण होता है। घटनाएँ परस्पर सम्बद्ध होती हैं। हर घटना लक्ष्य की ओर उन्मुख होती है। लक्ष्य पर पहुँचकर कहानी अपना विशिष्ट प्रभाव छोड़ती हुई समाप्त हो जाती है।

दो प्रसिद्ध कहानीकार एवं उनकी रचनाएँ हैं—(1) **मुंशी प्रेमचंद** ('*कफन*'), (2) **जयशंकर प्रसाद** ('*आकाशदीप*')।

जयशंकर प्रसाद, प्रेमचंद, अज्ञेय, जैनेन्द्र, भगवतीचरण वर्मा, कमलेश्वर, विष्णु प्रभाकर, धर्मवीर 'भारती', मोहन राकेश, शैलेश मटियानी, भीष्म साहनी, निर्मल वर्मा, शिवानी आदि प्रसिद्ध कहानीकार हैं।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 14. कहानी के कौन-कौन-से तत्व होते हैं ?

उत्तर—कहानी के निम्नलिखित तत्व होते हैं—

(1) कथावस्तु, (2) पात्र एवं चरित्र-चित्रण, (3) कथोपकथन या संवाद, (4) देशकाल व वातावरण, (5) भाषा-शैली, (6) उद्देश्य।

प्रश्न 15. कहानी एवं उपन्यास में चार अन्तर लिखिए।

अथवा

कहानी और उपन्यास में कोई दो अन्तर लिखिए।

उत्तर—कहानी और उपन्यास में चार अन्तर इस प्रकार हैं—(1) कहानी लघु आकार की होती है जबकि उपन्यास का आकार बड़ा होता है। (2) कहानी में जीवन के किसी एक अंश का चित्रण होता है जबकि उपन्यास में जीवन का वृहद् चित्रण होता है। (3) कहानी में प्रारम्भ से अन्त तक भाव सघनता बनी रहती है जबकि उपन्यास में कई स्थल सघन प्रभावी नहीं होते हैं। (4) कहानी लगभग आधा घण्टे में पढ़ ली जाती है जबकि उपन्यास दीर्घकाल में पढ़ पाते हैं।

प्रश्न 16. जीवनी की परिभाषा दीजिए।

उत्तर—किसी महापुरुष या प्रसिद्ध व्यक्ति के जीवन की घटनाओं, उनके कार्य-कलापों आदि का आत्मीयता के साथ वर्णन जिस गद्य विधा में किया जाता है, उसे जीवनी कहते हैं।

प्रश्न 17. आत्मकथा की परिभाषा लिखिए।

उत्तर—आत्मकथा में लेखक स्वयं अपनी जीवन-यात्रा पूरी आत्मीयता से व्यवस्थित रूप में पाठक के सम्मुख रखता है।

प्रश्न 18. रेखाचित्र किसे कहते हैं ?

उत्तर—रेखाचित्र में शब्दों की कलात्मक रेखाओं द्वारा किसी व्यक्ति, वस्तु अथवा घटना के बाह्य और आन्तरिक स्वरूप का शब्दचित्र अंकित किया जाता है।

प्रश्न 19. संस्मरण की परिभाषा लिखिए।

उत्तर—संस्मरण में लेखक अपने अनुभव की वस्तु, व्यक्ति अथवा घटना का कलात्मक विवरण अपनी स्मृति के आधार पर प्रस्तुत करता है।

प्रश्न 20. यात्रावृत्त किसे कहते हैं ?

उत्तर—यात्रावृत्त वह विधा है जिसमें लेखक किसी विशेष स्थल की यात्रा का ऐसा सजीव वर्णन करता है कि पाठक पढ़कर ही ऐसा अनुभव करने लगे जैसे वह उसी स्थान के सारे दृश्य स्वयं देख रहा है।

प्रश्न 21. जीवनी और आत्मकथा में कोई चार अन्तर लिखिए।

उत्तर—जीवनी और आत्मकथा में चार अन्तर इस प्रकार हैं—(1) जीवनी में लेखक किसी अन्य के जीवनवृत्त को प्रस्तुत करता है जबकि आत्मकथा में लेखक स्वयं के जीवनवृत्त को प्रस्तुत करता है। (2) जीवनी प्राय: महापुरुषों की लिखी जाती हैं जबकि आत्मकथा कोई भी लिख सकता है। (3) जीवनी में तथ्यों तथा विवरण पर ध्यान रहता है जबकि आत्मकथा में अनुभूति की गहराई होती है। (4) जीवनी वर्णनात्मक शैली में लिखी जाती हैं जबकि आत्मकथा कथात्मक शैली में लिखी जाती है।

प्रश्न 22. गद्यकाव्य विधा के बारे में आप क्या जानते हैं ?

उत्तर—यह कवितापूर्ण गद्य रचना होती है। जब किसी विषय की गहन भावानुभूति काव्यमयी भाषा-शैली और अतिशय भावुकता के साथ प्रस्तुत की जाती है, तब हम उस रचना को गद्यकाव्य कहते हैं। गहन भावानुभूति, काव्यमयी भाषा शैली, सुललित भाषा, आलंकारिकता, भावात्मक शैली आदि इसकी विशेषताएँ हैं।

प्रश्न 23. 'रिपोर्ताज' से आप क्या समझते हैं ? लिखिए।

उत्तर—'रिपोर्ताज' फ्रांसीसी भाषा का शब्द है। इसका अर्थ रोचक और भावात्मक है। यह कलात्मक साहित्यिक विधा है। आँखों देखी घटनाओं पर ही रिपोर्ताज लिखा जा सकता है।

प्रश्न 24. पत्र-साहित्य किसे कहते हैं ? किन्हीं दो पत्र-साहित्यकारों एवं उनकी एक-एक कृति का नाम लिखिए।

Scanned with CamScanner

उत्तर—रचनाशील व्यक्ति द्वारा लिखे गए वे पत्र जिनमें समग्र मानव समाज के हित की बात लिखी होती है, वे साहित्यिक दृष्टि से मूल्यवान हो जाते हैं, वे ही पत्र-साहित्य की कोटि में आते हैं। पत्र-साहित्यकार एवं उनकी कृति निम्न प्रकार हैं—

पत्र साहित्यकार	कृति
(1) जवाहरलाल नेहरू	*'पिता के पत्र पुत्री के नाम'*
(2) महावीर प्रसाद द्विवेदी	*'पत्रावली'*

महत्वपूर्ण वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

❖ बहु-विकल्पीय प्रश्न

1. निबन्ध रचना का प्रारम्भ माना जाता है—
(क) भारतेन्दु युग से, (ख) द्विवेदी युग से,
(ग) शुक्ल युग से, (घ) शुक्लोत्तर युग से।

2. प्रेमचंद किस गद्य विधा के सम्राट माने जाते हैं ?
(क) निबन्ध, (ख) उपन्यास,
(ग) नाटक, (घ) आत्मकथा।

3. किस पत्रिका के साथ कहानी का जन्म माना जाता है ?
(क) प्रदीप, (ख) इन्दु,
(ग) सरस्वती, (घ) प्रभा।

4. एकांकी में कितने अंक होते हैं ?
(क) चार, (ख) तीन,
(ग) दो, (घ) एक।

5. हिन्दी की प्रथम कहानी मानी जाती है—
(क) इन्दुमती, (ख) ग्यारह वर्ष का समय,
(ग) पूस की रात, (घ) गुण्डा।

6. हिन्दी में नाटक सम्राट किसे माना जाता है ?
(क) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, (ख) जयशंकर प्रसाद,
(ग) हरिकृष्ण प्रेमी, (घ) उपेन्द्रनाथ अश्क।

7. 'सरस्वती' के प्रसिद्ध सम्पादक कौन रहे हैं ?
(क) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, (ख) किशोरीलाल गोस्वामी,
(ग) महावीरप्रसाद द्विवेदी, (घ) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल।

8. यदि गद्य कवियों की कसौटी है तो गद्य की कसौटी है—
(क) निबन्ध, (ख) उपन्यास,
(ग) जीवनी, (घ) कहानी।

9. प्रसिद्ध कहानीकार हैं—
(क) महावीर प्रसाद द्विवेदी, (ख) प्रेमचंद,
(ग) रामविलास शर्मा, (घ) हजारीप्रसाद द्विवेदी।

10. कहानी के तत्व होते हैं—
(क) आठ, (ख) सात,
(ग) छः, (घ) चार।

उत्तर—1. (क), 2. (ख), 3. (ग), 4. (घ), 5. (क), 6. (ख), 7. (ग), 8. (क), 9. (ख), 10. (ग)।

Scanned with CamScanner

❖ रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. उपन्यास का शाब्दिक अर्थ ..... है।
2. नाटक सम्राट कहलाते हैं .....।
3. ..... में लेखक स्वयं के जीवनवृत्त को प्रस्तुत करता है।
4. प्रेमचंद ..... सम्राट माने जाते हैं।
5. ..... आधुनिक काल की सर्वाधिक लोकप्रिय विधा है।
6. 'नेताजी का चश्मा' गद्य की ..... विधा की रचना है।
7. 'बालगोबिन भगत' ..... विधा की रचना है।
8. ..... में कथात्मक गद्य में जीवन का विशद अंकन होता है।
9. किसी महापुरुष के जीवनवृत्त की यथार्थ प्रस्तुति ..... कहलाती है।
10. एक अंक वाली रचना ..... कहलाती है।
11. हिन्दी का प्रथम उपन्यास ..... को माना गया है।

उत्तर—1. समीप रखना, 2. जयशंकर प्रसाद, 3. आत्मकथा, 4. उपन्यास, 5. कहानी, 6. कहानी, 7. रेखाचित्र, 8. उपन्यास, 9. जीवनी, 10. एकांकी, 11. परीक्षा गुरु।

❖ सत्य/असत्य

1. 'यदि गद्य कवियों की कसौटी है तो निबन्ध गद्य की कसौटी है।' यह कथन आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का है।
2. हजारीप्रसाद द्विवेदी द्विवेदी युग के निबन्धकार हैं।
3. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हिन्दी के प्रसिद्ध निबन्ध लेखक हैं।
4. 'पथ के साथी' एक संस्मरण रचना है।
5. स्वयं प्रकाश ने कोई कहानी नहीं लिखी हैं।
6. 'दीपदान' एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक एकांकी है।
7. 'संस्मरण' में कल्पना तत्व की प्रधानता होती है।
8. किसी घटना का आँखों देखा सरस वर्णन रिपोर्ताज कहलाता है।

उत्तर—1. सत्य, 2. असत्य, 3. सत्य, 4. सत्य, 5. असत्य, 6. सत्य, 7. असत्य, 8. सत्य।

❖ सही जोड़ी मिलाइए

I.

'अ'	'ब'
1. कई अंकों वाली रचना	(क) संस्मरण
2. मानवीय करुणा की दिव्य चमक	(ख) नाटक
3. श्रेष्ठ निबन्ध लेखक	(ग) महादेवी वर्मा
4. प्रसिद्ध संस्मरणकार	(घ) जयशंकर प्रसाद
5. नाटक सम्राट	(ङ) रामचन्द्र शुक्ल

उत्तर—1. → (ख), 2. → (क), 3. → (ङ), 4. → (ग), 5. → (घ)।

II.

'अ'	'ब'
1. प्रसिद्ध आंचलिक उपन्यासकार	(क) रेखाचित्रकार
2. बालगोबिन भगत	(ख) कई अंक होते हैं
3. महादेवी वर्मा	(ग) प्रेमचंद
4. नाटक में	(घ) रामवृक्ष बेनीपुरी
5. 'गोदान' उपन्यास के रचयिता	(ङ) फणीश्वरनाथ 'रेणु'

उत्तर—1. → (ङ), 2. → (घ), 3. → (क), 4. → (ख), 5. → (ग)।

Scanned with CamScanner

❖ एक शब्द/वाक्य में उत्तर

1. छायावाद का प्रारम्भ कब हुआ था ?
2. हिन्दी की सर्वाधिक लोकप्रिय विधा कौन-सी है ?
3. हजारीप्रसाद द्विवेदी किस युग के लेखक हैं ?
4. किस युग में हिन्दी गद्य की विभिन्न विधाओं का विकास हुआ ?
5. 'चिन्तामणि' किसकी रचना है ?
6. नाटक में कितने अंक होते हैं ?
7. कहानी के कितने तत्व माने गए हैं ?
8. रिपोर्ताज किस भाषा का शब्द है ?
9. राहुल सांकृत्यायन किस विधा के प्रसिद्ध लेखक हैं ?
10. एक अंक वाली रचना क्या कहलाती है ?

उत्तर–1. सन् 1920 में, **2.** कहानी, **3.** छायावाद, **4.** शुक्लोत्तर युग में, **5.** आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, **6.** एक से अधिक अंक होते हैं, **7.** छः, **8.** फ्रेंच भाषा का, **9.** यात्रा वृत्तान्त के, **10.** एकांकी।

क्षितिज–भाग 2

अध्याय 6

गद्य खण्ड : परीक्षोपयोगी गद्यांशों की संदर्भ, प्रसंग सहित व्याख्याएँ

10 नेताजी का चश्मा

–स्वयं प्रकाश

(1) मूर्ति संगमरमर की थी। टोपी की नोंक से कोट के दूसरे बटन तक कोई दो फुट ऊँची। जिसे कहते हैं बस्ट। और सुन्दर थी। नेताजी सुंदर लग रहे थे। कुछ-कुछ मासूम और कमसिन। फौजी वर्दी थी। मूर्ति को देखते ही 'दिल्ली चलो' और 'तुम मुझे खून दो .....' वगैरह याद आने लगते थे। इस दृष्टि से यह सफल और सराहनीय प्रयास था।

संदर्भ–यह गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक के *'नेताजी का चश्मा'* पाठ से लिया गया है। इसके लेखक *स्वयं प्रकाश* है।

प्रसंग–यहाँ पर कस्बे के मुख्य चौराहे पर लगाई गई नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की प्रतिमा के बारे में बताया गया है।

व्याख्या–सुभाषचन्द्र बोस की जो मूर्ति चौराहे पर लगाई गई थी वह संगमरमर की थी, उनके सिर पर जो टोपी थी उसकी ऊपर की नोंक से लेकर पहने हुए कोट की दूसरे बटन तक की ऊँचाई लगभग दो फुट थी। इसको बस्ट कहा जाता है। जो मूर्ति लगवाई गई थी वह बहुत अच्छी लग रही थी। उसमें नेताजी सुभाषचन्द्र बोस बहुत सुन्दर लग रहे थे। मूर्ति में वे बड़े भोले-भाले तथा नाजुक प्रतीत हों रहे थे। उन्होंने फौज की वर्दी पहन रखी थी। मूर्ति को देखते ही लगता था कि वे कह रहे हों–'दिल्ली चलो' या 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें

Scanned with CamScanner

आजादी दूँगा।' इसी तरह नेताजी के नारे याद आ जाते थे। इस तरह इस मूर्ति को चौराहे पर लगवाने का कार्य बहुत ही प्रशंसा के योग्य था।

विशेष—(1) नेताजी के स्वतन्त्रता आन्दोलन में किए गए कार्यों की झलक मूर्ति से प्रकट हो रही थी। (2) चित्रात्मक शैली तथा सरल भाषा का प्रयोग हुआ है।

(2) जीप कस्बा छोड़कर आगे बढ़ गई तब भी हालदार साहब इस मूर्ति के बारे में ही सोचते रहे और अन्त में इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि कुल मिलाकर कस्बे के नागरिकों का यह प्रयास सराहनीय ही कहा जाना चाहिए। महत्व मूर्ति के रंग-रूप या कद का नहीं, उस भावना का है वरना तो देश-भक्ति भी आजकल मजाक की चीज होती जा रही है।

संदर्भ—पूर्ववत्।

प्रसंग—देश-प्रेम के भाव को महत्व देने वाले हालदार साहब को देशभक्त सुभाषचन्द्र बोस की मूर्ति लगवाया जाना उचित लगता है।

व्याख्या—नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की मूर्ति पर वास्तविक चश्मा देखकर हालदार साहब हँस दिए। उनकी जीप उस कस्बे को छोड़ चुकी थी पर वे उसी मूर्ति के बारे में सोच रहे थे। सोच-विचार के बाद वे इस नतीजे पर पहुँचे कि सुभाषचन्द्र बोस की मूर्ति लगवाने का विचार कस्बे के निवासियों का अच्छा प्रयत्न है। उनकी दृष्टि में मूर्ति के रंग, आकार, प्रकार या ऊँचाई का विशेष महत्व नहीं। उन्हें तो इस बात की प्रसन्नता है कि एक देशभक्त की मूर्ति लगवाना देशप्रेम का परिचायक है। नहीं तो वर्तमान समय में देश-भक्ति मजाक का विषय बन रही है। लोग देशभक्तों की हँसी उड़ाते हैं।

विशेष—(1) मूर्ति के लगने से देशभक्त सुभाष के कार्यों की याद से चेतना जागती है। (2) विचारात्मक शैली तथा सरल भाषा का प्रयोग हुआ है।

(3) बार-बार सोचते, क्या होगा उस कौम का जो अपने देश की खातिर घर-गृहस्थी-जवानी-जिंदगी सब कुछ होम देने वालों पर भी हँसती है और अपने लिए बिकने के मौके ढूँढ़ती है। दुःखी हो गए।

संदर्भ—पूर्ववत्।

प्रसंग—इसमें हालदार साहब की देशवासियों की स्वार्थी प्रवृत्ति तथा देश-प्रेम के अभाव पर चिन्ता व्यक्त हुई है।

व्याख्या—देश-प्रेम से भरे हालदार साहब पुनः-पुनः विचार करते हैं कि इस देश में निवास करने वाली स्वार्थी जातियों के कार्यों का क्या परिणाम होगा। ये लोग देश के लिए अपने घर-परिवार, यौवन, जीवन आदि को न्यौछावर कर देने वालों का मजाक बनाते हैं। दूसरी ओर ये अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए अपने ईमान को बेचने के अवसरों की खोज में रहते हैं। इस स्वार्थी समाज की करतूतों के प्रति चिन्तित होते हुए हालदार साहब अत्यन्त दुःखी हो उठे।

विशेष—(1) देश-प्रेम के अभाव के प्रति चिन्ता प्रकट हुई है। (2) भावात्मक शैली तथा सरस भाषा का प्रयोग हुआ है।

11 बालगोबिन भगत

—रामवृक्ष बेनीपुरी

(1) खेतीबारी करते, परिवार रखते भी, बालगोबिन भगत साधु थे—साधु की सब परिभाषाओं में खरे उतरने वाले। कबीर को 'साहब' मानते थे, उन्हीं के गीतों को गाते, उन्हीं के आदेशों पर चलते। कभी झूठ नहीं बोलते, खरा व्यवहार रखते। किसी से भी दो टूक बात करने में संकोच नहीं करते, न किसी से खामखाह झगड़ा मोल लेते। किसी की चीज नहीं छूते, न बिना पूछे व्यवहार में लाते।

संदर्भ—यह गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक के *'बालगोबिन भगत'* पाठ से लिया गया है। इसके लेखक *रामवृक्ष बेनीपुरी* हैं।

प्रसंग—इस गद्यांश में बालगोबिन भगत के स्वभाव तथा आचरण का परिचय दिया गया है।

व्याख्या—लेखक के अनुसार बालगोबिन भगत सामान्य व्यक्तियों की तरह खेती करते थे, उनका परिवार भी था फिर भी वे साधु स्वभाव के थे। गृहस्थ आदि रखते हुए भी वे साधु की जो पहचान होती है उस

Scanned with CamScanner

पर पूर्णत: सटीक बैठते थे। बालगोबिन की कबीर में आस्था थी उन्हें वे 'साहब' मानते थे। उनके पदों को ही वे गाते थे। जीवन में भी वे कबीर के निर्देशों का ही पालन करते थे। वे सदैव सत्य बोलते थे। उनका व्यवहार सदा खरा, स्पष्ट होता था। वे स्पष्ट बात करते थे। वे न तो किसी से अनावश्यक झगड़ा करते थे और न किसी दूसरे की चीज को हाथ लगाते थे। यदि किसी की चीज काम में लाते थे तो पहले उसके मालिक से पूछ लेते थे।

विशेष—(1) बालगोबिन भगत के सच्चे, सरल आचरण का स्वाभाविक चित्रण हुआ है। (2) वर्णनात्मक शैली तथा सरल भाषा का प्रयोग किया गया है।

(2) बालगोबिन भगत की संगीत साधना का चरम उत्कर्ष उस दिन देखा गया जिस दिन उनका बेटा मरा। इकलौता बेटा था वह। कुछ सुस्त और बोदा-सा था, किन्तु इसी कारण बालगोबिन भगत उसे और भी मानते। उनकी समझ से ऐसे आदमियों पर ही ज्यादा नजर रखनी चाहिए या प्यार करना चाहिए; क्योंकि ये निगरानी और मुहब्बत के ज्यादा हकदार होते हैं।

संदर्भ—पूर्ववत्।

प्रसंग—इसमें बालगोबिन भगत के मानवीय रूप का अंकन किया है।

व्याख्या—संगीत के प्रति गहरा लगाव रखने वाले बालगोबिन भगत की संगीत साधना का सबसे उत्कृष्ट रूप उस दिन देखने को मिला जिस दिन उनके पुत्र की मृत्यु हुई। वह उनका अकेला बेटा था। वह दिमाग से कमजोर तथा निर्बल था। बालगोबिन भगत मानते थे कि इस तरह के लोगों का विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए। ऐसे लोग अधिक देखभाल तथा सहायता के अधिकारी होते हैं। ये अपनी देखभाल नहीं कर पाते हैं इसलिए दूसरों को इनकी हिफाजत का ध्यान रखना जरूरी होता है।

विशेष—(1) बालगोबिन भगत के चरित्र का महत्वपूर्ण पक्ष उजागर हुआ है। (2) वर्णनात्मक शैली तथा व्यावहारिक भाषा का प्रयोग किया गया है।

(3) बालगोबिन भगत गाए जा रहे हैं। हाँ, गाते-गाते कभी-कभी पतोहू के नजदीक भी जाते और उसे रोने के बदले उत्सव मनाने को कहते। आत्मा-परमात्मा के पास चली गई, विरहिणी अपने प्रेमी से जा मिली, भला इससे बढ़कर आनंद की कौन बात ? मैं, कभी-कभी सोचता यह पागल तो नहीं हो गए। किन्तु नहीं, वह जो कुछ कह रहे थे उसमें उनका विश्वास बोल रहा था वह चरम विश्वास जो हमेशा ही मृत्यु पर विजयी होता आया है।

संदर्भ—पूर्ववत्।

प्रसंग—यहाँ बालगोबिन भगत की मान्यताओं में पक्का विश्वास प्रकट हुआ है।

व्याख्या—बालगोबिन भगत अपने बेटे के शव के पास आसन जमाकर बैठे हैं और कबीर के पद तन्मय होकर गाए जा रहे हैं। गाते-गाते वे अपनी पुत्र-वधू के पास भी पहुँच जाते हैं और उसे समझाते हैं कि यह रोने का समय नहीं है। इस समय तो उत्सव मनाना चाहिए क्योंकि परमात्मा के वियोग में दु:खी रहने वाली जीवात्मा अपने प्रेमी परमात्मा से जा मिली है। इस मिलन से अधिक प्रसन्नता का अवसर और क्या हो सकता है। लेखक कहते हैं कि बेटे की मृत्यु के समय उनकी ऐसी बातें सुनकर मेरे मन में आता है कि कहीं इनका दिमाग खराब तो नहीं हो गया है, ये पागल तो नहीं हो गए हैं जो ऐसी बातें कह रहे हैं। परन्तु जिस विश्वास के साथ वे ये बातें कह रहे हैं उसमें उनकी आस्था प्रकट हो रही है। यह वह आस्था है जिसने सदैव मृत्यु को पराजित किया है। इससे स्पष्ट है कि वे जो कह रहे हैं, वह सत्य है।

विशेष—(1) कबीर की जीवात्मा-परमात्मा के प्रेम की मान्यता के प्रति बालगोबिन भगत का दृढ़ विश्वास व्यक्त है। (2) विचारात्मक शैली तथा सरल भाषा को अपनाया है।

12 लखनवी अन्दाज

—यशपाल

***विशेष**—कोविड परिस्थितियों के चलते यह पाठ वार्षिक/बोर्ड परीक्षा 2022 के लिए बोर्ड द्वारा पाठ्यक्रम में से हटा दिया गया है।*

Scanned with CamScanner

13 मानवीय करुणा की दिव्य चमक

— सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

(1) फादर को जहरबाद से नहीं मरना चाहिए था। जिसकी रगों में दूसरों के लिए मिठास भरे अमृत के अतिरिक्त कुछ नहीं था उसके लिए इस जहर का विधान क्यों हो ? यह सवाल किस ईश्वर से पूछें ? प्रभु की आस्था ही जिसका अस्तित्व था। वह देह की इस यातना की परीक्षा उम्र की आखिरी देहरी पर क्यों दे ?

संदर्भ—यह गद्य खण्ड हमारी पाठ्य-पुस्तक के *'मानवीय करुणा की दिव्य चमक'* पाठ से अवतरित है। इसके लेखक *सर्वेश्वर दयाल सक्सेना* हैं।

प्रसंग—यहाँ फादर कामिल बुल्के की जहरबाद से हुई मृत्यु पर दु:ख प्रकट किया गया है। धार्मिक जीवन जीने वाले व्यक्ति का इस प्रकार निधन होना पीड़ाकारक है।

व्याख्या—लेखक दु:खी मन से कहते हैं कि पूरी तरह पवित्र व्यक्तित्व के धनी फादर कामिल का जहरबाद (गैंग्रीन) से निधन नहीं होना चाहिए था। फादर की नस-नस में दूसरों के लिए माधुर्य से भरी अमरता की भावना थी। वे किसी के प्रति बुरे भाव नहीं रखते थे। सभी के प्रति मधुर व्यवहार रखने वाले उस महामानव के लिए इस पीड़ादायक मृत्यु का विधान उचित नहीं है। लेखक प्रश्न करते हैं कि इसका उत्तर किस भगवान के पास है। फादर तो ईश्वर में गहरा विश्वास रखते थे उन्हें जीवन के अन्तिम समय में इस तरह की यातनापूर्ण परीक्षा क्यों देनी पड़ी, यह आश्चर्यजनक है। उन्हें इस कठिन परीक्षा से नहीं गुजरना चाहिए था।

विशेष—(1) ईश्वर के प्रति आस्थावान एक धार्मिक व्यक्ति की गैंग्रीन जैसे कष्ट से मृत्यु बहुत पीड़ादायक है। (2) भावात्मक शैली तथा साहित्यिक भाषा का प्रयोग हुआ है।

(2) फादर को याद करना एक उदास शांत संगीत को सुनने जैसा है। उनको देखना करुणा के निर्मल जल में स्नान करने जैसा था और उनसे बात करना कर्म के संकल्प से भरना था।

संदर्भ—पूर्ववत्।

प्रसंग—इस गद्य खण्ड में फादर कामिल बुल्के के शान्त, गम्भीर, करुणापूर्ण कर्मठ व्यक्तित्व का वर्णन किया गया है।

व्याख्या—लेखक कहते हैं कि फादर कामिल बुल्के को याद करना ठीक वैसा ही शान्त और गम्भीर है जैसे किसी गम्भीर और शान्त भाव भरे संगीत को सुनना होता है। उनके उदार व्यक्तित्व का दर्शन करना करुणा के पवित्र जल में नहाने जैसा था। उनको देखते ही करुणा का स्रोत प्रवाहित हो उठता था। वे जब बातचीत करते थे तो उनके काम करने की प्रेरणा का स्वर भरा होता था। उनसे बात करके कर्मठ बनने का भाव पैदा होता था।

विशेष—(1) यहाँ पर फादर कामिल बुल्के के प्रेरणा देने वाले व्यक्तित्व का वर्णन हुआ है। (2) विचारात्मक शैली तथा साहित्यिक भाषा का प्रयोग हुआ है।

(3) उनकी चिंता हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में देखने की थी। हर मंच से इसकी तकलीफ बयान करते, इसके लिए अकाट्य तर्क देते। बस इसी एक सवाल पर उन्हें झुंझलाते देखा है और हिन्दी वालों द्वारा ही हिन्दी की उपेक्षा पर दुख करते उन्हें पाया है।

संदर्भ—पूर्ववत्

प्रसंग—इस गद्यांश में फादर कामिल बुल्के का हिन्दी के प्रति लगाव का भाव प्रकट हुआ है।

व्याख्या—हिन्दी को हृदय से चाहने वाले फादर कामिल बुल्के उसे भारत की राष्ट्रभाषा देखना चाहते थे। हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाए जाने की बात वे प्रत्येक अवसर पर कहते थे। राष्ट्रभाषा बनाने की बात को वे बड़े सशक्त ढंग से रखते थे। इसकी पुष्टि में वे जो तर्क देते थे उन्हें काट पाना सम्भव न था। मात्र हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के प्रश्न पर ही झुंझला उठते थे। उन्हें हिन्दी वालों से शिकायत थी कि वे ही हिन्दी की अवहेलना करते हैं। उसके प्रति निष्ठावान नहीं हैं। हिन्दी वालों द्वारा हिन्दी का अनादर किए जाने पर वे बहुत दु:खी रहते थे। हिन्दी से जुड़े लोगों की उदासीनता से वे खिन्न रहते थे।

विशेष—(1) यहाँ पर फादर कामिल बुल्के के हिन्दी प्रेम को व्यक्त किया गया है। (2) भावात्मक शैली और सरल भाषा का प्रयोग हुआ है।

Scanned with CamScanner

14 एक कहानी यह भी

– मन्नू भंडारी

(1) नवाबी आदतें, अधूरी महत्वाकांक्षाएँ, हमेशा शीर्ष पर रहने के बाद हाशिए पर सरकते जाने की यातना क्रोध बनकर हमेशा माँ को कंपाती-थरथराती रहती थी। अपनों के हाथों विश्वासघात की जाने कैसी गहरी चोटें होंगी वे जिन्होंने आँख मूँदकर सबका विश्वास करने वाले पिता को बाद के दिनों में इतना शक्की बना दिया था कि जब-तब हम लोग भी उसकी चपेट में आते ही रहते।

संदर्भ–यह गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक के '*एक कहानी यह भी*' पाठ से लिया गया है। इसकी लेखिका *मन्नू भंडारी* हैं।

प्रसंग–इस अंश में लेखिका मन्नू भण्डारी ने अपने पिता के बारे में बताया है कि अपने ही लोगों से धोखा खाने के बाद वे शक्की स्वभाव के हो गए थे।

व्याख्या–लेखिका मन्नू भण्डारी बताती हैं कि उनके पिताजी कभी बहुत उदार, सम्पन्न तथा प्रतिष्ठा वाले थे। किन्तु अब उनकी स्थिति वैसी नहीं रह गई थी। उनकी आदतें नवाबों जैसी थी, जिन इच्छाओं को वे पूरी करना चाहते थे वे अधूरी ही रह गई थीं। वे सबसे ऊपर रहते आए थे किन्तु अब उनकी वह हालत न थी, अब वे किनारे होते जा रहे थे। इससे वे बहुत दुःखी रहते थे। उनमें क्रोध की भावना बहुत हो गई थी, जो माँ पर उतरता था। वे उनके क्रोध के कारण हर समय कंपकंपाती तथा थरथराती रहती थीं। उन्होंने अपने निजी लोगों के विश्वासघात को झेला था, उसकी अत्यन्त गहरी चोटें उनके हृदय में पीड़ा जगाती थीं। स्थिति यह हो गई थी कि जो पिताजी सभी पर आँख बन्द करके विश्वास किया करते थे अब धोखा खाने के बाद इतने शंकालु हो गए थे कि अपने बच्चों पर भी शंका करने लगे थे। उन्हें भी जब तब उसकी पीड़ा सहन करनी पड़ती थी।

विशेष–(1) लेखिका में अपने खास लोगों से धोखा खाए अपने पिता के शंकालु तथा क्रोधी स्वभाव का चित्रण किया है। (2) विचारात्मक शैली तथा सरल भाषा का प्रयोग हुआ है।

(2) केवल बाहरी भिन्नता के आधार पर अपनी परंपरा और पीढ़ियों को नकारने वालों को क्या सचमुच इस बात का बिल्कुल अहसास नहीं होता कि उनका आसन्न अतीत किस कदर उनके भीतर जड़ जमाए बैठा रहता है। समय का प्रवाह भले ही हमें दूसरी दिशाओं में बहाकर ले जाए ..... स्थितियों का दबाव भले ही हमारा रूप बदल दे, हमें पूरी तरह उससे मुक्त तो नहीं कर सकता।

संदर्भ–पूर्ववत्।

प्रसंग–यहाँ बताया गया है कि पुरानी परम्पराएँ और पीढ़ियाँ मनुष्य को किसी-न-किसी रूप में अवश्य प्रभावित करती हैं।

व्याख्या–लेखिका बताती हैं कि बाहर के अलगाव मात्र के कारण पुरानी परम्पराओं और पीढ़ियों को नकारा नहीं जा सकता है। इस तरह नकारने वालों को क्या वास्तव में यह अनुभव नहीं होता है कि उनके भीतर पुराने समय की परम्पराएँ तथा पीढ़ियों की मान्यताएँ स्थिर रूप में विद्यमान रहती हैं। समय के परिवर्तन के कारण व्यक्ति अन्य प्रकार का जीवन जी सकता है अथवा परिस्थितियों के कारण हमारे काम का रूप भले ही परिवर्तित हो सकता है। फिर भी पुरानी परम्पराओं और पीढ़ियों के प्रभाव किसी-न-किसी रूप में रहते ही हैं, उनसे पूरी तरह छुटकारा मिलना सम्भव नहीं है।

विशेष–(1) इसमें बताया गया है कि पुरानी परम्पराओं का प्रभाव निश्चित रूप से पड़ता है। (2) विचारात्मक शैली तथा शुद्ध भाषा का प्रयोग हुआ है।

(3) एक बवंडर शहर में मचा हुआ था और एक घर में। पिताजी की आजादी की सीमा यहीं तक थी कि उनकी उपस्थिति में घर में आए लोगों के बीच उठूँ-बैठूँ, जानू-समझूँ। हाथ उठा-उठाकर नारे लगाती, हड़तालें करवाती, लड़कों के साथ शहर की सड़कें नापतीं लड़की को अपनी सारी आधुनिकता के बावजूद बर्दाश्त करना उनके लिए मुश्किल हो रहा था तो किसी की दी हुई आजादी के दायरे में चलना मेरे लिए। जब रगों में लहू की जगह लावा बहता हो तो सारे निषेध, सारी वर्जनाएँ और सारा भय कैसे ध्वस्त हो जाता है, यह भी जाना और अपने क्रोध से सबको थरथरा देने वाले पिताजी से टक्कर लेने का जो सिलसिला तब शुरू हुआ था, राजेन्द्र से शादी की, तब तक यह चलता ही रहा।

Scanned with CamScanner

संदर्भ—पूर्ववत्।

प्रसंग—यहाँ लेखिका ने भारत के स्वाधीनता आन्दोलन के समय की परिस्थितियों में अपनी सक्रिय भागीदारी के बारे में बताया है।

व्याख्या—लेखिका कहती हैं कि स्वतन्त्रता आन्दोलन के कारण शहर भर में प्रभात फेरियों, हड़तालों, जुलूसों का बवंडर मचा हुआ था। चारों ओर शोर-शराबा था। दूसरी ओर उनकी आन्दोलन में सक्रिय भागीदारी के कारण घर में उग्र स्थितियाँ थीं। पिता मुझे इतनी ही आजादी देने के पक्ष में थे कि मैं घर पर आने वाले लोगों के साथ बातचीत करूँ। उनके विचार जानूँ और अपने विचार व्यक्त करूँ। आधुनिक विचारों वाले होते हुए भी उन्हें यह स्वीकार नहीं था कि मैं हाथ उठाकर नारे लगाऊँ। गली-गली, मुहल्ले-मुहल्ले में घूमती फिरूँ, विद्यालयों, कारखानों में हड़ताल कराती फिरूँ या फिर लड़कों के साथ शहर भर की सड़कों पर घूमती फिरूँ। दूसरी ओर, मेरे हृदय में आजादी का जो जज्बा जाग गया था वह सीमाएँ मानने को तैयार नहीं था। फलत: दोनों में टकराव स्वाभाविक था। लेखिका कहती हैं कि उनकी नसों में रक्त की जगह ज्वालामुखी दहकता था इसलिए मैं कोई पाबन्दी, कोई विरोध, कोई डर मानने को तैयार न थी। उनको तभी अनुभव हुआ कि अपने गुस्से से सभी को कंपकंपा देने वाले पिताजी से कैसे टक्कर ली जा सकती है। टकराव का यह क्रम तब से प्रारम्भ होकर उनकी राजेन्द्र के साथ शादी होने तक चलता ही रहा।

विशेष—(1) स्वाधीनता आन्दोलन के समय की लेखिका उग्र गतिविधियों से खिन्न पिता से उनका टकराव होने लगा था। (2) भावात्मक शैली तथा साहित्यिक भाषा का प्रयोग हुआ है।

15 स्त्री-शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खण्डन

—महावीरप्रसाद द्विवेदी

(1) नाटकों में स्त्रियों का प्राकृत बोलना उनके अपढ़ होने का प्रमाण नहीं। अधिक-से-अधिक इतना ही कहा जा सकता है कि वे संस्कृत न बोल सकती थीं। संस्कृत न बोल सकना न अपढ़ होने का सबूत है और न गँवार होने का। अच्छा तो उत्तररामचरित में ऋषियों की वेदांतवादिनी पत्नियाँ कौन-सी भाषा बोलती थीं ? उनकी संस्कृत क्या कोई गँवारी संस्कृत थी। भवभूति और कालिदास आदि के नाटक जिस जमाने के हैं उस जमाने में शिक्षितों का समस्त समुदाय संस्कृत ही बोलता था, इसका प्रमाण पहले कोई दे ले तब प्राकृत बोलने वाली स्त्रियों को अपढ़ बताने का साहस करे।

संदर्भ—यह गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक के *'स्त्री-शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खण्डन'* पाठ से लिया गया है। इसके लेखक *महावीरप्रसाद द्विवेदी* हैं।

प्रसंग—लेखक ने तर्क देते हुए बताने का प्रयास किया है कि प्राकृत बोलना अपढ़ होने का प्रमाण नहीं होता है।

व्याख्या—इसमें बताया गया है कि प्राकृत बोलने वाले अपढ़ हों यह आवश्यक नहीं है। संस्कृत नाटकों में स्त्री पात्र प्राकृत बोलते हैं इससे यह तो कहा जा सकता है कि वे संस्कृत नहीं बोल पाती थीं। संस्कृत भाषा में बात न कर पाना बिना पढ़े-लिखे होने का प्रमाण नहीं कहा जा सकता है। संस्कृत न बोल पाने वालों को गँवार भी नहीं माना जा सकता है। साथ ही, यह भी ध्यान देने की बात है कि कई स्त्रियाँ संस्कृत बोलने वाली भी हुई हैं। उत्तररामचरित में कई ऋषियों की पत्नियाँ ऐसी हैं जो वेदान्त पर बोलती थीं। वे भी तो स्त्री ही थीं। वे संस्कृत में ही बोलती थीं। उनकी संस्कृत को मूर्खों की संस्कृत नहीं मान सकते हैं ? वे तो विदुषी थीं। उन्हें संस्कृत भाषा का पूर्ण ज्ञान था। यह भी विचारणीय है कि जिस समय भवभूति और कालिदास इत्यादि ने नाटकों की रचना की थी उस समय क्या सभी शिक्षित लोग संस्कृत बोलते थे। क्या इसका कोई प्रमाण दिया जा सकता है ? यदि इसका सबूत नहीं है तो संस्कृत में बात न करने वाली स्त्रियों को बिना पढ़ी कहना गलत है। प्राकृत बोलना बिना पढ़ी होने का प्रमाण नहीं हो सकता है।

विशेष—(1) यहाँ यह स्पष्ट किया गया है कि संस्कृत न बोल पाना बिना पढ़े होने का प्रमाण नहीं माना जा सकता है। (2) तर्कपूर्ण शैली तथा साहित्यिक भाषा अपनाई गई है।

Scanned with CamScanner

(2) जिस समय आचार्यों ने नाट्यशास्त्र सम्बन्धी नियम बनाए थे उस समय सर्वसाधारण की भाषा संस्कृत न थी। चुने हुए लोग ही संस्कृत बोलते या बोल सकते थे। इसी से उन्होंने उनकी भाषा संस्कृत और दूसरे लोगों तथा स्त्रियों की भाषा प्राकृत रखने का नियम कर दिया।

संदर्भ—पूर्ववत्।

प्रसंग—इस गद्यांश में बताया गया है कि नाट्यशास्त्र के नियम समाज द्वारा बोली जाने वाली भाषाओं के आधार पर बनाए गए थे।

व्याख्या—लेखक कहते हैं कि जब आचार्यों ने नाट्यशास्त्र के सम्बन्ध में नियमों को बनाया उस जमाने में सभी लोग संस्कृत नहीं बोलते थे। जो शिक्षित तथा उच्च समाज के लोग थे वे संस्कृत बोलते थे। शेष लोग उस समय प्रचलित भाषा प्राकृत बोलते थे। इसी वजह से उन्होंने चुने हुए पात्रों की भाषा संस्कृत रखी। बाकी जो स्त्री-पुरुष पात्र थे उनकी भाषा प्राकृत रखने का नियम बना दिया गया।

विशेष—(1) नाट्यशास्त्र के नियम बनाते समय समाज में विभिन्न वर्गों द्वारा बोली जाने वाली भाषाओं को ध्यान में रखकर विभिन्न पात्रों की भाषाओं का निर्धारण कर दिया गया। (2) विचारात्मक शैली तथा साहित्यिक भाषा का प्रयोग हुआ है।

(3) पढ़ने-लिखने में स्वयं कोई बात ऐसी नहीं जिससे अनर्थ हो सके। अनर्थ का बीज उसमें हरगिज नहीं। अनर्थ पुरुषों से भी होते हैं। अपढ़ों और पढ़े-लिखे दोनों से। अनर्थ, दुराचार और पापाचार के कारण और ही होते हैं और वे व्यक्ति-विशेष का चाल-चलन देखकर जाने भी जा सकते हैं। अतएव स्त्रियों को अवश्य पढ़ाना चाहिए।

संदर्भ—पूर्ववत्।

प्रसंग—यहाँ बताया गया है कि पढ़ने-लिखने में किसी तरह का अनर्थ, पाप आदि नहीं है। अत: स्त्रियों को पढ़ाना उचित है।

व्याख्या—लेखक समझाते हैं कि पढ़ाई-लिखाई अनुचित कार्य करने की प्रेरणा नहीं देती है। इससे अहित होने की सम्भावना नहीं है। पढ़ने के कारण गलत काम करने का स्वभाव नहीं होता है। बुरे काम, अनुचित आचरण तथा पापकर्म करने की प्रवृत्ति बनाने वाले अन्य बहुत-से कारण हो सकते हैं। किसी व्यक्ति के आचरण-व्यवहार से उन कारणों का पता लगाया जा सकता है। इसलिए हमें स्त्रियों को अवश्य शिक्षित करना चाहिए। स्त्री शिक्षा से समाज के गौरव में बढ़ोत्तरी होगी।

विशेष—(1) यहाँ स्पष्ट किया गया है कि स्त्री शिक्षा से न कोई अनर्थ होता है और न पाप। (2) विचारात्मक शैली तथा सरल भाषा को अपनाया गया है।

16 नौबतखाने में इबादत

—यतीन्द्र मिश्र

विशेष—*कोविड परिस्थितियों के चलते यह पाठ वार्षिक/बोर्ड परीक्षा 2022 के लिए बोर्ड द्वारा पाठ्यक्रम में से हटा दिया गया है।*

17 संस्कृति

—भदंत आनंद कौसल्यायन

(1) जिस योग्यता, प्रवृत्ति अथवा प्रेरणा के बल पर आग या सुई-धागे का आविष्कार हुआ, वह है व्यक्ति विशेष की संस्कृति, और उस संस्कृति द्वारा जो आविष्कार हुआ, जो चीज उसने अपने तथा दूसरों के लिए आविष्कृत की, उसका नाम है सभ्यता।

संदर्भ—यह गद्य खण्ड हमारी पाठ्य-पुस्तक के *'संस्कृति'* पाठ से लिया है। इसके लेखक *भदंत आनंद कौसल्यायन* हैं।

प्रसंग—इसमें संस्कृति और सभ्यता के बारे में बताया गया है।

Scanned with CamScanner

व्याख्या—कोई भी आविष्कार तब होता है जब उसकी कोई आवश्यकता अनुभव की जाती है। आग तथा सुई-धागे के आविष्कार जिस योग्यता, प्रवृत्ति तथा प्रेरणा की शक्ति के द्वारा हो सके वह उस व्यक्ति विशेष की संस्कृति है। इस संस्कृति ने ही उससे आविष्कार कराया। उस संस्कृति के द्वारा जो आविष्कार किया गया और जिस चीज की खोज की गई उसका नाम सभ्यता है।

विशेष—(1) संस्कृति तथा सभ्यता को स्पष्ट किया गया है। (2) विचारात्मक शैली तथा शुद्ध साहित्यिक भाषा का प्रयोग हुआ है।

(2) एक संस्कृत व्यक्ति किसी नयी चीज की खोज करता है, किन्तु उसकी संतान को वह अपने पूर्वज से अनायास ही प्राप्त हो जाती है। जिस व्यक्ति की बुद्धि ने अथवा उसके विवेक ने किसी भी नए तथ्य का दर्शन किया, वह व्यक्ति ही वास्तविक संस्कृत व्यक्ति है और उसकी संतान जिसे अपने पूर्वज से यह वस्तु अनायास प्राप्त हो गई है वह अपने पूर्वज की भाँति सभ्य भले ही बन जाए, संस्कृत नहीं कहला सकता।

संदर्भ—पूर्ववत्।

प्रसंग—यहाँ बताया गया है कि कौन व्यक्ति संस्कृत होगा और कौन सभ्य।

व्याख्या—लेखक स्पष्ट करते हैं कि अपनी बुद्धि या विवेक द्वारा किसी नये तथ्य का दर्शन करने वाला तथा नया आविष्कार करने वाला व्यक्ति ही संस्कृत व्यक्ति होता है। जिस सन्तान को बिना किसी प्रयत्न के जो चीज खोज करने वाले से मिल गई है वह संस्कृत नहीं कहा जा सकता है। सन्तान को पूर्वज की तरह सभ्य तो कह सकते हैं किन्तु उसे संस्कृत नहीं कहा जा सकता है।

विशेष—(1) जो आविष्कार करता है संस्कृत होता है जबकि उसकी सन्तान सभ्य होती है। (2) विचारात्मक शैली तथा साहित्यिक भाषा को अपनाया है।

(3) संस्कृति के नाम से जिस कूड़े-करकट के ढेर का बोध होता है, वह न संस्कृति है न रक्षणीय वस्तु। क्षण-क्षण परिवर्तन होने वाले संसार में किसी भी चीज को पकड़कर बैठा नहीं जा सकता। मानव ने जब-जब प्रज्ञा और मैत्री भाव से किसी नए तथ्य का दर्शन किया है तो उसने कोई वस्तु नहीं देखी, जिसकी रक्षा के लिए दलबंदियों की जरूरत है।

मानव संस्कृति एक अविभाज्य वस्तु है और उसमें जितना अंश कल्याण का है, वह अकल्याणकर की अपेक्षा श्रेष्ठ ही नहीं स्थायी भी है।

संदर्भ—पूर्ववत्।

प्रसंग—यहाँ बताया गया है कि पल-पल बदलते इस संसार में संस्कृति का कल्याणकारी रूप ही श्रेष्ठ तथा स्थिर है।

व्याख्या—निरन्तर बदलते इस संसार में संस्कृति भी बदलती रहती है। कभी-कभी विकृत रूप भी संस्कृति कहलाने लगते हैं। यह स्थिति समाज के लिए हितकारी नहीं है। इससे मानव समाज का अहित होता है। हर पल बदलने वाले संसार में किसी भी चीज को स्थायी रूप से पकड़ा नहीं जा सकता है। संस्कृति भी बदलती रहती है। बुद्धिमान व्यक्ति जब ज्ञान और मित्र भाव से प्रेरित हो नये आविष्कार करते हैं तब वे किसी प्रकार की खेमेबाजी का सहारा नहीं लेते हैं। नवीन आविष्कार तो सबके लिए हितकारी होता है क्योंकि मनुष्यों की संस्कृति को विभाजित नहीं किया जा सकता है। इसलिए परिवर्तनशील जगत् में संस्कृति का कल्याणकारी रूप ही उत्तम होता है और यह ही स्थायी होता है। जो अंश कल्याणकारी नहीं होते हैं वे स्वत: ही निकल जाते हैं, समाज उन्हें अपनाता ही नहीं है।

विशेष—(1) इसमें बताया गया है कि कल्याणकारी संस्कृति ही स्थिर होती है। (2) विचारात्मक शैली और साहित्यिक भाषा का प्रयोग हुआ है।

Scanned with CamScanner

अध्याय 7

गद्य खण्ड पर आधारित महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

10 नेताजी का चश्मा

प्रश्न 1. सेनानी न होते हुए भी चश्मे वाले को लोग कैप्टन क्यों कहते थे ?

उत्तर—देश-प्रेम के भाव से भरे कैप्टन चश्मे वाले के मन में देश पर बलिदान होने वालों के प्रति सम्मान का भाव है। सुभाष चन्द्र बोस के प्रति उसमें श्रद्धा है। इसीलिए वह उनकी प्रतिमा पर चश्मा लगाता है। उसके मन में देश के प्रति फौजियों जैसा ही भाव है इसीलिए उसे लोग कैप्टन कहते थे।

प्रश्न 2. हालदार साहब ने ड्राइवर को पहले चौराहे पर गाड़ी रोकने के लिए मना किया था लेकिन बाद में तुरन्त रोकने को कहा—

(क) हालदार साहब पहले मायूस क्यों हो गए थे ?

(ख) मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा क्या उम्मीद जगाता है ?

(ग) हालदार साहब इतनी-सी बात पर भावुक क्यों हो उठे ?

उत्तर—(क) हालदार साहब पहले इसलिए मायूस हो गए थे कि उन्हें लगता था कि कैप्टन के मरने के बाद नेताजी की मूर्ति पर चश्मा लगाने वाला कोई नहीं होगा।

(ख) हालदार साहब ने देखा कि मूर्ति पर सरकंडे का वैसा ही चश्मा लगा है जैसा छोटे बच्चे सरकंडे से बनाया करते हैं। इससे उम्मीद जगती है कि बच्चों में देश-प्रेम और राष्ट्र-भक्ति के भाव जग रहे हैं।

(ग) हालदार साहब को लग रहा था कि नेताजी की मूर्ति बिना चश्मे के होगी किन्तु मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा देखा तो उनके मन की निराशा आशा में बदल गई। उनकी समझ में आ गया कि बच्चों में देशप्रेम का भाव है। यही सोचकर वे भावुक हो उठे और उनकी आँखें भर आईं।

प्रश्न 3. "वो लँगड़ा क्या जाएगा फौज में। पागल है पागल।" कैप्टन के प्रति पान वाले की इस टिप्पणी पर अपनी प्रतिक्रिया लिखिए।

उत्तर—यह टिप्पणी अशिक्षित पान वाले की है। मेरी राय में यह टिप्पणी पूर्णत: अनुचित है। लँगड़ा होते हुए भी वह अपनी छोटी दुकान से मूर्ति पर चश्मा लगाता है। वह निश्चय ही सम्मान तथा आदर का पात्र है।

प्रश्न 4. निम्नलिखित वाक्य पात्रों की कौन-सी विशेषता की ओर संकेत करते हैं—

(क) हालदार साहब हमेशा चौराहे पर रुकते और नेताजी को निहारते।

(ख) पान वाला उदास हो गया। उसने पीछे मुड़कर मुँह का पान पीछे थूका और सिर झुकाकर अपनी धोती के सिरे से आँखें पोंछता हुआ बोला—साहब कैप्टन मर गया।

(ग) कैप्टन बार-बार मूर्ति पर चश्मा लगा देता था।

उत्तर—(क) हालदार साहब के मन की देशप्रेम की भावना तथा देश के भविष्य की चिन्ता का भाव प्रकट होता है। इसीलिए वे सरकंडे का चश्मा लगा देखकर प्रसन्न होते हैं।

(ख) कैप्टन की मृत्यु से वह दु:खी था। उसमें शोक तथा वेदना का भाव भरा था।

(ग) कैप्टन में देशभक्ति का भाव था इसीलिए वह मूर्ति पर चश्मा लगाकर अपनी भावना व्यक्त करता था।

प्रश्न 5. कस्बों, शहरों, महानगरों के चौराहों पर किसी-न-किसी क्षेत्र के प्रसिद्ध व्यक्ति की मूर्ति लगाने का प्रचलन-सा हो गया है—

(क) इस तरह की मूर्ति लगवाने के क्या उद्देश्य हो सकते हैं ?

Scanned with CamScanner

(ख) आप अपने इलाके के चौराहे पर किस व्यक्ति की मूर्ति स्थापित करवाना चाहेंगे और क्यों ?

(ग) उस मूर्ति के प्रति आपके एवं दूसरे लोगों के क्या उत्तरदायित्व होने चाहिए ?

उत्तर—(क) कस्बों, शहरों और महानगरों के चौराहों पर महान व्यक्तियों की मूर्ति लगवाते हैं। इसका यह उद्देश्य होता है कि उस महान व्यक्तित्व से लोग प्रेरणा लें तथा स्वयं अच्छे कार्य करें।

(ख) मैं अपने इलाके में किसी देशभक्त या महान साहित्यकार की मूर्ति लगवाना चाहूँगा। इसका कारण यह होगा कि उस मूर्ति को देखकर लोग प्रेरणा ले सकें तथा राष्ट्रहित या साहित्यहित के कार्य कर सकें।

(ग) चौराहों पर लगी मूर्तियों की नियमित देखभाल, साफ-सफाई आदि रखना मेरा तथा दूसरे लोगों का उत्तरदायित्व है। हमें यह कार्य करना चाहिए।

प्रश्न 6. निम्नलिखित पंक्तियों में स्थानीय बोली का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है, आप इन पंक्तियों को मानक हिन्दी में लिखिए—

कोई गिराक आ गया समझो। उसको चौड़े चौखट चाहिए। तो कैप्टन किदर से लाएगा ? तो उसको मूर्तिवाला दे दिया। उदर दूसरा बिठा दिया।

उत्तर—मान लीजिए कोई ग्राहक आ गया। उसे चौड़ा फ्रेम चाहिए। तो कैप्टन कहाँ से लाएगा ? तो उसे मूर्तिवाला फ्रेम दे दिया और मूर्ति पर दूसरा फ्रेम लगा दिया।

प्रश्न 7. "भई खूब ? क्या आइडिया है।" इस वाक्य को ध्यान में रखते हुए बताइए कि एक भाषा में दूसरी भाषा के शब्दों के आने से क्या लाभ होते हैं ?

उत्तर—एक भाषा के शब्दों के दूसरी भाषा में आने से भाषाओं का शब्द भण्डार बढ़ता है। भाव दूसरों तक आसानी से पहुँच जाता है। भाषा में चमत्कार आता है तथा बात रोचक बन जाती है।

प्रश्न 8. निम्नलिखित वाक्यों में निपात शब्द छाँटिए और उनसे नए वाक्य बनाइए—

(क) नगरपालिका थी तो कुछ-न-कुछ करती भी रहती थी।

(ख) किसी स्थानीय कलाकार को ही अवसर देने का निर्णय किया गया होगा।

(ग) यानी चश्मा तो था लेकिन संगमरमर का नहीं था।

(घ) हालदार साहब अब भी नहीं समझ पाए।

(ङ) दो साल तक हालदार साहब अपने काम के सिलसिले में उस कस्बे से गुजरते रहे।

उत्तर—(क) निपात—कुछ-न-कुछ।

वाक्य—वह काम पर आता है और कुछ-न-कुछ बिगाड़ कर जाता है।

(ख) निपात—ही

वाक्य—परिश्रम से ही सफलता मिलती है।

(ग) निपात—तो

वाक्य—वह प्रयास तो करता था पर असफल रहता था।

(घ) निपात—भी।

वाक्य—जब भी मौका मिले, इस काम को कर डालो।

(ङ) निपात—में

वाक्य—बात-बात में टोकना अच्छा नहीं लगता है।

प्रश्न 9. निम्नलिखित वाक्यों को कर्मवाच्य में बदलिए—

(क) वह अपनी छोटी-सी दुकान में उपलब्ध गिने-चुने फ्रेमों में से नेताजी की मूर्ति पर फिट कर देता है।

(ख) पान वाला नया पान खा रहा था।

(ग) पान वाले ने साफ बता दिया था।

(घ) ड्राइवर ने जोर से ब्रेक मारे।

Scanned with CamScanner

(ङ) नेताजी ने देश के लिए अपना सब कुछ त्याग दिया।

(च) हालदार साहब ने चश्मे वाले की देशभक्ति का सम्मान किया।

उत्तर—(क) उसके द्वारा अपनी छोटी-सी दुकान में उपलब्ध गिने-चुने फ्रेमों में से एक नेताजी की मूर्ति पर फिट कर दिया जाता था।

(ख) पान वाले द्वारा नया पान खाया जा रहा था।

(ग) पान वाले द्वारा साफ बता दिया गया था।

(घ) ड्राइवर द्वारा जोर से ब्रेक मारा गया।

(ङ) नेताजी द्वारा देश के लिए अपना सब-कुछ त्याग दिया गया।

(च) हालदार साहब द्वारा चश्मे वाले की देशभक्ति का सम्मान किया गया।

प्रश्न 10. नीचे लिखे वाक्यों को भाववाच्य में बदलिए—

(क) माँ बैठ नहीं सकती।

(ख) मैं देख नहीं सकती।

(ग) चलो, अब सोते हैं।

(घ) माँ रो भी नहीं सकती।

उत्तर—(क) माँ से बैठा नहीं जाता।

(ख) मुझसे देखा नहीं जाता।

(ग) चलो अब सोया जाए।

(घ) माँ से रोया भी नहीं जाता।

11 बालगोबिन भगत

प्रश्न 1. खेतीबारी से जुड़े गृहस्थ बालगोबिन भगत अपनी किन चारित्रिक विशेषताओं के कारण साधु कहलाते थे ?

उत्तर—खेतीबारी तथा गृहस्थ से जुड़े होते हुए भी भगत का आचरण साधु-सन्तों जैसा था। वे सदैव सत्य बोलते थे। सभी से दो टूक बात करते थे। उनके व्यवहार में छल-कपट नहीं था। वे दूसरे की वस्तु को छूते तक न थे। बिना पूछे दूसरे की वस्तु का उपयोग भी नहीं करते थे। बिना बात किसी से झगड़ने का उनका स्वभाव न था। उनकी वेशभूषा साधारण थी। लंगोटी लगाते थे तथा सिर पर कनफटी कबीर पंथियों की सी टोपी पहनते थे। इन्हीं विशेषताओं के कारण वे साधु कहलाते थे।

प्रश्न 2. भगत की पुत्रवधू उन्हें अकेले क्यों नहीं छोड़ना चाहती थी ?

उत्तर—भगत की पुत्रवधू उन्हें अकेले छोड़कर इसलिए नहीं जाना चाहती थी क्योंकि भगत की देखभाल करने वाला कोई नहीं था। उनके खाने-पीने का प्रबन्ध करने वाला भी कोई नहीं था। वह उनके खाने आदि की व्यवस्था करने एवं उनके साथ उनकी देखभाल के लिए रहना चाहती थी।

प्रश्न 3. भगत ने अपने बेटे की मृत्यु पर अपनी भावनाएँ किस तरह व्यक्त कीं ?

उत्तर—बालगोबिन भगत ने अपने बेटे के शव को सफेद कपड़े से ढक दिया उस पर फूल तथा तुलसी दल बिखेर दिए। स्वयं उसके पास आसन जमाकर गाने बैठ गए। वे तल्लीनता से कबीर के पदों को गाने लगे। उनके अनुसार मृत्यु के बाद जीवात्मा अपने प्रेमी परमात्मा से जा मिलती है। इसलिए मृत्यु उत्सव, आनन्द का समय है, रोने का नहीं। वे अपनी पुत्रवधू को भी उत्सव मनाने के लिए कहते हैं।

प्रश्न 4. भगत के व्यक्तित्व और उनकी वेशभूषा का अपने शब्दों में चित्र प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर—बालगोबिन भगत साठ वर्ष से अधिक आयु के थे किन्तु गोरे-चिट्टे आदमी थे। उनके बाल सफेद हो गए थे। उनका चेहरा सफेद बालों से चमत्कृत रहता था। वे शरीर पर एक लंगोटी तथा सिर पर कबीरपंथी कनफटी टोपी पहनते थे। उनके गले में तुलसी की बेडौल माला पड़ी रहती थी। उनके माथे पर रामानंदी चन्दन का टीका लगा होता था। जब सर्दी होती थी तो वे कम्बल ओढ़ लेते थे।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 5. पाठ के आधार पर बताएँ कि बालगोबिन भगत की कबीर पर श्रद्धा किन-किन रूपों में प्रकट हुई है ?

उत्तर—बालगोबिन भगत की कबीर पर श्रद्धा कई रूपों में प्रकट हुई है—

(1) उनका पहनावा कबीर जैसा ही था, सिर पर कबीरपंथियों जैसी कनफटी टोपी पहनते थे।

(2) कबीर को 'साहब' मानते थे। उनके आदर्शों में गहरी आस्था थी।

(3) कबीर के ही पदों को गाया करते थे।

(4) जैसे कबीर गृहस्थ सन्त थे उसी तरह बालगोबिन भगत भी गृहस्थ सन्त थे।

(5) कबीर की तरह जीवात्मा को विरहिणी और परमात्मा को प्रेमी मानते थे।

(6) कबीर की तरह रूढ़ियों का विरोध करते थे।

(7) सत्संगति में विश्वास रखते थे, लोभ-लालच मुक्त थे।

प्रश्न 6. गाँव का सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश आषाढ़ चढ़ते ही उल्लास से क्यों भर जाता है ?

उत्तर—आषाढ़ का आना तथा तपती गर्मी के बाद रिमझिम वर्षा होना मुरझाए तथा परेशान ग्रामीण समाज में चेतना तथा उल्लास भर देता है। किसान हल-बैल लेकर खेतों को निकल पड़ते हैं। धरती से फूटने वाली सुगन्ध उनके मन में आनन्द की लहर पैदा कर देती है। आषाढ़ आया, बादल गरजे, वर्षा हुई और खेत, तालाब, नदी भर गईं। जल से जीवन-लहलहा उठता है। गीत, संगीत के मधुर स्वर फूट पड़ते हैं। इस तरह आषाढ़ आने पर गाँव का जीवन आनन्द से भर उठता है।

प्रश्न 7. इस पाठ में आए कोई दस क्रिया विशेषण छाँटकर लिखिए और उनके भेद भी बताइए।

उत्तर—इस पाठ में आए दस क्रिया विशेषण निम्न प्रकार हैं—

(1) **धीरे-धीरे** स्वर ऊँचा होने लगा। (रीतिवाचक क्रिया विशेषण)

(2) कपड़े बिल्कुल **कम** पहनते थे। (भेद-संख्यावाचक क्रिया विशेषण)

(3) उनकी अंगुलियाँ खँजड़ी पर **लगातार** चल रही थीं। (भेद-रीतिवाचक क्रिया विशेषण)

(4) **अभी** आसमान के तारों के दीपक नहीं बुझे थे। (भेद-संख्यावाचक क्रिया विशेषण)

(5) कमली तो **बार-बार** सिर से नीचे सरक जाती। (भेद-रीतिवाचक क्रिया विशेषण)

(6) उनकी खँजड़ी **डिमक-डिमक** बज रही है। (भेद-रीतिवाचक क्रिया विशेषण)

(7) जो **कुछ** खेत में पैदा होता। (भेद-परिमाणवाचक क्रिया विशेषण)

(8) हर **वर्ष** गंगा स्नान करने के लिए जाते। (भेद-कालवाचक क्रिया विशेषण)

(9) **जमीन पर** ही आसन जमाए गीत गाए चले जा रहे हैं। (भेद-स्थानवाचक क्रिया विशेषण)

(10) **थोड़ा** बुखार आने लगा। (भेद-परिमाणवाचक क्रिया विशेषण)

12 लखनवी अंदाज

विशेष—कोविड परिस्थितियों के चलते यह पाठ वार्षिक/बोर्ड परीक्षा 2022 के लिए बोर्ड द्वारा पाठ्यक्रम में से हटा दिया गया है।

13 मानवीय करुणा की दिव्य चमक

प्रश्न 1. फादर की उपस्थिति देवदार की छाया जैसी क्यों लगती थी ?

उत्तर—देवदार का पेड़ बहुत ऊँचा, छायादार और घना होता है। उसकी छाया शान्ति तथा शीतलता प्रदान करती है। फादर कामिल बुल्के को भी उसी तरह शान्ति, शीतलता तथा आनन्द मिलता था। उनमें चिन्ता, दुःख, परेशानी को दूर करने की सामर्थ्य थी। इसीलिए फादर की उपस्थिति देवदार की छाया जैसी लगती थी।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 2. फादर बुल्के भारतीय संस्कृति के एक अभिन्न अंग हैं, किस आधार पर ऐसा कहा गया है?

उत्तर—संन्यासी बनने का विचार आते ही उन्होंने भारत आने का निश्चय किया। वे अपनी जन्मभूमि छोड़कर भारत के ही होकर रह गए। उन्होंने भारतीय संस्कृति, भाषा, व्यवहार आदि को आत्मसात् कर लिया। वे सहज भाव से कहते थे भारत मेरा देश है। यहाँ परम्पराओं, मान्यताओं को उन्होंने अपना ही नहीं लिया था उनमें सुधार करने का भी प्रयास किया। उन्हें भारत की भाषा हिन्दी से आन्तरिक लगाव था। राम कथा पर उन्होंने शोध किया। इस तरह वे भारतीय संस्कृति के एक अभिन्न अंग हो गए थे।

प्रश्न 3. पाठ में आए उन प्रसंगों का उल्लेख कीजिए, जिनमें फादर बुल्के का हिन्दी प्रेम प्रकट होता है।

उत्तर—'मानवीय करुणा की दिव्य चमक' पाठ में कई प्रसंग आये हैं जो फादर बुल्के के हिन्दी प्रेम को प्रकट करते हैं—

(1) उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से हिन्दी साहित्य में एम. ए. किया तथा 'रामकथा : उत्पत्ति और विकास' पर शोध कार्य कर पी-एच. डी. की डिग्री प्राप्त की।

(2) उन्होंने इलाहाबाद की हिन्दी संस्था 'परिमल' की सदस्यता ग्रहण की तथा उसकी गोष्ठियों में सक्रिय भाग लिया।

(3) उन्होंने प्रसिद्ध नाटक 'ब्लू बर्ड' का 'नीलापंछी' नाम से हिन्दी में अनुवाद किया, बाइबिल का हिन्दी में अनुवाद किया तथा 'अंग्रेजी-हिन्दी कोश' तैयार किया।

(4) वे रांची के सेंट जेवियर्स कॉलेज में हिन्दी तथा संस्कृत के विभागाध्यक्ष रहे।

(5) वे हिन्दी को भारत की राष्ट्रभाषा देखना चाहते थे, इसके लिए वह हर अवसर पर हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के बारे में कहते थे। हिन्दी वालों द्वारा हिन्दी की उपेक्षा पर वे दुःखी रहते थे।

प्रश्न 4. लेखक ने फादर बुल्के को 'मानवीय करुणा की दिव्य चमक' क्यों कहा है ?

उत्तर—लेखक ने फादर बुल्के को 'मानवीय करुणा की दिव्य चमक' इसलिए कहा है क्योंकि उनके मन में मानव मात्र के प्रति करुणा का भाव भरा था। अपने परिचितों के सुख-दुःख में वे उपस्थित होते थे। अपने सान्त्वना भरे शब्दों से उनकी पीड़ा हर लेते थे। वे रिश्तों का निर्वाह हृदय से करते थे। उनके दर्शन करते ही लगता था कि मानो करुणा के पवित्र जल से नहा लिए हों। उनके स्वरूप से करुणा टपकती थी। उनकी रगों में दूसरों के प्रति अमृत जैसी मधुरता भरी थी। वे मानवीय करुणा की दिव्य चमक से परिपूर्ण थे।

प्रश्न 5. फादर बुल्के ने संन्यासी की परम्परागत छवि से अलग एक नयी छवि प्रस्तुत की है। कैसे ?

उत्तर—फादर कामिल बुल्के अन्य संन्यासियों की तरह मोह-माया से मुक्त होते हुए भी मानवीय भावों का निर्वाह करते थे। वे करुणा की साकार मूर्ति थे। दूसरों के प्रति अपनत्व तथा अत्मीयता का भाव उनमें भरा था। रिश्ते बना लेते थे तो तोड़ते न थे, परिचितों के सुख-दुःख में हर समय उपस्थित रहते थे। उनके सान्त्वना के शब्द जादू का सा असर करते थे। उत्सवों और संस्कारों में उपस्थित होकर आशीर्वाद देते थे। उनके मन में दूसरों के प्रति माधुर्य का भाव था। इस तरह उन्होंने अपनी संन्यासी की जो परम्परागत छवि थी, उससे भिन्न छवि प्रस्तुत की।

प्रश्न 6. आपके विचार से बुल्के ने भारत आने का मन क्यों बनाया होगा ?

उत्तर—मुझे लगता है कि उन्होंने संसार के देशों की संस्कृति, समाज, भाषा आदि को देखा व जाना होगा। उनमें उन्हें भारत अच्छा लगा होगा। सारी दुनिया को अपना परिवार मानने वाला देश भारत ही है। इसी कारण उन्होंने यहाँ आने का मन बनाया होगा। वे भारत को अपनी जन्मभूमि कहते थे।

प्रश्न 7. "बहुत सुंदर है मेरी जन्मभूमि—रैम्सचैपल" इस पंक्ति में फादर बुल्के को अपनी जन्मभूमि के प्रति कौन-सी भावनाएँ अभिव्यक्त होती हैं ? आप अपनी जन्मभूमि के बारे में क्या सोचते हैं ?

उत्तर—हर व्यक्ति को अपनी जन्मभूमि प्रिय होती है। उसके प्रति लगाव होना स्वाभाविक है। इसलिए फादर बुल्के को भी अपनी जन्मभूमि 'रैम्सचैपल' बहुत सुन्दर लगती है। वे उसे देखने भी जाते थे।

Scanned with CamScanner

मुझे भी मेरी जन्मभूमि भारत अत्यन्त प्रिय है। भारत एक सुन्दर तथा श्रेष्ठ देश है। इसीलिए देवता भी यहाँ जन्म लेना चाहते हैं। भारत संसार का गुरु रहा है। इसी ने लोगों को मानवता, सत्य, अहिंसा का पाठ पढ़ाया है। उदारता, करुणा, परोपकार आदि भाव यहीं पाए जाते हैं। यहाँ की प्रकृति, ऋतुएँ आदि बहुत मनोरम हैं, यहाँ देवता भी जन्म लेना चाहते हैं।

प्रश्न 8. निम्नलिखित वाक्यों में समुच्चयबोधक छाँटकर अलग लिखिए—

(क) तब भी जब वह इलाहाबाद में थे और तब भी जब वह दिल्ली में थे।

(ख) माँ ने बचपन में ही घोषित कर दिया था कि लड़का हाथ से गया।

(ग) वे रिश्ता बनाते थे तो तोड़ते नहीं थे।

(घ) उनके मुख से सान्त्वना के जादू भरे दो शब्द सुनना एक ऐसी रोशनी से भर देता था जो किसी गहरी तपस्या से जन्मती है।

(ङ) पिता और भाइयों के लिए बहुत लगाव मन में नहीं था लेकिन वो स्मृति में अक्सर डूब जाते।

उत्तर—(क) में समुच्चयबोधक = और
(ख) में समुच्चयबोधक = कि
(ग) में समुच्चयबोधक = तो
(घ) में समुच्चयबोधक = जो
(ङ) में समुच्चयबोधक = लेकिन

14 एक कहानी यह भी

प्रश्न 1. लेखिका के व्यक्तित्व पर किन-किन व्यक्तियों का किस रूप में प्रभाव पड़ा ?

उत्तर—लेखिका को दो व्यक्तियों ने विशेष रूप से प्रभावित किया। एक उनके पिता ने तथा दूसरी शिक्षिका शीला अग्रवाल ने। पिता गोरे रंग को महत्व देते थे जबकि लेखिका श्याम वर्ण की थीं। वे गोरे रंग की बड़ी बहिन से उनकी तुलना कर नीचा दिखाते थे इससे उनमें हीनता का भाव आ गया। पिताजी की इच्छा के कारण लोगों से विचार-विमर्श तथा देशभक्ति का भाव उनमें आया। शीला अग्रवाल ने साहित्यिक रुचि पैदा की तथा खुलकर अपनी बात कहने का साहस पैदा किया।

प्रश्न 2. इस आत्मकथ्य में लेखिका के पिता ने रसोई को 'भटियारखाना' क्यों सम्बोधित किया है ?

उत्तर—लेखिका मन्नू भंडारी के पिता ने रसोई को भटियारखाना इसलिए कहा है कि उनके अनुसार रसोई में काम करने वाली युवतियों की रचनात्मक प्रतिभा जलकर नष्ट हो जाती है। रसोई में काम करने वाली स्त्रियाँ इतनी रचनात्मक नहीं हो पाती हैं। उनकी क्षमता खाना पकाने, सब्जी काटने या नये-नये पकवान बनाने में ही चली जाती है। उनका स्वाभाविक विकास नहीं होता है।

प्रश्न 3. वह कौन-सी घटना थी जिसके बारे में सुनने पर लेखिका को न अपनी आँखों पर विश्वास हो पाया और न अपने कानों पर ?

उत्तर—एक बार लेखिका के कॉलेज की प्रिंसिपल ने पत्र भेजा कि उनके पिता कॉलेज आकर बताएँ कि उनकी बेटी की गतिविधियों के कारण उनके खिलाफ अनुशासनहीनता की कार्यवाही क्यों न की जाय ? पिताजी पत्र पाकर बड़े क्रोधित हुए तथा भन्नाते हुए कॉलेज गए। प्रिंसिपल ने उन्हें बताया कि आपकी लड़की के भड़काने के कारण छात्राएँ क्लास छोड़कर बाहर आ जाती हैं और नारे लगाती हैं। पिताजी ने उनसे कह दिया कि यह देश की जरूरत है इसे रोकना सम्भव नहीं है। उनको इस बात का गर्व था कि उनकी बेटी का लड़कियों पर प्रभाव है और उसमें देशभक्ति का भाव है। पिताजी का यह रूप देखकर लेखिका को अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था।

प्रश्न 4. इस आत्मकथ्य के आधार पर स्वाधीनता आन्दोलन के परिदृश्य का चित्रण करते हुए इसमें मन्नू जी की भूमिका को रेखांकित कीजिए।

Scanned with CamScanner

उत्तर—भारत छोड़ो आन्दोलन के बाद देश के कोने कोने में स्वाधीनता प्राप्त करने का भाव व्याप्त हो गया था। सन् 1946-47 के आते आते यह भाव और तीव्र हो गया था। प्रभात फेरियों, जुलूसों, हड़तालों, भाषणों आदि के द्वारा जनजागरण, राष्ट्रीयता तथा स्वतन्त्रता को जन भावना बनाया जा रहा था। देश का हर युवा सक्रिय भागीदारी करके देश को गुलामी के बन्धन से मुक्त कराने में लगा था। लेखिका भी युवा थीं। उनकी नसों में रक्त के स्थान पर लावा प्रवाहित हो रहा था। वे प्रभात फेरियों, हड़तालों, नारों, जुलूसों में सक्रिय भाग ले रही थीं। वे जोशीले भाषण दे रही थीं जिनका जनता पर गहरा प्रभाव पड़ रहा था।

प्रश्न 5. लेखिका ने बचपन में अपने भाइयों के साथ गिल्ली-डंडा तथा पतंग उड़ाने जैसे खेल भी खेले किन्तु लड़की होने के कारण उनका दायरा घर की चारदीवारी तक सीमित था। क्या आज भी लड़कियों के लिए स्थितियाँ ऐसी ही हैं या बदल गई हैं ? अपने परिवेश के आधार पर लिखिए।

उत्तर—लेखिका का समय अब से बहुत पहले का था। उनके बचपन में लड़कियों पर बाहर खेलने की बंदिश रही होगी। किन्तु आज स्थितियाँ बदली हुई हैं। आज लड़कियों पर बाहर खेलने की कोई बंदिश नहीं है। आज तो लड़कियाँ अखाड़े में कुश्तियाँ लड़ती हैं। गाँव, शहर या जिले में नहीं वे देश के अतिरिक्त विदेशों में भी खेलों में भाग लेती हैं। आज वे ओलम्पिक विजेता बन रही हैं। शूटिंग, कबड्डी, टेनिस, बॉलीवाल, पहलवानी आदि सभी में उन्हें खुली छूट है।

प्रश्न 6. मनुष्य के जीवन में आस-पड़ोस का बहुत महत्व होता है। परन्तु महानगरों में रहने वाले लोग प्राय: 'पड़ोस कल्चर' से वंचित रह जाते हैं। इस बारे में अपने विचार लिखिए।

उत्तर—मनुष्य के जीवन में पड़ोस का बहुत महत्व होता है। बचपन में पड़ोस के बच्चों के साथ खेलकर, बातें करके, बैठ करके बच्चा आचरण, व्यवहार, मेल-मिलाप के पाठ पढ़ता है। वह दूसरों के साथ मिलना-जुलना सीखता है, उनके सुख-दु:ख जानता है तथा अपने मन की बात उन्हें बताना सीखता है। किन्तु आज महानगरों की एकाकी संस्कृति में बच्चों के मिलने के अवसर समाप्त प्राय: हो गए हैं। इससे बच्चों के स्वाभाविक विकास, व्यवहार, आचरण आदि प्रभावित हो रहे हैं। मेरे विचार से यह एकाकी संस्कृति अच्छी नहीं है क्योंकि बच्चा समाज में रहकर ही सीखता है।

प्रश्न 7. आप भी अपने दैनिक अनुभवों को अपनी डायरी में लिखिए।

उत्तर—डायरी का एक नमूना प्रस्तुत है विद्यार्थी इसी तरह की डायरी स्वयं भी लिख सकते हैं।

14 अगस्त 20...., शुक्रवार

आज प्रात:काल पिताजी ने मुझे जल्दी जगाया और बोले, देखो बाहर तेज वर्षा हो रही है। मैं जल्दी से जागा और दीदी को भी जगा दिया। हम दोनों वर्षा के दृश्य देखने लगे। भयंकर पानी पड़ रहा था। सामने का लॉन पानी से भर गया था। चिड़िया भाग रही थीं, पक्षी परेशान थे, पेड़ झुके जा रहे थे, बिजली चमक रही थी, बादल गरज रहे थे। एक चिड़िया हमारे रोशनदान में बैठी थी, वह काँप रही थी। कोई बच्चा खेलने नहीं निकला। पानी थमा, मम्मी ने दूध दिया तथा नाश्ता कराया। वे मेरे लिए खिलौने लाई थीं साथ में पेन्सिल बॉक्स तथा रंगों की डिब्बी थी। हमने अपने बने मिट्टी के गोलों पर रंग-बिरंगी डिजाइन बनाई और आपस में खेलते रहे।

प्रश्न 8. इस आत्मकथा में मुहावरों का प्रयोग करके लेखिका ने रचना को रोचक बनाया है। रेखांकित मुहावरों को ध्यान में रखकर कुछ और वाक्य बनाएँ—

(क) इस बीच पिताजी के एक निहायत दकियानूसी मित्र ने घर आकर अच्छी तरह पिताजी की लू उतारी।

(ख) वे तो आग लगाकर चले गए और पिताजी सारे दिन भभकते रहे।

(ग) बस अब यही रह गया है कि लोग घर आकर थू-थू करके चले जाएँ।

(घ) पत्र पढ़ते ही पिताजी आग-बबूला।

उत्तर—(क) लू उतारी—गृहकार्य पूरा न करने के कारण अध्यापक ने राजू की खूब लू उतारी।

(ख) आग लगाना—कुछ लोगों का काम आग लगाना ही होता है।

(ग) थू-थू करना—बिल्लू की गन्दी हरकत पर सब थू-थू कर रहे हैं।

(घ) आग बबूला—राधा गृहकार्य करके नहीं लाई तो शिक्षिका आगबबूला हो उठी।

Scanned with CamScanner

15 स्त्री-शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन

प्रश्न 1. कुछ पुरातन पंथी लोग स्त्रियों की शिक्षा के विरोधी थे। द्विवेदी जी ने क्या-क्या तर्क देकर स्त्री-शिक्षा का समर्थन किया ?

उत्तर—कुछ पुरातन पंथी लोग स्त्री-शिक्षा का विरोध बेतुके तर्क देकर करते थे। द्विवेदी जी ने उनको सटीक उत्तर देते हुए स्त्री-शिक्षा का समर्थन किया है। उन्होंने प्राचीन काल की पढ़ी-लिखी स्त्रियों के नाम गिनाकर उनकी विद्वता के कार्यों का उल्लेख किया है। वे बताते हैं कि कई स्त्रियों ने बड़े-बड़े महारथियों को परास्त किया है। उस समय स्त्री शिक्षा की विधिवत् व्यवस्था नहीं थी इसलिए नियम आदि नहीं बने थे। किन्तु आज स्त्री-शिक्षा आवश्यक है, अत: जरूरत के हिसाब से हमें स्त्री-शिक्षा के प्रति अपनी सोच बदलनी चाहिए और उन्हें शिक्षा दिलानी चाहिए।

प्रश्न 2. "स्त्रियों को पढ़ाने से अनर्थ होते हैं"—कुतर्कवादियों की इस दलील का खण्डन द्विवेदी जी ने कैसे किया है ? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर—स्त्री-शिक्षा के विरोधी कुतर्कों के महावीर प्रसाद द्विवेदी ने बहुत ही सटीक उत्तर दिए हैं। वे बताते हैं कि जब दुष्यन्त ने शकुन्तला से विवाह करके उसे त्याग दिया तो वह उससे कटु भाषा में बात करेगी। उसका क्रोध स्वाभाविक है। सीता ने भी बिना किसी दोष के त्याग दिए जाने पर राम को स्वामी न कहकर राजा कहा था। जब शिक्षा पुरुषों के लिए पीयूष है तो स्त्रियों के लिए कालकूट कैसे हो सकती है। वे कहते हैं कि शिक्षा से स्त्रियों का अनर्थ नहीं होता है, उन्हें पढ़ाया जाना चाहिए।

प्रश्न 3. परम्परा के उन्हीं पक्षों को स्वीकार किया जाना चाहिए जो स्त्री-पुरुष समानता को बढ़ाते हैं। तर्क सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—सामाजिक जीवन को सुखी व समृद्ध बनाने के लिए परम्पराएँ अपनाई जाती हैं। परम्परा के जो पक्ष समाज के लिए अहितकर होते हैं उन्हें छोड़ दिया जाता है। स्त्री-पुरुष समाज रूपी गाड़ी के दो पहिए हैं इसलिए वे ही परम्पराएँ अपनानी चाहिए जो दोनों में समता, सद्भाव स्थापित करती हों। ऐसी परम्पराएँ जो स्त्री-पुरुष में भेद करती हैं उन्हें कदापि न स्वीकार किया जाना चाहिए। स्त्री-पुरुष की रचना में प्रकृति ने कोई अन्तर नहीं किया है। वे दोनों मिलकर समाज का विकास करते हैं तो हम उनमें भेद क्यों करें। इसलिए पुरुष और स्त्री दोनों को पढ़ाया जाना उचित है।

प्रश्न 4. तब की शिक्षा प्रणाली और अब की शिक्षा प्रणाली में क्या अन्तर है ? स्पष्ट करें।

उत्तर—पुराने समय की शिक्षा प्रणाली तथा आज की शिक्षा प्रणाली अलग-अलग हैं। उस समय गुरुकुल में विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करने जाते थे। स्त्रियों की शिक्षा की औपचारिक व्यवस्था नहीं थी। अब की शिक्षा प्रणाली में लड़के-लड़कियाँ स्कूल, कॉलेज में पढ़ने जाते हैं। अब दोनों के लिए औपचारिक व्यवस्था है। स्त्री तथा पुरुष दोनों को समान रूप से पढ़ने की सुविधाएँ हैं। उस समय इस तरह की व्यवस्था नहीं थी। इसीलिए उस समय स्त्रियों की शिक्षा कम थी। अब औपचारिक व्यवस्था है इसलिए स्त्रियों को पढ़ाया जाना चाहिए।

प्रश्न 5. महावीरप्रसाद द्विवेदी का निबन्ध उनकी दूरगामी और खुली सोच का परिचायक है। कैसे ?

उत्तर—महावीरप्रसाद द्विवेदी का 'स्त्री-शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन' निबन्ध उनकी दूरगामी और खुली सोच का परिचायक है। क्योंकि उन्होंने स्त्री-शिक्षा की आवश्यकता पर उस समय बल दिया जब स्त्री-शिक्षा को परिवार के लिए बाधक, अनर्थकारी तथा पाप माना जाता था। उन्होंने तर्क देकर स्त्री-शिक्षा की आवश्यकता सिद्ध की। पुराने समय की शिक्षा व्यवस्था आदि का उल्लेख करते हुए प्रमाणित किया कि उस समय भी शिक्षित स्त्रियाँ थीं। उन्होंने सिद्ध किया कि स्त्री-शिक्षा समाज तथा परिवार के लिए हितकारी है।

प्रश्न 6. निम्नलिखित अनेकार्थी शब्दों को ऐसे वाक्यों में प्रयुक्त कीजिए जिनसे उनके एकाधिक अर्थ स्पष्ट हों—

चाल, दल, पत्र, हरा, पर, फल, कुल।

Scanned with CamScanner

उत्तर—चाल— 1. इस गाड़ी की चाल (गति) बहुत धीमी है।
2. हम उसकी चाल (चालाकी) में नहीं आयेंगे, हम जानते हैं कि वह पूरा खिलाड़ी है।

दल— 1. वृक्ष की डाल पर लाल, हरे दल (पत्ते) लदे हैं।
2. अच्छे दल (गुट) का नेता ही चुनाव जीतता है।

पत्र— 1. माताजी ने पत्र (चिट्ठी) का जवाब नहीं दिया है।
2. प्राचीन काल में भोज पत्र (पत्ते) पर लिखा करते थे।

हरा— 1. इस वृक्ष के पत्तों का रंग हरा है।
2. हमारे स्कूल की बॉलीबाल टीम ने विरोधी कॉलेज की टीम को हरा (पराजित) दिया।

पर— 1. तुम कितना ही समझा लो पर (लेकिन) वह नहीं मानेगा।
2. इस चिड़िया के बहुत सुन्दर पर (पंख) हैं।

फल— 1. मौसम के फल (वृक्षों पर लगने वाले) लाभदायक होते हैं।
2. परिश्रम का फल (नतीजा) मीठा ही होता है।

कुल— 1. आज कुल (सब) कितने बच्चे उपस्थित हैं ?
2. व्यक्ति के अच्छे कामों से कुल (वंश) की प्रतिष्ठा बढ़ती है।

16 नौबतखाने में इबादत

विशेष— *कोविड परिस्थितियों के चलते यह पाठ वार्षिक/बोर्ड परीक्षा 2022 के लिए बोर्ड द्वारा पाठ्यक्रम में से हटा दिया गया है।*

17 संस्कृति

प्रश्न 1. लेखक की दृष्टि में 'सभ्यता' और 'संस्कृति' की सही समझ अब तक क्यों नहीं बन पाई है ?

उत्तर— लोग 'सभ्यता' और 'संस्कृति' शब्दों का प्रयोग तो खूब करते हैं किन्तु इनके अर्थ समझ में नहीं आते हैं। इन शब्दों के साथ विशेषण लगने पर कुछ अर्थ समझ में आता तो है परन्तु वह गलत-सलत ही होता है। जैसे भौतिक सभ्यता और आध्यात्मिक सभ्यता में भौतिक एवं आध्यात्मिक विशेषण लगने से इनके अर्थ और भी गड़बड़ा गए। यही कारण है कि 'सभ्यता' और 'संस्कृति' शब्दों की सही समझ अभी तक नहीं हो पाई है।

प्रश्न 2. आग की खोज एक बहुत बड़ी चीज क्यों मानी जाती है ? इस खोज के पीछे रही प्रेरणा के मुख्य स्त्रोत क्या रहे होंगे ?

उत्तर—आग की खोज सभ्यता की प्रारम्भिक खोजों में से एक है। जब रात में अंधेरा रहता था, जानवरों का खतरा बना रहता था। प्रकाश नहीं था। भूख मिटाने के साधन बहुत कम थे उस समय के मानव कच्चा खाना ही खाते होंगे। इन्हीं कारणों ने आग की खोज की प्रेरणा दी होगी। आग की खोज से प्रकाश मिल गया। जानवरों का भय मिट गया। खाना पकाकर खाया जाने लगा।

प्रश्न 3. वास्तविक अर्थों में संस्कृत व्यक्ति किसे कहा जा सकता है ?

उत्तर—अपने विवेक द्वारा जो व्यक्ति किसी नए तथ्य के दर्शन करता है, नयी खोज करता है, वही वास्तविक अर्थों में संस्कृत व्यक्ति है। वह व्यक्ति किसी-न-किसी उपयोगी आविष्कार के लिए प्रयत्न करता ही रहता है। उसकी सन्तान जिसे बिना किसी प्रयास के यह वस्तु प्राप्त हो गई वह सभ्य तो कही जा सकती है किन्तु संस्कृत नहीं। वास्तविक संस्कृत तो आविष्कार करने वाला ही होता है।

प्रश्न 4. किन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सुई-धागे का आविष्कार हुआ होगा ?

उत्तर—प्रारम्भ में मनुष्य नंगा रहता था। उस समय तन ढकने के साधनों का कोई रूप नहीं था। इसलिए सर्दी-गर्मी आदि से बचने के लिए तन ढकने का उपाय करने की भावना ने सुई-धागे के आविष्कार के लिए

Scanned with CamScanner

प्रेरित किया होगा। धूप, कोहरे, ठण्ड आदि से बचने के लिए चमड़े, पत्तों या कपड़े से तन ढकने के लिए वस्त्र सिलने के लिए सुई-धागे की खोज की होगी।

प्रश्न 5. आशय स्पष्ट कीजिए—

(क) मानव की जो योग्यता उससे आत्मविनाश के साधनों का आविष्कार कराती है, हम उसे उसकी संस्कृति कहें या असंस्कृति ?

उत्तर—मनुष्य विभिन्न आविष्कार करता है। उनमें जो आविष्कार मनुष्य के लिए हितकारी व श्रेष्ठ हैं तथा स्थायी हैं, वे उसकी संस्कृति कहलायेंगे। अपनी योग्यता से यदि व्यक्ति आत्मविनाश वाले आविष्कार करता है तो वह निश्चय ही असंस्कृति की कोटि में आयेगा क्योंकि संस्कृति का उद्देश्य मानव कल्याण होता है।

प्रश्न 6. निम्नलिखित सामासिक पदों का विग्रह करके समास का भेद भी लिखिए—

गलत-सलत, महामानव, हिन्दू-मुस्लिम, सप्तर्षि, आत्म-विनाश, पददलित, यथोचित, सुलोचना।

उत्तर—

शब्द	समास विग्रह	समास का नाम
गलत-सलत	गलत और सलत	द्वन्द्व समास
महामानव	महान है जो मानव	कर्मधारय समास
हिन्दू-मुस्लिम	हिन्दू और मुस्लिम	द्वन्द्व समास
सप्तर्षि	सात ऋषियों का समूह	द्विगु समास
आत्म-विनाश	आत्मा का विनाश	तत्पुरुष समास
पददलित	पद से दलित	तत्पुरुष समास
यथोचित	जो उचित हो	अव्ययीभाव समास
सुलोचना	सुन्दर लोच हैं जिसके	कर्मधारय समास

महत्वपूर्ण वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

❖ बहु-विकल्पीय प्रश्न

1. नेताजी की मूर्ति पर चश्मा कौन लगाता था ?

(क) कैप्टन चश्मे वाला, (ख) पान वाला,
(ग) हालदार साहब, (घ) चौराहे का व्यापारी।

2. कस्बे के चौराहे पर किसकी प्रतिमा लगी थी ?

(क) महात्मा गांधी की, (ख) सुभाषचन्द्र बोस की,
(ग) सरदार पटेल की, (घ) लाल बहादुर शास्त्री की।

3. बालगोबिन भगत 'साहब' किसे मानते थे ?

(क) तुलसी को, (ख) सूर को,
(ग) कबीर को, (घ) गुरुनानक को।

4. बालगोबिन भगत गाते समय क्या बजाते थे ?

(क) ढपली, (ख) ढोलक,
(ग) सारंगी, (घ) खंजड़ी।

5. फादर कामिल बुल्के भारत की राष्ट्रभाषा किसे चाहते थे ?

(क) हिन्दी को, (ख) अंग्रेजी को,
(ग) उर्दू को, (घ) संस्कृत को।

6. फादर कामिल बुल्के ने किस विषय में उच्च शिक्षा प्राप्त की ?

(क) अंग्रेजी, (ख) हिन्दी,
(ग) बंगला, (घ) संस्कृत।

Scanned with CamScanner

7. लेखिका मन्नू भंडारी की साहित्यिक रुचि को किसने विस्तार दिया ?
(क) उनके पिता ने,
(ख) प्राध्यापिका शीला अग्रवाल ने,
(ग) उनकी माता ने,
(घ) उनके बड़े भाई ने।

8. लेखिका मन्नू भंडारी के पिता का स्वभाव कैसा था ?
(क) शान्त तथा गम्भीर,
(ख) वाचाल तथा चंचल,
(ग) क्रोधी तथा शक्की,
(घ) सुस्त तथा कमजोर।

9. प्राचीन काल में स्त्रियों की बोलचाल की भाषा थी—
(क) संस्कृत,
(ख) मराठी,
(ग) पाली,
(घ) प्राकृत।

10. स्त्री-शिक्षा के बारे में महावीर प्रसाद द्विवेदी का मत था—
(क) स्त्रियों को पढ़ाना चाहिए,
(ख) स्त्रियाँ पढ़कर गृह क्लेश का कारण बनती हैं,
(ग) स्त्रियों का पढ़ना अनर्थ है,
(घ) स्त्रियों को नहीं पढ़ाना चाहिए।

11. प्रकाश की आवश्यकता तथा भूख ने किसका आविष्कार कराया ?
(क) सुई-धागे का,
(ख) आग का,
(ग) हथियारों का,
(घ) सभ्यता का।

12. संस्कृति का सम्बन्ध होता है—
(क) धन सम्पत्ति से,
(ख) शिक्षा से,
(ग) मानव कल्याण से,
(घ) शक्ति के विकास से।

उत्तर—1. (क), 2. (ख), 3. (ग), 4. (घ), 5. (क), 6. (ख), 7. (ख), 8. (ग), 9. (घ), 10. (क), 11. (ख), 12. (ग)।

❖ रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. नेताजी की मूर्ति ..... की बनवाई गई थी।
2. नेताजी की प्रतिमा ..... ने बनाई थी।
3. बालगोबिन भगत का बेटा ..... था।
4. बालगोबिन भगत ..... के पद गाया करते थे।
5. फादर कामिल बुल्के संकल्प से ..... थे।
6. फादर कामिल बुल्के ..... को भारत की राष्ट्रभाषा बनाने के पक्षधर थे।
7. शीला अग्रवाल ..... की प्राध्यापिका थीं।
8. मन्नू भंडारी के पिता रसोई को ..... कहते थे।
9. स्त्रियों को पढ़ाने में कोई ..... नहीं थे।
10. पुराने जमाने में स्त्रियों के लिए ..... नहीं थे।
11. आग के आविष्कार के पीछे ..... रही होगी।
12. सभ्यता ..... का परिणाम है।

उत्तर—1. संगमरमर, 2. मास्टर मोतीलाल, 3. सुस्त तथा बोदा, 4. कबीर, 5. संन्यासी, 6. हिन्दी, 7. हिन्दी, 8. भटियारखाना, 9. अनर्थ, 10. विश्वविद्यालय, 11. भूख और प्रकाश की आवश्यकता, 12. संस्कृति।

❖ सही जोड़ी मिलाइए

I.

'अ'	'ब'
1. नेताजी की प्रतिमा	(क) मोतीलाल
2. प्रतिमा बनाई थी	(ख) कस्बे के चौराहे पर
3. बालगोबिन भगत	(ग) कार्तिक से फाल्गुन तक

Scanned with CamScanner

4. प्रभातियाँ गाते थे
5. जहरबाद
6. फादर कामिल बुल्के का निधन

उत्तर–1. → (ख), 2. → (क), 3. → (घ), 4. → (ग), 5. → (च), 6. → (ङ)।

II.

'अ'	'ब'
1. मन्नू भंडारी की माँ	(क) शीला अग्रवाल ने
2. साहित्य में रुचि पैदा की	(ख) बिना पढ़ी सरल महिला
3. स्त्री शिक्षा से	(ग) दुष्यन्त
4. शकुन्तला	(घ) देश का गौरव बढ़ेगा
5. संस्कृति	(ङ) सुई-धागे
6. सर्दी-गर्मी में तन ढकने की खोज	(च) भदंत आनंद कौसल्यायन

उत्तर–1. → (ख), 2. → (क), 3. → (घ), 4. → (ग), 5. → (च), 6. → (ङ)।

❖ सत्य/असत्य

1. पानवाला कैप्टन चश्मेवाले का भाई था।
2. नेताजी की मूर्ति कस्बे के चौराहे पर लगी थी।
3. बालगोबिन भगत गृहस्थ नहीं थे।
4. भगत अपनी खेती की पैदावार पहले कबीर मठ लेकर जाते थे।
5. फादर हिन्दी को उतना नहीं चाहते थे जितना अंग्रेजी को।
6. फादर की निकटता में ऐसा लगता था जैसे किसी देवदारू की छाया में खड़े हों।
7. बहस करना लेखिका मन्नू भंडारी के पिताजी का शगल था।
8. अपनों के विश्वासघात के कारण लेखिका के पिताजी का स्वभाव शक्की हो गया था।
9. शकुन्तला से दुष्यन्त ने गंधर्व विवाह किया था।
10. अत्रि की पत्नी धर्म पर व्याख्यान नहीं दे पाती थीं।
11. मानव संस्कृति अविभाज्य है।
12. सभ्यता तथा संस्कृति एक ही है।

उत्तर–1. असत्य, 2. सत्य, 3. असत्य, 4. सत्य, 5. असत्य, 6. सत्य, 7. सत्य, 8. सत्य, 9. सत्य, 10. असत्य, 11. सत्य, 12. असत्य।

❖ एक शब्द/वाक्य में उत्तर

1. नेताजी की मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा किसने लगाया होगा ?
2. सुभाष चन्द्र बोस की मूर्ति कहाँ लगी थी ?
3. बालगोबिन भगत किसके पद गाया करते थे ?
4. बालगोबिन भगत ने बेटे की मृत्यु के बाद बहू को किसके साथ भेज दिया ?
5. फादर कामिल बुल्के भारत की राष्ट्रभाषा किसे चाहते थे ?
6. फादर कामिल बुल्के का निधन किस बीमारी से हुआ था ?
7. मन्नू भंडारी की साहित्यिक रुचि किसने विकसित कराई ?
8. भारत किस वर्ष स्वतन्त्र हुआ था ?
9. हिन्दू वेदों को किसकी रचना मानते हैं ?
10. मंडन मिश्र की सहचारिणी ने शास्त्रार्थ में किसके छक्के छुड़ा दिए थे ?
11. सभ्यता किसका परिणाम है ?

Scanned with CamScanner

12. मानव संस्कृति किस प्रकार की है ?

उत्तर–1. किसी बच्चे ने, **2.** कस्बे के चौराहे पर, **3.** कबीर के, **4.** उसके भाई के साथ, **5.** हिन्दी को, **6.** जहरबाद से, **7.** शीला अग्रवाल ने, **8.** सन् 1947 में, **9.** ईश्वर की, **10.** शंकराचार्य के, **11.** संस्कृति के, **12.** अविभाज्य।

अध्याय 8

लेखकों का साहित्यिक परिचय

1. स्वयं प्रकाश

● **जीवन परिचय**–स्वयं प्रकाश का जन्म मध्य प्रदेश के इन्दौर में सन् 1947 में हुआ। इनकी शिक्षा राजस्थान में हुई। आपने मैकेनिकल इंजीनियरिंग करने के बाद एम. ए. तथा पी-एच. डी. (हिन्दी) किया। साहित्यिक रुचि के कारण आप 'बसुधा' पत्रिका से जुड़ गए फिर 'चकमक' बाल पत्रिका का सम्पादन किया। सन् 2019 में इनका निधन हो गया।

● **रचनाएँ**–**(1) कहानियाँ**–प्रसिद्ध कहानीकार स्वयं प्रकाश के 13 कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। इनकी '*सूरज कब निकलेगा*', '*आएँगे अच्छे दिन भी*', '*आदमी जात का आदमी*', '*छोटू उस्ताद*' और '*संधान*' चर्चित रचनाएँ रही हैं।

(2) उपन्यास–'*जलते जहाज पर*', '*ज्योतिरथ के सारथी*', '*उत्तर जीवन कथा*', '*बीच में विनय*', '*ईंधन*' इनके प्रसिद्ध उपन्यास हैं।

(3) निबन्ध संग्रह–'*स्वांतः सुखाय*', '*दूसरा पहलू*', '*रंगशाला में एक दोपहर*', '*एक कहानीकार की नोटबुक*' तथा '*क्या आप साम्प्रदायिक हैं*' इनके चर्चित निबन्ध संग्रह हैं।

इसके अलावा इन्होंने रेखाचित्र, साक्षात्कार आदि भी लिखे हैं।

● **भाषा-शैली**–**भाषा**–लोक जीवन से जुड़े रहे स्वयं प्रकाश की भाषा भी लोक प्रचलित व्यावहारिक है। ये सहज, सरल, सुस्पष्ट भाषा का प्रयोग करते हैं। इनकी भाषा आडम्बर तथा बनावटीपन से दूर जनसाधारण की भाषा है।

शैली–**(1) भावात्मक शैली**–भाव प्रधान अंशों में इस शैली का प्रयोग किया गया है।

(2) वर्णनात्मक शैली–किसी घटना, वस्तु या व्यक्ति के वर्णन में यह शैली प्रयोग की गई है।

(3) चित्रात्मक शैली–इस शैली में पात्र, घटना या स्थिति का शब्दों के माध्यम से चित्रण किया गया है।

● **साहित्य में स्थान**–स्वयं प्रकाश ने अपने साहित्य में निम्न वर्ग, शोषित समाज तथा नारी उत्थान के प्रति चिन्ता व्यक्त की है। साठोत्तरी कथाकारों में स्वयं प्रकाश का महत्वपूर्ण स्थान है।

2. रामवृक्ष बेनीपुरी

● **जीवन परिचय**–रामवृक्ष बेनीपुरी का जन्म सन् 1902 ई. में बिहार के मुजफ्फरपुर जिले के बेनीपुर ग्राम में एक साधारण किसान परिवार में हुआ था। बचपन में ही इनके माता-पिता का देहान्त हो गया। सन् 1920 में असहयोग आन्दोलन में भाग लेने के कारण इनकी स्कूली शिक्षा अधूरी रह गई। बाद में हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग से 'विशारद' की परीक्षा उत्तीर्ण की। सन् 1968 में इनका निधन हो गया।

Scanned with CamScanner

● **रचनाएँ**

(1) उपन्यास—'*पतितों के देश में*'।

(2) रेखाचित्र—'*माटी की मूरतें*', '*लालतारा*' आदि।

(3) निबन्ध—'*गेहूँ बनाम गुलाब*', '*मशाल*', '*वन्दे वाणी विनायकौ*'।

(4) कहानी—'*चिता के फूल*', '*कहानी संग्रह*'।

(5) जीवनी—'*महाराजा प्रताप सिंह*', '*कार्ल मार्क्स*', '*जयप्रकाश नारायण*' आदि।

भाषा-शैली—भाषा—इनकी भाषा व्यावहारिक है। इसमें सरलता, सुबोधता और सजीवता पाई जाती है। मुहावरों और कहावतों से भाषा में सुन्दरता आ गई है।

शैली—इनकी शैली के विविध रूप निम्न प्रकार हैं—

(1) वर्णनात्मक शैली—इन्होंने किसी वस्तु अथवा घटना का वर्णन करते समय इस शैली का प्रयोग किया है। इस शैली की भाषा सरल, सुबोध है।

(2) भावात्मक शैली—यह शैली इनकी प्रधान शैली है। इसमें भावों की प्रबलता और मार्मिकता है।

(3) प्रतीकात्मक शैली—बेनीपुरी अपनी बात को सीधे-सीधे न कहकर प्रतीकों के माध्यम से कहते हैं। इनके निबन्धों में इस शैली का अधिक प्रयोग हुआ है।

(4) आलोचनात्मक शैली—बेनीपुरी ने समीक्षा के समय आलोचनात्मक शैली का प्रयोग किया है।

● **साहित्य में स्थान**—भाषा शैली पर बेनीपुरी जी का असाधारण अधिकार है। भाषा सर्वथा सहज और स्वाभाविक है। इन्होंने कई पत्र-पत्रिकाओं का सम्पादन किया और नाटकों, निबन्धों, कहानियों और रेखाचित्रों की रचना करके हिन्दी साहित्य के भण्डार की वृद्धि की। एक देशभक्त और साहित्यकार के रूप में बेनीपुरी का नाम हिन्दी साहित्य में अमर रहेगा।

3. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

● **जीवन परिचय**—सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का जन्म उत्तर प्रदेश के जिला बस्ती में सन् 1927 में हुआ था। आपने बस्ती, वाराणसी तथा इलाहाबाद में शिक्षा प्राप्त की। कुछ दिन अध्यापन किया फिर आकाशवाणी चले गए। इसके बाद 'दिनमान' के उपसम्पादक तथा 'पराग' के सम्पादक रहे। सन् 1983 में आपका निधन हो गया।

● **रचनाएँ**—**(1)** रेखाचित्र, संस्मरण।

(2) कहानी संग्रह—'*अंधेरे पर अंधेरा*' तथा '*लड़ाई*'।

(3) उपन्यास—'*पागल कुत्तों का मसीहा*', '*सोया हुआ जल*', '*उड़े हुए रंग*' आदि।

(4) नाटक—'*बकरी*'।

(5) बाल साहित्य—'*भौं-भौं, खौं-खौं*', '*लाख की नाक*', '*बतूता का जूता*', '*महंगू की टाई*' आदि।

(6) सम्पादन—इन्होंने बाल पत्रिका 'पराग' का सम्पादन किया।

(7) यात्रा वृत्तान्त—'*कुछ रंग कुछ गंध*'।

(8) काव्य संग्रह—'*बाँस का पुल*', '*काठ की घंटियाँ*', '*एक सूनी नाव*', '*गर्म हवाएँ*', '*जंगल का दर्द*', '*कुआनो नदी*' तथा '*खूँटियों पर टँगे लोग*' उनके चर्चित काव्य संग्रह हैं।

● **भाषा-शैली—भाषा**—सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की भाषा प्रवाहमयी तथा स्वाभाविकता से युक्त है। इन्होंने आवश्यकतानुसार तत्सम, तद्भव, देशज तथा विदेशी शब्दों का प्रयोग किया है। विषय के अनुरूप उनकी भाषा बदलती जाती है। उक्तियों, मुहावरों का सटीक प्रयोग हुआ है। चमत्कार तथा प्रभावशीलता इनकी भाषा की विशेषता है।

● **शैली**—इनकी शैली के प्रमुख रूप निम्न प्रकार हैं—

(i) भावात्मक शैली—इस शैली का प्रयोग संस्मरण तथा यात्रा-वृत्तान्तों में किया गया है। सरसता, सरलता, रोचकता तथा आलंकारिकता इस शैली की विशेषताएँ हैं।

Scanned with CamScanner

(ii) वर्णनात्मक शैली—किसी घटना, स्थिति या पात्र के विषय में वर्णन करते हुए उन्होंने इस शैली को अपनाया है।

(iii) चित्रोपम शैली—सक्सेना जी चित्रोपम शैली के द्वारा घटना, विषय या व्यक्ति का चित्र-सा उपस्थित कर देते हैं। 'मानवीय करुणा की दिव्य चमक' में इस शैली का अच्छा प्रयोग हुआ है।

● **साहित्य में स्थान**—गद्य तथा काव्य में समान अधिकार के साथ रचना करने वाले सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का साठोत्तरी साहित्यकारों में महत्वपूर्ण स्थान है। इन्होंने नवीन विधाओं संस्मरण, रेखाचित्र आदि को सम्पन्न करने का उल्लेखनीय कार्य किया है।

4. मन्नू भंडारी

● **जीवन परिचय**—मन्नू भंडारी का जन्म मध्य प्रदेश के मंदसौर जिले के भानपुरा गाँव में हुआ। इनकी शिक्षा अजमेर राजस्थान में हुई। युवावस्था में स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लिया। उच्च शिक्षा पूरी करके आपने दिल्ली के मिरांडा हाउस कॉलेज में अध्यापन किया। आप प्रारम्भ से हिन्दी साहित्य सृजन से जुड़ गई। नौकरी से अवकाश प्राप्त कर आप दिल्ली में साहित्य रचना में संलग्न हैं।

● **रचनाएँ**—**(1) कहानी संग्रह**—इनके '*मैं हार चुकी*', '*एक प्लेट सैलाब*', '*यही सच है*', '*त्रिशंकु*' आदि कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं।

(2) उपन्यास—मन्नू भंडारी के '*आपका बंटी*' और '*महाभोज*' उपन्यास बहुत प्रसिद्ध रहे हैं। '*एक इंच मुस्कान*' उपन्यास मन्नू भंडारी तथा उनके पति राजेन्द्र यादव दोनों ने लिखा है।

(3) नाटक—'*बिना दीवारों का घर*', '*महाभोज*' उपन्यास का भी नाट्य रूपान्तरण हो चुका है।

(4) आत्मकथा—'*एक कहानी यह भी*' प्रकाशित हो चुकी है।

(5) बाल साहित्य—'*आँखों देखा झूठ*', '*आसमाता*' और '*कलावा*' बाल कहानियाँ छप चुकी हैं।

आपने दूरदर्शन तथा फिल्म की पटकथाएँ भी लिखी हैं।

● **भाषा-शैली**—**भाषा**—मन्नू भंडारी ने बोलचाल की व्यावहारिक भाषा में साहित्य रचना की है। आपने आवश्यकता के अनुसार तत्सम, तद्भव, देशज तथा विदेशी शब्दों का प्रयोग किया है। आप लोकोक्ति व मुहावरों का स्वाभाविक प्रयोग भी करती हैं। आपकी भाषा में सम्प्रेषण की अद्भुत क्षमता है। विषय के अनुरूप आपकी भाषा भी बदलती जाती है।

शैली—**(1) भावात्मक शैली**—भावात्मक स्थलों पर यह शैली अपनाई गई जिससे भाषा सरस, सरल तथा आलंकारिक हो गई है।

(2) वर्णनात्मक शैली—किसी घटना, स्थान, वस्तु या व्यक्ति सम्बन्धी वर्णनों में यह शैली प्रयोग की गई है।

(3) संस्मरणात्मक शैली—अतीत को याद करने वाले संदर्भों में यह शैली प्रयोग की गई है।

(4) संवाद शैली—संवाद शैली के कारण आपके उपन्यासों, कहानियों में सजीवता आ गई है।

(5) व्यंग्यात्मक शैली—मन्नू जी ने अपनी रचनाओं में स्वाभाविक विषमताओं, रूढ़ियों, नारी शोषण पर तीखे व्यंग्य किए हैं।

● **साहित्य में स्थान**—सशक्त कथाकार मन्नू भंडारी ने आम आदमी के दर्द, छल-कपट की राजनीति, शोषित समाज आदि का प्रभावी अंकन किया है। आधुनिक कथा साहित्य में मन्नू जी का प्रतिष्ठित स्थान है।

5. महावीरप्रसाद द्विवेदी

● **जीवन परिचय**—महावीरप्रसाद द्विवेदी का जन्म उत्तर प्रदेश के रायबरेली जिले के दौलतपुर गाँव में सन् 1864 में हुआ था। आप स्कूली शिक्षा पूरी करते ही रेलवे में नौकरी करने लगे। फिर नौकरी से त्यागपत्र

Scanned with CamScanner

देकर 'सरस्वती' पत्रिका के सम्पादक हो गए। पत्रिका के द्वारा आपने हिन्दी के संशोधन, परिमार्जन का उल्लेखनीय कार्य किया। सन् 1938 में आपका निधन हो गया।

● **रचनाएँ**—**(1) निबन्ध संग्रह**—'*रसज्ञ रंजन*', '*साहित्य सीकर*', '*साहित्य संदर्भ*', '*अद्भुत आलाप*' आदि।

(2) आलोचना—'*हिन्दी नवरत्न*', '*कालिदास की निरंकुशता*', '*विचार-वितर्क*', '*नैषध चरित चर्चा*', '*नाट्यशास्त्र*' आदि।

(3) अनुवाद—'*मेघदूत*', '*कुमारसंभव*', '*बेकन विचार*', '*विचार रत्नावली*', '*स्वाधीनता*' आदि।

(4) सम्पादन—'*सरस्वती*' मासिक पत्रिका।

(5) कविता संग्रह—'*सुमन*', '*काव्य मंजूषा*', '*कविता कलाप*' आदि।

'*सम्पत्तिशास्त्र*', '*हिन्दी भाषा की उत्पत्ति*', '*वाग्विलास*' आदि आपकी महत्वपूर्ण रचनाएँ हैं।

● **भाषा-शैली**—**भाषा**—महावीरप्रसाद द्विवेदी की भाषा शुद्ध एवं साहित्यिक है। उसमें व्याकरणादि अशुद्धियाँ नहीं हैं। आपकी भाषा विषय के अनुसार परिवर्तित होती जाती है। आप व्यावहारिक भाषा के पक्षपाती थे। इसीलिए कठिन-से-कठिन विषयों को भी आपने सरल रूप में प्रस्तुत किया है।

शैली—द्विवेदी जी की शैली के प्रमुख रूप निम्न प्रकार हैं—

(1) आलोचनात्मक शैली—हिन्दी के परिमार्जन कार्य में यह शैली प्रयोग हुई है। उन्होंने भाषा का परिमार्जन करते हुए अपने विरोधियों को करारे उत्तर दिए हैं।

(2) परिचयात्मक शैली—द्विवेदी जी ने विभिन्न विषयों का परिचय इसी शैली में दिया है।

(3) विचारात्मक शैली—गम्भीर विषयों के विवेचन में इस शैली का प्रयोग किया गया है। जिन विषयों पर विवाद होते थे उनको इसी शैली में स्पष्ट किया गया है।

(4) व्यंग्यात्मक शैली—द्विवेदी जी ने व्यंग्य शैली में सामाजिक, शैक्षिक आदि बुराइयों पर मधुर व्यंग्य किए हैं।

इसके अलावा गवेषणात्मक, भावात्मक, वर्णनात्मक आदि शैली रूप भी आपने अपनाए हैं।

● **साहित्य में स्थान**—हिन्दी भाषा तथा साहित्य के संशोधन-परिमार्जन का कार्य करने वाले महावीरप्रसाद द्विवेदी का स्थान अत्यन्त सम्माननीय है। 'सरस्वती' के माध्यम से आपने अनेक लेखकों-कवियों का मार्गदर्शन किया। उन्होंने रचनाकारों को शुद्ध भाषा के प्रयोग के प्रति सजग किया। द्विवेदी जी युगों तक स्मरण किए जाते रहेंगे।

महत्वपूर्ण वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

❖ बहु-विकल्पीय प्रश्न

1. 'सूरज कब निकलेगा' के लेखक हैं—

(क) महावीरप्रसाद द्विवेदी, (ख) स्वयं प्रकाश,

(ग) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, (घ) रामवृक्ष बेनीपुरी।

2. निम्नलिखित में रामवृक्ष बेनीपुरी की रचना है—

(क) गेहूँ और गुलाब, (ख) छोटू उस्ताद,

(ग) महाभोज, (घ) संस्कृति।

3. 'अंधेरे पर अंधेरा' किसकी रचना है ?

(क) स्वयं प्रकाश की, (ख) भदंत आनंद कौसल्यायन की,

(ग) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की, (घ) मन्नू भंडारी की।

Scanned with CamScanner

4. मन्नू भंडारी की कौन-सी रचना है ?
(क) बकरी, (ख) दादा कामरेड,
(ग) जय प्रकाश नारायण, (घ) आपका बंटी।

5. 'रसज्ञ रंजन' के लेखक का क्या नाम है ?
(क) महावीरप्रसाद द्विवेदी, (ख) यशपाल,
(ग) मन्नू भंडारी, (घ) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना।

6. भदंत आनंद कौसल्यायन की रचना है—
(क) महाभोज, (ख) बहानेबाजी,
(ग) काठ की घंटियाँ, (घ) महाराजा प्रताप सिंह।

उत्तर—1. (ख), 2. (क), 3. (ग), 4. (घ), 5. (घ), 6. (ख)।

❖ रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. 'आयेंगे अच्छे दिन' के लेखक ..... हैं।
2. 'माटी की मूरतें' के रचनाकार ..... हैं।
3. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना ने ..... नाटक लिखा है।
4. 'एक कहानी यह भी' ..... द्वारा लिखित रचना है।
5. महावीरप्रसाद द्विवेदी ..... पत्रिका के सम्पादक रहे।
6. 'संस्कृति' के लेखक ..... हैं।

उत्तर—1. स्वयं प्रकाश, 2. रामवृक्ष बेनीपुरी, 3. बकरी, 4. मन्नू भंडारी, 5. सरस्वती, 6. भदंत आनंद कौसल्यायन।

❖ सत्य/असत्य

1. 'नेताजी का चश्मा' स्वयं प्रकाश की रचना है।
2. 'सूरज कब निकलेगा' के लेखक रामवृक्ष बेनीपुरी हैं।
3. 'पागल कुत्तों का मसीहा' सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की रचना है।
4. 'माटी की मूरतें' की लेखिका मन्नू भंडारी हैं।
5. 'साहित्य सीकर' महावीरप्रसाद द्विवेदी की रचना है।
6. 'देश की मिट्टी बुलाती है' भदंत आनंद कौसल्यायन की रचना है।

उत्तर—1. सत्य, 2. असत्य, 3. सत्य, 4. असत्य, 5. सत्य, 6. सत्य।

❖ सही जोड़ी मिलाइए

'अ'	'ब'
1. आदमी जात का आदमी	(क) पतितों के देश में
2. रामवृक्ष बेनीपुरी	(ख) स्वयं प्रकाश
3. महाभोज	(ग) बकरी
4. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना	(घ) मन्नू भंडारी
5. विचार और वितर्क	(ङ) भिक्षु के पत्र
6. भदंत आनंद कौसल्यायन	(च) महावीरप्रसाद द्विवेदी

उत्तर—1. → (ख), 2. → (क), 3. → (घ), 4. → (ग), 5. → (च), 6. → (ङ)।

❖ एक शब्द/वाक्य में उत्तर

1. स्वयं प्रकाश का जन्म किस सन् में हुआ था ?

Scanned with CamScanner

2. रामवृक्ष बेनीपुरी की कौन-सी रचना आपके पाठ्यक्रम में है ?
3. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना किस पत्रिका के सम्पादक रहे थे?
4. 'आपका बंटी' किसकी रचना है ?
5. 'साहित्य सीकर' के लेखक का क्या नाम है ?
6. भदंत आनंद कौसल्यायन का निधन किस सन् में हुआ था ?

उत्तर—1. सन् 1947 में, 2. बालगोबिन भगत, 3. 'पराग' के, 4. मन्नू भंडारी की, 5. महावीरप्रसाद द्विवेदी, 6. सन् 1988 में।

अध्याय 9

पूरक पाठ्य-पुस्तक : कृतिका-2

1 माता का अँचल

—शिवपूजन सहाय

प्रश्न 1. प्रस्तुत पाठ के आधार पर यह कहा जा सकता है कि बच्चे का अपने पिता से अधिक जुड़ाव था, फिर भी विपदा के समय वह पिता के पास न जाकर माँ की शरण लेता है। आपकी समझ से इसकी क्या वजह हो सकती है ?

उत्तर—माँ की ममता जगत् विख्यात है। माँ अपने बच्चे को निर्मल, निश्छल प्यार करती है। इसीलिए बच्चा पिता से अधिक जुड़ाव रखने पर भी संकट के समय में पिता के पास न जाकर माँ के पास जाता है। माँ की शरण में वह स्वयं को पूरी तरह सुरक्षित समझता है। पिता उसे लेना चाहते हैं किन्तु वह माँ के आँचल में छिप जाता है। इसका कारण पिता की अपेक्षा माँ की अधिक ममता ही है।

प्रश्न 2. आपके विचार से भोलानाथ अपने साथियों को देखकर सिसकना क्यों भूल जाता है ?

उत्तर—खेलने में बच्चे की स्वाभाविक रुचि होती है। यदि उसे अपनी उम्र के बच्चे खेलते मिल जायें तो वह सब कुछ भूलकर खेल में रम जाता है। यही कारण है कि जो भोलानाथ अपने पिता की गोद में सिसक रहा था जब वह अपने साथी बच्चों को खेलता देखता है तो उसका मन खेलने को लालायित होता है। वह सिसकना बन्द करके खेलने के लिए उतर जाता है।

प्रश्न 3. भोलानाथ और उसके साथियों के खेल और खेलने की सामग्री आपके खेल और खेलने की सामग्री से किस प्रकार भिन्न है ?

उत्तर—समय के साथ खेल तथा खेल की सामग्री बदलती रहती है जो खेल और खेल की सामग्री उस समय थी। उनसे भोलानाथ खेलते थे। किन्तु आज खेल भी बदल गए हैं तथा खेल की सामग्री भी बदल गई है। भोलानाथ पेड़ों पर, खेत में, वर्षा में, मिट्टी से, पानी से, कनस्तर से, पत्थर से, घर के सामान से खेलते थे। दुकान लगाते, मिठाई बेचते, नाटक करते थे। किन्तु आज क्रिकेट, हॉकी, वीडियो गेम, कम्प्यूटर, मोबाइल गेम खेलने के साधन हो गए हैं।

प्रश्न 4. पाठ में आए ऐसे प्रसंगों का वर्णन कीजिए जो आपके दिल को छू गए हैं ?

उत्तर—इस पाठ के कई प्रसंग हृदय को छूने वाले हैं—

(1) पिताजी के रामायण पाठ के समय भोलानाथ बगल में बैठकर आइने में अपना मुँह देखते हैं तो पिताजी को देखकर उसका लज्जित होना।

Scanned with CamScanner

(2) पिताजी का उसे कँधे पर बैठाकर ले जाना, पेड़ की डाल पर झूला झुलाना, कुश्ती में खुद शिथिल होकर बालक के मन को बढ़ाना आदि।

(3) बच्चों का मिठाई की दुकान लगाना, खेती करना, घर बनाना फिर उसे तोड़ देना, नाटक करना आदि सहज ही हृदय को छू जाते हैं।

(4) पानी भरने से साँप का निकलना, बच्चों का गिरते-पड़ते भागना तथा आकर माँ के आँचल में छिप जाना।

प्रश्न 5. यहाँ (पाठ में) माता-पिता का बच्चे के प्रति जो वात्सल्य व्यक्त हुआ है, उसे अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर—इस पाठ में माता-पिता का बच्चे के प्रति वात्सल्य कई प्रकार से व्यक्त हुआ है—भोर में जगाकर बच्चे को नहलाना, सजाना, तिलक लगाना, कंधे पर बैठाकर गंगा तक ले जाना, पेड़ की डाली पर झुलाना, अपने पास बैठाकर खाना खिलाना आदि पिता के वात्सल्य व्याव को व्यक्त करते हैं। बालों में तेल लगाना, चोटी काढ़ना, कन्हैया बनाना, तोता, मैना, कबूतर के नामों से दही-भात के गोले खिलाना आदि माँ के वात्सल्य भाव को प्रकट करता है। साँप के डर से काँपते, धूल में सने भोलानाथ की धूल साफ करना, गोदी बिठाना आदि माँ की ममता का द्योतक है।

प्रश्न 6. 'माता का अँचल' शीर्षक की उपयुक्तता बताते हुए कोई अन्य शीर्षक सुझाइए।

उत्तर—इस पाठ का शीर्षक 'माता का अँचल' उपयुक्त है। अच्छे शीर्षक में होने वाली सभी विशेषताएँ इसमें हैं। यह शीर्षक छोटा है, विषय का संकेत देता है, आकर्षक है, कौतूहल जगाता है। इसलिए यह उपयुक्त शीर्षक है। यदि इसका अन्य शीर्षक देना ही हो तो 'माँ की ममता' दिया जाना चाहिए।

प्रश्न 7. बच्चे माता-पिता के प्रति अपने प्रेम को कैसे अभिव्यक्त करते हैं ?

उत्तर—बच्चों का माता-पिता के प्रति होने वाला प्रेम विविध प्रकार से अभिव्यक्त होता है। बच्चे माता-पिता के साथ बात करके, इनके गालों को चूमकर, उनके साथ खेलकर, उनके साथ घूमने जाकर, अटकन-बटकन खेलकर, कहानी सुनाकर, मीठे स्वर में गीत गाकर तथा तोतली भाषा में बातें करके माता-पिता के प्रति होने वाले अपने प्रेम को व्यक्त करते हैं। बच्चे माता-पिता पर अपना अधिकार मानते हैं इसलिए वे अपनी हर माँग उन्हीं से करते हैं। अपनी इच्छाओं की पूर्ति भी उन्हीं से कराते हैं। इस प्रकार माँग में उनका विरोध नहीं प्रेम भाव होता है।

प्रश्न 8. इस पाठ में बच्चों की जो दुनिया रची गई है वह आपके बचपन की दुनिया से किस तरह भिन्न है ?

उत्तर—'माता का अँचल' पाठ में जो दुनिया रची गई है वह आज से वर्षों पहले की ग्रामीण दुनिया है। इसमें देहाती सरलता, सहजता, पूजा-पाठ, खेलकूद, बारात-दुल्हन, बाजार, दुकान, घरौंदा इत्यादि सम्बन्धी वर्णन हैं जिन्हें भोलानाथ मन से चाहता था। उस समय माँ-बाप के पास समय था वे बच्चे के साथ खेल-कूद करते थे। आज की दुनिया व्यस्त है। किसी के पास बच्चों को खिलाने का समय नहीं है। बदले समय में खेल भी क्रिकेट, हॉकी, टेनिस, बैडमिंटन आदि खेले जाते हैं। दो-ढाई वर्ष का होते ही बच्चों को नर्सरी, प्री-नर्सरी में दाखिल कर देते हैं। उसके कन्धे पर बस्ता लग जाता है। उसे वर्णमाला, गिनती आदि रटाने लगते हैं। आज बच्चे के स्वाभाविक विकास के अवसर कम हो गए हैं। पढ़ाई की चिन्ता में वह खाना-पीना भूल जाता है। वस्तुत: आज की दुनिया उस समय की दुनिया से पूरी तरह अलग है।

2 जॉर्ज पंचम की नाक

— कमलेश्वर

प्रश्न 1. सरकारी तन्त्र में जॉर्ज पंचम की नाक लगाने को लेकर जो चिन्ता या बदहवासी दिखाई देती है वह उनकी किस मानसिकता को दर्शाती है ?

उत्तर—सरकारी तन्त्र में जॉर्ज पंचम की नाक लगाने को लेकर जो चिन्ता या बदहवासी दिखाई देती है वह उनकी हीन तथा गुलाम मानसिकता को दिखाती है। वे जॉर्ज पंचम की मूर्ति की नाक के लिए जितने परेशान

Scanned with CamScanner

हैं वह उनकी गुलामी की मानसिकता को प्रकट करता है। भारत को गुलाम बनाने वालों के प्रति इस तरह का सम्मान दिखाना ठीक नहीं है।

प्रश्न 2. "और देखते ही देखते नयी दिल्ली का काया पलट हो गया"—नयी दिल्ली के काया पलट के लिए क्या-क्या प्रयत्न किए गए होंगे ?

उत्तर—नयी दिल्ली के काया पलट के लिए सफाई, रंगाई, पुताई, मरम्मत आदि कार्यों के साथ ही प्रकाश, यातायात, वृक्षारोपण आदि पर ध्यान दिया गया होगा। ऐसे देश की रानी दौरे पर आ रही थी जो विकसित तथा सम्पन्न देश है। वहाँ सफाई, स्वास्थ्य आदि पर ध्यान दिया जाता है। सड़कों का कूड़ा-करकट हटाया गया होगा, पेड़-पौधे ठीक किए गए होंगे। पानी का छिड़काव किया गया होगा। सड़कों के पास के भवनों की रंगाई-पुताई का कार्य कराया होगा। सरकारी भवनों, स्मारकों को संभाला गया होगा। जिस मार्ग से रानी को जाना होगा उस पर अधिक ध्यान दिया गया होगा।

प्रश्न 3. जॉर्ज पंचम की लाट की नाक को पुनः लगाने के लिए मूर्तिकार ने क्या-क्या यत्न किए ?

उत्तर—जॉर्ज पंचम की लाट की नाक लगाने के लिए मूर्तिकार ने विभिन्न प्रयत्न किए। सरकारी अधिकारियों की चिन्ता समझते हुए उसने सबसे पहले नाक वाला पत्थर खोजने की कोशिश की। उसमें असफल रहने पर किसी अन्य मूर्ति से नाक लाकर लगाने की सोची। इसमें भी वह सफल नहीं हुआ क्योंकि सभी मूर्तियों की नाक इससे बड़ी थी। अंत में उसने किसी जीवित आम आदमी की नाक काटकर मूर्ति पर लगा दी। वह नाक पत्थर की नहीं लगती है, यह बात अखबारों ने छाप भी दी।

प्रश्न 4. नाक मान-सम्मान और प्रतिष्ठा का द्योतक है। यह बात पूरी व्यंग्य रचना में किस तरह उभरकर आई है ? लिखिए।

उत्तर—नाक मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा से जुड़ी है 'नाक काटने' का अर्थ बेइज्जती है। प्रतिष्ठा की प्रतीक जॉर्ज पंचम की मूर्ति की नाक कटना स्वयं व्यंग्य है। यही व्यंग्य पत्थर की तलाश ने है। भारत की मूर्तियों की नाक मूर्ति की टूटी नाक से बड़ी है यह भी करारा व्यंग्य है। अंत में भारत के आदमी की नाक मूर्ति पर फिट बैठती है। इसमें भी व्यंग्य है कि भारत के आम आदमी के समान ही जॉर्ज पंचम की प्रतिष्ठा है। नाक लगाने के प्रयासों के क्रम ने व्यंग्य की चोट बहुत गहरी कर दी है।

प्रश्न 5. जॉर्ज पंचम की लाट पर किसी भी भारतीय नेता, यहाँ तक कि भारतीय बच्चे की नाक फिट न होने की बात से लेखक किस ओर संकेत करना चाहता है ?

उत्तर—जॉर्ज पंचम का चरित्र लुटेरों तथा स्वार्थियों का सा था। वह भारत को लूटकर इंग्लैण्ड पहुँचाने में लगा रहा। ऐसे व्यक्ति के प्रति स्वाभाविक मान-सम्मान का भाव नहीं होता है। लेखक की दृष्टि में वह गिरा हुआ चरित्र था। इसीलिए उसकी नाक (प्रतिष्ठा) सबसे छोटी तथा नीची थी। भारत के नेताओं की नाक उससे बड़ी थी। यहाँ तक कि भारत के देशभक्त बच्चों से भी उसकी नाक (प्रतिष्ठा) छोटी थी। लेखक जॉर्ज पंचम की नाक को सबसे छोटी दिखाकर उसकी हीनता तथा धूर्तता को उभारना चाहता है। वह बताना चाहता है कि भारत का छोटा-सा बच्चा भी उससे घृणा करता था।

प्रश्न 6. अखबारों ने नाक लगाने की खबर को किस तरह से प्रस्तुत किया ?

उत्तर—अखबारों ने खबरें छापीं कि जॉर्ज पंचम के जिन्दा नाक लगाई गई है, यानी ऐसी नाक जो कतई पत्थर की नहीं लगती। उन्होंने इस पर अपनी कोई प्रतिक्रिया नहीं लिखी। उन्होंने नहीं लिखा कि जिन्दा नाक काटना भारतीय जनता का अपमान था और सरकारी अफसरों की हीन मानसिकता का प्रतीक। वास्तव में, अखबारों को करारी प्रतिक्रिया देनी चाहिए थी।

प्रश्न 7. "नयी दिल्ली में सब था ..... सिर्फ नाक नहीं थी।" इस कथन के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता है ?

उत्तर—"नयी दिल्ली में सब था सिर्फ नाक नहीं थी" के द्वारा लेखक बताना चाहते हैं कि स्वतन्त्र होने के बाद भी भारत की नयी दिल्ली की सरकार तथा उसके अधिकारी गुलामी की मानसिकता से मुक्त नहीं हो पाए हैं उन्हें अब महारानी अपनी शासक लगती है। उसके द्वारा भेजा गया लुटेरा जॉर्ज पंचम था जिसके मूर्ति

Scanned with CamScanner

की नाक कट गई हैं इससे अधिकारियों को लगता है कि नाक नहीं लगी तो उनकी नाक कट जाएगी। लेखक ने इसी हीन प्रवृत्ति पर प्रहार किया है।

प्रश्न 8. जॉर्ज पंचम की नाक लगने वाली खबर के दिन अखबार चुप क्यों पड़ गए थे ?

उत्तर—जॉर्ज पंचम की नाक लगने वाली खबर के दिन अखबार इसलिए चुप थे कि उनको जिन्दा आदमी की नाक जॉर्ज पंचम की मूर्ति पर लगाना अच्छा नहीं लगा। उन्होंने इसे भारतीय जनता के अपमान के रूप में लिया। इसीलिए विरोधस्वरूप उस दिन न कोई उद्घाटन हुआ, न कोई अभिनन्दन हुआ और न कोई सार्वजनिक सभा हुई। सभी अखबार खाली थे। उन्होंने ऐसा करके अपना रोष प्रकट किया।

3 साना साना हाथ जोड़ि

—मधु कांकरिया

विशेष— *कोविड परिस्थितियों के चलते यह पाठ वार्षिक/बोर्ड परीक्षा 2022 के लिए बोर्ड द्वारा पाठ्यक्रम में से हटा दिया गया है।*

4 एही ठैयाँ झुलनी हेरानी हो रामा !

—शिवप्रसाद मिश्र 'रुद्र'

विशेष— *कोविड परिस्थितियों के चलते यह पाठ वार्षिक/बोर्ड परीक्षा 2022 के लिए बोर्ड द्वारा पाठ्यक्रम में से हटा दिया गया है।*

5 मैं क्यों लिखता हूँ ?

—अज्ञेय

प्रश्न 1. लेखक के अनुसार प्रत्यक्ष अनुभव की अपेक्षा अनुभूति उनके लेखन में कहीं अधिक मदद करती है, क्यों ?

उत्तर—प्रत्यक्ष अनुभव को घटित होते देखा जाता है। अनुभूति संवेदना तथा कल्पना के सहयोग से उस घटित सत्य को आत्मसात् कर लेती है जो लेखक के सामने घटित नहीं हुआ होता है। ऐसी स्थिति में अनुभूति द्वारा आँखों के समक्ष न आया हुआ सत्य भी प्रत्यक्ष हो जाता है। इसके बाद अन्दर की अनुभूति लेखक को लिखने के लिए मजबूर कर देती है। अनुभूति ही भावों को शब्दों का रूप देती है। इस प्रकार अनुभव की अपेक्षा अनुभूति लेखन में अधिक सहयोगी होती है।

प्रश्न 2. लेखक ने अपने आपको हिरोशिमा के विस्फोट का भोक्ता कब और किस तरह महसूस किया ?

उत्तर—अखबारों की खबरों से लेखक को हिरोशिमा के बम विस्फोट की जानकारी तो मिल गई थी। वे स्वयं जापान गए। वहाँ जाकर घायलों को अस्पतालों में देखा फिर भी उन्हें बम विस्फोट की भयंकरता की अनुभूति नहीं हुई। किन्तु सड़क पर घूमते हुए जब उन्होंने एक जले हुए पत्थर को देखा जिस पर एक व्यक्ति के जलने की उजली छाया थी तब उन्हें अनुभव हुआ कि बम विस्फोट के समय कोई आदमी यहाँ खड़ा रहा होगा। उन्होंने अनुमान लगाया कि बम विस्फोट से वह तो भाप बनकर उड़ गया होगा पर उसकी छाया पत्थर पर अंकित हो गई। इस अनुभूति ने उनके हृदय को झकझोर दिया। तब ही इन्हें बम विस्फोट की भयंकरता का आभास हुआ।

प्रश्न 3. कुछ रचनाकारों के लिए आत्मानुभूति/स्वयं के अनुभव के साथ-साथ बाह्य दबाव भी महत्त्वपूर्ण होता है। ये बाह्य दबाव कौन-कौन से हो सकते हैं ?

उत्तर—सामान्यतया रचनाकार आन्तरिक मजबूरी से छुटकारा पाने के लिए लिखते हैं किन्तु कुछ रचनाकारों पर अपनी स्वयं की अनुभूति के साथ-साथ बाहर के दबाव भी होते हैं जो बड़े महत्त्वपूर्ण होते हैं। संपादक से लिखने को आग्रह करना, प्रकाशक का बार-बार लिखने को तकाजा करना, आर्थिक आवश्यकताओं

Scanned with CamScanner

का होना अथवा किसी विशेष विषय पर लिखने की जरूरत होना आदि बाह्य दबाव हैं जो लेखक को लिखने के लिए विवश करते हैं।

प्रश्न 4. क्या बाह्य दबाव केवल लेखन से जुड़े रचनाकारों को ही प्रभावित करते हैं या अन्य क्षेत्रों से जुड़े कलाकारों को भी प्रभावित करते हैं, कैसे ?

उत्तर—बाहरी दबाव लेखकों को ही नहीं, अन्य कलाकारों को भी प्रभावित करते हैं। रचनाकार या कलाकार अपनी अनुभूति से प्रेरित होकर लिखता या कला का प्रदर्शन करता है किन्तु उनके भी कभी-कभी बाह्य दबाव होते हैं जिनका प्रभाव उन पर पड़ता ही है। जैसे सिनेमा के कलाकारों, मंच के कलाकारों पर दर्शकों की माँग, निर्माता, निर्देशक आदि के दबाव में काम करना पड़ता है। दर्शकों, श्रोताओं के साथ अपनी प्रसिद्धि का दबाव भी कलाकारों पर बना ही रहता है।

प्रश्न 5. हिरोशिमा की घटना विज्ञान का भयंकरतम दुरुपयोग है। आपकी दृष्टि में विज्ञान का दुरुपयोग कहाँ तक और किस तरह हो रहा है ?

उत्तर—विज्ञान ने मानव को अनेक सुख-साधन दिए हैं, उसका जीवन सरल बनाया है। किन्तु यह अत्यन्त दु:ख की बात है कि वैज्ञानिक संसाधनों का घातक दुरुपयोग भी हो रहा है। आतंकवाद इसी का नतीजा है। शक्तिशाली देश छोटे देशों पर दबाव बनाते हैं। मानव अंगों की तस्करी, भ्रूण हत्या आदि में विज्ञान का दुरुपयोग हो रहा है। कम्प्यूटर, इंटरनेट, मोबाइल आदि का अपराधी खुलकर दुरुपयोग कर रहे है। कीटनाशक दवाओं, लाउडस्पीकरों, रासायनिक खादों का दुरुपयोग घातक सिद्ध हो रहा है। जैविक हथियारों का खतरा सिर पर मंडरा रहा है।

प्रश्न 6. एक संवेदनशील युवा नागरिक की हैसियत से विज्ञान का दुरुपयोग रोकने में आपकी क्या भूमिका है ?

उत्तर—एक जिम्मेदार युवा नागरिक होने के कारण विज्ञान का दुरुपयोग रोकने में हमारी महत्त्वपूर्ण भूमिका है—(1) अपने घर तथा आस-पास वैज्ञानिक दुरुपयोगों को रोकते हैं। बिजली बचाना, कीटनाशकों का प्रयोग न करना, वाहनों का सदुपयोग करना आदि। (2) विज्ञान के कम्प्यूटर, इंटरनेट, मोबाइल आदि के दुरुपयोग के प्रति लोगों को जागरूक करना महत्त्वपूर्ण कार्य है। (3) जल, वायु, ध्वनि आदि प्रदूषण न करना तथा अन्य को रोकना। (4) चिकित्सा या अन्य प्रकार के अपराधों की जानकारी पुलिस आदि को देना। (5) विज्ञान के दुरुपयोग के बारे में चेतावनी देने के लिए शिविर लगाते हैं।

महत्वपूर्ण वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

❖ बहु-विकल्पीय प्रश्न

1. भोलानाथ का वास्तविक नाम क्या था ?

(क) तारकेश्वर नाथ, (ख) दामोदर प्रसाद,
(ग) राजेश कुमार, (घ) शिवप्रसाद।

2. भोलानाथ किसे देखकर सिसकना भूल गए ?

(क) अपनी माँ को, (ख) अपने साथी बच्चों को खेलते हुए,
(ग) अपने पिताजी को, (घ) अपने भाई को।

3. साँप के डर से घबराते भोलानाथ कहाँ जाकर छिपे ?

(क) पिता की गोदी में, (ख) घर के कोने में,
(ग) माँ के आँचल में, (घ) बाबा की रजाई में।

4. जॉर्ज पंचम की मूर्ति की कटी नाक लगवाने किसे बुलाया गया ?

(क) चित्रकार को, (ख) मिस्त्री को,
(ग) ठेकेदार को, (घ) मूर्तिकार को।

Scanned with CamScanner

5. भारत के दौरे पर कौन आ रही थी ?
(क) राजी एलिजाबेथ द्वितीय,
(ख) राजकुमारी हैलन,
(ग) राजकुमारी डायना,
(घ) एनी क्रिस्टल।

6. नाक किसकी प्रतीक मानी जाती है ?
(क) धनवान होने की,
(ख) प्रतिष्ठा, मान-सम्मान की,
(ग) शक्तिशाली होने की,
(घ) नेतागीरी की।

7. अज्ञेय ने 'हिरोशिमा' कविता कहाँ बैठकर लिखी थी ?
(क) जहाज में,
(ख) घर के कमरे में,
(ग) रेलगाड़ी में,
(घ) होटल में।

8. 'मैं क्यों लिखता हूँ' के लेखक का क्या नाम है ?
(क) शिवपूजन सहाय,
(ख) कमलेश्वर,
(ग) शिवप्रसाद मिश्र,
(घ) अज्ञेय।

9. लेखक को 'हिरोशिमा' कविता लिखने की प्रेरणा किससे मिली ?
(क) पत्थर पर उभरी मानव छाया को देखकर,
(ख) घायल लोगों को देखकर,
(ग) अखबारों में समाचार पढ़कर,
(घ) एक जापानी से बात करने से।

उत्तर–1. (क), 2. (ख), 3. (ग), 4. (घ), 5. (क), 6. (ख), 7. (ग), 8. (घ), 9. (क)।

❖ रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. भोलानाथ का असली नाम ..... था।
2. कुश्ती में पिताजी ..... को बढ़ावा देते थे।
3. साँप को देखते ही ..... गिरते-पड़ते, रोते-चिल्लाते भाग चले।
4. जॉर्ज पंचम की मूर्ति पर ..... नहीं थी।
5. रानी एलिजाबेथ ..... पधारने वाली थीं।
6. देखते-देखते दिल्ली का ..... होने लगा।
7. अज्ञेय ने जापान में घूमते हुए एक जले पत्थर पर एक ..... छाया देखी।
8. अज्ञेय ने हिरोशिमा कविता ..... में बैठे-बैठे लिखी।
9. कभी-कभी लेखक ..... दबावों से भी लिखता है।

उत्तर–1. तारकेश्वर नाथ, 2. बेटे भोलानाथ, 3. बच्चे, 4. नाक, 5. द्वितीय हिन्दुस्तान, 6. कायापलट, 7. मानव की उजली, 8. रेलगाड़ी, 9. बाहरी।

❖ सत्य/असत्य

1. भोलानाथ पिताजी के साथ ज्यादा रहता था।
2. मूसन तिवारी को भोलानाथ ने चिढ़ाना शुरू किया था।
3. मइया ने हल्दी पीसकर भोलानाथ के घावों पर थोपी।
4. जॉर्ज पंचम की नाक के लिए पहरेदार तैनात थे।
5. मूर्तिकार को नाक का पत्थर पहाड़ों पर मिल गया।
6. जॉर्ज पंचम की मूर्ति पर जिन्दा नाक लगा दी गई।
7. 'हिरोशिमा' कविता पर हिरोशिमा में हुए विस्फोट का प्रभाव है।
8. लेखक की प्रत्येक रचना श्रेष्ठ होती है।

Scanned with CamScanner

9. 'मैं क्यों लिखता हूँ' अज्ञेय की रचना है।

उत्तर—1. सत्य, 2. असत्य, 3. सत्य, 4. सत्य 5. असत्य, 6. सत्य, 7. सत्य, 8. असत्य, 9. सत्य।

❖ सही जोड़ी मिलाइए

I.

'अ'	'ब'
1. आटे की गोलियाँ	(क) बैजू
2. शैतान बच्चा	(ख) मछलियों के लिए
3. रामजी की चिरई	(ग) नाक नहीं थी
4. जॉर्ज पंचम की मूर्ति की	(घ) रामजी का खेत
5. दिल्ली में सब कुछ था	(ङ) नाक नहीं थी

उत्तर—1. → (ख), 2. → (क), 3. → (घ), 4. → (ङ), 5. → (ग)।

II.

'अ'	'ब'
1. ऐसी क्या चीज है	(क) अणु बम विस्फोट
2. हिरोशिमा	(ख) जो हिन्दुस्तान में नहीं मिलती
3. अज्ञेय को	(ग) अज्ञेय
4. 'हिरोशिमा' कविता	(घ) एक पत्थर पर मानव छाया दिखी
5. मैं क्यों लिखता हूँ	(ङ) रेलगाड़ी में लिखी गई

उत्तर—1. → (ख), 2. → (क), 3. → (घ), 4. → (ङ), 5. → (ग)।

❖ एक शब्द/वाक्य में उत्तर

1. बच्चों को कौन-सी शरारत महँगी पड़ी ?
2. भोलानाथ सिसकना क्यों भूल गए ?
3. 'माता का अँचल' में कहाँ की संस्कृति का अंकन हुआ है ?
4. नाक किसकी द्योतक होती है ?
5. जॉर्ज पंचम की मूर्ति कहाँ लगी थी ?
6. नाक लगवाने के लिए किसे बुलाया गया ?
7. अज्ञेय के अनुसार कौन-सी बातें लिखने की प्रेरणा देती हैं ?
8. अज्ञेय ने जापान में हुए बम विस्फोट पर कौन-सी कविता लिखी है ?
9. हिरोशिमा किस देश में है ?

उत्तर—1. चूहे के बिल में पानी डालना, 2. साथी बच्चों को खेलता देखकर, 3. देहाती संस्कृति का 4. मान-सम्मान की, 5. दिल्ली में इंडिया गेट के सामने, 6. मूर्तिकार को, 7. आभ्यंतर विवशता तथा बाहरी दबाव, 8. 'हिरोशिमा', 9. जापान में।

Scanned with CamScanner

अध्याय 10

भाषा बोध

1 निपात शब्द

प्रश्न 1. निपात किसे कहते हैं ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–निपात–वे अव्यय जो किसी शब्द या पद के बाद लगकर उसके अर्थ में विशेष बल देते हैं, निपात कहलाते हैं। जैसे–रमेश **केवल** पढ़ रहा है; मैंने उसे देखा **तक** नहीं; राम **तो** गया; मानव **मात्र** राम **भी** गया था; तुम **ही** नहीं आए; आपको **ही** जाना होगा।

प्रश्न 2. महत्वपूर्ण निपात शब्दों का वाक्य प्रयोग कीजिए।

उत्तर–निपात शब्द–महत्वपूर्ण निपात शब्द निम्नांकित है–

(i) मात्र–नाममात्र, मानवमात्र, शिक्षामात्र, धनमात्र।

(ii) तक–आपने फोन तक नहीं किया; तुम घर तक नहीं आ सके; दीपावली तक भुगतान करना है; बेटी के विवाह तक में आना नहीं हुआ।

(iii) भी–राम भी आया था; तुम पढ़ोगे भी; हम भी आये थे; वह भी जाएगा; तुम खाना खाकर दूध भी पीओगे; में वहाँ गयी थी और काम भी नहीं बना।

(iv) ही–राम वहाँ जाता ही है; श्याम ही आया था; मैं पढ़ता ही तो हूँ, नेता ही बोल रहा था; आप मेरे पास ही क्यों आते हो; तुम ही जाते हो।

(v) तो–मोहन तो आया था; राम तो सो रहा है; उनको आने तो दो; हम तो गए थे; तुम तो आये थे; श्याम मेरे पास तो आता है।

(vi) भर–वह रातभर जागता रहा; तुम्हें दिनभर काम करना पड़ेगा; घण्टेभर की बात है; वह दिनभर पड़ा रहा है।

(vii) न–पुस्तक अच्छी है न; तुम इस काम को कर दोगे न; मेरा काम बन जाएगा न; उसने अपना उल्लू सीधा कर लिया न।

(viii) जी–आप कुछ सोच रहे हैं जी; तुम्हें यह कार्य करना है जी।

(ix) नहीं–गलत काम कभी नहीं करें; तुम काम नहीं करोगे; वह काम नहीं बना।

(x) ठीक–गाड़ी ठीक समय पर चल दी, राम ने ठीक काम किया।

प्रश्न 3. तीन निपात शब्द लिखिए।

उत्तर–'जी', 'जी हाँ', 'भी' तीन निपात शब्द हैं।

प्रश्न 4. 'भी', 'ही' तथा 'भर' निपात शब्दों का प्रयोग करते हुए वाक्य बनाइए।

उत्तर–**भी**–मोहन भी आज आ रहा है।

ही–तुमको पाठ पढ़ना ही होगा।

भर–वह जीवन भर संघर्ष करता रहा।

प्रश्न 5. 'सिर्फ', 'जी' तथा 'लगभग' निपात शब्दों का वाक्य-प्रयोग कीजिए।

उत्तर–**सिर्फ**–यहाँ आने का साधन सिर्फ रेलगाड़ी है।

जी–पिता जी सकुशल रह रहे हैं।

लगभग–मेरे गाँव की आबादी लगभग चार हजार है।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 6. "सोहन नहीं आने वाला है।" इस वाक्य में निपात छाँटिए।

उत्तर–इस वाक्य में '**नहीं**' निपात शब्द है।

2 वाच्य

प्रश्न 1. वाच्य का अर्थ बताते हुए समझाइए कि वाच्य किसे कहते हैं ?

उत्तर–वाच्य–वाच्य का अर्थ '**क्रिया का रूप**' होता है। बोले जाने वाले प्रत्येक शब्द का कोई-न-कोई रूप अवश्य होता है। क्रिया नये-नये रूप धारण करती है। वह कभी कर्ता के अनुसार अपना रूप बदलती है, कभी कर्म के अनुसार। कभी-कभी तो वह इन दोनों से अलग रूप बनाती है। क्रिया का यही रूप परिवर्तन वाच्य कहलाता है।

प्रश्न 2. वाच्य के कितने प्रकार होते हैं ? समझाइए।

उत्तर–वाच्य के प्रकार–क्रिया तीन प्रकार से अपना रूप बदलती है। इस आधार पर वाच्य के तीन प्रकार होते हैं–

(1) कर्तृ वाच्य,
(2) कर्मवाच्य,
(3) भाव वाच्य।

(1) कर्तृवाच्य–कर्तृवाच्य का अर्थ है, क्रिया का कर्ता के अनुसार रूप परिवर्तन।

उदाहरण– 1. मोहन पढ़ता है।
2. राधा पढ़ती है।
3. लड़के लिखते हैं।
4. लड़कियाँ लिखती हैं।
5. पत्र लिखा गया।
6. चिट्ठी लिखी गयी।

इन सभी वाक्यों की क्रियाएँ कर्ता के लिंग, वचन तथा पुरुष से प्रभावित हैं।

(2) कर्मवाच्य–कर्मवाच्य का अर्थ है क्रिया का कर्म के अनुसार रूप परिवर्तन।

उदाहरण– 1. श्याम ने रोटी खायी।
2. राधा ने मक्खन खाया।
3. तुमने एक सेब खाया।
4. तुमने चार सेब खाये।
5. शीला से रोटी नहीं खायी जाती।
6. शीला से भात नहीं खाया जाता।

इन सभी वाक्यों में क्रियाएँ कर्म के लिंग तथा वचन के अनुसार हैं। ये क्रियाएँ कर्म के अधीन हैं। ये कर्म से स्वतंत्र होकर रूप परिवर्तन नहीं कर सकती हैं।

(3) भाव वाच्य–भाव वाच्य का अर्थ होता है भावरूप या मूलरूप अर्थात् एक वचन पुल्लिंग रूप। क्रिया के जिस रूप में न तो कर्ता की प्रधानता हो और न कर्म की, मात्र क्रिया का भाव प्रधान हो वहाँ भाववाच्य होता है।

उदाहरण– 1. गिरीश से चला नहीं जाता।
2. तुमसे नहीं उठा जाता।
3. शीला से नहीं देखा जाता।
4. दीपक से नहीं भागा जाता।
5. रमा से नहीं पढ़ा जाता।

Scanned with CamScanner

6. मुझसे शोर में नहीं सोया जाता।

इन वाक्यों में उठा जाता, देखा जाता, भागा जाता, पढ़ा जाता तथा सोया जाता क्रियाएँ भाववाच्य की हैं।

प्रश्न 3. निम्नलिखित कर्तृवाच्य को कर्मवाच्य में बदलिए—

1. वह पुस्तक पढ़ रहा है।

2. रंजना गाना गाएगी।

3. राम खाना लाएगा।

उत्तर— 1. उसके द्वारा पुस्तक पढ़ी जा रही है।

2. रंजना से गाना गाया जाएगा।

3. राम द्वारा खाना लाया जाएगा।

प्रश्न 4. निम्नलिखित कर्तृवाच्य को भाववाच्य में बदलिए—

1. श्याम तेज दौड़ता है।

2. भारती नहीं पढ़ती।

3. मैं हँसता हूँ।

उत्तर— 1. श्याम से तेज दौड़ा जाता है।

2. भारती से नहीं पढ़ा जाता।

3. मुझसे हँसा जाता है।

प्रश्न 5. कर्मवाच्य को कर्तृवाच्य में परिवर्तित कीजिए—

1. मेरे द्वारा पुस्तक पढ़ी जा रही है।

2. राम से फूल तोड़े जाएँगे।

3. गीता द्वारा दही लाई जाएगी।

उत्तर— 1. मैं पुस्तक पढ़ रहा हूँ।

2. राम फूल तोड़ेगा।

3. गीता दही लाएगी।

प्रश्न 6. निम्नलिखित में निर्देशानुसार वाच्य बदलिए—

1. शिवचरण से पाठ पढ़ा जाएगा। **(कर्तृवाच्य)**

2. मोहन खूब सोया। **(भाववाच्य)**

3. शिक्षक ने हिन्दी की परीक्षा ली। **(कर्मवाच्य)**

उत्तर— 1. शिवचरण पाठ पढ़ेगा।

2. मोहन से खूब सोया गया।

3. शिक्षक द्वारा हिन्दी की परीक्षा ली गई।

प्रश्न 7. निम्नलिखित में निर्देश के अनुसार वाच्य बदलिए—

1. तुलसीदास ने रामचरितमानस की रचना की। **(कर्मवाच्य)**

2. आओ घर चलें। **(भाववाच्य)**

उत्तर— 1. तुलसीदास द्वारा रामचरितमानस की रचना की गई।

2. आओ घर चला जाए।

3 क्रिया के भेद

प्रश्न 1. क्रिया की परिभाषा लिखिए।

उत्तर—क्रिया की परिभाषा—क्रिया का अर्थ काम करना या होना होता है। अतः जिन शब्दों से किसी कार्य के करने या होने का बोध होता है, वे क्रिया शब्द कहलाते हैं। **जैसे**—पढ़ना, लिखना, हँसना, जागना, सोना, उठना, बैठना, दौड़ना, खाना, पीना, आना, जाना आदि।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 2. क्रिया के मुख्यतः कितने भेद होते हैं ?

उत्तर—क्रिया के भेद—क्रिया के मुख्यतया निम्नलिखित भेद होते हैं—

(1) अकर्मक क्रिया—जिस क्रिया का सीधा सम्बन्ध कर्ता से होता है, वह अकर्मक क्रिया होती है। अकर्मक क्रिया को वाक्य में कर्म की आवश्यकता नहीं होती है। **जैसे**—वह **जाता** है; तुम **जागते** हो; वह **सोती** है; राम **दौड़ता** है; मोहन **आता** है; मैं **गाता** हूँ; वह **चला**; हम **बैठे**; तुम **उठे**।

(2) सकर्मक क्रिया—जिस क्रिया का प्रभाव कर्म पर पड़ता है, वह सकर्मक क्रिया कही जाती है। वाक्य में कर्म के बिना इसका अर्थ पूरा नहीं हो सकता है। **जैसे**—वह **रोटी खाता** है; मैं **पत्र लिखता** हूँ; राधा **पुस्तक पढ़ती** है; वह **चित्र देखता** है; राकेश ने **शत्रु को पीटा**; तुमने **वृक्ष काटा**; मैंने **गीत गाया**; तुमने **लाठी मारी**।

(3) द्विकर्मक क्रिया—जिस क्रिया के साथ वाक्य में दो कर्म आते हैं, वह द्विकर्मक क्रिया कहलाती है। **जैसे**—माँ ने बच्चे को दूध पिलाया; राम ने श्याम से एक बात कही; राधा ने मोहन से एक प्रश्न पूछा; मैं राकेश को पुस्तक देता हूँ; उसने अपने मित्र से एक बात कही; रीता ने सीता को एक फल दिया; सोहन ने रोहन को कलम दी। इन सभी वाक्यों में दो कर्म आए हैं इसलिए इन वाक्यों की क्रिया द्विकर्मक कहलाएगी।

(4) प्रेरणार्थक क्रिया—वाक्य में कर्त्ता स्वयं किसी काम को न करके किसी अन्य को क्रिया करने की प्रेरणा देकर उससे काम कराये तो वह प्रेरणार्थक क्रिया कही जाती है। **जैसे**—मोहन ने मजदूरों से घर बनवाया है; किसान ने नौकर से खेत कटवाया; उसने बैंक से कर्ज दिलवाया/दिलाया; राजीव ने गुण्डों से पड़ौसी को पिटवाया। इन वाक्यों में प्रयोग की गई बनवाया, कटवाया, दिलवाया/दिलाया, पिटवाया क्रियाएँ प्रेरणार्थक हैं।

(5) अपूर्ण क्रिया—जिन अकर्मक या सकर्मक क्रियाओं को भाव की पूर्णता के लिए विधेयात्मक (सामान्यतः संज्ञा अथवा सर्वनाम) शब्द की आवश्यकता पड़ती है, वे अपूर्ण क्रियाएँ कहलाती हैं। **जैसे**—राम चतुर है; वह एक लड़की है; उसका बेटा अनुपस्थित है; रामेश्वर ने बनवारी को मित्र बनाया। इन वाक्यों में 'चतुर', 'लड़की', 'अनुपस्थित' तथा 'मित्र' कर्म न होकर विधेय में प्रयुक्त होने वाले पूरक शब्द हैं।

(6) संयुक्त क्रिया—मुख्य क्रिया तथा सहायक क्रिया के मेल से बनने वाली क्रियाएँ संयुक्त क्रिया कही जाती हैं। संयुक्त क्रियाएँ इन क्रियाओं के मेल से बनाई जाती हैं—जाना, होना, सकना, डालना, लेना, बैठना, देना, उठना, आना, करना, देना, पड़ना, पाना, चाहना, चुकना, चलना। **जैसे**—पहुँच जाना, कर सकना, तोड़ डालना, कर लेना, उठ बैठना, मेज देना, देख सकना, उछल पड़ना, सो जाना, खा लेना, रो पड़ना।

प्रश्न 3. क्रिया किसे कहते हैं ? उदाहरण सहित बताइए।

उत्तर—जिन शब्दों से कार्य के करने या होने का बोध होता है, वे शब्द क्रिया कहलाते हैं। **उदाहरण**—जगना, रोना, पीना, लिखना।

प्रश्न 4. अकर्मक क्रिया तथा सकर्मक क्रिया में क्या अन्तर है ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—अकर्मक क्रिया को वाक्य में कर्म की आवश्यकता नहीं होती है जबकि वाक्य में कर्म के बिना सकर्मक क्रिया का अर्थ पूरा नहीं होता है।

प्रश्न 5. प्रेरणार्थक क्रियाओं का प्रयोग करते हुए दो वाक्य लिखिए।

उत्तर—(1) मालिक ने नौकरों से सामान उठवाया।

(2) शिक्षक ने विद्यार्थी से लेख लिखवाया।

प्रश्न 6. जिन वाक्यों में दो कर्म आते हैं उनकी क्रिया क्या कहलाती है ?

उत्तर—द्विकर्मक क्रिया।

प्रश्न 7. संयुक्त क्रिया के दो उदाहरण लिखिए।

उत्तर—(1) सो जाना, (2) बोल पड़ना।

4 क्रिया-विशेषण

प्रश्न 1. क्रिया-विशेषण किसे कहते हैं ? उदाहरण सहित लिखिए।

उत्तर—परिभाषा—क्रिया की विशेषता का बोध कराने वाले शब्द क्रिया विशेषण कहलाते हैं।

Scanned with CamScanner

उदाहरण—1. वह धीरे-धीरे चला।
2. राम यहाँ आया।
3. वह ऊपर गया था।
4. श्याम कल आया।

इन वाक्यों में धीरे-धीरे, यहाँ, ऊपर तथा कल क्रिया विशेषण है।

प्रश्न 2. क्रिया-विशेषण के कितने प्रकार होते हैं ?

उत्तर—क्रिया-विशेषण के भेद (प्रकार)—क्रिया-विशेषण के चार प्रकार होते हैं—

(1) कालवाचक
(2) स्थानवाचक
(3) रीतिवाचक
(4) परिमाणवाचक।

(1) कालवाचक—जिन शब्दों से क्रिया (काम) के होने के समय का बोध होता है वे कालवाचक क्रिया-विशेषण कहलाते हैं। **जैसे**—अभी, अब, कल, परसों, कब, कभी, फिर, बाद, पहले, पीछे, कबका आदि।

उदाहरण—1. राम **पहले** पहुँचा।
2. श्याम **पीछे** आया।
3. वह **कल** जाएगा।

इन वाक्यों में पहले, पीछे, कल कालवाचक क्रिया-विशेषण हैं।

(2) स्थानवाचक—इससे क्रिया के होने के स्थान/दिशा का बोध होता है, **जैसे**—वहाँ, यहाँ, जहाँ, जहाँ तक, कहाँ, कहाँ तक, आगे, इधर, उधर, यहाँ-वहाँ, घर-घर आदि।

उदाहरण—1. मोहन **इधर** गया है।
2. रमेश **कहाँ** आ गया।
3. भारती **वहाँ** जा रही है।

इन वाक्यों में इधर, कहाँ, वहाँ स्थानवाचक क्रिया-विशेषण हैं।

(3) रीतिवाचक—रीतिवाचक क्रिया-विशेषण से क्रिया होने की रीति (ढंग) का बोध होता है, **जैसे**—धीरे-धीरे, ज्यों-त्यों, कैसे, ऐसे, वैसे, जैसे-तैसे अचानक आदि।

उदाहरण—1. दीपक **कैसे** चलता है ?
2. उसने **रोते-रोते** कहा।
3. वह **जैसे-तैसे** पहुँचा।

उन वाक्यों में कैसे, रोते-रोते, जैसे-तैसे रीतिवाचक क्रिया-विशेषण हैं।

(4) परिमाणवाचक—परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण से क्रिया (काम) के परिमाण (मात्रा) का बोध होता है, **जैसे**—कम, अधिक, बहुत, थोड़ा, जरा, काफी, इतना, कितना, उतना, बिल्कुल आदि।

उदाहरण—1. कबीर **खूब** हँसता है।
2. पप्पू **कितना** सोता है।
3. राजीव **बिल्कुल** नहीं डरता।

इन वाक्यों में खूब, कितना, बिल्कुल परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण हैं।

प्रश्न 3. तीन कालवाचक क्रिया-विशेषण लिखिए।

उत्तर—आज, कल, परसों तीन कालवाचक क्रिया-विशेषण हैं।

प्रश्न 4. धीरे-धीरे, ऐसे, वैसे तथा अचानक किस प्रकार के क्रिया-विशेषण हैं ?

उत्तर—धीरे-धीरे, ऐसे, वैसे तथा अचानक क्रिया की रीति का बोध कराने वाले रीतिवाचक क्रिया-विशेषण हैं।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 5. निम्नलिखित शब्दों के क्रिया-विशेषण के कौन-कौन से प्रकार हैं ? घड़ी-घड़ी, पहले, यहाँ, वहाँ, कैसे, ज्यों-त्यों।

उत्तर—

शब्द		क्रिया-विशेषण के प्रकार
घड़ी-घड़ी	—	कालवाचक
पहले	—	कालवाचक
यहाँ	—	स्थानवाचक
वहाँ	—	स्थानवाचक
कैसे	—	रीतिवाचक
ज्यों-त्यों	—	रीतिवाचक

प्रश्न 6. निम्नलिखित वाक्यों में क्रिया-विशेषण पहचान कर लिखिए—

1. वह ध्यानपूर्वक सुनता है।

2. यह कहाँ तक जाएगा।

3. राम की परीक्षा कब होगी ?

उत्तर—1. ध्यानपूर्वक, **2.** कहाँ तक, **3.** कब शब्द क्रिया-विशेषण हैं।

प्रश्न 7. क्रिया-विशेषण किसे कहते हैं ?

उत्तर—क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्द क्रिया-विशेषण कहलाते हैं।

5 समुच्चयबोधक

प्रश्न 1. समुच्चयबोधक किसे कहते हैं ? उदाहरण सहित समझाइए।

उत्तर—परिभाषा—जो एक शब्द या वाक्य को दूसरे शब्द या वाक्य से जोड़ते हैं, वे संयोजक शब्द समुच्चयबोधक कहलाते हैं। जैसे—और, किन्तु, परन्तु, इसीलिए, क्योंकि, या, अथवा, एवं, तथा, क्योंकि, लेकिन, हालांकि, अत: आदि।

उदाहरण—1. श्याम ने परिश्रम किया **किन्तु** असफल रहा।

2. राकेश **और** दिनेश सहपाठी हैं।

3. चुनमुन बहुत परिश्रम करता है **परन्तु** घबरा जाता है।

4. रोहन बहुत तेज दौड़ा **लेकिन** प्रथम स्थान न पा सका।

इन वाक्यों में किन्तु, और, परन्तु, लेकिन, समुच्चयबोधक हैं।

प्रश्न 2. समुच्चयबोधक के कितने भेद होते हैं ? लिखिए।

उत्तर—समुच्चयबोधक के दो भेद होते हैं—

1. समानाधिकरण समुच्चयबोधक।
2. व्यधिकरण समुच्चयबोधक।

प्रश्न 3. समानाधिकरण समुच्चयबोधक किसे कहते हैं ? इसके कितने उपभेद होते हैं ?

उत्तर—समानाधिकरण समुच्चयबोधक—जो पद या अव्यय मुख्य वाक्यों को जोड़ते हैं, वे समानाधिकरण समुच्चयबोधक कहे जाते हैं।

उदाहरण—1. मोहिनी बैठी थी **और** रश्मि खड़ी थी।

2. राजेश पढ़ेगा **तो** रमा पढ़ेगी।

इन वाक्यों में 'और' तथा 'तो' समानाधिकरण समुच्चयबोधक हैं।

उपभेद—समानाधिकरण समुच्चयबोधक के **चार उपभेद** होते हैं—

(क) संयोजक—और, व, एवं, तथा।

(ख) विभाजक—वा; या, अथवा, नहीं, तो, कि, किंवा, चाहे, न कि, चाहे....चाहे, न....न।

Scanned with CamScanner

(ग) विरोधसूचक—किन्तु, परन्तु, पर, लेकिन, मगर, वरन्, बल्कि।

(घ) परिणामसूचक—इसलिए, सो, अत:, अतएव।

प्रश्न 4. व्यधिकरण समुच्चयबोधक किसे कहते हैं ? उसके कितने भेद होते हैं ?

उत्तर—व्यधिकरण समुच्चयबोधक—जिन पदों या अव्ययों के मेल से मुख्य वाक्य में आश्रित वाक्य जोड़े जाते हैं। वे व्यधिकरण समुच्चयबोधक कहे जाते हैं।

उदाहरण—1. राधा मुझे पसन्द है **इसलिए** कि वह सत्य बोलती है।

2. जीवन में सफल होना है **तो** परिश्रम कीजिए।

3. राम घर गया था **ताकि** रुपये ला सके।

इन वाक्यों में 'इसलिए', 'तो' तथा 'ताकि' व्यधिकरण समुच्चयबोधक हैं।

उपभेद—व्यधिकरण समुच्चयबोधक के **चार उपभेद** होते हैं—

(क) कारणसूचक—क्योंकि, जोकि, इसलिए, कि आदि।

(ख) उद्देश्यसूचक—कि, जो, ताकि, इसलिए, आदि।

(ग) संकेतसूचक—जो-तो, यदि-तो, यद्यपि-तथापि, कि, चाहे-परन्तु जिससे, ताकि आदि।

(घ) स्वरूपसूचक—कि, जो, अर्थात्, यानि, मानो आदि।

प्रश्न 5. लेकिन, और, किन्तु समुच्चयबोधकों का प्रयोग करते हुए वाक्य बनाइए।

उत्तर—लेकिन—प्रखर ने बहुत मेहनत की लेकिन सफल न हो सका।

और—रोहन और सोहन की मित्रता है।

किन्तु—मैं घर जा रहा हूँ किन्तु तुम मत आना।

प्रश्न 6. निम्नलिखित वाक्यों में समुच्चयबोधक छाँटिए—

(1) सोहन ने बहुत कोशिश की मगर ठीक समय पर नहीं पहुँचा।

(2) थोड़ा जल्दी चलो अन्यथा रेलगाड़ी नहीं मिलेगी।

(3) मैं छोटा हूँ अत: वहाँ जाना ठीक नहीं है।

उत्तर—	**वाक्य संख्या**	**समुच्चयबोधक**
	1.	मगर
	2.	अन्यथा
	3.	अत:

प्रश्न 7. तीन समुच्चबोधक लिखिए।

उत्तर—और, किन्तु, ताकि तीन समुच्चबोधक हैं।

प्रश्न 8. निम्नलिखित वाक्यों में समुच्चबोधक छाँटिए—

(1) तुम सो जाओ ताकि मैं चला जाऊँ।

(2) राजीव खाना खा ले तो लेट लेगा।

(3) तुम उसका सहयोग करो जिससे वह पास हो जाए।

उत्तर—	**वाक्य**	**समुच्चयबोधक**
	(1)	ताकि
	(2)	तो
	(3)	जिससे

6 मुहावरे एवं लोकोक्ति

जब कोई वाक्यांश विशेष अर्थ देने लगता है तब वह मुहावरा बन जाता है। लोक में प्रचलित होते-होते विशेष अर्थ देने वाली उक्तियाँ लोकोक्तियाँ कही जाती हैं।

Scanned with CamScanner

(अ) महत्वपूर्ण मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग

1. अंगार उगलना—क्रुद्ध होकर बुरा भला कहना।

प्रयोग—मैंने सही बात कह दी तो आप अंगार उगलने लगे।

2. अँगूठा दिखाना—मना करना।

प्रयोग—उधार के पैसे माँगने पर उसने मुझे अँगूठा दिखा दिया।

3. अंधे की लाठी—एकमात्र सहारा।

प्रयोग—श्रवण कुमार अपने माता-पिता की अंधे की लाठी थे।

4. अन्धों में काना राजा—मूर्खों के मध्य अल्पज्ञ।

प्रयोग—पाँचवीं पास राजेश के गाँव में सभी अनपढ़ हैं। इसलिए अपने गाँव में वह अन्धों में काना राजा के समान है।

5. अक्ल पर पत्थर पड़ना—बुद्धि भ्रष्ट होना।

प्रयोग—कैकेयी की अक्ल पर पत्थर पड़ गये थे इसलिए उसने राम के वनवास का वरदान माँगा।

6. अपना उल्लू सीधा करना—स्वार्थ सिद्ध करना।

प्रयोग—अधिकांश नेता अपना उल्लू सीधा करने में लगे हैं, देश की चिन्ता किसी को नहीं है।

7. अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना—अपनी प्रशंसा स्वयं ही करना।

प्रयोग—अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना व्यावहारिकता के विपरीत है।

8. आँखों का तारा—अत्यधिक प्रिय।

प्रयोग—श्रवण कुमार अपनी माता-पिता की आँखों के तारे थे।

9. आँख में धूल झोंकना—धोखा देना।

प्रयोग—वह गड्डी में नकली नोट लगाकर आँखों में धूल झोंकने में सफल हो गया।

10. आग बबूला होना—क्रोधित होना।

प्रयोग—जब रमेश ने मोहन की बेईमानी खोल दी तो वह आग बबूला हो उठा।

11. आस्तीन का साँप—धोखेबाज।

प्रयोग—मालिक उसका हर समय ध्यान रखता था पर वह आस्तीन का साँप निकला।

12. ईद का चाँद होना—दुर्लभ होना।

प्रयोग—परदेश में रहने के कारण राजीव ईद का चाँद हो गया है।

13. ऊँट के मुँह में जीरा—किसी वस्तु का बहुत कम मात्रा में होना।

प्रयोग—एक पहलवान को एक रसगुल्ले का नाश्ता ऊँट के मुँह में जीरा है।

14. एक और एक ग्यारह होना—संगठन में शक्ति होना।

प्रयोग—मिलकर काम करेंगे तो सफलता मिलेगी ही क्योंकि एक और एक ग्यारह होते हैं।

15. एक पंथ दो काज—एक साथ दो कार्य सम्पन्न करना।

प्रयोग—आगरा जाकर विवाह में सम्मिलित हो लिये और ताजमहल भी देख आये, इस तरह एक पंथ दो काज हो गये।

16. एक अनार सौ बीमार—वस्तु की पूर्ति कम और माँग अधिक।

प्रयोग—अधिक इमारतों का निर्माण होने के कारण चम्बलसैण्ड की स्थिति एक अनार सौ बीमार जैसी हो गई।

17. एड़ी-चोटी का जोर लगाना—कठिन परिश्रम करना।

प्रयोग—परीक्षा में सफलता प्राप्त करने के लिए वह एड़ी-चोटी का जोर लगा रहा है।

18. ओखली में सिर देना—जान-बूझकर मुसीबत मोल लेना।

प्रयोग—संजीव हर किसी की लड़ाई में कूद पड़ता है। उसकी तो आदत ही ओखली में सिर देने की है।

Scanned with CamScanner

19. कंगाली में आटा गीला—मुसीबत में और मुसीबत पड़ना।
प्रयोग—लड़की का विवाह करने के बाद उसकी नौकरी क्या छूट गई मानो कंगाली में आटा गीला हो गया।

20. खून-पसीना एक करना—कड़ी मेहनत करना।
प्रयोग—किसान खून-पसीना एक करके जनता का पेट भरता है।
21. कलेजे पर साँप लोटना—ईर्ष्या करना।
प्रयोग—मेरे भाई की नौकरी की बात सुनकर पड़ोसी के कलेजे पर साँप लोटने लगा।
22. खरी-खोटी सुनाना—बुरा-भला कहना।
प्रयोग—पुस्तक खो जाने पर उसने खूब खरी-खोटी सुनाई।
23. गढ़े मुर्दे उखाड़ना—पुरानी बातों को दोहराना।
प्रयोग—जो कुछ कहना है स्पष्ट कहो, गढ़े मुर्दे उखाड़ना व्यर्थ है।
24. गले का हार होना—बहुत प्रिय होना।
प्रयोग—मेरी पत्नी मेरी माँ के गले का हार है।
25. गागर में सागर भरना—थोड़े में बहुत बात कहना।
प्रयोग—बिहारी ने अपने दोहों में गागर में सागर भर दिया है।
26. घी के दिये जलाना—प्रसन्न होना।
प्रयोग—पुत्र की नौकरी के बाद अब उसके घर में घी के दिये जलते हैं।
27. चेहरा खिलना—प्रसन्न होना।
प्रयोग—परीक्षा में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होने पर राम का चेहरा खिल उठा।
28. चोली-दामन का साथ—गहरा सम्बन्ध।
प्रयोग—राम और श्याम में चोली-दामन का साथ है।
29. छठी का दूध याद आना—अधिक परेशान होना।
प्रयोग—मकान बनवाने में उसे छठी का दूध याद आ गया।
30. छप्पर फाड़कर देना—अचानक लाभ होना।
प्रयोग—ईश्वर जब देता है तो छप्पर फाड़कर देता है।
31. जले पर नमक छिड़कना—दु:ख को बढ़ाना।
प्रयोग—परीक्षा में असफल रहे मुकेश का उपहास कर तुमने जले पर नमक छिड़क दिया है।
32. जान हथेली पर रखना—मरने को तैयार रहना।
प्रयोग—सीमा पर तैनात जवान सदा जान हथेली पर रखता है।
33. टस से मस न होना—पूरी तरह अडिग रहना।
प्रयोग—मजदूर का करुणापूर्ण विलाप सुनकर भी मिल मालिक टस से मस नहीं हुआ।
34. टेढ़ी खीर होना—कठिन कार्य।
प्रयोग—आई. ए. एस. की परीक्षा पास करना टेढ़ी खीर है।
35. टाल मटोल करना—उपेक्षा करना।
प्रयोग—मोहन उधार रुपयों को लौटाने में टाल मटोल कर रहा है।
36. तितर-बितर होना—बिखर जाना।
प्रयोग—पुलिस के देखते ही भीड़ तितर-बितर हो गई।
37. दाँत काटी रोटी होना—घनिष्ठता होना।
प्रयोग—योगेश और मुकेश में दाँत काटी रोटी है।
38. दाँतों तले उँगली दबाना—आश्चर्यचकित होना।
प्रयोग—सरदार भगतसिंह की वीरता को देखकर अंग्रेजों ने दाँतों तले उँगली दबा ली।

Scanned with CamScanner

39. दूध का दूध और पानी का पानी—न्याय करना।
प्रयोग—सरपंच ने पंचायत में दूध का दूध और पानी का पानी कर दिया।
40. नाक में दम करना—परेशान करना।
प्रयोग—पुत्र के दुष्कर्मों ने उनकी नाक में दम कर दी है।
41. नौ-दो ग्यारह होना—भाग जाना।
प्रयोग—पुलिस को देखकर चोर नौ-दो ग्यारह हो गये।
42. नमक हराम होना—विश्वासघात करना, धोखा देना।
प्रयोग—अपने घनिष्ठ मित्र की हत्या कर उसने नमक हराम होने का परिचय दिया।
43. पापड़ बेलना—विषम परिस्थितियों से गुजरना।
प्रयोग—एम. ए. की परीक्षा पास करने तक तो तुम्हें न जाने कितने पापड़ बेलने पड़ेंगे।
44. पौ बारह होना—बहुत लाभ होना।
प्रयोग—लॉटरी खुल जाने के कारण उसकी पौ बारह हो गई।
45. पीठ दिखाना—पराजित होना।
प्रयोग—पृथ्वीराज की सेना के समक्ष मुहम्मद गौरी पीठ दिखाकर भाग गया।
46. पाँचों उँगली घी में होना—सब प्रकार का सुख होना।
प्रयोग—आजकल उसकी पाँचों उँगली घी में हैं।
47. फूला न समाना—अधिक प्रसन्न होना।
प्रयोग—अपने पुत्र की सफलता पर वह फूला नहीं समाया।
48. बाल-बाल बचना—जरा-सा ही बचना।
प्रयोग—बस दुर्घटना में वह बाल-बाल बचा।
49. मुँह की खाना—हार मानना।
प्रयोग—भारतीयों की वीरता के समक्ष अंग्रेज सेना को मुँह की खानी पड़ी।
50. रंग में भंग पड़ना—विघ्न उत्पन्न होना।
प्रयोग—दुल्हन की अस्वस्थता से विवाह के रंग में भंग पड़ गया।
51. रँगे हाथों पकड़ना—मौके पर पकड़ना।
प्रयोग—पुलिस ने चोर को रँगे हाथों पकड़ लिया।
52. लकीर का फकीर होना—प्राचीन परम्पराओं में अटूट विश्वास।
प्रयोग—पढ़े-लिखे होकर भी तुम लकीर के फकीर क्यों बने हुए हो।
53. लोहे के चने चबाना—कठिन कार्य करना।
प्रयोग—एम. ए. की परीक्षा पास करना लोहे के चने चबाना है।
54. श्रीगणेश करना—प्रारम्भ करना।
प्रयोग—इस मकान का श्रीगणेश सन् 1983 में हुआ।
55. सीधे मुँह बात न करना—घमण्डी होना।
प्रयोग—मन्त्री बनने के बाद वह सीधे मुँह बात नहीं करता है।
56. हाथ साफ करना—लेकर चल देना।
प्रयोग—बस में चढ़ते ही किसी ने मेरी जेब पर हाथ साफ कर दिया।
57. हाथ मलना—पश्चात्ताप करना।
प्रयोग—समय चूकने पर हाथ मलना ही शेष रह जाता है।

(आ) महत्वपूर्ण लोकोक्तियों का वाक्यों में प्रयोग

1. अधजल गगरी छलकत जाय (थोड़ी विद्या या धन पाकर इतराना)—पहले तन पर वस्त्र भी नहीं था, लेकिन नौकरी लगने के बाद मोहन दिन में तीन बार पोशाक बदलने लगा है, सच है कि अधजल गगरी छलकत जाय।

Scanned with CamScanner

2. अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता (अकेला व्यक्ति कुछ नहीं कर सकता)—अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता जबकि संगठन के सहयोग से बड़े से बड़ा कार्य सहज ही हो जाता है।

3. अपनी-अपनी ढपली, अपना-अपना राग (हर व्यक्ति अपनी अलग राय रखता है)—अपने विद्यालय के लोग तो अपनी-अपनी ढपली, अपना-अपना राग अलाप रहे हैं। तभी तो विद्यालय प्रगति नहीं कर रहा है।

4. अरहर की टटिया गुजराती ताला (सामान्य वस्तु का कड़ा प्रबन्ध)—मोहन ने बंजर खेत के चारों ओर काँटेदार तार लगवाकर अरहर की टटिया गुजराती ताला वाली उक्ति को चरितार्थ कर दिया है।

5. आँख के अन्धे नाम नैन सुख (गुण के विपरीत नाम)—घर में फूटी कौड़ी नहीं है, नाम है कुबेरसिंह। इसे ही तो कहते हैं कि आँख के अन्धे नाम नैन सुख।

6. आम के आम गुठलियों के दाम (दोहरा लाभ होना)—इस चॉकलेट को पहले तो खा लो, फिर खेलने का काम करती है। इसे कहते हैं आम के आम गुठलियों के दाम।

7. ऊँची दुकान फीका पकवान (दिखावटी काम)—राजा साहब के यहाँ तैयारियाँ तो कई दिन से चल रही थीं, किन्तु दावत खाकर लगा कि यहाँ तो ऊँची दुकान फीका पकवान है।

8. जिसकी लाठी उसकी भैंस (बलवान सब कुछ कर सकता है)—आज के जमाने में जिसकी लाठी उसी की भैंस है।

9. जो गरजते हैं, वे बरसते नहीं (डींग हाँकने वाले काम नहीं करते)—चुनाव के समय नेता बड़े-बड़े आश्वासन देते हैं, किन्तु जो गरजते हैं वे बरसते नहीं।

10. डूबते को तिनके का सहारा (संकट के समय थोड़ी सहायता भी बहुत होती है)—उसने मुझे सौ रुपये क्या दिये, जैसे डूबते को तिनके का सहारा मिल गया।

11. धोबी का कुत्ता घर का न घाट का (अस्थिरता के कारण कहीं का भी न बन पाना)—यदि कक्षा के मॉनीटर बना दिये गये हो, तो या तो गुरु के साथ रहना या बच्चों के साथ, नहीं तो धोबी के कुत्ते बन जाओगे जो न घर का न घाट का।

12. न नौ मन तेल होगा, न राधा नाचेगी (किसी बहाने काम न करना)—राकेश ने अपने पिताजी से कहा पहले मेरे लिए नई साइकिल लेकर आओ तभी मैं गाँव से दूध लेकर आऊँगा। पिताजी बोले वाह बेटा ! न नौ मन तेल होगा, न राधा नाचेगी।

13. नाच न जाने आँगन टेड़ा (अपनी अकुशलता का दोष दूसरों पर डालना)—परीक्षा में कम अंक लाने का कारण जब पिताजी ने पूछा तो मैंने कहा मेरे पास पुरानी किताबें थीं। इस पर पिताजी बोले नाच न जाने आँगन टेढ़ा।

14. मुँह में राम बगल में छुरी (बाहर से अच्छा अन्दर से बुरा)—आजकल के अधिकांश साधुओं के मुँह में राम बगल में छुरी रहती है।

15. मान न मान मैं तेरा मेहमान (जबरदस्ती किसी के गले पड़ना)—मित्र ! मैं तुम्हें अपने घर नहीं ले जा सकता, क्यों मेरे गले पड़ रहे हो। तुम तो मान न मान मैं तेरा मेहमान वाली बात सिद्ध कर रहे हो।

16. साँप मरे न लाठी टूटे (बिना हानि हुए काम बन जाना)—तुम तो हमेशा ही यह चाहते हो कि साँप मरे न लाठी टूटे।

17. हाथी के दाँत खाने के और दिखाने के और (कथनी और करनी में अन्तर)—क्या तुम सोचते हो कि जो मैं कह रहा हूँ वही करूँगा, हाथी के दाँत खाने के और दिखाने के और होते हैं।

18. होनहार बिरवान के होत चीकने पात (योग्यता के लक्षण प्रारम्भ से दिखायी देने लगते हैं)—स्वामी विवेकानन्द में बचपन से ही ज्ञान की अपूर्व लालसा थी। सत्य ही है, होनहार बिरवान के होत चीकने पात।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ बताते हुए वाक्य में प्रयोग कीजिए (कोई दो)—

अंधे की लाठी, पहाड़ टूट पड़ना, दाँत खट्टे करना।

उत्तर—(i) अंधे की लाठी—एकमात्र सहारा।

Scanned with CamScanner

वाक्य प्रयोग—श्रवण कुमार अपने माता-पिता के लिए अंधे की लाठी थे।

(ii) पहाड़ टूट पड़ना—गम्भीर संकट आना।

वाक्य प्रयोग—पति की मृत्यु होते ही रजनी पर पहाड़ टूट पड़ा।

(iii) दाँत खट्टे करना—हराना।

वाक्य प्रयोग—कारगिल में भारतीय सैनिकों ने पाकिस्तानी सैनिकों के दाँत खट्टे कर दिए।

प्रश्न 2. निम्नलिखित मुहावरों में से किन्हीं दो का अर्थ बताते हुए वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

चिराग तले अँधेरा, कलेजा ठण्डा होना, आकाश छूना, पेट पूजा करना, अंकुश लगाना।

उत्तर—(i) चिराग तले अंधेरा—निकटस्थ के कष्ट से अज्ञात

वाक्य प्रयोग—पड़ोसी के बेटे ने कॉलेज में पहला स्थान पाया तो वे बोले यह तो चिराग तले अँधेरा रहा।

(ii) कलेजा ठण्डा होना—सन्तोष होना।

वाक्य प्रयोग—अपराधी को दण्ड दिलाने पर ही उनका कलेजा ठण्डा हुआ।

(iii) आकाश छूना—ऊँचाई पर पहुँचना।

वाक्य प्रयोग—मेहनती व्यक्ति एक दिन अवश्य आकाश छूता है।

(iv) पेट पूजा करना—खाना खाना।

वाक्य प्रयोग—सोहन पेट पूजा करके ही घर से निकलता है।

(v) अंकुश लगाना—काबू में करना।

वाक्य प्रयोग—बिना अंकुश लगाये बच्चे बिगड़ जाते हैं।

प्रश्न 3. 'आसमान के तारे तोड़ना', 'बाल बांका न होना' एवं 'दीवारों के भी कान होते हैं' में से किन्हीं दो मुहावरों का अर्थ बताते हुए अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

उत्तर—(i) आसमान के तारे तोड़ना—असम्भव कार्य करना।

वाक्य प्रयोग—साइकिल से संसार के भ्रमण का निश्चय सचमुच आसमान से तारे तोड़ना है।

(ii) बाल बांका न होना—जरा भी हानि न होना।

वाक्य प्रयोग—पाकिस्तान भारत का बाल भी बांका नहीं कर सकता है।

(iii) दीवारों के भी कान होते हैं—कही बात नहीं छिपती है।

वाक्य प्रयोग—युद्ध नीति की चर्चा कर दी तो बात शत्रु तक पहुँच जायेगी क्योंकि दीवारों के भी कान होते हैं।

प्रश्न 4. 'लोकोक्ति' का अर्थ स्पष्ट करते हुए कोई एक उदाहरण दीजिए।

अथवा

लोकोक्ति या कहावत किसे कहते हैं ?

उत्तर—'लोक' का अर्थ है—जनता और 'उक्ति' का अर्थ है—कथन। इस प्रकार जनता के वे कथन जिनका विशेष अर्थ होता है, लोकोक्ति कहे जाते हैं; जैसे—**हाथ कंगन को आरसी क्या**। इसका अर्थ है—प्रत्यक्ष को प्रमाण की क्या आवश्यकता है।

प्रश्न 5. निम्नलिखित लोकोक्तियों का अर्थ बताते हुए वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

सौ सुनार की एक लुहार की, मन चंगा तो कठौती में गंगा, जल में रहकर मगर से बैर।

उत्तर—(i) सौ सुनार की एक लुहार की (बलवान की एक चोट ही कमजोर की अनेक चोटों से घातक होती है।)

वाक्य प्रयोग—रामू पहलवान के रोजाना चाँटे मारता था। एक दिन पहलवान ने उसके एक चाँटा मार दिया तो वह बेहोश हो गया तो सभी ने कहा सौ सुनार की एक लुहार की।

Scanned with CamScanner

(ii) मन चंगा तो कठौती में गंगा (शुद्ध मन के लिए हर स्नान गंगा स्नान है)।

वाक्य प्रयोग—पाप धोने के लिए गंगा स्नान जाना व्यर्थ है। शुद्ध मन वालों का मन चंगा हो तो कठौती में गंगा होती है।

(iii) जल में रहकर मगर से बैर (जिसके अधीन हैं उससे दुश्मनी ठीक नहीं)।

वाक्य प्रयोग—यदि तुम्हें थाने के पास चाय की दुकान चलानी है तो पुलिस वालों से बनाकर रखनी पड़ेगी, क्योंकि जल में रहकर मगर से बैर करना मूर्खता है।

प्रश्न 6. मुहावरा किसे कहते हैं ? उदाहरण सहित समझाइए।

उत्तर—जब कोई वाक्यांश प्रयोग होते-होते विशेष अर्थ देने लगता है, तब वह मुहावरा बन जाता है। मुहावरों में बहुत अनुभव भरा रहता है। **उदाहरण**—नाक में दम करना। इसका अर्थ है परेशान करना।

प्रश्न 7. कोई दो लोकोक्तियाँ लिखिए।

उत्तर—(1) खोदा पहाड़ निकली चुहिया, (2) दूर के ढोल सुहावने।

प्रश्न 8. मुहावरा और लोकोक्ति में कोई दो अन्तर लिखिए।

उत्तर—लोकोक्ति और मुहावरे में निम्न अन्तर है—(1) लोकोक्ति स्वयं एक वाक्य होती है जबकि मुहावरा वाक्य का अंश होता है। (2) लोकोक्ति से पूरा अर्थ प्रकट होता है जबकि मुहावरा वाक्य में प्रयोग होकर अर्थ देता है।

7 अनेकार्थी शब्द

परिभाषा—जो शब्द एक से अधिक अर्थ देते हैं, वे 'अनेकार्थी' शब्द कहलाते हैं।

उदाहरण—(i) **अंक**—गोद, अक्षर, (ii) **सोम**—चन्द्रमा, अमृत, सोमवार।

अक्षर—जल, सत्य, शिव, वर्ण, गगन, धर्म, तपस्या।

अर्थ—धन, प्रयोजन, ऐश्वर्य, हेतु।

अनन्त—आकाश, अन्तहीन, ब्रह्म, विष्णु।

अरुण—सूर्य, लाल रंग, सूर्य का सारथी।

अशोक—एक वृक्ष, सम्राट अशोक, शोकरहित।

अमृत—जल, अन्न, स्वर्ण, दूध।

अलि—भौंरा, कोयल, सखी।

उत्तर—हल, जवाब, उत्तर दिशा।

कल—अगला दिन, बीता हुआ दिन, मधुर ध्वनि, मशीन।

काल—मौत, समय, यमराज।

कनक—सोना, धतूरा, गेहूँ।

काम—कार्य, धन्धा, पेशा, कामदेव।

कुल—योग, सब, वंश, केवल, संघ।

कंज—चरण, कमल, ब्रह्मा।

कक्ष—कमरा, श्रेणी, कांख, बंगला, भूमि।

गुण—स्वभाव, कौशल, शील, सत्, धनुष की डोरी।

गुरु—बड़ा, भारी, शिक्षक, दो मात्राओं वाला वर्ण।

गौ—गाय, पृथ्वी, भूमि, स्वर्ग, दिशा, कण।

घन—हथौड़ा, भारी, बादल।

घट—घड़ा, कम, देह, मन, हृदय।

Scanned with CamScanner

चन्द्र–चन्द्रमा, मोर पंख की चन्द्रिका, सोना।

जलज–मछली, कमल, मोती, शंख, चन्द्रमा।

ज्येष्ठ–गर्मी का महीना, बड़ा, पति का बड़ा भाई, श्रेष्ठ।

तनु–छोटा, शरीर, कृश।

तात–पिता, भाई, पूज्य, प्यारा, बड़ा, मित्र।

दल–सेना, समूह, पक्ष, पत्ता।

दक्ष–चतुर, चन्द्र, दाँत, वैश्य, ब्राह्मण।

नग–पर्वत, वृक्ष, नगीना।

नाक–नासिका, इज्जत, स्वर्ग।

पयोधर–बादल, गन्ना, पर्वत।

पानी–जल, कान्ति, इज्जत।

बाल–केश, बालक, बाला, गेहूँ आदि की बाल।

भास्कर–सूर्य, सोना, शिव, अग्नि।

भारत–भारतवर्ष, अर्जुन।

भूत–प्राणी, प्रेत, पंचभूत, अतीत काल, मरा हुआ शरीर।

मधु–शहद, मदिरा, वसन्त, चैत्र का मास।

माधव–श्रीकृष्ण, बसन्त ऋतु, बैसाख, महुआ।

मित्र–दोस्त, सहयोगी, प्रिय।

मान–सम्मान, इज्जत, अभिमान, नाप-तोल, रूठना।

रस–अर्क, प्रेम, जल, खाद, स्तर, आनन्द।

वर्ण–रंग, अक्षर, अन्य जातियाँ।

विधि–तरीका, भाग्य, विधाता, रीति।

सर–बाण, तालाब, चिन्ता।

सुधा–अमृत, गंगा, पृथ्वी, जल, दूध, फूलों का रस।

सारंग–भौंरा, हिरन, मेघ, साँप, मोर, जल, शंख, फूल।

हरि–हाथी, श्रीकृष्ण, चन्द्र, कामदेव, शिव।

हार–पराजय, माला।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. निम्नांकित शब्दों का दो-दो अलग-अलग अर्थों में वाक्य प्रयोग कीजिए–
कुल, तीर।

उत्तर–कुल– 1. आज कुल कितने बच्चे आए हैं।
2. राम का कुल संसार में प्रसिद्ध है।

तीर– 1. ताजमहल यमुना के **तीर** पर स्थित है।
2. भरत जी के **तीर** से हनुमान घायल हो गए थे।

प्रश्न 2. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो अर्थ बताइए–
(क) अशोक, (ख) कनक, (ग) जलज, (घ) दल, (ङ) पय, (च) भाग, (छ) लाल, (ज) सूर।

उत्तर–(क) अशोक–एक प्रकार का वृक्ष, एक राजा का नाम।

Scanned with CamScanner

(ख) कनक—स्वर्ण, धतूरा।

(ग) जलज—कमल, मछली।

(घ) दल—समूह, सेना।

(ङ) पय—दूध, जल।

(च) भाग—हिस्सा, भाग्य।

(छ) लाल—पुत्र, प्यार का सम्बोधन।

(ज) सूर—सूर्य, अंधा।

प्रश्न 3. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो अर्थ लिखिए—

(क) उत्तर, (ख) कर।

उत्तर—(क) उत्तर = हल, उत्तर (दिशा)।

(ख) कर = हाथ, टैक्स।

8 समास

समास की परिभाषा—जब दो या दो से अधिक पदों के मिलने से एक नए शब्द की रचना होती है तो इस मिलने की क्रिया को समास कहते हैं। **जैसे**—प्रतिदिन, यथाशक्ति।

समास के प्रकार—समास छः प्रकार के होते हैं—

(1) अव्ययीभाव समास—इसमें प्रथम पद की प्रधानता होती है जो अधिकतर अव्यय होता है। यह सम्पूर्ण पद क्रिया-विशेषण का कार्य करता है।

जैसे— प्रतिदिन	दिन दिन
यथाविधि	यथा विधिम्
यथाशक्ति	यथा शक्तिम्

(2) तत्पुरुष समास—इसमें दूसरा पद प्रधान होता है। इसके अन्तर पद में प्रथमा विभक्ति होती है एवं पूर्व पद जिस विभक्ति का होगा, वह समस्त पद पर लागू होता है, जैसे—

देववाणी	देव की वाणी
रसोईघर	रसोई के लिए घर
जन्मांध	जन्म से अंधा
भयभीत	भय से भीत
वनवास	वन में वास

(3) द्वन्द्व समास—इस समास में दोनों पद प्रधान होते हैं, परन्तु उसके संयोजक शब्द 'और' का लोप होता है, जैसे—

माता -पिता	माता और पिता
भाई-बहन	भाई और बहन
राजा-रानी	राजा और रानी

(4) द्विगु समास—द्विगु समास में प्रथम पद संख्यावाचक होता है, जैसे—

सप्तद्वीप	सात द्वीपों का समूह
त्रिभुवन	तीन भुवनों का समूह
त्रिफला	तीन फलों का समूह

Scanned with CamScanner

(5) कर्मधारय समास—इस समास में विशेषण और विशेष्य दोनों होते हैं। पहला पद विशेषण और दूसरा विशेष्य होता है। दूसरा पद प्रधान होता है, जैसे—

वीर पुरुष	वीर पुरुष
नीलकण्ठ	नीला कण्ठ
परमानंद	परम आनंद

(6) बहुब्रीहि समास—दोनों पदों में कोई पद प्रधान नहीं होता। अपने पदों से हटकर अन्य अर्थ का बोध कराता है, जैसे—

दशानन = दस हैं आनन जिसके (रावण)
लम्बोदर = लम्बा है उदर जिसका (गणेश)
चतुर्भुज = चार भुजाओं वाला (विष्णु)

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. निम्नलिखित के समास विग्रह कर समास का नाम बताइए—
राजपुरुष, दशानन, भाई बहन, चन्द्रमुख, नवग्रह, रातोंरात।

उत्तर—

शब्द	विग्रह	समास का नाम
राजपुरुष	राजा का पुरुष	तत्पुरुष समास
दशानन	दस हैं आनन जिसके अर्थात् रावण	बहुब्रीहि समास
भाई-बहन	भाई और बहन	द्वन्द्व समास
चन्द्रमुख	चन्द्र के समान मुख	कर्मधारय समास
नवग्रह	नौ ग्रहों का समूह	द्विगु समास
रातोंरात	रात ही रात में	अव्ययीभाव समास

प्रश्न 2. निम्नलिखित के समास विग्रह कर समास का नाम लिखिए—
वंशधर, विद्यालय, कलनाद, यथानियम, प्राणपक्षी, स्नेहपालिता, लाभ-हानि, पंचामृत, नीलाकाश, चतुर्भुज।

उत्तर—

शब्द	विग्रह	समास का नाम
वंशधर	वंश को धारण करने वाला	तत्पुरुष समास
विद्यालय	विद्या का आलय	तत्पुरुष समास
कलनाद	कल-कल का नाद	कर्मधारय समास
यथानियम	नियम के अनुसार	अव्ययीभाव समास
प्राणपक्षी	प्राण रूपी पक्षी	कर्मधारय समास
स्नेहपालिता	स्नेह से पली हुई	तत्पुरुष समास
लाभ-हानि	लाभ और हानि	द्वन्द्व समास
पंचामृत	पाँच अमृतों का समूह	द्विगु समास
नीलाकाश	नीला आकाश	कर्मधारय समास
चतुर्भुज	चार भुजाओं वाला (विष्णु)	बहुब्रीहि समास

प्रश्न 3. निम्नलिखित के समास विग्रह कीजिए तथा समास का नाम बताइए—
महानगर, लाभ-हानि, जलराशि।

Scanned with CamScanner

उत्तर – शब्द	विग्रह	समास का नाम
महानगर	महान है जो नगर	बहुव्रीहि
लाभ-हानि	लाभ और हानि	द्वन्द्व
जलराशि	जल की राशि	तत्पुरुष

9 विज्ञापन लेखन

विज्ञापन–विज्ञापन शब्द दो शब्दों के योग से बना है–वि + ज्ञापन, वि का अर्थ है विशेष या विशिष्ट और ज्ञापन का अर्थ जानकारी या सूचना। इसलिए विज्ञापन का अर्थ होता है किसी चीज विशेष की जानकारी देना।

आज विज्ञापन का बहुत महत्व है। विद्यालयों, वस्तुओं, उत्पादों आदि के प्रति आकर्षित करने के लिए विज्ञापन आवश्यक हैं।

विज्ञापन लेखन के उदाहरण

प्रश्न 1. आदर्श शिक्षा निकेतन का अध्यापकों की नियुक्ति हेतु विज्ञापन तैयार कीजिए।

उत्तर–

आदर्श शिक्षा निकेतन

नेहरू नगर, बैरागढ़

आवश्यकता

निम्नलिखित पदों हेतु योग्य, प्रशिक्षित एवं अनुभवी शिक्षकों से आवेदन आमंत्रित किये जाते हैं।

पद	विषय	संख्या
पी.जी.टी.	हिन्दी	01
पी.जी.टी.	गणित	01
टी.जी.टी.	विज्ञान	01
टी.जी.टी.	संस्कृत	01
पी.आर.टी.	अंग्रेजी	01

आवेदन मँगाने की अंतिम तिथि - 1 जून 20...

आवेदन–पत्र जमा करने की अंतिम तिथि - 15 जुलाई 20...

प्रश्न 2. गोरस उत्पादन की बिक्री हेतु एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

उत्तर–

गोरस के स्वास्थ्यवर्द्धक स्वादिष्ट उत्पाद

आपके परिवार एवं आपके स्वास्थ्य की दृष्टि से गोरस के उत्पाद उत्तम हैं।

दूध, दही, मक्खन, पनीर छाछ आदि मिलने का एकमात्र स्थान

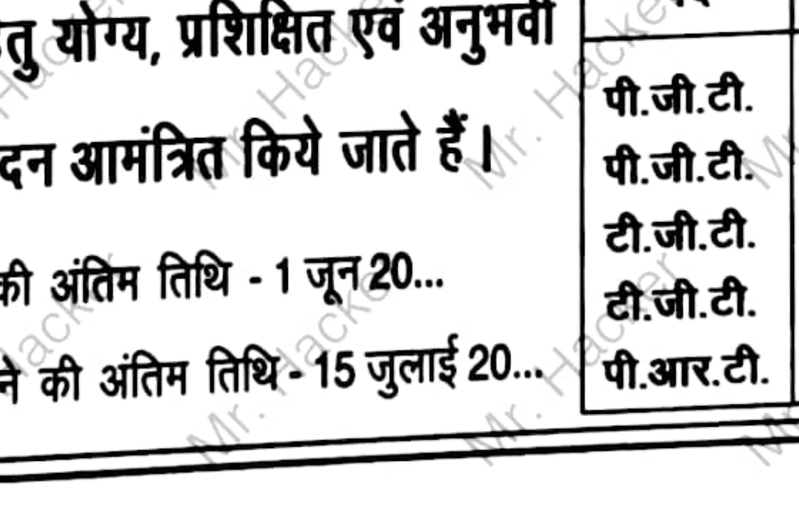

शुद्धता, स्वच्छता व स्वाद के लिए हम प्रतिबद्ध हैं।

शादी, समारोह, आदि के आर्डर भी बुक किये जाते है।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 3. अपने विद्यालय में आयोजित पुस्तक प्रदर्शनी का विज्ञापन बनाइए।

उत्तर—एक पुस्तक प्रदर्शनी के विज्ञापन का नमूना—

आइए ज्ञान बढ़ाइए प्रसन्न रहिए

राष्ट्रीय पुस्तक प्रदर्शनी

विद्यार्थियों द्वारा आयोजित

10 दिसम्बर से 20 दिसम्बर 20... तक
समय : प्रात 9 बजे से सायं 5 बजे तक

प्रवेश निःशुल्क

शासकीय महाराजा शिवाजीराव उच्चतर माध्यमिक विद्यालय
चिमनबाग, इन्दौर

श्रेष्ठ साहित्य को खरीदने का सुनहरा अवसर
आप सादर आमंत्रित हैं

प्रश्न 4. खिलौनों की बिक्री का विज्ञापन तैयार कीजिए।

उत्तर—

सुन्दर, सुघड़ सलौने, खिलौने ही खिलौने

चुनमुन खिलौना भंडार

विविध प्रकार के नवीनतम खिलौने मिलते हैं।

दीपावली के अवसर पर विशेष छूट का लाभ उठाएँ

चूक गए तो पछताते रहोगे।

प्रश्न 5. नशामुक्ति को ध्यान में रखते हुए एक विज्ञापन बनाइए।

उत्तर—

नशा से मुक्ति

बढ़ती जन–मन शक्ति

स्वयं की तथा अपने परिवार की सुरक्षा के लिए

नशा

एक

अभिशाप

नशे से दूर रहें, स्वस्थ रहें, प्रसन्न रहें।

नशा विनाश का कारण, इसका करो निवारण
जीवन बहुमूल्य है, इसे बचाएँ।

नशा मुक्ति केन्द्र

Scanned with CamScanner

प्रश्न 6. 'उत्तम शिक्षालय' में प्रवेश प्रारम्भ होने का विज्ञापन तैयार कीजिए।

उत्तर–

प्रवेश प्रारम्भ

नगर के एकमात्र श्रेष्ठ शिशु शिक्षालय में

आदर्श शिक्षालय सागर

कम्प्यूटर शिक्षा की उत्तम व्यवस्था

दसवीं तक मान्यता प्राप्त/ प्रशिक्षित शिक्षक/ शिक्षा की आधुनिक तकनीक

देर न करें, बच्चों का भविष्य बनाएँ, अपना दायित्व निभाएँ।

सीमित स्थान, इसका रखें ध्यान विलम्ब न करें।

खुला परिसर, हवा प्रकाश वाले रूम, विस्तृत खेल व मैदान

प्रश्न 7. भोपाल पुलिस की ओर से नागरिकों को बम-सुरक्षा के प्रति सावधान रहने का विज्ञापन तैयार कीजिए।

उत्तर–

सावधानी ही सुरक्षा

यदि आपकी जानकारी में कोई अनजान वस्तु आती है -

खिलौना

ट्रांजिस्टर

टिफिन

थैला

तो तुरंत नजदीकी पुलिस को सूचित करें।

अन्यथा **112** पर फोन करें।

उसमें बम/विस्फोटक हो सकता है।

प्रश्न 8. पानी बचाने का विज्ञापन तैयार कीजिए।

उत्तर–

पानी बचाएँ, जीवन बचाएँ

पानी बर्बाद करना जीवन नष्ट करना

जल ही जीवन है

जल संरक्षण विभाग, मध्य प्रदेश सरकार

Scanned with CamScanner

10 सूचना लेखन

किसी भी महत्वपूर्ण बात, तथ्य या विषय को कम से कम शब्दों में सटीक ढंग से लिखना सूचना लेखन कहलाता है।

इसका प्रयोग बात, तथ्य या विषय से सम्बन्धित व्यक्तियों को जानकारी देने के लिए किया जाता है। सूचना विभिन्न प्रकार की होती हैं। उनके उदाहरण प्रस्तुत हैं–

प्रश्न 1. अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य/प्रधानाचार्या की ओर से दीपावली के अवकाश की सूचना लिखिए।

उत्तर–

शासकीय कस्तूरबा कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय
सुभाष चौक, इन्दौर

सूचना

दिनांक : 17-11-20.....

सभी शिक्षकों, कर्मचारियों तथा विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि दीपावली के उपलक्ष में दिनांक 18-11-20.....से 21-11-20.....तक विद्यालय बन्द रहेगा। दिनांक 22-11-20.....को विद्यालय यथासमय खुलेगा।

रोहिणी शर्मा
प्रधानाचार्या

प्रश्न 2. विद्यालय में छात्र-छात्राओं को नि:शुल्क पुस्तक वितरण की सूचना देने हेतु एक आलेख तैयार कीजिए।

उत्तर–

राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, माधवगंज, उज्जैन

सूचना

नि:शुल्क पुस्तक वितरण

दिनांक 20 अप्रैल 20.....

सभी छात्र-छात्राओं को सूचित किया जाता है कि सभी कक्षाओं की पुस्तकों का नि:शुल्क वितरण निम्न प्रकार किया जाएगा–

कक्षा	दिनांक	समय
दसवीं	25-4-20.....	प्रात: 9 बजे से 12 बजे तक
नौवीं	27-4-20.....	प्रात: 9 बजे से 12 बजे तक
आठवीं	28-4-20.....	प्रात: 9 बजे से 12 बजे तक
सातवीं	29-4-20.....	प्रात: 9 बजे से 12 बजे तक
छठवीं	30-4-20.....	प्रात: 9 बजे से 12 बजे तक

(रमन प्रकाश)
प्रधानाचार्य

Scanned with CamScanner

प्रश्न 3. राष्ट्रीय सेवा योजना के अन्तर्गत एक मुहल्ले की सफाई के शिविर की सूचना तैयार कीजिए।

उत्तर–

शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, फाजलपुरा, उज्जैन

आवश्यक सूचना

दिनांक : 05–11–20.....

राष्ट्रीय सेवा योजना से सम्बन्धित सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि दिनांक 12–11–20..... से 14–11–20.....तक विद्यालय के सामने वाले मुहल्ले में एक शिविर का आयोजन किया जाएगा। सभी सम्बन्धित विद्यार्थियों का उपस्थित होना आवश्यक है। शिविर में प्रात: 9 बजे से 12 बजे तक मुहल्ले की सफाई का कार्य किया जाएगा।

(राजकुमार)
राष्ट्रीय सेवा योजना अधिकारी

प्रश्न 4. विद्यालय में कवि सम्मेलन के आयोजन की एक सूचना लिखिए।

उत्तर–

शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, गाँधीनगर, भोपाल

सूचना

राष्ट्रीय कवि सम्मेलन का आयोजन

दिनांक : 7–8–20.....

आपको सूचित किया जाता है कि स्वतन्त्रता दिवस की पूर्व संध्या पर विद्यालय की ओर से एक राष्ट्रीय कवि सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है जिसमें देश के जाने–माने कवि काव्य पाठ करेंगे।

दिनांक : 14 अगस्त 20..... समय–सायं 8 बजे

स्थान–विद्यालय परिसर

(श्याम मोहन)
प्रधानाचार्य

प्रश्न 5. शैक्षिक भ्रमण सम्बन्धी एक सूचना लिखिए।

उत्तर–

सरस्वती विद्या मन्दिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, ऋषि नगर, उज्जैन

सूचना

शैक्षिक भ्रमण

दिनांक : 28–10–20.....

कक्षा 10 के सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि शीतकालीन अवकाश में एक शैक्षिक भ्रमण का आयोजन किया गया है जिसमें ग्वालियर, दिल्ली तथा आगरा के शिक्षा केन्द्रों में जाकर विविध गतिविधियों का ज्ञान प्राप्त कराया जाएगा। इच्छुक विद्यार्थी अधोहस्ताक्षरकर्ता को 10 नवम्बर 20.....तक अपने नाम लिखा दें।

(श्री प्रकाश शर्मा)
वरिष्ठ हिन्दी प्रवक्ता

प्रश्न 6. प्रदेश स्तर पर होने वाली वाद-विवाद प्रतियोगिता के लिए प्रतिभागियों का चयन करने की एक सूचना लिखिए।

Scanned with CamScanner

उत्तर–

गाँधी मेमोरियल स्कूल, भोपाल

सूचना

दिनांक 20 नवम्बर 20.....

शिक्षा विभाग द्वारा प्रदेश स्तरीय वाद-विवाद प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए स्कूल की टीम का चयन दिनांक 26 नवम्बर 20..... को प्रात: 11 बजे व्याख्यान कक्ष में किया जाएगा जो विद्यार्थी प्रतियोगिता में भाग लेने के इच्छुक हों वे उक्त तारीख को ठीक समय पर उपस्थित हों।

प्रतियोगिता का विषय–'शिक्षा में नैतिक मूल्यों का महत्व'

(श्याम सिंह)
उप-प्रधानाचार्य

महत्वपूर्ण वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

❖ बहु-विकल्पीय प्रश्न

1. निम्नलिखित में निपात शब्द हैं–
(क) राम, श्याम, (ख) वर्षा, बसंत, (ग) धीरे-धीरे, तेज, (घ) भर, ही, भी।

2. वाच्य के कितने प्रकार होते हैं ?
(क) तीन, (ख) चार, (ग) पाँच, (घ) छः।

3. जिन वाक्यों में दो कर्म होते हैं उनकी क्रिया कहलाती है–
(क) सकर्मक क्रिया, (ख) द्विकर्मक क्रिया, (ग) संयुक्त क्रिया, (घ) अकर्मक क्रिया।

4. निम्नलिखित में से किसमें कालवाचक क्रिया-विशेषण है ?
(क) दीपक कैसे चलता है, (ख) पवन बिल्कुल नहीं डरता,
(ग) श्याम कल आएगा, (घ) रीता यहाँ आ रही है।

5. समुच्चयबोधक के कितने भेद होते हैं ?
(क) दो, (ख) तीन, (ग) चार, (घ) पाँच।

6. 'हवा से बातें करना' का अर्थ क्या है ?
(क) दिखावटीपन, (ख) स्वार्थ सिद्धि,
(ग) आत्मप्रशंसा, (घ) तीव्र गति से चलना।

7. 'मुँह की खाना' का अर्थ है–
(क) चुगली करना, (ख) पराजित होना,
(ग) मुँह से भोजन करना, (घ) स्वागत करना।

8. 'दूध का दूध और पानी का पानी' का क्या अर्थ है ?
(क) स्वस्थ होना, (ख) भला करना, (ग) सही न्याय, (घ) बँटवारा करना।

9. एक से अधिक अर्थ देने वाले शब्द कहलाते हैं–
(क) विपरीतार्थक शब्द, (ख) एकार्थी, (ग) विलोम शब्द, (घ) अनेकार्थी।

10. किस समास में दोनों पद प्रधान होते हैं ?
(क) द्वन्द्व, (ख) द्विगु, (ग) कर्मधारय, (घ) तत्पुरुष।

11. विज्ञापन शब्द का क्या अर्थ है ?
(क) असत्य बताना,
(ग) उल्टा बताना,
(ख) विशेष जानकारी देना,
(घ) इनमें से कोई नहीं।

Scanned with CamScanner

उत्तर—1. (घ), 2. (क), 3. (ख), 4. (ग), 5. (क), 6. (घ), 7. (ख), 8. (ग), 9. (घ), 10. (क), 11. (ख)।

❖ रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. वहाँ जाने का साधन ..... रेलगाड़ी है।
2. कर्तृवाच्य में क्रिया ..... के अनुसार होती है।
3. ..... क्रिया का सीधा सम्बन्ध कर्ता से होता है।
4. ..... क्रिया-विशेषण से क्रिया होने की रीति का ज्ञान होता है।
5. सीता खड़ी थी ..... गीता बैठी थी।
6. 'टेढ़ी खीर' का अर्थ ..... है।
7. 'ईद का ..... होना' प्रसिद्ध मुहावरा है।
8. एक-से-अधिक अर्थ देने वाले शब्द ..... कहलाते हैं।
9. 'रसोईघर' ..... समास का उदाहरण है।
10. पंचवटी ..... समास का उदाहरण है।

उत्तर—1. सिर्फ, 2. कर्ता, 3. अकर्मक, 4. रीतिवाचक, 5. और, 6. कठिन कार्य, 7. चाँद, 8. अनेकार्थी, 9. तत्पुरुष, 10. द्विगु।

❖ सत्य/असत्य

1. निपात किसी शब्द के बाद लगकर उसके अर्थ में विशेष बल देते हैं।
2. भाववाच्य में क्रिया कर्म के अनुसार होती है।
3. जिस क्रिया का प्रभाव कर्म पर पड़ता है वह सकर्मक क्रिया होती है।
4. स्थानवाचक क्रिया-विशेषण से क्रिया के काल का बोध होता है।
5. समानाधिकरण समुच्चयबोधक के दो भेद होते हैं।
6. 'आँख का तारा' का अर्थ अत्यन्त प्रिय होना है।
7. 'आम के आम गुठलियों के दाम' का अर्थ लगातार घाटा होना है।
8. जिन शब्दों के कई अर्थ होते हैं वे अनेकार्थी शब्द कहलाते हैं।
9. 'यथाशक्ति' अव्ययीभाव समास का उदाहरण है।
10. सप्तऋषि में कर्मधारय समास है।

उत्तर—1. सत्य, 2. असत्य, 3. सत्य, 4. असत्य, 5. असत्य, 6. सत्य, 7. असत्य, 8. सत्य, 9. सत्य, 10. असत्य।

❖ सही जोड़ी मिलाइए

I.

'अ'	'ब'
1. मात्र, भी, ही	(क) कर्तृवाच्य
2. क्रिया कर्ता के अनुसार	(ख) निपात शब्द
3. क्रिया एवं सहायक क्रिया के योग से	(ग) क्रिया के परिमाण का बोध
4. परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण	(घ) संयुक्त क्रिया
5. और, एवं, व	(ङ) संयोजक समुच्चयबोधक

उत्तर—1. → (ख), 2. → (क), 3. → (घ), 4. → (ग), 5. → (ङ)।

II.

'अ'	'ब'
1. लोक की उक्ति	(क) मूर्ख बनाना
2. उल्लू बनाना	(ख) लोकोक्ति
3. एक से अधिक अर्थ वाले शब्द	(ग) द्वन्द्व समास

Scanned with CamScanner

4. माता-पिता (घ) घन के समान श्याम
5. घनश्याम (ङ) अनेकार्थी

उत्तर—1. → (ख), 2. → (क), 3. → (ङ), 4. → (ग), 5. → (घ)।

❖ एक शब्द/वाक्य में उत्तर

1. "ललित भी आज आ रहा है।" वाक्य में निपात शब्द कौन-सा है ?
2. "मेरे द्वारा पुस्तक पढ़ी जा रही है।" में कौन-सा वाच्य है ?
3. जिन शब्दों से करने या होने का बोध होता है वे शब्द क्या कहलाते हैं ?
4. क्रिया की विशेषता का बोध कराने वाले शब्द क्या कहलाते हैं ?
5. "मैं बड़ा हूँ अत: मेरा जाना ठीक नहीं है।" वाक्य में समुच्चयबोधक क्या है ?
6. 'हाथ मलना' का क्या अर्थ है ?
7. 'पत्थर की लकीर' मुहावरे का अर्थ लिखिए।
8. एक-से-अधिक अर्थ व्यक्त करने वाले शब्दों को क्या कहते हैं ?
9. समास के कितने प्रकार होते हैं ?
10. 'यथाशक्ति' में कौन-सा समास है ?

उत्तर—1. भी, 2. कर्मवाच्य, 3. क्रिया, 4. क्रिया-विशेषण, 5. अत:, 6. पछताना, 7. अमिट, 8. अनेकार्थी शब्द, 9. छ:, 10. अव्ययीभाव।

अध्याय 11

काव्य बोध

काव्य की परिभाषा एवं भेद

प्रश्न 1. काव्य की परिभाषा लिखिए तथा उसके भेद बताइए।

उत्तर—"काव्य हमारे भावों, विचारों की शाब्दिक अभिव्यक्ति है जो आनंद की अनुभूति कराने वाली होने के कारण संरक्षणीय है।" आचार्य विश्वनाथ ने परिभाषा दी है। 'रसात्मकं वाक्यं काव्यम्'।

काव्य के दो प्रकार होते हैं—(1) श्रव्य काव्य, (2) दृश्य काव्य।

प्रश्न 2. श्रव्य काव्य तथा दृश्य काव्य के भेद बताइए।

उत्तर—श्रव्य काव्य के दो भेद होते हैं—(1) प्रबंध काव्य, (2) मुक्तक काव्य।

प्रबंध काव्य के भी दो भेद होते हैं—(1) महाकाव्य, (2) खण्ड काव्य।

मुक्तक काव्य के दो भेद होते हैं—(1) पाठ्य मुक्तक, (2) गेय मुक्तक।

दृश्य काव्य के नाटक, एकांकी आदि भेद होते हैं।

प्रश्न 3. प्रबन्ध काव्य किसे कहते हैं ? इसके भेद बताइए।

अथवा

प्रबन्ध काव्य का अर्थ लिखते हुए उसके भेदों का उदाहरण सहित वर्णन कीजिए।

उत्तर—प्रबन्ध काव्य विषय प्रधान एवं वर्णनीय होता है। इसमें कथावस्तु के अनुकूल घटना विशेष का क्रमबद्ध रूप से काव्यात्मक वर्णन होता है।

प्रबन्ध काव्य के दो भेद होते हैं—(1) महाकाव्य ('*रामचरितमानस*'), (2) खण्डकाव्य ('*सुदामाचरित*')।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 4. महाकाव्य किसे कहते हैं ? दो प्रमुख महाकाव्यों एवं उनके रचनाकारों के नाम लिखिए।

अथवा

महाकाव्य किसे कहते हैं ? हिन्दी के दो महाकाव्यों के नाम लिखिए।

उत्तर—महाकाव्य विस्तृत होता है। इसमें प्रकृति का विशद् चित्रण होता है। जीवन के समग्र रूप का उल्लेख होता है तथा पात्रों की संख्या अधिक होती है। हिन्दी के दो महाकाव्य निम्नलिखित हैं—

(1) '*रामचरितमानस*' (तुलसीदास), (2) '*कामायनी*' (जयशंकर प्रसाद)।

प्रश्न 5. खण्डकाव्य किसे कहते हैं ? हिन्दी के चार खण्डकाव्यों के नाम लिखिए।

अथवा

खण्डकाव्य की परिभाषा एवं एक खण्डकाव्य का नाम लिखिए।

उत्तर—खण्डकाव्य में जीवन के किसी एक पक्ष का अंकन होता है। एक घटना अथवा व्यवहार का ही चित्रण किया जाता है। हिन्दी के चार खण्डकाव्य निम्नलिखित हैं—

(1) '*जानकी मंगल*'—तुलसीदास, (3) '*सुदामाचरित*'—नरोत्तमदास,

(2) '*सिद्धराज*'—मैथिलीशरण गुप्त, (4) '*गंगावतरण*'—जगन्नाथदास रत्नाकर।

प्रश्न 6. महाकाव्य और खण्डकाव्य में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—(1) महाकाव्य में जीवन के समग्र रूप का उल्लेख होता है। खण्डकाव्य में जीवन के एक पक्ष का उद्घाटन किया जाता है।

(2) महाकाव्य विस्तृत होता है तथा खण्डकाव्य संक्षिप्त होता है।

(3) महाकाव्य में प्रकृति चित्रण विशद् रूप में किया जाता है जबकि खण्डकाव्य में प्रकृति चित्रण संक्षिप्त रूप में किया जाता है।

(4) महाकाव्य में पात्रों की संख्या अधिक होती है। खण्डकाव्य में पात्र कम तथा सीमित होते हैं।

प्रश्न 7. मुक्तक काव्य किसे कहते हैं ?

उत्तर—मुक्तक रचना में प्रत्येक छंद स्वत: पूर्ण होता है। इसकी रचना में कथा नहीं होती। इसमें पूर्वापर सम्बन्ध नहीं होता है। प्रत्येक छंद पूर्व पद के प्रसंग से सर्वथा अछूता अथवा मुक्त होता है, अत: मुक्तक काव्य कहलाता है। सूर एवं मीरा के पद तथा गिरिधर की कुण्डलियाँ मुक्तक काव्य के अन्तर्गत आती हैं।

प्रश्न 8. पाठ्य मुक्तक एवं गेय मुक्तक में कोई तीन अन्तर लिखिए।

उत्तर—पाठ्य मुक्तक और गेय मुक्तक में तीन अन्तर निम्नलिखित हैं—

(1) पाठ्य मुक्तक का पाठ किया जाता है जबकि गेय मुक्तक लय में गाये जाते हैं।

(2) पाठ्य मुक्तक में लय, तुक, छंद आदि को ध्यान में नहीं रखा जाता है जबकि गेय मुक्तक छंद विधान युक्त रचना होती है।

(3) आधुनिक मुक्तक काव्य पाठ्य मुक्तकों की कोटि में आता है जबकि सूर, तुलसी, प्रसाद, पंत आदि के पद, गीत गेय मुक्तक हैं।

रस

प्रश्न 1. रस किसे कहते हैं ? इसकी परिभाषा लिखिए तथा बताइए कि रस की निष्पत्ति कैसे होती है ?

उत्तर—रस को काव्य की आत्मा बताया गया है। जिस तरह आत्मा के बिना शरीर का कोई मूल्य नहीं होता, उसी तरह रस के बिना काव्य भी निर्जीव माना गया है। "रसात्मकं वाक्यं काव्यं" अर्थात् रसयुक्त वाक्य ही काव्य है।

यदि काव्य की तुलना मनुष्य से की जाए तो शब्द और अर्थ को काव्य का शरीर, अलंकारों को आभूषण, छंदों को उसका बाह्य परिधान तथा रस को आत्मा कह सकते हैं। काव्य में रस का अर्थ आनन्द बताया गया है। साहित्यशास्त्र में 'रस' का अर्थ अलौकिक या लोकोत्तर आनन्द होता है। अत: **"काव्य के पढ़ने, सुनने**

Scanned with CamScanner

अथवा उसका अभिनय देखने में पाठक, श्रोता या दर्शक को जो आनन्द मिलता है, वही काव्य में रस कहलाता है।"

स्थायी भाव, विभाव, अनुभाव और संचारी भाव के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है– **"विभावानुभावव्यभिचारी संयोगाद्रसनिष्पत्तिः।"**

प्रश्न 2. रस के अंगों (रस को आस्वाद योग्य बनाने में सहायक अवयव) के नाम लिखिए।

उत्तर–रस के चार अंग होते हैं–(1) स्थायीभाव, (2) विभाव, (3) अनुभाव, (4) संचारीभाव।

विभाव के दो भेद होते हैं–(1) आलम्बन, (2) उद्दीपन।

(1) आलम्बन–इसके कारण आश्रय में स्थायी भाव जाग्रत होते हैं।

(2) उद्दीपन–ये जाग्रत भाव को उद्दीप्त करते हैं।

प्रश्न 3. संचारी भाव किसे कहते हैं एवं इनकी कितनी संख्या मानी गई है ?

उत्तर–आश्रय के मन में उठने वाले अस्थिर मनोविकारों को संचारी भाव कहते हैं। इनका अस्तित्व पानी के बुलबुलों के समान होता है। संचारी भावों की संख्या 33 निर्धारित की गई है।

प्रश्न 4. रसों के नाम बताते हुए उनके स्थायी भावों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर–हिन्दी साहित्य में रसों की संख्या 9 मानी गई है–(1) शृंगार, (2) वीर, (3) अद्भुत, (4) रौद्र, (5) करुण, (6) भयानक, (7) हास्य, (8) वीभत्स, (9) शान्त। कुछ विद्वान भक्ति और वात्सल्य को भी रस मानते हैं।

रस और उनके स्थायी भाव

रस	स्थायी भाव	रस	स्थायी भाव
1. शृंगार	रति	6. अद्भुत	विस्मय
2. हास्य	हास	7. वीर	उत्साह
3. करुण	शोक	8. शान्त	निर्वेद
4. वीभत्स	जुगुप्सा	9. भयानक	भय
5. रौद्र	क्रोध	10. वात्सल्य	वत्सल

प्रश्न 5. स्थायी भाव एवं संचारी भाव में अन्तर बताइए।

उत्तर–स्थायी भाव एवं संचारी भाव में प्रमुख अन्तर निम्नलिखित हैं–

(1) मानव हृदय में सुषुप्त रूप में रहने वाले मनोभाव स्थायी भाव कहलाते हैं जबकि हृदय में अन्य अनन्त भाव जाग्रत तथा विलीन होते रहते हैं, उनको संचारी भाव कहा जाता है।

(2) स्थायी भाव स्थायी रूप से हृदय में विद्यमान रहते हैं जबकि संचारी भाव कुछ समय रहकर समाप्त हो जाते हैं।

(3) स्थायी भाव उद्दीपन के प्रभाव से उद्दीप्त होते हैं जबकि संचारी भाव स्थायी भाव के विकास में सहायक होते हैं।

(4) स्थायी भावों की कुल संख्या 10 है जबकि संचारी भाव 33 माने गये हैं।

प्रश्न 6. शृंगार रस की परिभाषा लिखते हुए उदाहरण दीजिए और उसके भेद बताइए।

अथवा

शृंगार रस के कितने भेद होते हैं ?

उत्तर–परिभाषा–इसके अन्तर्गत नायक-नायिका के प्रेम का उल्लेख होता है।

शृंगार रस के दो भेद हैं–जहाँ नायक-नायिका के मिलन का उल्लेख होता है, वहाँ संयोग शृंगार होता है एवं जहाँ विरह का वर्णन होता है वहाँ वियोग अथवा विप्रलम्भ शृंगार होता है। इसका स्थायी भाव रति है।

उदाहरण–संयोग शृंगार

"दूलह श्री रघुनाथ बने, दुलही सिय सुन्दर मन्दिर माहीं।
गावत गीत सबै मिलि सुन्दरि, वेद तहाँ जुरि विप्र पढ़ाहीं॥"

Scanned with CamScanner

"राम को रूप निहारति जानकी, कंकन के नग की परछाहीं।
याते सबै सुधि भूल गयी, कर टेकि रही पल टारत नाहीं।"

उदाहरण—वियोग शृंगार—"हे खग-मृग हे मधुकर श्रेनी।
तुम देखी सीता मृगनैनी।"

प्रश्न 7. वीर रस की परिभाषा लिखते हुए एक उदाहरण दीजिए।

अथवा

वीर रस का स्थायी भाव लिखते हुए एक उदाहरण दीजिए।

उत्तर—परिभाषा—किसी विपरीत दशा को स्वयं के अनुकूल बनाने के निमित्त हृदय में उत्पन्न उत्साह को ही वीर रस कहा जाता है। या उत्साह की दशा में वीर रस होता है। इसका स्थायी भाव उत्साह है।

उदाहरण—(1) "चढ़ चेतक पर तलवार उठा, करता था भूतल पानी को।
राणा प्रताप सिर काट-काट, करता था सफल जवानी को॥"

(2) "बुन्देले हरबोलों के मुख हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वो तो झाँसी वाली रानी थी॥"

प्रश्न 8. रौद्र रस की परिभाषा लिखिए और एक उदाहरण दीजिए।

उत्तर—परिभाषा—जहाँ अपमान, अपकार, शत्रु की अनुचित चेष्टाओं, निन्दा आदि से उत्पन्न क्रोध से भावों की व्यंजना होती है, वहाँ रौद्र रस होता है। इसका स्थायी भाव क्रोध है।

उदाहरण—"श्रीकृष्ण के सुन वचन अर्जुन क्रोध से जलने लगे,
सब शोक अपना भूलकर, करतल युगल मलने लगे।
संसार देखे अब हमारे, शत्रु रण में मृत पड़े,
करते हुए यह घोषणा वे, हो गये उठकर खड़े।"

प्रश्न 9. भयानक रस की परिभाषा लिखते हुए एक उदाहरण दीजिए।

उत्तर—परिभाषा—भयप्रद वस्तु के देखने या सुनने से उत्पन्न भय स्थायी भाव के परिपाक से भयानक रस की व्यंजना होती है।

उदाहरण—"कर्त्तव्य अपना इस समय होता न मुझको ज्ञात है।
कुरुराज चिन्ताग्रस्त मेरा जल रहा सब गात है॥
अतएव मुझको अभय देकर आप रक्षित कीजिए।
या पार्थ प्रण करने विफल अन्यत्र जाने दीजिए॥"

प्रश्न 10. वीभत्स रस की परिभाषा लिखते हुए एक उदाहरण दीजिए।

उत्तर—परिभाषा—घृणित वस्तुओं के देखने या श्रवण करने से वीभत्स रस की व्यंजना होती है। इसका स्थायी भाव जुगुप्सा (घृणा) है।

उदाहरण—"सिर पर बैठो काग, आँखि दाऊ खात निकारत।
खींचत जीभहि स्यार अतिहि आनन्द उर धारत॥
गिद्ध जाँघ कहँ खोदि-खोदि के माँ उपारत।
स्वान आँगुरिन काटि-काटि के खात विदारत॥"

प्रश्न 11. अद्भुत रस की परिभाषा लिखते हुए एक उदाहरण दीजिए।

उत्तर—परिभाषा—जहाँ किसी असाधारण अथवा अलौकिक वस्तु के निहारने से कुतूहल जाग्रत हो, वहाँ अद्भुत रस की व्यंजना होती है। इसका स्थायी भाव विस्मय है।

उदाहरण—"उस एक ही अभिमन्यु से यों युद्ध जिसने किया,
मारा गया अथवा समर से विमुख होकर ही जिया।
जिस भाँति विद्युद्दाम से होती सुशोभित घनघटा,
सर्वत्र छिटकाने लगा वह समर में शस्त्र छटा,

Scanned with CamScanner

तब कर्ण द्रोणाचार्य से साश्चर्य यों कहने लगा,
आश्चर्य देखो तो नया यह सिंह सोते से जगा।"

प्रश्न 12. शान्त रस की परिभाषा लिखते हुए एक उदाहरण दीजिए।

उत्तर—परिभाषा—दुनिया की नश्वरता अथवा तत्व ज्ञान, विराग आदि से उत्पन्न अलौकिक निर्वेद स्थायी भाव के परिपाक से शान्त रस की व्यंजना होती है।

उदाहरण— "मन पछतैहै अवसर बीते।
दुर्लभ देह पाइ हरि-पद भजु करम वचन अरु ही ते।
सहसबाहु दसवदन आदि नृप बचे न काल बली ते।
हम-हम करि धन धाम सँवारे, अन्त चले उठि रीते।"

प्रश्न 13. वात्सल्य रस की परिभाषा लिखिए तथा उदाहरण दीजिए।

उत्तर—परिभाषा—सहृदय के हृदय में स्थित वत्सल नामक स्थायी भाव का जब विभाव, अनुभाव और संचारी भाव से संयोग हो जाता है तब वहाँ वात्सल्य रस होता है।

उदाहरण— "जसोदा हरि पालनै झुलावै।
हलरावै, दुलराइ मल्हावै, जोई सोई कछु गावै।
मेरे लाल को आउ निंदरिया, काहे न आनि सुवावै।"

प्रश्न 14. हास्य रस की परिभाषा लिखिए तथा उदाहरण दीजिए।

उत्तर—परिभाषा—अटपटे क्रिया-कलाप, विचित्र वेश-भूषा तथा वचनों से उत्पन्न हास (हँसी) स्थायी भाव के परिपाक से हास्य रस की व्यंजना होती है।

उदाहरण— "काहु न लखा सो चरित विसेखा। सो सरूप नृप कन्या देखा।
मर्कट बदन भयंकर देही। देखत हृदय क्रोध भा तेही॥
जेहि दिसि बैठे नारद, फूली। सो दिसि तेहि न विलोकी भूली।
पुनि पुनि मुनि उकसाहि अकुलाहीं। देखि दसा हरगण मुसकाहीं॥"

प्रश्न 15. करुण रस की उदाहरण सहित परिभाषा दीजिए।

उत्तर—परिभाषा—किसी आत्मीय व्यक्ति या प्रिय वस्तु के नष्ट होने पर अथवा अमंगल की आशंका से हृदय को जो दु:ख होता है, उससे करुण-रस की व्यंजना होती है। इसका स्थायी भाव शोक है।

उदाहरण— "प्रिय पति व मेरा प्राण-प्यारा कहाँ है ?
दु:ख जलनिधि में डूबी का सहारा कहाँ है ?
लख मुख जिसका मैं आज लौं जी सकी हूँ,
वह हृदय हमारा नैनतारा कहाँ है ?"

छंद

प्रश्न 1. छंद किसे कहते हैं ? इनके कितने प्रकार होते हैं ?

उत्तर—छंद—जिस रचना में अक्षरों एवं मात्राओं की संख्या निश्चित हो तथा यति, गति एवं तुक आदि का ख्याल रखा जाये, उसे छंद कहा जाता है।

छंद के प्रकार—छंद दो प्रकार के होते हैं—(क) मात्रिक छंद, (ख) वर्णिक छंद।

(क) वर्णिक—जिन छंदों की रचना वर्णों की गणना के आधार पर की जाती है, उन्हें वर्णिक छंद कहते हैं।

(ख) मात्रिक—जिन छंदों में मात्राओं की गणना की जाती है, उन्हें मात्रिक छंद कहते हैं। दोहा तथा चौपाई मात्रिक छंद हैं।

प्रश्न 2. दोहा छंद के लक्षण उदाहरण सहित समझाइए।

अथवा

दोहा छंद की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।

Scanned with CamScanner

अथवा

दोहा छंद के प्रत्येक चरण में कितनी-कितनी मात्राएँ होती हैं ?

उत्तर—दोहा-परिभाषा—दोहा छंद के प्रथम और तृतीय चरणों में 13-13 और द्वितीय तथा चतुर्थ चरणों में 11-11 मात्राएँ होती हैं। कुल 24 मात्राएँ होती हैं। इसके सम चरणों के अन्त में तगण अथवा जगण का होना जरूरी है।

उदाहरण—

ऽऽ ।। ऽऽ ।ऽ ऽऽ ऽ।। ऽ। = 13 + 11 = 24

मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरि सोय।

ऽ ।। ऽ ऽऽ ।ऽ ऽ। ।।। ।। ऽ। = 13 + 11 = 24

जा तन की झाँई परै, स्याम हरित दुति होय॥

प्रश्न 3. चौपाई छंद की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।

उत्तर—चौपाई—परिभाषा—चौपाई एक सममात्रिक छंद है। इसके प्रत्येक चरण में 16 मात्राएँ होती हैं।

उदाहरण—

ऽ।। ।।। ।ऽ।। ऽऽ = 16

मंगल भवन अमंगल हारी।

।।। । ।।।। ।।। ।ऽऽ = 16

द्रवउ सु दशरथ अजिर बिहारी॥

अलंकार

प्रश्न 1. अलंकार की परिभाषा लिखिए तथा उनके भेद बताइए।

उत्तर—अलंकार शब्द का अर्थ है अलंकृत या विभूषित करने वाला। जिस प्रकार आभूषण शरीर की शोभा बढ़ाते हैं, उसी प्रकार अलंकार काव्य के सौन्दर्य को बढ़ाते हैं।

परिभाषा—"काव्य के सौन्दर्य को बढ़ाने वाले धर्म (तत्व) अलंकार कहलाते हैं।"

अलंकार के भेद—अलंकार दो प्रकार के—(1) **शब्दालंकार**, एवं (2) **अर्थालंकार** माने गये हैं।

प्रश्न 2. अनुप्रास अलंकार की परिभाषा, उदाहरण सहित लिखिए।

उत्तर—अनुप्रास—परिभाषा—जिस काव्य रचना में व्यंजन वर्ण की दो या दो से अधिक बार आवृत्ति होती है, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

उदाहरण— "तरनि तनूजा तट तमाल, तरुवर बहु छाए।"

यहाँ 'त' वर्ण की आवृत्ति हुई है, अत: अनुप्रास अलंकार है।

प्रश्न 3. रूपक अलंकार की परिभाषा लिखिए तथा उदाहरण दीजिए।

उत्तर—रूपक अलंकार—परिभाषा—काव्य में जहाँ उपमेय में उपमान का आरोप होता है, वहाँ रूपक अलंकार होता है। इसमें वाचक शब्द का लोप होता है।

उदाहरण— "चरण-सरोज पखारन लागा।"

प्रश्न 4. उपमा अलंकार की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए तथा इसके अंग भी बताइए।

उत्तर—उपमा अलंकार—परिभाषा—जहाँ एक वस्तु अथवा प्राणी की तुलना अत्यन्त सादृश्य के कारण प्रसिद्ध वस्तु या प्राणी से की जाती है, तब वहाँ उपमा अलंकार होता है।

उदाहरण— "सिंधु सा विस्तृत है अथाह,
एक निर्वासित का उत्साह॥"

उपमा अलंकार के चार अंग होते हैं—

(i) उपमेय—जिस व्यक्ति या वस्तु की समानता की जाती है।

(ii) उपमान—जिस व्यक्ति या वस्तु से समानता की जाती है।

Scanned with CamScanner

(iii) साधारण धर्म—वह गुण या धर्म जिसकी तुलना की जाती है।

(iv) वाचक शब्द—वह शब्द जो रूप-रंग, गुण और धर्म की समानता दर्शाता है; जैसे—सा, सी, सम, समान आदि।

प्रश्न 5. उत्प्रेक्षा अलंकार की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।

उत्तर—उत्प्रेक्षा अलंकार—परिभाषा—काव्य में जहाँ उपमेय में उपमान की सम्भावना व्यक्त की जाती है, वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। जनु, जानो, मानो, मानहुँ आदिवाचक शब्द उत्प्रेक्षा अलंकार की पहचान हैं।

उदाहरण— "जनु, अशोक अंगार दीन्ह मुद्रिका डारि तब।"
"मानो, झूम रहे हैं, तरु भी मंद पवन के झोंकों से।"

प्रश्न 6. मानवीकरण अलंकार की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।

उत्तर—मानवीकरण अलंकार—जहाँ मानव के अतिरिक्त निर्जीव और अमूर्त पर मानव सुलभ गुण, कर्म आदि का आरोपण करके मानव के समान प्रस्तुत किया जाता है वहाँ मानवीकरण अलंकार होता है।

उदाहरण— "प्यारे जगाते हुए हारे सब तारे तुम्हें,
अरुण पंख तरुण किरण खड़ी खोल द्वार
जागो फिर एक बार।"

यहाँ 'तारे' और 'किरण' को जगाने तथा द्वार खोलने की मानवीय क्रिया करते हुए चित्रित किया गया है। इसलिए यहाँ मानवीकरण अलंकार है।

प्रश्न 7. पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।

उत्तर—जहाँ एक ही शब्द का समान अर्थ में एक से अधिक बार प्रयोग होता है। वहाँ पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार होता है।

उदाहरण—"पुनि पुनि मुनि उकसहिं अकुलाहीं।"

यहाँ पुनि' शब्द की समान अर्थ में आवृत्ति हुई है। इसलिए यहाँ पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार है।

महत्वपूर्ण वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

❖ बहु-विकल्पीय प्रश्न

1. हिन्दी का सर्वाधिक लोकप्रिय महाकाव्य है—
(क) रामचरितमानस, (ख) रामचन्द्रिका,
(ग) कामायनी, (घ) साकेत।

2. 'रसात्मकं वाक्यं काव्यम्' परिभाषा किसकी है ?
(क) भामह, (ख) विश्वनाथ,
(ग) पण्डितराज जगन्नाथ, (घ) भरतमुनि।

3. शृंगार रस का स्थायी भाव क्या है ?
(क) निर्वेद, (ख) हास,
(ग) रति, (घ) विस्मय।

4. जीवन का विशद चित्रण होता है—
(क) मुक्तक काव्य में, (ख) गेय मुक्तक में,
(ग) खण्डकाव्य में, (घ) महाकाव्य में।

5. काव्य की शोभा बढ़ाने वाले धर्म (तत्व) कहलाते हैं—
(क) गुण, (ख) अलंकार,
(ग) छंद, (घ) शब्द-शक्ति।

Scanned with CamScanner

6. वीर रस का स्थायी भाव है—
(क) उत्साह, (ख) भय,
(ग) क्रोध, (घ) रति।

7. 'पीपर पात सरिस मान डोला' में अलंकार है—
(क) रूपक, (ख) उपमा,
(ग) उत्प्रेक्षा, (घ) यमक।

8. 'चौपाई' में कितनी मात्राएँ होती हैं ?
(क) 11, (ख) 13,
(ग) 15, (घ) 16.

9. 'रघुपति राघव राजा राम' में कौन-सा अलंकार है ?
(क) अनुप्रास, (ख) रूपक,
(ग) उत्प्रेक्षा, (घ) मानवीकरण।

10. एक ही शब्द की एक से अधिक बार आवृत्ति हो वहाँ कौन-सा अलंकार होता है ?
(क) यमक, (ख) अनुप्रास,
(ग) श्लेष, (घ) पुनरुक्तिप्रकाश।

उत्तर—1. (क), **2.** (ख), **3.** (ग), **4.** (घ), **5.** (ख), **6.** (क), **7.** (ख), **8.** (घ), **9.** (क), **10.** (घ)।

❖ रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. महाकाव्य में जीवन का ..... चित्रण होता है।
2. शृंगार रस का स्थायी भाव ..... है।
3. 'चरण सरोज पखारन लागा' ..... अलंकार का उदाहरण है।
4. दोहा छंद में कुल ..... मात्राएँ होती हैं।
5. जिसके कारण स्थायी भाव उत्पन्न हो वह ..... कहलाता है।
6. 'कामायनी' एक ..... है।
7. काव्य की शोभा बढ़ाने वाले धर्म ..... कहलाते हैं।
8. वीर रस का स्थायी भाव ..... है।

उत्तर—1. समग्र, **2.** रति, **3.** रूपक, **4.** चौबीस, **5.** आलम्बन, **6.** महाकाव्य, **7.** अलंकार, **8.** उत्साह।

❖ सत्य/असत्य

1. प्रबंध काव्य में पूर्वापर सम्बन्ध होता है।
2. कामायनी आधुनिक काल का श्रेष्ठ महाकाव्य है।
3. अस्थिर मनोविकार स्थायी भाव कहलाते हैं।
4. शृंगार रस का स्थायी भाव हास है।
5. चौपाई छंद में 16 मात्राएँ होती हैं।
6. 'मुनि पद कमल बंदि दोऊ माई' में रूपक अलंकार है।
7. करुण रस का स्थायी भाव शोक है।
8. वीर रस का स्थायी भाव क्रोध है।
9. दोहा मात्रिक छंद है।
10. जहाँ नायक-नायिका के विरह का वर्णन हो वहाँ संयोग शृंगार रस होता है।

उत्तर—1. सत्य, **2.** सत्य, **3.** असत्य, **4.** असत्य, **5.** सत्य, **6.** सत्य, **7.** सत्य, **8.** असत्य, **9.** सत्य, **10.** असत्य।

Scanned with CamScanner

❖ सही जोड़ी मिलाइए

I.

'अ'	'ब'
1. पंचवटी	(क) महाकाव्य
2. कामायनी	(ख) खण्डकाव्य
3. शृंगार रस	(ग) उत्साह स्थायी भाव
4. काव्य की आत्मा	(घ) रति स्थायी भाव
5. वीर रस	(ङ) रस

उत्तर–1. → (ख), 2. → (क), 3. → (घ), 4. → (ङ), 5. → (ग)।

II.

'अ'	'ब'
1. करुण रस	(क) अनुप्रास अलंकार
2. वर्ण की एक से अधिक बार आवृत्ति	(ख) शोर स्थायी भाव
3. अद्‌भुत रस	(ग) खण्डकाव्य
4. जीवन का खण्ड चित्रण	(घ) विस्मय स्थायी भाव
5. 16 मात्राओं का छंद	(ङ) दोहा
6. 24 मात्राओं का छंद	(च) चौपाई

उत्तर–1. → (ख), 2. → (क), 3. → (घ), 4. → (ग), 5. → (च), 6. → (ङ)।

❖ एक शब्द/वाक्य में उत्तर

1. नायक के वृहद् जीवन का चित्रण किस काव्य में होता है ?
2. वात्सल्य के अलावा रसों की संख्या कितनी मानी गई है ?
3. पूर्वापर सम्बन्ध से रहित स्वयं में पूर्ण होने वाला काव्य क्या कहलाता है ?
4. भयानक रस का स्थायी भाव क्या है ?
5. निर्वेद किस रस का स्थायी भाव है ?
6. संचारी भावों की संख्या कितनी मानी गई है ?
7. स्थायी भाव को जगाने वाले तथा उद्दीप्त करने वाले कारक क्या कहे जाते हैं ?
8. करुण रस का स्थायी भाव क्या है ?
9. काव्य की शोभा बढ़ाने वाले तत्व क्या कहलाते हैं ?
10. किस छंद में चौबीस मात्राएँ होतीं हैं ?
11. एक शब्द की एक से अधिक बार आवृत्ति होने पर कौन-सा अलंकार होता है ?

उत्तर–1. महाकाव्य में, 2. नौ, 3. मुक्तक काव्य, 4. भय, 5. शांत रस का, 6. तैतीस, 7. विभाव, 8. शोक, 9. अलंकार, 10. दोहा में, 11. पुनरुक्तिप्रकाश।

Scanned with CamScanner

अध्याय 12

अपठित बोध

अपठित गद्यांश/पद्यांश पर एक प्रश्न परीक्षा में हल करना होता है। इसमें दिए गए अंश का शीर्षक बताना होता है और उस अंश पर पूछे गए प्रश्नों का उत्तर देना होता है।

इसे ध्यान से पढ़कर उसका उचित शीर्षक लिखें तथा प्रश्नों का सटीक उत्तर दें।

1 अपठित गद्यांश

प्रश्न—निम्नलिखित अपठित गद्यांशों को पढ़कर उनके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

(1)

मानव का अकारण ही मानव के प्रति अनुदार हो उठना न केवल मानवता के लिए लज्जाजनक है वरन् अनुचित है। वस्तुत: यथार्थ मनुष्य वही है जो मानवता का आदर करना जानता है, कर सकता है। केवल इसलिए कि कोई मनुष्य बुद्धिमान है अथवा दरिद्र, वह घृणा का तो दूर उपेक्षा का भी पात्र नहीं होना चाहिए। मानव तो इसलिए सम्मान के योग्य है कि वह मानव है, भगवान की सर्वश्रेष्ठ रचना है।

प्रश्न—(i) उपर्युक्त गद्यांश का उपर्युक्त शीर्षक दीजिए।

(ii) यथार्थ मनुष्य किसे कहा गया है ?

(iii) उक्त गद्यांश का सारांश लिखिए।

उत्तर—(i) शीर्षक—यथार्थ मनुष्य।

(ii) यथार्थ मनुष्य उसे कहा जाता है जो मानवता का आदर करता है।

(iii) सारांश—मनुष्य को अकारण ही किसी के प्रति अनुदार नहीं होना चाहिए। यथार्थ में मनुष्य वही है जो मानवता का आदर करता है। किसी मनुष्य के बुद्धिहीन या दरिद्र होने से उसे घृणा का पात्र नहीं बनाना चाहिए। मनुष्य भगवान की श्रेष्ठ रचना है।

(2)

आदर्श व्यक्ति कर्मशीलता में ही अपने जीवन की सफलता समझता है। जीवन का प्रत्येक क्षण वह कर्म में लगाता है। विश्राम और विनोद के लिए उसके पास निश्चित समय रहता है। शेष समय जनसेवा में व्यतीत होता है। हाथ पर हाथ धर कर बैठने को वह मृत्यु के समान समझता है। काम करने की उसमें लगन होती है। उत्साह होता है। विपत्तियों में भी वह अपने चरित्र का सच्चा परिचय देता है। धैर्य की कुदाली से वह बड़े-बड़े संकट पर्वतों को ढहा देता है। उसकी कार्यकुशलता देखकर लोग दाँतों तले ऊँगली दबाते हैं। सन्तोष उसका धन है। वह परिस्थितियों का दास नहीं है। परिस्थितियाँ उसकी दासी हैं।

प्रश्न—(i) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।

(ii) उपर्युक्त गद्यांश में वर्णित व्यक्ति के गुणों का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर—(i) शीर्षक—आदर्श कर्मशील व्यक्ति।

(ii) वर्णित व्यक्ति के गुण—यह व्यक्ति कर्मशीलता में ही अपने जीवन की सफलता समझता है। वह निश्चित समय पर विश्राम एवं विनोद करता है और शेष समय जनसेवा में ही लगाता है। उसमें काम करने की ऐसी लगन होती है कि वह खाली बैठने को मरण के समान मानता है। उत्साह से पूर्ण उस व्यक्ति का सही परिचय संकट के समय प्रकट होता है। वह बड़े-से-बड़े संकट पर धैर्य से विजय प्राप्त कर लेता है। उसकी कर्मठता चकित करती है। संतोष से परिपूर्ण वह व्यक्ति विषम परिस्थितियों में भी सफलता प्राप्त करता है।

Scanned with CamScanner

(3)

कई लोग समझते हैं कि अनुशासन और स्वतन्त्रता में विरोध है, किन्तु वास्तव में यह भ्रम है। अनुशासन द्वारा स्वतन्त्रता नहीं छीनी जाती, बल्कि दूसरों की स्वतन्त्रता की रक्षा होती है। सड़क पर चलने के लिए हम स्वतन्त्र हैं, हमें बाईं तरफ से चलना चाहिए किन्तु चाहें तो हम बीच में भी चल सकते हैं। इससे हम अपने प्राण तो संकट में डालते ही हैं, दूसरों की स्वतन्त्रता भी छीनते हैं। विद्यार्थी भारत के भावी राष्ट्रनिर्माता हैं। उन्हें अनुशासन के गुणों का अभ्यास अभी से करना चाहिए जिससे वे भारत के सच्चे सपूत कहला सकें।

प्रश्न—(i) उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक दीजिए।

(ii) उपर्युक्त गद्यांश का सारांश लिखिए।

उत्तर—(i) शीर्षक—अनुशासन और विद्यार्थी जीवन।

(ii) सारांश—प्रत्येक मनुष्य के जीवन में अनुशासन आवश्यक है। इससे व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के साथ-साथ दूसरों की स्वतन्त्रता की भी रक्षा होती है। अपना जीवन सुरक्षित होता है और दूसरों का भी। भविष्य के आशापुंज विद्यार्थियों को अनुशासन में रहना चाहिए, जिससे वे भावी भारत का स्वस्थ निर्माण कर सकें।

(4)

क्षमा पृथ्वी का गुणधर्म है। क्षमा वीरों का भूषण है। मनुष्य से स्वाभाविक रूप से अपराध होते रहते हैं, गलतियाँ होती रहती हैं। हमारी दृष्टि में कोई अपराधी है तो हम भी किसी की दृष्टि में अपराधी हैं। यहाँ निर्दोष कोई भी नहीं है, इसलिए परस्पर क्षमा-भावना की अति आवश्यकता है। क्षमा के अभाव में क्रोध, हिंसा, संघर्ष का साम्राज्य छा जायेगा जिसे कोई भी स्वीकार नहीं करता है। माता-पिता, गुरु सभी क्षमाशील होते हैं। मानव जीवन में क्षमा के अवसर आते रहते हैं। क्षमा के अभाव में मानव-जीवन चलना दूभर हो जाता है। अहिंसा, करुणा, दया, मैत्री, क्षमा आदि दैवी गुण हैं। ये गुण मानव-जीवन के लिए आवश्यक हैं।

प्रश्न—(i) उपर्युक्त गद्यांश का सटीक शीर्षक दीजिए।

(ii) उपर्युक्त गद्यांश का सारांश लिखिए।

(iii) क्षमा के अभाव में किसका साम्राज्य छा जाता है ?

उत्तर—(i) शीर्षक—क्षमा-भावना।

(ii) सारांश—क्षमा पृथ्वी का गुण-धर्म और वीरों का भूषण है। मानव स्वभाव से अपराधी होता है। यदि क्षमा-भावना न होगी तो क्रोध, हिंसा एवं संघर्ष का बोलबाला होगा जो मनुष्य को स्वीकार्य न होगा। माता-पिता, गुरु आदि क्षमाशील होते हैं। बिना क्षमा के मानव जीवन बहुत कठिन हो जाता है अत: यह गुण मानव के लिए आवश्यक है।

(iii) क्षमा के अभाव में क्रोध, हिंसा, संघर्ष आदि का साम्राज्य छा जायेगा।

(5)

अमृत तो प्रत्येक प्राणी के हृदय में समाया हुआ है, जरूरत है तो उसे जानने की। इस काया के अन्दर भरपूर अमृत है। गुरु के शब्द पर विचार करके ही उसे प्राप्त किया जा सकता है। जो प्रभु की खोज करते हैं वह इस अमृत को देह से ही प्राप्त करते हैं लेकिन गुरु के शब्द पर विचार न कर पाने के कारण अज्ञानी जीव व्यर्थ ही नष्ट हो जाता है। इस शरीर के नौ द्वार हैं परन्तु इन नौ द्वारों में से हमें अमृत प्राप्ति नहीं हो सकती क्योंकि वह दसवें द्वार में स्थित है। मनुष्य नौ द्वारों के रहस्य को तो जानता है परन्तु गुरु रूपी दसवें द्वार को भूला हुआ है। गुरु का कार्य उस द्वार को प्रकट करना है। यदि अन्तर में परमपिता परमात्मा से हमें प्रेम है, परन्तु जब तक हमें परमात्मा के दर्शन नहीं होते हम तब तक अमृतपान नहीं कर सकते।

प्रश्न—(i) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।

(ii) उपर्युक्त गद्यांश का सारांश लिखिए।

(iii) व्यक्ति अमृतपान कब कर सकता है ?

Scanned with CamScanner

उत्तर—(i) **शीर्षक**—अमृत की अभिलाषा।

(ii) **सारांश**—प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में ईश्वर का निवास है लेकिन ईश्वर तक पहुँचने का साधन गुरु है। व्यक्ति अज्ञानता के कारण इधर-उधर भटकता रहता है और अपने जीवन को व्यर्थ ही नष्ट कर लेता है। मानव उसके शरीर में मौजूद नौ द्वारों के रहस्य को तो जानता है किन्तु अमृत से तृप्त दसवें द्वार को वह भूला हुआ है, जिसे बिना गुरु के मार्गदर्शन के वह प्राप्त नहीं कर सकता।

(iii) व्यक्ति गुरु के सानिध्य में रहकर अमृतपान कर सकता है।

(6)

धर्म एक व्यापक शब्द है। मजहब, मत, पंथ या संप्रदाय सीमित रूप है। संसार के सभी धर्म मूल रूप में एक ही हैं। सभी मनुष्य के साथ सद्व्यवहार सिखाते हैं। ईश्वर किसी विशेष धर्म या जाति का नहीं। सभी मानवों में एक प्राण-स्पंदन होता है। उसके रक्त का रंग भी एक ही है। सुख-दुःख का भाव बोध भी उनमें एक जैसा है। आकृति और वर्ण, वेशभूषा और रीति-रिवाज तथा नाम ये सब ऊपरी वस्तुएँ हैं। ईश्वर ने मनुष्य या इंसान को बनाया है; और इंसान ने बनाया है धर्म या मजहब को। ध्यान रहे, मानवता या इंसानियत से बड़ा धर्म या मजहब दूसरा कोई नहीं। वह मिलना सिखाता है, अलगाव नहीं। 'धर्म' तो एकता का द्योतक है।

प्रश्न—(i) उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक लिखिए।

(ii) सबसे बड़ा धर्म कौन-सा है ?

(iii) बाह्य वस्तुएँ क्या हैं ?

उत्तर—(i) **शीर्षक**—साम्प्रदायिक एकता।

(ii) मानवता और इंसानियत सबसे बड़ा धर्म है।

(iii) आकृति, वर्ण, वेशभूषा, रीति-रिवाज, नाम ये सभी बाह्य वस्तुएँ हैं।

(7)

मनुष्य का जीवन बहुत संघर्षमय होता है। उसे पग-पग पर कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। फिर भी ईश्वर के द्वारा जो मनुष्यरूपी वरदान की निर्मिति इस पृथ्वी पर हुई है मानो धरती का रूप ही बदल गया है। यह संसार कर्म करने वाले मनुष्यों के आधार पर ही टिका हुआ है। देवता भी उनसे ईर्ष्या करते हैं। मनुष्य अपने कर्म बल के कारण श्रेष्ठ है। धन्य है मनुष्य का जीवन।

प्रश्न—(i) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।

(ii) उपर्युक्त गद्यांश का सारांश लिखिए।

(iii) मनुष्य किस कारण श्रेष्ठ माना गया है ?

उत्तर—(i) **शीर्षक**—मनुष्य और कर्म।

(ii) **सारांश**—संघर्षमय जीवन जीते हुए मनुष्य ने जो कर्म किए हैं उनसे इस धरती का रूप ही बदल गया है। ईश्वर के द्वारा वरदानस्वरूप बनाये गए इन कर्मठ लोगों के आधार पर ही संसार टिका है। कर्मठ जीवन धन्यवाद का पात्र है।

(iii) मनुष्य अपने कर्म के कारण श्रेष्ठ माना गया है।

(8)

स्वार्थ और परमार्थ मानव की प्रवृत्तियाँ हैं। हम अधिकतर सभी कार्य अपने लिए करते हैं, 'पर' के लिए सर्वस्व बलिदान करना ही सच्ची मानवता है। यही धर्म, यही पुण्य है। इसे ही परोपकार कहते हैं। प्रकृति हमें निरन्तर परोपकार का सन्देश देती है। नदी दूसरों के लिए बहती है। वृक्ष मनुष्यों को छाया तथा फल देने के लिए ही धूप, आँधी, वर्षा और तूफानों में अपना सब कुछ बलिदान कर देते हैं।

प्रश्न—(i) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।

(ii) सच्ची मानवता क्या है ?

Scanned with CamScanner

(iii) वृक्ष हमें परोपकार का सन्देश कैसे देते हैं ?

(iv) उपर्युक्त गद्यांश का सारांश लिखिए।

उत्तर—(i) शीर्षक—परोपकार का महत्व।

(ii) दूसरों के लिए अपना सर्वस्व बलिदान करना ही सच्ची मानवता है।

(iii) वृक्ष धूप, आँधी, वर्षा और तूफानों में डटकर खड़े रहते हैं और सब कुछ सहन करने के बावजूद मनुष्यों को अपनी शीतल छाया व रसदार फल प्रदान करके हमें परोपकार का सन्देश देते हैं।

(iv) सारांश—स्वार्थ एवं परमार्थ प्रवृत्तियों वाले मनुष्य का धर्म परोपकार करना है। मानव का प्रकृति के समान अपना सब कुछ परहित में बलिदान कर देना श्रेयस्कर है।

(9)

आप हमेशा अच्छी जिन्दगी जीते आ रहे हैं। आप हमेशा बढ़िया कपड़े, बढ़िया जूते, बढ़िया घड़ी, बढ़िया मोबाइल जैसे दिखावों पर बहुत खर्च करते हैं मगर आप अपने शरीर पर कितना खर्च करते हैं ? इसका मूल्यांकन जरूरी है। यह शरीर अनमोल है। अगर शरीर स्वस्थ नहीं होगा तो आप ये सारे सामान किस पर टाँगेंगे ? अत: स्वयं का स्वस्थ रहना सबसे जरूरी है एवं स्वस्थ रहने में हमारे खान-पान का सबसे बड़ा योगदान है।

प्रश्न—(i) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।

(ii) अनमोल क्या है ?

(iii) शुद्ध व असली शब्दों के विलोम शब्द लिखिए।

उत्तर—(i) शीर्षक—पहला सुख निरोगी काया।

(ii) मानव शरीर अनमोल है।

(iii) शुद्ध = अशुद्ध; असली = नकली।

2 अपठित पद्यांश

प्रश्न—निम्नलिखित अपठित पद्यांशों को पढ़कर उनके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

(1)

नर हो, न निराश करो मन को,
कुछ काम करो, कुछ काम करो।
जग में रहकर कुछ नाम करो॥
यह जन्म हुआ किस अर्थ अहो।
समझो, जिससे यह व्यर्थ न हो॥
कुछ तो उपयुक्त करो मन को।
नर हो, न निराश करो मन को॥

प्रश्न—(i) मनुष्य को क्या करना चाहिए ?

(ii) आदमी का जन्म किस उद्देश्य से हुआ है ?

(iii) इस पद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए।

उत्तर—(i) मनुष्य को आशा नहीं छोड़नी चाहिए। निराशा त्यागकर आदमी को किसी भी काम में लग जाना चाहिए।

(ii) आदमी का जन्म किसी विशेष कार्य के लिए हुआ है। इसे व्यर्थ न गँवाकर कुछ विशेष कार्य करके जाना है।

(iii) शीर्षक—नर हो न निराश करो मन को।

Scanned with CamScanner

(2)

तुम हो धरती के पुत्र, न हिम्मत हारो,
श्रम की पूँजी से अपना काज सँवारो।
श्रम के सीपी में ही वैभव ढुलता है,
तब स्वाभिमान का दीप स्वयं जलता है।
मिट जाता है दैन्य स्वयं ही क्षण में,
छा जाती है नव दीप्ति धरा के कण में।
जागो, जागो श्रम से नाता तुम जोड़ो,
पथ चुनो कर्म का, अलस भाव तुम छोड़ो।

प्रश्न—(i) प्रस्तुत पद्यांश का भाव समझाइए।
(ii) हमें अपने कार्य किस पूँजी से सँवारने हैं ?
(iii) स्वाभिमान का दीप कब जलता है ? *अथवा* स्वाभिमान की भावना कब जागती है ?
(iv) पद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।

उत्तर—(i) पद्यांश का भाव—मनुष्य को निराश न होकर साहस के साथ मेहनत से अपने कार्य सँभालने चाहिए। परिश्रम से सम्पन्नता एवं स्वाभिमान प्राप्त होता है। सारी हीनता मिट जाती है और नयी कान्ति आ जाती है। अत: आलस्य त्यागकर कर्म का मार्ग अपनाना चाहिए।
(ii) हमें अपने कार्य श्रम की पूँजी से सँवारने हैं।
(iii) श्रम के द्वारा सम्पन्नता होती है, तभी स्वाभिमान का दीप जलता है।
(iv) **शीर्षक**—श्रम की महत्ता।

(3)

भाग्यवाद आवरण पाप का, और शस्त्र शोषण का,
इससे रखता दबा एक जन भाग्य दूसरे जन का।
पूछो किसी भाग्यवादी से यदि विधि अंक प्रबल है,
पदतर क्यों देती न स्वयं, वसुधा निज रत्न उगल है।

प्रश्न—(i) उपर्युक्त पद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए।
(ii) पाप का आवरण किसे कहा गया है ?
(iii) 'कर्मवाद' का विलोम पद्यांश से चुनकर लिखिए।
(iv) उपर्युक्त पद्यांश का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर—(i) शीर्षक—भाग्यवाद आवरण पाप का।
(ii) पाप का आवरण भाग्यवाद को कहा गया है।
(iii) 'कर्मवाद' का विलोम 'भाग्यवाद' है।
(iv) **भावार्थ**—भाग्यवाद दूसरों का शोषण करने का हथियार है। सफलता के लिए तो कर्म की आवश्यकता होती है।

Scanned with CamScanner

अध्याय 13

पत्र-लेखन
(औपचारिक पत्र/अनौपचारिक पत्र)

पत्र दो प्रकार के होते हैं—(1) अनौपचारिक, (2) औपचारिक।

(1) अनौपचारिक पत्र—अपने निजी परिवारीजनों, रिश्तेदारों, सम्बन्धियों तथा मित्रों को लिखे जाने वाले पत्र अनौपचारिक पत्र कहे जाते हैं। ये पत्र व्यक्तिगत सम्बन्ध वालों को ही लिखे जाते हैं।

(2) औपचारिक पत्र—व्यक्तिगत सम्बन्धों के अतिरिक्त अन्य सभी प्रकार के पत्र, जैसे—विद्यालयीन पत्र, कार्यालयीन पत्र आदि औपचारिक पत्रों की कोटि में आते हैं।

1 अनौपचारिक पत्र-लेखन (पारिवारिक एवं सामाजिक पत्र)

प्रश्न 1. वार्षिक परीक्षा की तैयारी की जानकारी देते हुए अपने पिताजी को पत्र लिखिए।

अथवा

पिताजी को पत्र लिखकर अपनी शैक्षिक प्रगति एवं लक्ष्य से अवगत कराइए।

उत्तर—

105, गांधी आश्रम, शिवपुरी
दिनांक—27.1.20...

आदरणीय पिताजी,

सादर चरण स्पर्श।

मैं यहाँ पर सकुशल हूँ, आशा है आप भी पूरी तरह कुशल होंगे। मेरी परीक्षाएँ निकट आ रही हैं। मैं समय से अध्ययन में जुट गया था। अत: सभी विषयों की तैयारी अच्छी तरह हो गई है। थोड़ी-सी कठिनाई विज्ञान की तैयारी में हुई थी किन्तु मैंने पुस्तकालय से पुस्तकें लेकर अपना कार्य पूरा कर लिया है। अब मुझे विशेष चिन्ता नहीं है। विश्वास है कि विगत वर्षों की तरह इस वर्ष भी प्रथम श्रेणी के अंक प्राप्त करने में सफल रहूँगा।

पूज्य माताजी को चरण स्पर्श, छोटों को प्यार।

आपका आज्ञाकारी पुत्र
चेतन

प्रश्न 2. अपने बड़े भाई को पत्र लिखिए और उन्हें बताइए कि गर्मी की छुट्टियाँ किस प्रकार व्यतीत करना चाहते हैं ?

उत्तर—

20, अशोकनगर,
जबलपुर
दिनांक—1.3.20...

आदरणीय भाईसाहब,

सादर प्रणाम।

मैं यहाँ कुशल हूँ, आशा है कि आप सानन्द होंगे। आजकल मैं परीक्षा की तैयारी में लगा हूँ इसलिए पत्र लिखने में देरी हो गई है। मेरी परीक्षाएँ 7 मार्च से प्रारम्भ होंगी और 5 अप्रैल तक चलेंगी। परीक्षाएँ समाप्त होते ही विद्यालय की ओर से एक ग्रीष्मावकाश भ्रमण का आयोजन निश्चित किया गया है। भ्रमण के लिए सभी

Scanned with CamScanner

लोग कश्मीर जायेंगे। इसके लिए प्रत्येक विद्यार्थी को दो हजार रुपये जमा करने हैं। यात्रा, आवास और भोजन का प्रबन्ध इसी में से किया जायेगा। कुछ धनराशि विद्यालय लगायेगा। मैं इस भ्रमण में जाना चाहता हूँ। अत: आप तीन हजार रुपये भिजवाने की कृपा करें ताकि मैं रुपये जमा कर सकूँ।

घर पर माताजी, पिताजी को चरण-स्पर्श, भाभीजी को प्रणाम, प्रिय चिन्मय को प्यार।

आपका अनुज
धीरज

प्रश्न 3. अपने बड़े भाई के विवाह में सम्मिलित होने के लिए अपने मित्र को आमन्त्रण पत्र लिखिए।

उत्तर—

16, माधव कुंज, ग्वालियर (म. प्र.)
दिनांक—10.01.20...

प्रिय मित्र स्वप्निल,

सप्रेम नमस्कार।

शुभ समाचार यह है कि मेरे बड़े भाई श्री सुरेश कुमार का शुभ विवाह दिनांक 24 जनवरी 20.... को होना निश्चित हुआ है। तुम तो जानते ही हो कि ऐसे शुभ अवसर पर तुम्हारा आगमन मेरे लिए कितना सुखद और आनन्ददायक होगा। तुम्हें इस विवाह में वैवाहिक कार्यक्रमों से पूर्व ही आना होगा। निमन्त्रण पत्र छपते ही तुम्हें भेज दूँगा। तुम इसी निमन्त्रण को स्वीकार कर पधारने का कष्ट करना।

पिताजी और माताजी को चरण-स्पर्श।

तुम्हारा अभिन्न मित्र,
अखिलेश

प्रश्न 4. प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होने पर अपने मित्र को बधाई पत्र लिखिए।

उत्तर—

18, कबीर कॉलोनी, भोपाल
दिनांक—15-6-20....

प्रिय संजय,

सस्नेह।

राहुल के पत्र से पता लगा कि तुमने कक्षा 10 की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कर ली है। यह समाचार पढ़ते ही मेरा हृदय प्रसन्नता से भर उठा। इस सफलता के लिए मेरी हार्दिक बधाई। ईश्वर तुम्हें और अधिक सफलताएँ प्रदान करें। तुम जीवन की हर परीक्षा में सफल हो। अन्य समाचार लिखना।

अपने माताजी-पिताजी को मेरा चरण-स्पर्श कहना।

तुम्हारा मित्र,
रमन

प्रश्न 5. अपनी सहेली को पत्र लिखिए तथा उसे स्वास्थ्य का ध्यान रखने का परामर्श दीजिए।

उत्तर—

सहेली को पत्र

12, प्रेमनगर
ग्वालियर
दिनांक : 20.05.20....

मेरी प्रिय आशना

सप्रेम नमस्कार।

मैं यहाँ पूरी तरह ठीक हूँ। तुमने बहुत दिन से कोई समाचार नहीं दिया है। कल माताजी ने बताया कि

Scanned with CamScanner

तुम कई दिन से अस्वस्थ हो। मुझे लगता है तुम पढ़ने में तथा घर के कामों में व्यस्त रहती हो। अपने स्वास्थ्य पर बिल्कुल ध्यान नहीं देती हो। घर के काम तथा पढ़ना जरूरी है लेकिन काम तब ही हो पाएँगे जब तुम स्वस्थ होगी।

इसलिए तुम समय पर सोना, समय पर जगना, खाना खाना तथा फल खाना आदि नियमों का पालन किया करो। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ दिमाग होता है। अतः स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रखना चाहिए। पत्र का उत्तर देना तथा अपने स्वास्थ्य के बारे में बताना।

पिताजी, माताजी को सादर प्रणाम, भैया को स्नेह।

तुम्हारी सहेली
कामना

प्रश्न 6. अपने जन्मदिन पर सम्मिलित होने हेतु मित्र को आमंत्रण-पत्र लिखिए।

उत्तर—

आमंत्रण पत्र

20 वैभव नगर
इन्दौर
दिनांक : 15-9-20....

प्रिय मित्र अंकुश,

सप्रेम हृदय स्पर्श।

तुम्हें सूचित करते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है कि पिताजी ने इस बार जन्मदिन उल्लास के साथ मनाने का निश्चय किया। तुम्हारे बिना यह उत्सव अधूरा ही रहेगा। अतः तुम्हें 12 अक्टूबर को इस समारोह में सम्मिलित होने के लिए अवश्य आना है। एक दिन पहले आ जाओगे तो मुझे अच्छा लगेगा।

पिताजी एवं माताजी को चरण स्पर्श, छुटकी को स्नेह।

तुम्हारा मित्र
संजय

2 औपचारिक पत्र (विद्यालयी एवं कार्यालयी पत्र)

प्रश्न 1. अपने विद्यालय के प्राचार्य को शुल्क मुक्ति के लिए आवेदन कीजिए।

अथवा

अपने प्राचार्य को आवेदन-पत्र लिखिए, जिसमें अपनी गरीबी का कारण दर्शाते हुए परीक्षा शुल्क से मुक्ति का निवेदन किया गया हो।

उत्तर—

श्रीमान् प्राचार्य महोदय,
शासकीय उच्चतर मा. वि.,
बिलासपुर।

विषय—शाला शुल्क एवं परीक्षा शुल्क से मुक्ति के सम्बन्ध में।

मान्यवर,

सविनय निवेदन है कि मैं आपके विद्यालय में कक्षा 10 का छात्र हूँ। मेरे पिताजी एक स्थान पर प्राइवेट नौकरी करते हैं। उनकी मासिक आय अत्यन्त सीमित है। इतने कम वेतन से परिवार की रोजी-रोटी की समस्या भी कठिनाई से हल हो पाती है। पिताजी के पास पैसे की कमी होने के कारण मैं अपनी शाला शुल्क देने में असमर्थ हूँ। अतः आपसे हाथ जोड़कर प्रार्थना है कि आप मेरी इन परिस्थितियों को दृष्टिपथ में रखते हुए शाला शुल्क तथा परीक्षा शुल्क से मुक्त करने की कृपा करें।

Scanned with CamScanner

इस विषय में जो भी शाला के नियम हैं वह मुझे स्वीकार हैं। इस कृपा के लिए मैं आपका आजीवन आभारी रहूँगा।

दिनांक 15-10-20....

प्रार्थी
आदित्य
कक्षा X B

प्रश्न 2. अपने प्राचार्य को शाला छोड़ने पर स्थानान्तरण प्रमाण-पत्र (T.C.) देने हेतु आवेदन-पत्र लिखिए।

उत्तर—

दिनांक—25-7-20....

सेवा में,
श्रीमान् प्राचार्य महोदय,
शासकीय उच्चतर मा. वि.,
ग्वालियर।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि प्रार्थी ने आपके विद्यालय से कक्षा 9 की परीक्षा उत्तम अंक लेकर उत्तीर्ण की है। संयोगवश मेरे पिताजी का स्थानान्तरण मुरैना हो गया है। इस हेतु मैं आपके आदर्श विद्यालय में आगे अध्ययन करने में असमर्थ हूँ।

अत: मुझे अन्यत्र पढ़ने हेतु शाला त्याग प्रमाण-पत्र प्रदान करने की कृपा करें।

आपका आज्ञाकारी शिष्य
कनिष्क
कक्षा 9 ब

प्रश्न 3. प्राचार्य महोदय को बुक-बैंक से पुस्तकें देने के लिए प्रार्थना-पत्र लिखिए।

उत्तर—

सेवा में,
श्रीमान् प्राचार्य महोदय,
शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय,
भोपाल।

महोदय,

विनम्र निवेदन यह है कि मैं आपके विद्यालय में कक्षा 10 'स' का नियमित विद्यार्थी हूँ। मेरे पिताजी एक फैक्ट्री में ₹ 600/- मासिक वेतन पर कार्यरत हैं। इतने कम वेतन से परिवार का लालन-पालन बड़ी कठिनाई से होता है। पिताजी की आय कम होने के फलस्वरूप मैं विद्यालय की पाठ्य-पुस्तकें खरीदने में भी असमर्थ हूँ।

अत: श्रीमान् जी से करबद्ध प्रार्थना है कि मुझे बुक-बैंक से पुस्तकें प्रदत्त करने का आदेश पारित करें। इस संदर्भ में विद्यालय के जो भी नियम होंगे, उनका मैं पूरी तरह पालन करूँगा। इस महती कृपा के लिए मैं आपका आजन्म आभारी रहूँगा।

सधन्यवाद

दिनांक 6-9-20....

प्रार्थी
कनिष्क
कक्षा 10 स

Scanned with CamScanner

प्रश्न 4. परीक्षा काल में ध्वनि-विस्तारक यन्त्रों के बजाने पर रोक लगाने हेतु जिलाधिकारी महोदय को पत्र लिखिए।

उत्तर—

H-4/26 हीरा बाग,
भोपाल (म. प्र.)

सेवा में,
जिलाधीश महोदय,
भोपाल।

मान्यवर,

सविनय निवेदन है कि मैं आपका ध्यान 'ज्ञान सरोवर कॉलोनी', हीराबाग में ध्वनि-विस्तारक यन्त्रों की तीव्र एवं कर्णभेदी ध्वनि से उत्पन्न समस्या की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। इस समय माध्यमिक शिक्षा मण्डल की हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट की परीक्षाएँ प्रारम्भ होने को हैं, यही समय छात्रों के अध्ययन का है। परीक्षा काल में ध्वनि-विस्तारक यन्त्रों के शोर के कारण अध्ययन में व्यवधान पड़ रहा है। चित्त की एकाग्रता भंग होने के कारण छात्रों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।

अत: आपसे प्रार्थना है कि अविलम्ब ध्वनि-विस्तारक यन्त्रों के बजने पर प्रतिबन्ध लगाने का निर्देश पारित कर छात्रों को अनुगृहीत करें।

भवदीय,
प्रशान्त व्यास

दिनांक 15-10-20....

प्रश्न 5. नगर निगम को एक आवेदन-पत्र लिखिए जिसमें नालियों की सफाई एवं कीटनाशक दवाओं के छिड़काव का सुझाव हो। ***अथवा***

अपने शहर के नगरपालिका अधिकारी को आवेदन-पत्र लिखते हुए वार्ड में व्याप्त गन्दगी को दूर करने का निवेदन कीजिए।

उत्तर—

44/B दौलतगंज, ग्वालियर (म. प्र.)
दिनांक 20-10-20...

सेवा में,
श्रीमान् प्रशासक महोदय,
नगर निगम, ग्वालियर।

मान्यवर,

सविनय निवेदन है कि दौलतगंज की नालियों में नियमानुसार सफाई की उचित व्यवस्था न होने के कारण मच्छरों एवं मक्खियों का प्रकोप है। फलस्वरूप कॉलोनी के लोगों में बीमारी फैलने का भय है।

अत: आपसे प्रार्थना है कि नालियों की सफाई की उचित व्यवस्था कराने एवं कीटनाशक दवाई के छिड़काव कराने की शीघ्र व्यवस्था करने की कृपा करें।

इसके लिए हम सब आपके आभारी रहेंगे।

भवदीय
श्यामकान्त,
15, खेड़ापति कॉलोनी, ग्वालियर

प्रश्न 6. क्षेत्रीय अधिकारी, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, म.प्र. भोपाल को दसवीं बोर्ड परीक्षा की अंक सूची की द्वितीय प्रति प्राप्त करने हेतु एक आवेदन-पत्र लिखिए।

Scanned with CamScanner

उत्तर—

24-9-20....

प्रति

सचिव,
माध्यमिक शिक्षा मण्डल, भोपाल (म. प्र.)

विषय—अंक पत्र की द्वितीय प्रति भेजने के संदर्भ में।

मान्यवर,

सविनय निवेदन है कि मेरी कक्षा 10 की अंक सूची वास्तव में खो गयी है। मैंने यह परीक्षा सन् 2007 में दी थी। कृपया मुझे अंक सूची की द्वितीय प्रति भेजने की कृपा करें। इसके लिए निश्चित शुल्क ₹ 50 का बैंक ड्राफ्ट नं. 48902 आपके नाम से प्रेषित कर रहा हूँ।

(1) नाम—प्रफुल कुमार
(2) पिता का नाम—श्री सन्त कुमार
(3) परीक्षा—दसवीं बोर्ड 2017
(4) परीक्षा केन्द्र—शा. उ. मा. वि., ग्वालियर
(5) परीक्षा क्रमांक—78432
(6) अनुक्रमांक—3215459
(7) पूरा पता—प्रफुल कुमार पुत्र श्री सन्त कुमार
मोहल्ला—कोटला हाउस, ग्वालियर (म. प्र.) पिन—543221
(8) संलग्न बैंक ड्राफ्ट—₹ 50/-

प्रार्थी
प्रफुल कुमार

अध्याय 14

संवाद लेखन

संवाद—दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच होने वाले संभाषण को संवाद कहते हैं। संवाद जितना सहज, स्वाभाविक तथा सजीव होगा उतना ही अच्छा माना जाएगा। व्यक्ति अपने विचारों या भावों को व्यक्त करने के लिए संवाद का सहारा लेते हैं।

संवाद जितना जीवन्त, सहज तथा रोचक होगा उतना ही प्रभावित करेगा। अच्छी बातें सभी सुनना पसन्द करते हैं।

(1) कम्प्यूटर का आविष्कार (विद्यार्थी और शिक्षक का संवाद)

विद्यार्थी—सर, आज हमें विज्ञान द्वारा खोजे गए कम्प्यूटर के बारे में बताने की कृपा करें।

शिक्षक—आज का युग वैज्ञानिक युग है। तकनीक के नित नये आविष्कार निरन्तर सामने आ रहे हैं। 'कम्प्यूटर' इन्हीं खोजों में से एक है।

विद्यार्थी—इतना महत्वपूर्ण कम्प्यूटर है क्या, यह तो बताइए।

शिक्षक—सुनिए, कम्प्यूटर एक यान्त्रिक मस्तिष्क है, जो बहुत ही कम समय में गणना करके तथ्यों को उपस्थित कर देता है।

Scanned with CamScanner

विद्यार्थी—सर, इसकी खोज कैसे हुई ?

शिक्षक—यह बात 1000 ई. पू. की है जब जापान में ऐबेकस नामक यन्त्र तैयार किया गया। इसके माध्यम से गणित के प्रश्नों को हल किया जाता था। फ्रांस के एक प्रतिभाशाली युवक ने सन् 1673 ई. में कम्प्यूटर को बनाकर तैयार किया। इस कम्प्यूटर से छोटे-छोटे पहिए सम्बद्ध थे।

विद्यार्थी—आज तो उसमें पहिए नहीं हैं। आधुनिक कम्प्यूटर किसने तैयार किया ?

शिक्षक—आधुनिक कम्प्यूटर के आविष्कार का श्रेय इंग्लैण्ड के चार्ल्स बैवेज को जाता है। यह बहुत ही कुशल गणितज्ञ थे। उन्होंने यह कार्य 1833 ई. में सम्पन्न किया।

विद्यार्थी—धन्यवाद सर, आपने हमें नई जानकारी दी।

(2) कम्प्यूटर का उपयोग (शिक्षक-विद्यार्थी के मध्य संवाद)

विद्यार्थी—गुरुजी, आपने कल कम्प्यूटर के आविष्कार की जानकारी दी थी। ये तो बताइए कि इसका उपयोग क्या है ?

शिक्षक—बेटे, आज कम्प्यूटर हर क्षेत्र में बहुत उपयोगी है।

विद्यार्थी—क्या यह उद्योगों और कारखानों में काम आता है ?

शिक्षक—औद्योगिक क्षेत्र में मशीनों तथा कारखानों का संचालन करने के लिए कम्प्यूटर को प्रयोग में लाया जा रहा है। इससे विविध प्रकार के कार्य किये जा रहे हैं।

विद्यार्थी—गुरुजी, सूचनाओं में इसका क्या उपयोग है ?

शिक्षक—सूचना एवं समाचार प्रेषण के संदर्भ में भी कम्प्यूटर महती सेवा प्रदान कर रहा है। 'कम्प्यूटर नेटवर्क' के द्वारा विश्व भर के नगर एक-दूसरे से एक परिवार की भाँति जुड़ गये हैं।

विद्यार्थी—हम देखते हैं कि बैंकों में भी कम्प्यूटर काम कर रहे हैं ?

शिक्षक—बैंकों में हिसाब-किताब रखने के लिए कम्प्यूटर का पर्याप्त मात्रा में प्रयोग हो रहा है। यही नहीं, घर के कम्प्यूटरों को बैंकों के कम्प्यूटरों से सम्बद्ध कर दिया जाता है।

विद्यार्थी—क्या कम्प्यूटर अन्तरिक्ष विज्ञान में भी उपयोगी है?

शिक्षक—हाँ, अन्तरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में कम्प्यूटर बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ है। विभिन्न स्थितियों के चित्र एकत्र करने में यह सफल रहा है।

विद्यार्थी—इसका मतलब है कि कम्प्यूटर जीवन के सभी क्षेत्रों में आवश्यक हो गया है।

शिक्षक—तुम ठीक कह रहे हो। आज जिन्दगी का कोई ऐसा पक्ष नहीं है जहाँ कम्प्यूटर का प्रयोग न हो रहा हो। शिक्षा, चिकित्सा, युद्ध, मौसम, चुनाव आदि सभी क्षेत्रों में कम्प्यूटर आवश्यक हो गया है।

विद्यार्थी—धन्यवाद गुरुजी, आज आपने हमें कम्प्यूटर के महत्व को बता दिया। अभी तक तो हम इसे खेलने, सिनेमा देखने तथा गाने सुनने का ही साधन मानते थे।

शिक्षक—अब तुम इससे संसार भर का ज्ञान प्राप्त करना प्रारम्भ कर दो। यह भविष्य में और भी उपयोगी होगा।

(3) आतंकवाद (कुछ व्यक्तियों का संवाद)

रामेश्वर—भाई, आज भारत में कई समस्याएँ हैं किन्तु आतंकवाद सबसे बड़ी समस्या है।

सोमेश्वर—तुम ठीक कह रहे हो, दुष्ट स्वभाव के स्वार्थी तत्व आतंक के द्वारा शान्ति भंग करने के काम करते ही रहते हैं।

राकेश—यह आतंकवाद हमारे ही देश में है या सभी देशों में फैला है।

सोमेश्वर—भारत ही नहीं आतंकवादी घटनाओं से संसार के सभी देश परेशान हैं। अमेरिका, ईरान, ब्रिटेन, इजरायल, अफगानिस्तान आदि देश लगातार इससे जूझ रहे हैं।

रामेश्वर—भारत में भी कश्मीर, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, असम, मणिपुर, नागालैण्ड आदि प्रदेशों में दिल दहलाने वाली आतंकवादी गतिविधियाँ/घटनाएँ होती रहती हैं।

Scanned with CamScanner

सोमेश्वर—अरे तुम्हें याद नहीं है! इन्दिरा गांधी, राजीव गांधी, श्रीधर वैद्य, दीनदयाल उपाध्याय आदि की हत्या आतंकवादियों ने ही की थी। इन्होंने ही संसद पर हमला किया था। कश्मीर के पंडितों ने आतंकवादियों से डरकर कश्मीर ही छोड़ दिया। वर्ष 2019 में कश्मीर के पुलवामा में आतंकवादियों के हमले में सी. आर. पी. एफ. के चालीस जवान शहीद हो चुके हैं।

रामेश्वर—यह तो दर्दनाक है किन्तु हमारे जवान भी आतंकवाद का करारा जवाब दे रहे हैं। वर्ष 2019 में 157, वर्ष 2020 में 25 और वर्ष 2021 में 20 से अधिक आतंकवादी मारे जा चुके हैं।

राकेश—ये आतंकवादी ऐसी भयंकर घटनाएँ करते कैसे हैं ?

सोमेश्वर—आतंकवादी हिंसक कार्यवाही, अपहरण, बम विस्फोट आदि के द्वारा जनता में भय पैदा कर दबाव बनाते हैं और मनमानी करने का प्रयास करते हैं। पड़ोसी देश पाकिस्तान इन्हें संरक्षण देता है।

राकेश—इस समस्या से छुटकारा किस तरह मिलेगा ?

रामेश्वर—यह विश्वव्यापी समस्या है। उसके विरुद्ध अमेरिका, इंग्लैण्ड, कनाडा आदि देश आवाज उठा रहे हैं। आतंकवाद को संरक्षण देने वाले देशों पर दबाव बनाया जा रहा है। संयुक्त राष्ट्र संघ भी इसके विरुद्ध सक्रिय हैं। विश्वास है कि भविष्य में इन गतिविधियों पर नियन्त्रण हो जाएगा।

सोमेश्वर—विकास तथा प्रगति में बाधक आतंकवाद का विरोध हर स्तर पर किया जाना चाहिए, तभी इससे छुटकारा मिल सकेगा।

(4) इण्टरनेट (भाई तथा बहन का संवाद)

श्याम—आज हमें कक्षा में इण्टरनेट के बारे में बताया गया। वास्तव में इण्टरनेट तो बहुत कमाल की चीज है।

राधा—भैया, हमें भी बताओ कि इण्टरनेट क्या है ?

श्याम—राधा बहन, इण्टरनेट पूरे विश्व में फैले कम्प्यूटरों का नेटवर्क है। इस पर कम्प्यूटर के माध्यम से घर, बाहर यहाँ तक कि सारे संसार की जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

राधा—भैया, यह तो बताओ कि यह काम कैसे करता है ?

श्याम—इण्टरनेट अत्याधुनिक संचार प्रौद्योगिकी है जिसमें अनगिनत कम्प्यूटर एक नेटवर्क से जुड़े होते हैं। इण्टरनेट न कोई सॉफ्टवेयर है, न कोई प्रोग्राम अपितु यह तो एक ऐसा स्थान है जहाँ अनेक सूचनाएँ तथा जानकारियाँ उपकरणों की सहायता से मिलती हैं।

राधा—भैया, इसके लाभ भी तो बताओ, इसके बहुत से लाभ होते होंगे।

श्याम—प्यारी बहिन, इण्टरनेट के द्वारा विभिन्न प्रकार के दस्तावेज, सूची, विज्ञापन, समाचार, सूचनाएँ आदि उपलब्ध होती हैं। ये संसार में कहीं पर भी प्राप्त की जा सकती हैं। पुस्तकों में लिखे विषय, समाचार-पत्र, संगीत आदि सभी इण्टरनेट के माध्यम से प्राप्त किये जाते हैं। इसके द्वारा संसार के किसी भी कोने से कहीं पर भी सूचना प्राप्त की जा सकती हैं और भेजी जा सकती हैं।

राधा—भैया, इतना लाभदायक इण्टरनेट तो कई क्षेत्रों में काम करता होगा ?

श्याम—प्यारी बहिन, इण्टरनेट आज की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। त्वरित सूचना के इस युग में इण्टरनेट अत्यन्त आवश्यक है। शिक्षा, स्वास्थ्य, यात्रा, पंजीकरण, आवेदन आदि सभी कार्यों में इण्टरनेट सहयोगी है। पढ़ने वाली दुर्लभ पुस्तकों को संसार के किसी भी कोने में पढ़ा जा सकता है। स्वास्थ्य सम्बन्धी विस्तृत जानकारियाँ इण्टरनेट पर उपलब्ध होती हैं। इण्टरनेट के द्वारा संसार के किसी भी विशिष्ट व्यक्ति के विषय में जाना जा सकता है। सभी प्रकार के टिकट घर बैठे इण्टरनेट से लिये जा सकते हैं। दैनिक जीवन की समस्याओं को भी हल करने वाला इण्टरनेट आज के जीवन की अनिवार्यता बन गया है।

राधा—भैया, मैं भी पिताजी से कहूँगी कि मुझे भी इण्टरनेट की शिक्षा दिलाएँ।

श्याम—मैं भी पिताजी को बताऊँगा कि आज की सूचना प्रौद्योगिकी दुनिया में सुविधापूर्वक रहना है तो इण्टरनेट बहुत उपयोगी है। हमें अपने कामों में इण्टरनेट का सहयोग लेना चाहिए। इससे कार्यक्षमता बढ़ेगी, काम ठीक तथा शीघ्र होगा और जीवन सुखद बनेगा।

Scanned with CamScanner

(5) दीपावली (बेटे तथा माँ का संवाद)

अथवा

किसी त्यौहार का वर्णन

बेटा—माँ, दीपावली कब आएगी ?

माँ—बेटे, दीपावली कार्तिक माह में आएगी।

बेटा—यह कितने दिन का त्यौहार होता है?

माँ—बेटा, यह पाँच दिन का त्यौहार होता है।

बेटा—पहले दिन क्या होता है ?

माँ—पहले दिन त्रयोदशी को वैद्यराज धनवंतरि की पूजा होती है।

बेटा—दूसरे दिन क्या करते हैं ?

माँ—दूसरे दिन चतुर्दशी को छोटी दीपावली मनाते हैं।

बेटा—और तीसरे दिन क्या किया जाता है ?

माँ—तीसरे दिन दीपावली होती है। इस दिन सरस्वती जी तथा लक्ष्मी जी की पूजा करते हैं।

बेटा—दीपावली पर तो मिठाई बाँटी जाती है ?

माँ—हाँ बेटा, दीपावली के दिन पकवान, मिठाई आदि बनते हैं और घर-परिवार में मिठाई बाँटी जाती है।

बेटा—चौथे दिन किसकी पूजा की जाती है ?

माँ—चौथे दिन गोवर्धन जी का पूजन होता है और पाँचवें दिन भैया दूज मनाई जाती है।

बेटा—माँ, यह त्यौहार तो बहुत अच्छा है। कई पकवान, मिठाई आदि खाने को मिलते हैं।

(6) राष्ट्रीय पर्व : 15 अगस्त (पिता तथा बेटे का संवाद)

अथवा

स्वतन्त्रता-दिवस पर संवाद

बेटा—पिताजी, कल 15 अगस्त है, इस दिन क्या हुआ था ?

पिता—बेटे, इस दिन हमारा देश स्वतन्त्र हुआ था।

बेटा—किससे स्वतन्त्र हुआ था ?

पिता—ब्रिटिश शासन की गुलामी से, अंग्रेजी सत्ता की दासता से।

बेटा—तब यह बहुत ही उल्लास का दिन है। उस दिन क्या होगा ?

पिता—इस दिन सारे देश में खुशियाँ मनाई जाती हैं, झंडा फहराते हैं, देशभक्तों को याद करते हैं।

बेटा—ये आयोजन कब से होते हैं ?

पिता—प्रात: जगते ही प्रभात फेरी लगाते हैं बलिदानियों की याद में नारे लगाते हैं।

बेटा—इसके बाद क्या होता है ?

पिता—इसके बाद विद्यालयों, पंचायतघरों, सरकारी कार्यालयों पर झण्डा फहराते हैं।

बेटा—भाषण कौन देते हैं ?

पिता—गुरुजन, नेता तथा महान व्यक्ति झंडारोहण के बाद भाषण देते हैं।

बेटा—और क्या-क्या होता है ?

पिता—स्कूलों में खेलकूद, कविता पाठ, नाटक, गीत-संगीत के आयोजन होते हैं।

बेटा—इस तरह तो कल का दिन वास्तव में खुशी तथा उल्लास का दिन होगा। मैं भी अपने विद्यालय के आयोजनों में भाग लूँगा।

Scanned with CamScanner

(7) कोरोना वायरस (डॉक्टर तथा नागरिक का संवाद)

नागरिक—डॉक्टर साहब कोरोना वायरस का संक्रमण कैसे हुआ ?

डॉक्टर—कोरोना वायरस चीन के वुहान शहर से प्रारम्भ होकर आने जाने वालों के द्वारा दुनिया में फैलता चला गया।

नागरिक—इस संक्रमण के लक्षण क्या हैं ?

डॉक्टर—बुखार, खाँसी, साँस में तकलीफ आदि इसके लक्षण हैं।

नागरिक—इस संक्रमण से कैसे बचा जा सकता है ?

डॉक्टर—इस संक्रमण से बचने के लिए हाथ धोना, मास्क लगाना, लोगों से दूरी बनाना, सेनेटाइजर का प्रयोग करना आदि आवश्यक हैं।

नागरिक—डॉक्टर साहब इसके उपचार के टीके भी आ गए हैं क्या ?

डॉक्टर—अभी तक इसके कोवैक्सीन, कोविशील्ड टीके आए हैं। उनका परिणाम अच्छा रहा है। स्पुतनिक टीका भी उपलब्ध है।

नागरिक—तब तो लगता है कोरोना वायरस पर नियन्त्रण कर लिया जाएगा।

डॉक्टर—आप सही कह रहे हैं। चिकित्सा सेवा के डॉक्टर तथा अन्य सभी कर्मचारी इसको रोकने में लगे हैं। विश्वास है इसे रोक लिया जाएगा।

(8) जनसंख्या समस्या (डॉक्टर तथा महिला का संवाद)

महिला—डॉक्टर सहाब यह मेरा तीसरा बच्चा है। यह बहुत कमजोर है।

डॉक्टर—आप लोग बच्चों पर ध्यान नहीं देते हैं। दो से अधिक सन्तान ठीक नहीं है।

महिला—डॉक्टर साहब, अधिक बच्चे तो भगवान का वरदान हैं।

डॉक्टर—अधिक बच्चे वरदान नहीं, शाप हैं। इससे जनसंख्या बढ़ती है।

महिला—जनसंख्या बढ़ने में क्या नुकसान है ?

डॉक्टर—जनसंख्या बढ़ने से गरीबी बढ़ती है, बीमारी फैलती है तथा समस्याएँ बढ़ती हैं।

महिला—मेरी यह बेटी इसीलिए बीमार रहती है क्या ?

डॉक्टर—जब आपकी सन्तान ज्यादा होंगी, सबको भोजन नहीं मिलेगा तो कमजोर होंगे ही।

महिला—डॉक्टर साहब कहाँ से खिलाएँ-पिलाएँ गरीब आदमी हैं।

डॉक्टर—इसीलिए तो कहता हूँ कम सन्तान होगी तो स्वस्थ रहेगी।

महिला—इसका उपाय तो बताइए।

डॉक्टर—परिवार नियोजन की आशा बहन से मिल लेना। वे इसका उपाय बता देंगी।

महिला—डॉक्टर साहब, मैं आज ही उनके पास जाऊँगी।

डॉक्टर—जनसंख्या समस्या हल होगी तो सभी खुश रहेंगे।

महिला—डॉक्टर साहब धन्यवाद।

(9) प्रिय खेल क्रिकेट (दो मित्रों का संवाद)

सोहन—भाई, आज तो क्रिकेट खेलेंगे।

प्रताप—हाँ, भाई, मन तो मेरा भी क्रिकेट खेलने का है, पर खेलेंगे कहाँ ?

सोहन—हमारे विद्यालय के मैदान में खेलेंगे।

प्रताप—वहाँ खेलने देंगे ? कोई रोकेगा तो नहीं।

सोहन—मैंने प्रधानाचार्य जी से अनुमति ले ली हैं।

प्रताप—तो तुम अपने छः साथियों को बुला लो बाकी तो यहाँ के हमारे साथी होंगे।

सोहन—शाम को चार बजे सभी इकट्ठे होकर चलेंगे।

प्रताप—क्रिकेट मेरा प्रिय खेल है।

Scanned with CamScanner

सोहन—मैं भी अपने विद्यालय की क्रिकेट टीम का कप्तान हूँ। मुझे क्रिकेट से बहुत प्रेम है।

प्रताप—हमारे विद्यालय की क्रिकेट की टीम भी कम नहीं है। मेरी कप्तानी में शिक्षा निकेतन की टीम को हरा चुके हैं।

सोहन—शिक्षा निकेतन के कई विद्यार्थी क्रिकेट के अच्छे खिलाड़ी हैं।

प्रताप—अच्छा भाई, शाम को चार बजे मैदान पर मिलते हैं।

सोहन—हाँ भाई, आज मजा आ जाएगा।

(10) दूरदर्शन (पति-पत्नी का संवाद)

पति—तुम पूरे दिन टी. वी. के सामने ही जमी रहती हो।

पत्नी—तुम ठीक कह रहे हो। टी. वी. वास्तव में सबसे सुलभ मनोरंजन है।

पति—केवल मनोरंजन ही नहीं उसमें शिक्षा, धर्म, विज्ञान आदि सभी के कार्यक्रम आते हैं।

पत्नी—हाँ, हमारी बेटी भी इसी से साइंस पढ़ती है।

पति—साइंस ही नहीं और सभी विषयों की पढ़ाई भी दूरदर्शन पर आती है।

पत्नी—मुझे तो मनोरंजन के साथ प्रवचन तथा भागवत, रामायण के कार्यक्रम अच्छे लगते हैं।

पति—कौन बनेगा करोड़पति भी तो देखती हो।

पत्नी—हाँ, इसमें नई-नई जानकारी आती हैं। अमिताभ जी की आवाज सुनकर बड़ा अच्छा लगता है।

पति—दूरदर्शन के बहुत लाभ हैं। पर इससे कुछ हानि भी होती हैं।

पत्नी—इससे हानि क्या होती है ?

पति—अगर टी. वी. सारे दिन चलता रहेगा तो बच्चों का पढ़ने में मन कैसे लगेगा ?

पत्नी—हाँ, यह तो ठीक कह रहे हैं।

पति—यह ही नहीं, लगातार देखने से स्वास्थ्य पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है, आँखों पर असर पड़ता है।

पत्नी—लगता है तभी मेरी नजर कमजोर हो गई है।

पति—इसलिए कम समय ही टी. वी. देखना लाभदायक है।

अध्याय 15

अनुच्छेद लेखन

अनुच्छेद लेखन से विद्यार्थी में सोचने-समझने तथा अभिव्यक्त करने की समझ विकसित होती है। इसके अतिरिक्त विस्तृत विषय को संक्षेप में कहना आता है। भाषा से ज्ञान की वृद्धि होती है तथा दूसरों को प्रभावित करने की क्षमता बढ़ती है। इसके द्वारा अपनी बात को स्पष्ट करना एवं सीखने के साथ-साथ विषय का ज्ञान भी बढ़ता है।

अनुच्छेद लेखन के उदाहरण

(1) राष्ट्रीय एकता

राष्ट्र का निर्माण करने वाले तत्व—भूमि, उस पर निवास करने वाले मनुष्य एवं उनकी संस्कृति हैं। राष्ट्र की भूमि से वहाँ के निवासियों का गहरा प्यार होता है। इसी कारण वे सब मिल-जुलकर रहते हैं। धर्म,

Scanned with CamScanner

जाति, सम्प्रदाय अलग होने पर भी सबका मन एक होता है। मातृभूमि सबको बाँधे रखती है। यदि कोई विग्रह करने का प्रयत्न करता है तो उसका विरोध सभी मिलकर करते हैं। राष्ट्र का प्रत्येक खण्ड प्राणों से प्रिय होता है। एकता के बल पर वे राष्ट्र को सुरक्षित रखते हैं।

(2) मेरा विद्यालय

मेरा विद्यालय नगर का सबसे अच्छा विद्यालय है। यह बहुत पुराना होने के साथ-साथ बहुत अच्छा शिक्षा का केन्द्र भी है। यहाँ के विद्यार्थी प्रदेश में तथा देश में अच्छे-अच्छे पदों पर कार्य कर रहे हैं। यहाँ के विद्यार्थियों का प्रतिवर्ष चिकित्सा तथा इंजीनियरिंग के क्षेत्र में अच्छा प्रवेश होता है। पिछले वर्ष कई विद्यार्थी आई. आई. टी. में चयनित हुए थे। इसके अतिरिक्त खेलकूद, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि में भी मेरे विद्यालय के छात्र अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हैं। इसी वर्ष हमारे विद्यालय की क्रिकेट टीम ने प्रदेश में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

(3) आधुनिक भारत

मेरा देश भारत संसार का सिरमौर रहा है। इसे दुनिया को शिक्षित करने का गौरव प्राप्त है। इसीलिए यह ज्ञान गुरु कहलाता है। इसका अतीत जितना गरिमामय रहा है वर्तमान भी उतना ही महिमाशाली है। इक्कीसवीं सदी का भारत शक्ति, शिक्षा, संस्कृति तथा विज्ञान के क्षेत्र में लगातार आगे बढ़ रहा है। संसार के विकासशील देशों में भारत सबसे आगे है। संसार के सबसे बड़े लोकतन्त्र के रूप में यह कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। कृषि, व्यापार, उद्योग-धन्धे आदि में भारत का काफी योगदान है। यह देश अग्रणी है। यहाँ के लोग मिल-जुलकर आगे बढ़ने में लगे हैं। आधुनिक भारत विश्व में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

(4) मूल्य वृद्धि या महँगाई समस्या

बाजार में प्रत्येक चीज के मूल्य बढ़ गए हैं। इससे आम आदमी का जीवन कष्टमय हो गया है। खाने-पीने की सामग्री बहुत महँगी हो गई हैं। ऐसी स्थिति में शासन को कीमतों पर नियन्त्रण करना चाहिए। किन्तु देखा जा रहा है कि अधिकारियों का इस ओर ध्यान ही नहीं है। व्यापारी मनमाने दामों में सामान बेच रहे हैं। दवाओं की कीमतें तो आसमान छू रही हैं। जीवन रक्षक दवाएँ तो मिलती ही नहीं हैं और मिलती हैं तो ऊने-दूने दामों में। यही स्थिति सभी चीजों की हो गई है। यदि कीमतों को नहीं रोका गया तो सामाजिक विस्फोट हो जाएगा।

(5) बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ

कहते हैं बेटा भाग्य है तो बेटी सौभाग्य। बेटी ही विभिन्न रूपों में समाज की सेवा करती है, सम्पन्नता बढ़ाती है। किन्तु कुछ समय पूर्व बेटियों के प्रति सद्भाव की कमी रही। यही कारण है कि बेटा-बेटी की संख्या में अन्तर आ गया। इसे ठीक करने के लिए सन् 2015 में 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अभियान प्रारम्भ हुआ। इसके प्रयासों के फलस्वरूप बेटियों की संख्या बढ़ रही है। बेटियों को सम्मान, शिक्षा तथा महत्व दिया जा रहा है। इस अभियान में बेटा-बेटी का अनुपात सुधर रहा है। बेटियाँ शिक्षित हो रही हैं। समाज में बेटा-बेटी के भेद की मानसिकता में परिवर्तन आ रहा है। अब बेटियाँ शिक्षित हो रही हैं तथा कई परीक्षाओं में वे बेटों से अच्छे परिणाम प्राप्त कर रही हैं।

(6) पुस्तकालय

पुस्तकालय ज्ञान के भण्डार होते हैं। विभिन्न विषयों की पुस्तकें उनमें सुरक्षित होती हैं। वहाँ बैठकर पुस्तकें पढ़ सकते हैं और आवश्यकता हो तो घर के लिए ले जा सकते हैं। एक अच्छी पुस्तक एक विचारक का ज्ञान समेटे होती है। इसे पढ़कर व्यक्ति अपनी ज्ञान वृद्धि कर सकता है। सभी प्रकार की श्रेष्ठ पुस्तकें घर पर नहीं होती हैं इसलिए पुस्तकालय ही इस सुविधा को प्राप्त कराते हैं। पुस्तकालय में ज्ञान-विज्ञान के साथ मनोरंजन, स्वास्थ्य, खेल-कूद, राजनीति आदि की पुस्तकें भी उपलब्ध होती हैं। पुस्तकें जाग्रत देवता होती हैं जिन्हें पढ़कर तुरन्त वरदान प्राप्त किया जा सकता है। इसलिए पुस्तकालय देवालय के समान पूज्य स्थल हैं।

Scanned with CamScanner

(7) स्वच्छ भारत अभियान

अथवा

स्वच्छ भारत-स्वस्थ भारत

महात्मा गाँधी ने स्वच्छ भारत का जो स्वप्न देखा था उसे साकार करने के लिए 'स्वच्छ भारत अभियान' का प्रारम्भ सन् 1914 में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने किया। सभी को पता है स्वच्छता से मनुष्य का तन, मन तथा परिवेश सभी शोभायमान होते हैं। गन्दगी जहाँ भी, जिस रूप में होती है वह विकार ही पैदा करती है। भारत में गाँवों से लेकर नगरों, महानगरों तक में गन्दगी का जो विनाशकारी रूप रहा है उसे समाप्त करने में स्वच्छता अभियान कारगर हो रहा है। गाँवों तथा शहरों में निम्न वर्ग खुले में शौच करते थे। अब शौचालयों के निर्माण हो गए हैं। जो माँ-बहिनें खुले में शौच जाती थीं अब वे घर के शौचालय का प्रयोग कर रही हैं। नालियों, सड़कों तथा नालों को नियमित रूप से साफ किया जा रहा है। यह अभियान जन-जन तक पहुँच गया है इसलिए स्वच्छता के प्रति सभी सजग हो गए हैं।

(8) परोपकार

अथवा

परहित सरिस धर्म नहिं भाई

परोपकार का अर्थ दूसरों की भलाई करना है। इसी आपसी सहयोग और सहानुभूति के बल पर समाज विकसित हुआ है। दूसरे के कष्ट में सहायता करना मनुष्य का स्वभाव है। इसी से प्रेरित होकर मनुष्य परोपकार करता है और महानता की सीढ़ी चढ़ता जाता है। परोपकार करने वाले का हृदय छल-कपट, ईर्ष्या-द्वेष से रहित होता है। उसके शान्त तथा करुणापूर्ण स्वभाव में लोकमंगल की भावना भरी होती है। परोपकार प्रकृति का स्वभाव है। प्रकृति के सूर्य, चन्द्रमा, वायु, जल, वृक्ष, नदी, पशु-पक्षी सभी परोपकार में लगे रहते हैं। वृक्ष फल-फूल देते हैं, नदियाँ जल देती हैं। सूर्य ताप तथा ऊर्जा देता है। सम्भवत: मनुष्य ने प्रकृति के प्रभाव से ही परोपकार के भाव को सीखा है। परोपकार करने वाले ऊपर हो गए। दधीचि, रंतिदेव, बुद्ध, महावीर, कबीर, तुलसी, महात्मा गाँधी को कौन आदर से याद नहीं करता है। परोपकारी व्यक्ति किसी का अहित नहीं करता, वह सबका भला चाहता है।

(9) बेरोजगारी की समस्या

आज बेरोजगारी की समस्या निरन्तर बढ़ती जा रही है। बेरोजगारों की फौज यहाँ से वहाँ तक फैली है। अशिक्षित से लेकर उच्च शिक्षा प्राप्त लोग आज रोजगार के लिए दर-दर की ठोकरें खा रहे हैं। बेरोजगारी के कारण ही अपराध बढ़ रहे हैं, मानसिक शिथिलता तथा शारीरिक निष्क्रियता आ रही है। खाली दिमाग शैतान का घर बनते जा रहे हैं। इस बेरोजगारी के कई कारण हैं, जैसे जनसंख्या वृद्धि, दूषित शिक्षा प्रणाली, कौशल विकास की कमी, उद्योग-धन्धों का अभाव आदि। बेरोजगारी पर नियन्त्रण तभी सम्भव है जब जनसंख्या पर नियन्त्रण किया जाए, आवश्यकता के अनुरूप शिक्षा प्रणाली विकसित की जाए, अकुशल लोगों को कौशल सिखाया जाय तथा उद्योग-धन्धों की बढ़ोत्तरी की जाए। इसके लिए शासन तथा समाज दोनों को प्रयास करना होगा। तब ही इस बढ़ती बेरोजगारी से छुटकारा मिल सकेगा।

Scanned with CamScanner

अध्याय 16

निबन्ध लेखन

1. दहेज प्रथा : एक सामाजिक समस्या

[रूपरेखा– (1) प्रस्तावना, (2) प्राचीनकाल में दहेज का स्वरूप, (3) मध्यकाल में नारी की दयनीय स्थिति, (4) आधुनिक काल में दहेज का स्वरूप, (5) निराकरण के उपाय, (6) उपसंहार।]

प्रस्तावना–आज भारतीय समाज में दहेज एक अभिशाप के रूप में व्याप्त है। दहेज के अभाव में निर्धन माता-पिता अपनी बेटी के हाथ पीले करने में स्वयं को असमर्थ पा रहे हैं। दहेज उन्मूलन के जितने प्रयास किये जाते हैं, इतना ही वह सुरसा के मुँह की तरह बढ़ता जा रहा है।

प्राचीन काल में दहेज–प्राचीन काल में कन्या को ही सबसे बड़ा दान समझा जाता था। माता-पिता वर पक्ष को अपनी सामर्थ्य के अनुसार जो कुछ देते थे, उसे वे सहर्ष स्वीकार कर लेते थे और जो धन कन्या को दिया जाता था, वह स्त्री धन समझा जाता था।

मध्यकाल में नारी की स्थिति–मध्य काल में नारी के प्राचीन आदर्श 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते' को झुठलाकर उसे भोग एवं विलासिता का साधन बना दिया गया। उसका स्वयं का अस्तित्व घर की चारदीवारी में सन्तानोत्पत्ति करने में ही सिमट कर रह गया। इस समय पुरुष समाज द्वारा उसे धन के समान भोग्य वस्तु समझा जाता था। उसके धन को और माता-पिता द्वारा दिये गये धन को वह अपनी वस्तु समझने लगा।

आधुनिक काल में दहेज–आधुनिक काल में दहेज अपने सबसे विकृत स्वरूप में सामने है। अब तो ऐसा लगता है कि मानो दहेज लेना वर पक्ष का जन्मसिद्ध अधिकार हो। दहेज के बिना सद्गुणी कन्या का विवाह होना भी एक जटिल समस्या बन गया है। इस दहेज की बलिवेदी पर न जाने कितनी कन्याएँ आत्महत्या करने के लिए विवश हो रही हैं और कितनी ही दहेज के लालची लोगों के द्वारा जला अथवा मार दी जाती हैं। इतने पर भी दहेज लोभियों का हृदय तनिक भी द्रवीभूत नहीं होता।

निराकरण के उपाय–वैसे तो यह बीमारी वर्तमान भारतीय समाज की जड़ों तक पहुँच चुकी है। मगर अब भी यदि हम निम्नलिखित उपायों को अपनाएँ तो इस समस्या को नेस्तनाबूत किया जा सकता है–

(1) युवक और युवतियाँ दहेज रहित विवाह के लिए कृत संकल्प हों। (2) अन्तर्जातीय विवाह को प्रोत्साहन दिया जाये। (3) दहेज लोलुपों का सामाजिक बहिष्कार हो। (4) सरकार को इस विषय में सक्रिय एवं कठोर कदम उठाने चाहिए। (5) सामूहिक विवाहों का प्रचलन हो। (6) दहेज रहित विवाह करने वालों को सामाजिक संगठनों द्वारा पुरस्कृत किया जाय।

उपसंहार–दहेज का उन्मूलन अकेले सरकार के द्वारा नहीं किया जा सकता। इसके लिए देश के कर्णधारों, मनीषियों एवं समाज सुधारकों को भगीरथ प्रयास करना होगा। प्राचीन भारतीय आदर्शों की पुनः प्रतिष्ठा करनी होगी जिसमें नारी को गृहस्थी रूपी रथ का एक पहिया समझा जाता था। वह गृहलक्ष्मी की गरिमा से मंडित थी। उसकी छाया में घर-घर स्वर्ग बना हुआ था तथा घर-आँगन फुलवारी के रूप में सुवासित था और यदि हम ऐसा कर पायें तो वास्तव में नारी की गोद से बड़ा स्वर्ग पृथ्वी पर दूसरा नहीं होगा।

2. विद्यार्थी और अनुशासन

अथवा

अनुशासन का महत्व

[रूपरेखा–(1) प्रस्तावना, (2) अनुशासित जीवन, (3) अनुशासन का महत्त्व, (4) अनुशासन के प्रकार, (5) अनुशासन का तात्पर्य, (6) विद्यार्थी एवं अनुशासन, (7) उपसंहार।]

Scanned with CamScanner

प्रस्तावना—समस्त सृष्टि नियमबद्ध तरीके से संचालित हो रही है। सूर्य एवं चन्द्र नियमित रूप से उदय होकर दुनिया को प्रकाशित करते हैं। जिस प्रकार प्रकृति के नियम हैं उसी भाँति समाज, देश तथा धर्म की भी कुछ मर्यादाएँ होती हैं। कुछ नियम होते हैं, कुछ आदर्श निर्धारित होते हैं। इन आदर्शों के अनुरूप जीवन ढालना अनुशासन की परिधि में आता है।

अनुशासित जीवन—वास्तव में अनुशासित जीवन बहुत ही मनोहर तथा आकर्षक होता है। इससे जीवन दिन-प्रतिदिन प्रगति के मार्ग पर अग्रसर होता है। अनुशासन के पालन से जीवन में मान-मर्यादा मिलती है। जो जीवन अनुशासित नहीं होता, वह धिक्कार तथा तिरस्कार का पात्र बनता है।

अनुशासन का महत्त्व—अनुशासन का जीवन से गहरा लगाव है। जो समाज अथवा राष्ट्र अनुशासन में बँधा होता है, उसकी उन्नति अवश्यम्भावी है। दुनिया की कोई भी ताकत उसे बढ़ने से रोक नहीं पाती। यदि अनुशासन का उल्लंघन किया जाय तो राष्ट्र तथा समाज पतन की दिशा में बढ़ता चला जाता है।

अनुशासन के प्रकार—अनुशासन के अनेक प्रकार हैं। नैतिक अनुशासन, सामाजिक अनुशासन तथा धार्मिक अनुशासन। अनुशासन बाह्य तथा आन्तरिक दो प्रकार का होता है। जब भय तथा डंडे के बल पर अनुशासन स्थापित किया जाता है, तो इस प्रकार के अनुशासन को बाहरी अनुशासन कहकर पुकारा जाता है। जब व्यक्ति अथवा बालक स्वेच्छा से प्रसन्न मन से नियमों का पालन करता है, तो इस प्रकार का अनुशासन आन्तरिक अनुशासन की श्रेणी में आता है।

अनुशासन का तात्पर्य—अनुशासन शब्द दो शब्दों के मेल से बना है। पहला 'अनु' जिसका अर्थ है पीछे, दूसरा 'शासन' अर्थात् शासन के पीछे अनुगमन करना।

विद्यार्थी एवं अनुशासन—वैसे हर मानव के लिए अनुशासन का पालन करना आवश्यक है, लेकिन छात्रों के लिए तो अनुशासन में रहना अमृत-तुल्य है। छात्र जीवन मानव जीवन की आधारशिला है।

आज छात्रों द्वारा परीक्षा का बहिष्कार, सार्वजनिक स्थानों में तोड़-फोड़ तथा पुलिस के साथ संघर्ष एक आम बात हो गई है। समाचार-पत्र छात्रों की अनुशासनहीनता तथा हिंसक घटनाओं की खबर नित्य-प्रति प्रकाशित करते रहते हैं। हम इन्हें पढ़कर मात्र इतना कह देते हैं कि यह बहुत बुरी बात है, लेकिन हमारे इतना कहने मात्र से इसका निराकरण नहीं होता। क्या कभी हमने शान्त मन से यह सोचा है कि यदि यह बीमारी बढ़ती गई तो इसका निराकरण करना हमारे वश की बात नहीं रहेगी।

छात्र एवं अनुशासन एक सिक्के के दो पहलू हैं। प्राचीन काल में छात्रों को आश्रमों तथा गुरुकुलों में गुरु के समीप रहकर शिक्षा प्राप्त करनी पड़ती थी। उनको अनुशासन के कठोर नियमों में बँधकर जीवनयापन करना पड़ता था। वर्तमान समय के छात्रों को भी यह ध्यान रखना चाहिए कि वे आज अनुशासनहीनता के जिस पथ पर अग्रसर हो रहे हैं, वह उनके भविष्य के लिए घातक तथा अमंगलकारी है।

इसके निराकरण के लिए नियमित रूप से नैतिक शिक्षा, धार्मिक उपदेश तथा जीवनोपयोगी चर्चाएँ, प्रार्थना स्थल तथा कक्षाओं में होनी चाहिए जिससे छात्र सद्मार्ग के अनुगामी बन सकें। अभिभावकों, शिक्षाविदों तथा अध्यापकों को भी स्वयं के आदर्श प्रस्तुत करके छात्रों को देश का उत्तम नागरिक बनाने में यथाशक्ति सहयोग देना चाहिए।

उपसंहार—छात्र देश के भाग्य विधाता हैं, शक्ति के पुंज हैं। देश उनकी ओर आशा भरी दृष्टि से निहार रहा है। यदि वे सुधरे तो देश सुधरेगा। उनके न सुधरने पर देश रसातलगामी बनेगा।

3. विज्ञान : वरदान या अभिशाप

अथवा

विज्ञान की देन

अथवा

विज्ञान और मानव

Scanned with CamScanner

अथवा

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

अथवा

विज्ञान का जीवन पर प्रभाव

अथवा

विज्ञान के बढ़ते चरण

[रूपरेखा—(1) प्रस्तावना, (2) विज्ञान वरदान के रूप में, (3) विज्ञान अभिशाप के रूप में, (4) उपसंहार।]

प्रस्तावना—आज हम विज्ञान के युग में साँस ले रहे हैं। आज विज्ञान ने मानव जीवन के प्रत्येक पहलू को प्रभावित किया है। यदि हमारे पूर्वज अपनी कब्रों से उठकर आज की दुनिया को देखें तो उन्हें अपनी आँखों पर यह विश्वास नहीं होगा कि हम कभी इस दुनिया में निवास करते थे।

विज्ञान वरदान के रूप में—विज्ञान ने मनुष्य का जीवन सुख, वैभव तथा समृद्धि से सम्पन्न बना दिया है। आज विज्ञान ने अनेक क्षेत्रों में आशातीत उन्नति की है; जैसे—

(1) खाद्यान्न के क्षेत्र में—खाद्यान्न के क्षेत्र में विज्ञान ने क्रान्ति मचा दी है। वर्तमान युग में किसान वर्षा ऋतु पर आश्रित नहीं रहता अपितु ट्यूब-वैलों से खेतों को सींच रहा है। बैलों की जगह ट्रैक्टर के माध्यम से खेत की जुताई की जाती है। रासायनिक खादों का प्रयोग किया जाता है तथा कीटनाशक दवाओं के द्वारा फसलों की सुरक्षा की जाती है।

(2) उद्योग एवं विज्ञान—मशीनों के द्वारा आज औद्योगिक क्षमता का विकास तीव्र गति से हो रहा है। जो कार्य पहले सौ व्यक्तियों द्वारा पूरा होता था आज मशीनों के द्वारा कम समय में एक ही व्यक्ति पूरा कर लेता है।

(3) शिक्षा के क्षेत्र में—वर्तमान समय में टी. वी., रेडियो तथा कम्प्यूटरों के माध्यम से शिक्षा दी जा रही है। चित्रपट पर प्रदर्शित राजनीतिक वार्ता, प्राकृतिक दृश्य तथा शैक्षिक कार्यक्रम शिक्षा के क्षेत्र में उपयोगी सिद्ध हो रहे हैं।

(4) आवागमन के क्षेत्र में—प्राचीन समय में यात्रा करना बहुत ही कष्टप्रद तथा भययुक्त होता था, लेकिन वैज्ञानिक आविष्कार के द्वारा आज रेल, मोटर तथा वायुयानों के माध्यम से मानव सम्पूर्ण विश्व की यात्रा कुछ घण्टों में ही पूरा कर लेता है।

(5) चिकित्सा के क्षेत्र में—आज विज्ञान के माध्यम से अनेक घातक बीमारियों का एक्स-रे द्वारा आन्तरिक फोटो लेकर सरलता से पता लगा लिया जाता है। कैंसर जैसी जानलेवा बीमारी का इलाज भी सम्भव हो गया है। ऑपरेशन के द्वारा न जाने कितने इंसानों को नया जीवन मिलता है।

(6) संचार के क्षेत्र में—संचार के क्षेत्र में भी विज्ञान ने अभूतपूर्व उन्नति की है। टेलीफोन, टेलीग्राम तथा टेलीविजन के द्वारा हम घर बैठे ही सम्पूर्ण देश के लोगों का हाल जान सकते हैं।

(7) वस्त्र निर्माण के क्षेत्र में—आज वस्त्र निर्माण के लिए आधुनिक तकनीकों से युक्त नयी-नयी मिलें स्थापित हो गयी हैं। सिलाई के लिए नयी-नयी मशीनें आविष्कृत हैं।

विज्ञान अभिशाप के रूप में—विज्ञान ने जहाँ मनुष्य को सुख-सुविधा एवं स्वास्थ्य दिया है वहीं दूसरी ओर वह एक विशालकाय दानव की तरह भयानक मुँह खोले हुए उसे मृत्यु की नींद सुलाने को बेचैन है। हाइड्रोजन बम और जहरीली गैसें उसके लिए मृत्यु से भी भयंकर साबित हो रही हैं। विज्ञान द्वारा प्रदत्त भौतिक साधनों से मनुष्य आलसी हो गया है और शरीर से कमजोर हो गया है। विज्ञान ने वातावरण को अति दूषित कर दिया है और प्रकृति की संरचना से खिलवाड़ किया है।

उपसंहार—विज्ञान स्वयं में शक्ति नहीं है। वह मनुष्यों के हाथों में आकर ही शक्तिशाली बना है। उसका शुभ और अशुभ प्रयोग मनुष्य के हाथ में ही है। ईश्वर मनुष्य को ऐसी बुद्धि दे कि वह मनुष्य के संहार के लिए इसका प्रयोग न करे।

Scanned with CamScanner

4. वृक्षारोपण

अथवा

वन संरक्षण

[रूपरेखा—(1) प्रस्तावना, (2) भारतीय संस्कृति और वृक्ष, (3) वनों से लाभ, (4) वृक्षों के कटने से हानियाँ, (5) वृक्षारोपण कार्यक्रम, (6) उपसंहार।]

प्रस्तावना—भारत की संस्कृति एवं सभ्यता वनों में ही पल्लवित तथा विकसित हुई है। वृक्ष मानव का एक तरह से जीवन सहचर हैं। वृक्षों के अभाव में न तो सरोवर जल से आपूरित रहते हैं और न सरिताएँ ही कल-कल ध्वनि से प्रवाहित होती हैं। वृक्षों की जड़ों से वर्षा-ऋतु का जल धरती के अंक में पहुँचता है। यही जल अक्षय स्रोतों में गमन करके अपार जलराशि प्रदान करता है।

भारतीय संस्कृति और वृक्ष—भारत की सभ्यता वनों की गोद से ही विकासमान हुई है। हमारे ऋषि तथा मुनियों ने वृक्षों की छाया में बैठकर ही ज्ञान के भण्डार को मानव को सौंपा है। वनों की गोद में ही गुरुकुलों की स्थापना की गयी थी। इन गुरुकुलों में अर्थशास्त्री, शासक, दार्शनिक तथा राष्ट्र-निर्माता शिक्षा ग्रहण करते थे। इन्हीं वनों में आचार्य तथा ऋषि, मानव के हित-साधन के लिए अनेक सूत्रों की खोज करते थे। वनों की हरीतिमा, पक्षियों का कलरव, पुष्पों से आच्छादित लताएँ, भ्रमरों की गुंजार तथा तितलियों की अठखेलियाँ मानव-मन को सहज ही अपनी ओर आकर्षित कर लेती हैं।

वनों से लाभ—वनों से हमें भवन निर्माण की सामग्री मिलती है। औषधियाँ, जड़ी-बूटियाँ, गोंद, घास तथा जानवरों का चारा वनों से ही प्राप्त होता है। वृक्ष वर्षा में भी सहायक हैं। रंग तथा कागज का स्रोत भी वन हैं।

वन तापमान को सामान्य बनाने में सहायक हैं। ये मिट्टी के कटाव पर अंकुश लगाते हैं। दूषित वायु को ग्रहण करके शुद्ध एवं जीवनदायक वायु हमें प्रदान करते हैं। मानव की जिन्दगी के लिए जितनी वायु तथा जल अपरिहार्य है, उतने वृक्ष भी आवश्यक हैं। तुलसी, पीपल तथा वट-वृक्ष कोटि-कोटि मानवों के श्रद्धा-पात्र हैं।

वृक्षों के कटने से हानियाँ—आज मानव भौतिक प्रगति हेतु आतुर है। वह वृक्षों को अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए निष्ठुरता से काट रहा है। औद्योगिक प्रतिस्पर्धा तथा जनसंख्या वृद्धि के फलस्वरूप वनों का क्षेत्रफल दिन-प्रतिदिन घटता चला जा रहा है। वृक्षों पर चहचहाने वाले पक्षियों का कलरव समाप्त-सा हो चला है। पक्षी प्राकृतिक सन्तुलन स्थिर रखने के प्रमुख कारक हैं।

वृक्षारोपण कार्यक्रम—वृक्षारोपण के महत्व को भूतपूर्व केन्द्रीय खाद्य मन्त्री श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी ने स्वीकारा था। इसके पश्चात् इस कार्यक्रम को दिन-प्रतिदिन विस्तृत किया जाता रहा है।

उपसंहार—आज हमारे देशवासी वनों तथा वृक्षों की महत्ता को एक स्वर से स्वीकार कर रहे हैं। वन महोत्सव हमारे राष्ट्र की अनिवार्य आवश्यकता है। देश की समृद्धि में वृक्षों का अपूर्व योगदान है। ये आर्थिक उन्नति के साधन हैं। इसलिए राष्ट्र के हर नागरिक का यह कर्त्तव्य बनता है कि वह वृक्षों को लगाकर धरती को हरा-भरा बनाये।

5. साहित्य और समाज

[रूपरेखा—(1) प्रस्तावना, (2) साहित्य एवं समाज का सम्बन्ध, (3) साहित्य में अद्वितीय क्षमता, (4) साहित्य का उद्देश्य, (5) उपसंहार।]

प्रस्तावना—साहित्य के कलेवर में मनुष्य की भावनाओं एवं विचारों का अंकन समाहित होता है। महावीरप्रसाद द्विवेदी के शब्दों में 'ज्ञान-राशि का कोष' का नाम साहित्य है।

साहित्य एवं समाज का सम्बन्ध—समाज एवं साहित्य में अटूट सम्बन्ध है। साहित्य का आधार मानव जीवन है। महान् साहित्यकारों ने भी इसी के प्रकाश में साहित्य के कलेवर को समृद्ध किया है। लेखक सृजन की प्रेरणा भी समाज से ग्रहण करता है। युग की तथा समाज की परिस्थितियों के अनुकूल साहित्य में परिवर्तन के स्वर ध्वनित होते हैं। युगीन समस्याओं एवं सड़ी-गली मान्यताओं का निराकरण करके साहित्य समाज को परिष्कृत करता है।

Scanned with CamScanner

साहित्य में अद्वितीय क्षमता—साहित्य की क्षमता के समक्ष तोप तलवार एवं बम की शक्ति भी बौनी प्रतीत होती है। साहित्य समाज का दर्पण है। साहित्य समाज के लेखा जोखा का चित्रण है, समाज का सच्चा प्रारूप है।

साहित्य का उद्देश्य—आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने मानव को ही साहित्य का उद्देश्य ठहराया है।

उपसंहार—निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि साहित्य एवं समाज का अटूट सम्बन्ध है। जब-जब समाज दिग्भ्रमित होता है तब साहित्यकार समाज को एक गति तथा राह दिखाता है। बुराइयों का उन्मूलन करके अच्छे संस्कारों एवं भावों को पल्लवित करता है। साहित्य के अभाव में उन्नत समाज की कल्पना करना निराशामात्र है। साहित्य वर्तमान का प्रारूप है। मानव के सनातन मूल्यों की प्रतिष्ठा करने वाला है, भविष्य का मार्गदर्शक है तथा अतीत का प्रेरक व्याख्याता है।

6. जीवन में खेलों का महत्त्व

अथवा

जीवन और खेल

"जीवन की नीरसता में रस भर देते।
खेल हृदय-तन्त्र को झंकृत-सा कर देते।।"

[रूपरेखा—(1) प्रस्तावना, (2) व्यस्त जीवन एवं खेल, (3) खेलों का महत्व, (4) उपसंहार।]

प्रस्तावना—मानव प्रातः से सायंकाल तक कार्य में जुटा रहता है। निरन्तर कार्य के बोझ से वह घुटन एवं बेचैनी का अनुभव करता है। उसकी इच्छा होती है कि वह कुछ समय अवकाश के क्षणों में ऐसा साधन अपनाये जिसके माध्यम से उसके मन-मस्तिष्क को शान्ति मिले तथा उल्लास से हृदयतन्त्री के तार झंकृत हो उठे। इसका सर्वोत्तम साधन खेलों को ठहराया गया है।

व्यस्त जीवन एवं खेल—आज मानव का जीवन इतना व्यस्त है कि वह प्रातः से लेकर शाम तक किसी न किसी कार्य में व्यस्त रहता है। रोजी-रोटी की समस्या के कारण दिन-प्रतिदिन चिन्तित रहता है। चिन्ता तथा आवश्यकता से अधिक श्रम उसे कमजोर बना देता है। ऐसी स्थिति में पुनः शक्ति प्राप्त करने के लिए किसी-न-किसी प्रकार का खेल अथवा व्यायाम अपेक्षित है।

खेल का मन तथा मस्तिष्क से घनिष्ठ सम्बन्ध है। खेल के मैदान में उतरने पर मन प्रसन्नता से भर उठता है।

खेलों का महत्त्व—खेल से मन बहलाव के साथ-साथ हमारे समय का भी अच्छा उपयोग होता है। खेल से मानव में नयी स्फूर्ति तथा शक्ति का संचार होता है। खेल आपस के बैर भाव को भुलाकर ऐसी एकता का प्रदर्शन करते हैं जो देखते ही बनती है। खेल हमें अनुशासन का पाठ पढ़ाते हैं। संगठन तथा एकता का विकास भी खेलों के माध्यम से होता है। खिलाड़ी हमारे देश का नाम रोशन करते हैं। खेल इंसान की रोजी-रोटी में सहायक हैं। खिलाड़ी प्रतिपल चुस्ती तथा स्फूर्ति का अनुभव करता है। वह प्रत्येक कार्य को चाहे वह शरीर से सम्बन्धित हो अथवा मस्तिष्क से, उसे तुरन्त पूरा कर लेता है।

उपसंहार—निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि जीवन में खेलों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसमें जरा भी शंका की गुंजाइश नहीं है। कुछ लोगों की यह धारणा गलत है कि खेलों में समय नष्ट होता है अतः खेलों का शिक्षा के साथ तालमेल उपयुक्त नहीं है। खेल बालक के शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक उत्थान के प्रमुख स्रोत हैं।

7. जल ही जीवन है

अथवा

बिन पानी सब सून

[रूपरेखा—(1) प्रस्तावना, (2) जल के विभिन्न कार्य, (3) जल के प्रमुख स्रोत, (4) उपसंहार।]

प्रस्तावना—जल मानव जीवन के लिए अनिवार्य तत्त्व है। जल के अभाव में प्राणियों की कल्पना तक नहीं की जा सकती। कविवर रहीम ने ठीक ही कहा है—

Scanned with CamScanner

"रहिमन पानी राखिए बिनु पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरे मोती मानुष चून॥"

जल के विभिन्न कार्य—जल से धरती पर खेती लहलहाती हुई दिखाई देती है। नदी, तालाब एवं नहरें जल का ही वरदान हैं। यदि समय पर वर्षा न हो तो धरती का आँचल सूख जायेगा, वृक्ष मुरझा जायेंगे। जीव-जन्तु असमय ही अपने प्राणों का त्याग कर देंगे। कल्पना कीजिए उस समय की, जब जल का अभाव हो जाता है एवं सूखे की स्थिति उत्पन्न हो जाती है तो न जाने कितने प्राणी असमय ही काल के गाल में समा जाते हैं। प्राणी अन्न के अभाव में तो कुछ दिन जीवित रह सकता है, लेकिन जल के बिना उसकी वही दशा हो जाती है जैसी कि पानी के बिना मछली की।

जल के प्रमुख स्रोत—तालाब, कुएँ, नहरें एवं झरने जल के प्रमुख स्रोत हैं। आज वैज्ञानिकों ने जल प्राप्त करने के अनेक कृत्रिम स्रोतों का भी आविष्कार किया है।

उपसंहार—निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि जल ही जीवन है। हमारे प्राणों का आधार है। धरती को हरा-भरा एवं फलता-फूलता रखने का प्रमुख साधन जल ही है। भगवान इन्द्र देव प्रसन्न होकर सबको यथोचित जल प्रदान करें, तभी सृष्टि हरी-भरी होगी।

8. समाचार-पत्र

अथवा

समाचार-पत्रों का महत्त्व/की उपयोगिता

[रूपरेखा—(1) प्रस्तावना, (2) जन्म तथा विकास, (3) समाचार-पत्रों के प्रकार, (4) समाचार-पत्रों की आवश्यकता, (5) समाचार-पत्रों का दायित्व, (6) समाचार-पत्रों की शक्ति, (7) उपसंहार।]

प्रस्तावना—वर्तमान समय में समाचार-पत्रों का महत्त्व निर्विवाद है। समाचार-पत्र ही वह सबसे प्रबल साधन है जिसके द्वारा हम विश्व की गतिविधियों का ब्यौरा अपने घर पर ही बैठकर आसानी से प्राप्त कर लेते हैं।

जन्म तथा विकास—समाचार-पत्रों का जन्म सर्वप्रथम इंग्लैण्ड में सत्रहवीं शताब्दी में ठहराया गया है। भारत में सबसे पहला समाचार-पत्र 'इण्डिया गजट' के नाम से प्रकाशित हुआ। ईसाइयों ने अपने धर्म के प्रचार के लिए समाचार-पत्र छापने शुरू किये। मुद्रण कला के आविष्कार के साथ ही समाचार-पत्रों का विस्तार होता गया। आज समाचार-पत्र देश-विदेश में होने वाली घटनाओं से जनसामान्य को प्रबुद्ध तथा जागरूक बना रहे हैं।

समाचार-पत्रों के प्रकार—समाचार-पत्र के कई प्रकार होते हैं; जैसे—दैनिक, साप्ताहिक तथा मासिक। सभी समाचार-पत्र विश्व में होने वाली घटनाओं की अधिकाधिक जानकारियाँ देते हैं।

समाचार-पत्रों की आवश्यकता—मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। इस कारण वह समाज में होने वाली दिन-प्रतिदिन की घटनाओं को जानने के लिए उत्सुक रहता है। इन सबके बारे में समाचार-पत्र ही एक ऐसा सशक्त साधन है जिसके द्वारा जानकारी हासिल की जा सकती है।

सरकार तथा जनता के मध्य की कड़ी समाचार-पत्र ही होते हैं। सरकार की नीति तथा विचारों को हम समाचार-पत्र के माध्यम से ही जान सकते हैं। जनता के आक्रोश को सरकार तक पहुँचाने का माध्यम समाचार-पत्र ही हैं।

समाचार-पत्रों का दायित्व—समाचार-पत्रों का सबसे बड़ा उत्तरदायित्व शक्तिसम्पन्न होने पर भी सन्तुलित एवं मर्यादित होना चाहिए। समाचार-पत्रों को जनसामान्य का भली प्रकार दिशा-निर्देश करना चाहिए।

समाचार-पत्रों की शक्ति—समाचार-पत्र किसी भी समस्या को लेकर जनता को प्रबुद्ध तथा जागरूक बनाकर सरकार से उसकी बात को स्वीकार करने के लिए विवश कर सकते हैं।

उपसंहार—आज मानव की जिज्ञासा प्रवृत्ति प्रतिपल नूतन दिशा की ओर अग्रसर है। मानव के लिए इस दिशा में समाचार-पत्रों का महत्त्वपूर्ण योगदान है। कष्टप्रद स्थिति तब सामने आती है जब समाचार-पत्र अपने स्तर से गिरकर लोभ के वशीभूत होकर गलत समाचारों का प्रकाशन कर देते हैं। इस ओर विशेष ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता है। ये उन्नति के सन्देशवाहक हैं।

Scanned with CamScanner

10. पर्यावरण प्रदूषण

अथवा

प्रदूषण की समस्या

"अपनी हालत का कुछ अहसास नहीं मुझको।
मैंने औरों को सुना है कि परेशाँ हूँ मैं।"

[रूपरेखा—(1) प्रस्तावना, (2) प्रदूषण का अभिप्राय, (3) प्रदूषण के प्रकार, (4) प्रदूषण की रोकथाम, (5) उपसंहार।]

प्रस्तावना—पर्यावरण प्रदूषण आज समस्त विश्व के लिए चुनौती बन रहा है। इस समस्या का अविलम्ब निराकरण होना परमावश्यक है। आज आकाश विषाक्त हो गया है। धरती, वायु तथा जल दूषित हो गये हैं। अपनी सुख-सुविधाओं की सनक में आज का मानव प्राकृतिक सम्पदाओं का निरन्तर दोहन करता जा रहा है। वृक्ष काटे जा रहे हैं। यही कारण है कि आज का इंसान स्वच्छ वायु में साँस लेने के लिए भी तरस गया है।

प्रदूषण का अभिप्राय—प्रदूषण से हमारा अभिप्राय है—वायु, जल एवं धरती की भौतिक, रासायनिक एवं जैविक विशेषताओं में अवांछनीय परिवर्तन द्वारा दोष पैदा होना।

प्रदूषण के प्रकार—प्रदूषण अनेक प्रकार से होता है; यथा—

(1) वायु प्रदूषण—आजकल फैक्ट्री तथा कारखानों की चिमनियाँ रात-दिन काला धुआँ उगल रही हैं। सड़क पर दौड़ते वाहन वातावरण में जहर घोल रहे हैं। सड़क पर चलना तथा घर पर रहना दूभर हो गया है। इंसान स्वयं की साँस में वायु से ऑक्सीजन ग्रहण करता है तथा कार्बन डाइ-ऑक्साइड नामक गैस को छोड़ता है। पृथ्वी पर पौधे तथा वृक्ष इसे सोख लेते हैं।

(2) जल प्रदूषण—आज फैक्ट्री तथा कारखानों द्वारा छोड़ा गया रासायनिक पदार्थ जल को दूषित बना रहा है। आज का जल इतना विषाक्त हो गया है जो मानव को बीमारियों तथा मौत की ओर अग्रसर कर रहा है।

(3) रेडियोधर्मी प्रदूषण—विस्फोटों के ढेर के रूप में रेडियोधर्मी कणों का विस्तार हो रहा है। इससे स्थान विशेष की वायु दूषित हो जाती है।

(4) ध्वनि प्रदूषण—आज मशीनों तथा वाहनों के कर्णभेदी शोर के मध्य में जैसे-तैसे हमको जीना पड़ रहा है। इससे स्नायुमण्डल पर विशेष प्रभाव पड़ रहा है। मानव प्रत्येक क्षण तनाव में जीता है। शान्ति उससे कोसों दूर है।

(5) रासायनिक प्रदूषण—आज रासायनिक खादों के प्रयोग से अन्न दूषित तथा स्वाद रहित हो गया है। यह मानव के स्वास्थ्य को भी चौपट किये डाल रहा है।

प्रदूषण की रोकथाम—प्रदूषण पर नियन्त्रण लगाने की महती आवश्यकता है। इसके लिए संगठित होकर प्रयास करना चाहिए। वृक्षों की रक्षा करके और नये वृक्ष लगाकर इस संकट से छुटकारा पाया जा सकता है। ये पर्यावरण को शुद्ध करते हैं। यातायात के द्वारा फैले प्रदूषण को बिजली से चलने वाले यन्त्र बनाकर रोक सकते हैं। नदियों के प्रदूषण को भी मनुष्य प्रयास करके रोक सकता है।

उपसंहार—पर्यावरण की सुरक्षा और उचित सन्तुलन के लिए हमें जागरूक होना पड़ेगा। वायु, जल, ध्वनि तथा पृथ्वी के प्रदूषण को नियन्त्रित कर धीरे-धीरे समाप्त करना चाहिए।

10. राष्ट्रीय एकता और अखण्डता

[रूपरेखा—(1) प्रस्तावना, (2) राष्ट्रीय एकता की कसौटी, (3) राष्ट्रीय एकता को खतरा, (4) एकता भंग करने के कारण, (5) राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता, (6) उपसंहार।]

प्रस्तावना—राष्ट्र का निर्माण करने वाले तत्व—भूमि, उस पर निवास करने वाले मनुष्य एवं उनकी संस्कृति हैं। भूमि के कण-कण से वहाँ के निवासियों को इतना प्यार होता है कि वे उसके लिए अपना सब कुछ बलिदान कर देते हैं। यह आवश्यक नहीं है कि राष्ट्र के निवासी समान धर्म, जाति तथा संस्कारों वाले हों। उनकी संस्कृति में भी थोड़ा-बहुत अन्तर हो सकता है, किन्तु आवश्यकता इस बात की है कि वे अपने राष्ट्र के लिए मिलकर कार्य करें। आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास करते हुए उसकी शक्ति को बढ़ायें। भिन्नताओं के मध्य एकता स्थापित करके राष्ट्रीय धारा का अंग बनें।

Scanned with CamScanner

राष्ट्रीय एकता की कसौटी—राष्ट्रीय एकता की परख नित्यप्रति के व्यवहारों से होती है। व्यक्तिगत स्वार्थ, सम्मान आदि से प्रेरित होकर हम राष्ट्र को तोड़ते हैं या कमजोर बनाने वाले कार्य करना ही राष्ट्र-द्रोह है तथा समाजहित को ध्यान में रखकर राष्ट्र को जोड़ने तथा शक्तिशाली बनाने वाले कार्य राष्ट्रभक्ति कहलायेंगे। सच्चा राष्ट्रभक्त अपने देश पर सर्वस्व बलिदान कर देने को सदैव तैयार रहता है।

राष्ट्रीय एकता को खतरा—आज भारत में राष्ट्रीय एकता को खतरा हो गया है। यहाँ धर्म, जाति, सम्प्रदाय, भाषा आदि के नाम पर बिखराव के स्वर सुनायी पड़ने लगे हैं। इनका प्रारम्भ अंग्रेजों की कूटनीति से हुआ। उन्होंने भारत को आजादी देने से पूर्व हिन्दू-मुस्लिम द्वेष के बीज बो दिये। इसी के परिणामस्वरूप पाकिस्तान बना, साम्प्रदायिक विद्रोह हुए तथा अपार जन-धन की हानि हुई।

एकता भंग करने के कारण—धर्म के दुरुपयोग से भी राष्ट्रीय एकता प्रभावित हुई है। धर्मान्ध, स्वार्थी, मौलवियों, पण्डों-पुजारियों का भी इस दिशा में असहयोगी व्यवहार रहा है। वोट की राजनीति ने राष्ट्रीय एकता को नष्ट किया है। जाति, भाषा, क्षेत्र आदि के आधार पर वोट प्राप्त करने के प्रचार के फलस्वरूप वर्षों से प्रेमपूर्वक रहने वालों में कलह फैल गयी है।

राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता—भारत की सुरक्षा तथा प्रगति के सुसंचालन हेतु राष्ट्रीय एकता की बहुत आवश्यकता है। भारत को स्वतन्त्र बनाने वाले शहीदों ने जो स्वप्न संजोया था उसको साकार करने के लिए क्षेत्र, भाषा, धर्म, जाति, वर्ग आदि की संकुचित सीमाओं से मुक्त होकर समस्त राष्ट्र के उत्थान के कार्य करने होंगे। व्यक्तिगत स्वार्थों को त्यागकर समाज-हित का ध्यान रखना होगा। राष्ट्र को कमजोर बनाने वाली विद्रोही शक्तियों को मुँहतोड़ जवाब देने के लिए कमर कसनी होगी।

उपसंहार—'संघे शक्तिः कलौयुगे' अर्थात् कलियुग में संघ में शक्ति है। इसी को हम कह सकते हैं—'एकता में बल'। यह एकता राष्ट्र के निवासियों के आन्तरिक सद्भाव से ही सम्भव है। व्यक्ति को स्वयं की चिन्ता त्यागकर राष्ट्र की चिन्ता करनी होगी। भारत के समस्त भू-भाग को हृदय से प्यार करना होगा। समाज में धार्मिक कटुता तथा वैमनस्यता के स्थान पर सामंजस्यता तथा सहनशीलता का संचार हो। राष्ट्रध्वज, राष्ट्रगान, राष्ट्रीय संविधान, राष्ट्रभूमि तथा राष्ट्राध्यक्ष के प्रति आदर एवं समर्थन का भाव होना चाहिए। जननायकों को वोट का स्वार्थ त्याग देना चाहिए। किसान, व्यापारी, मजदूर, कर्मचारी, शिक्षक, प्रशासक, नेता आदि सभी को धर्म, सम्प्रदाय आदि की सीमाओं से ऊपर उठकर देश के प्रति अपने अंशदान के बारे में सोचना होगा और प्राण-पण से भारतवर्ष की उन्नति में अपनी सक्रिय भूमिका निभानी होगी।

11. नारी शिक्षा का महत्त्व

[**रूपरेखा**—(1) प्रस्तावना, (2) नारी शिक्षा का महत्व, (3) नारी एवं शिक्षा-दीक्षा, (4) शिक्षा पर ध्यान देना अपेक्षित, (5) उपसंहार।]

प्रस्तावना—शिक्षा का मानव जीवन से अटूट सम्बन्ध है। इसके अभाव में मानव जीवन की कहानी ही अधूरी है। आधुनिक युग में नारी की शिक्षा उतनी ही अपेक्षित है जितनी की पुरुष की। शिक्षित नारी ही प्रगति की मंजिल पर चरण बढ़ा सकती है।

नारी शिक्षा का महत्व—आज के व्यस्त एवं संघर्षशील युग में नारी शिक्षा की अत्यन्त आवश्यकता है। शिक्षित नारी अपनी सन्तानों को सुसंस्कारों से सम्पन्न कर सकती है। बच्चों की पढ़ाई-लिखाई में समुचित योगदान करने में सहायक हो सकती है। घर-गृहस्थी के आय-व्यय को भली प्रकार सन्तुलित करके आर्थिक बोझ को बहुत सीमा तक सन्तुलित कर सकती है। शिक्षित नारी विपत्ति के बादल मँडराने पर नौकरी करके परिवार को संकट से उबार सकती है।

बच्चों के लिए घर ही नागरिक बनने की प्रथम पाठशाला होता है। माता ही इस पाठशाला की शिक्षिका होती है। लोरी, पहेली तथा गाना गुनगुनाते हुए माँ बच्चे को शिक्षा प्रदान करती है। उसका प्रभाव अमिट तथा स्थायी होता है।

नारी एवं शिक्षा-दीक्षा—वर्तमान में देखें तो नारी के लिए हर प्रकार की शिक्षा अपेक्षित है। नारी के लिए सबसे प्रथम गृह विज्ञान की शिक्षा देना परमावश्यक है। नारी का कार्य-क्षेत्र घर होता है। उसे परिवार के

Scanned with CamScanner

कार्यों को सम्पन्न करने के साथ ही बच्चों को भी देखना तथा सँभालना पड़ता है। गृह विज्ञान की शिक्षा इस दिशा में बहुत ही लाभदायक सिद्ध होगी।

आज नारी घर की सीमा से बाहर निकल कर पुरुष के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर जीवन संग्राम में आगे कदम बढ़ा रही है। वह सामाजिक तथा राजनीतिक क्षेत्र में भी पुरुष के साथ सक्रिय भाग ले रही है। शिक्षा, विज्ञान, चिकित्सा तथा सांस्कृतिक क्रिया-कलापों में भी उसके चरण निरन्तर गतिमान हैं। जीवन का ऐसा कोई भी क्षेत्र अछूता नहीं है जिसमें आधुनिक शिक्षित नारी सहभागिनी न हो।

शिक्षा पर ध्यान देना अपेक्षित—दुर्भाग्य का विषय यह है कि आज भी नारी की शिक्षा का अनुपात उतना नहीं है जितना कि अपेक्षित है। भारत की जनसंख्या निरन्तर सुरसा के मुख की तरह बढ़ती जा रही है। उसकी तुलना में भारत में शिक्षित नारियों की संख्या बहुत ही सीमित है। ग्रामीण अंचलों में आज भी अशिक्षित नारी जीवन के अभिशाप को विवशता की चट्टान के तले हाँफ-हाँफ कर जी रही है। दकियानूसी तथा रूढ़िवादी लोग इस ओर से आँखें बन्द किए हुए हैं। उन्हें जाग्रत करना आवश्यक है।

उपसंहार—हर्ष का विषय है कि आज हमारे देश में नारी शिक्षा के महत्व को लोग समझ गए हैं। सरकार इस संदर्भ में आवश्यक कदम भी उठा रही है। सरकार के साथ-साथ जन-सहयोग होना भी समय की माँग है।

12. विद्यार्थी जीवन

अथवा

आदर्श विद्यार्थी

[**रूपरेखा**—(1) प्रस्तावना, (2) विद्यार्थी जीवन, (3) आदर्श विद्यार्थी, (4) आधुनिक विद्यार्थी, (5) सुधार अपेक्षित, (6) उपसंहार।]

प्रस्तावना—जीवन में प्रतिपल ही सीखने की प्रक्रिया चलती रहती है। विद्यार्जन के लिए उम्र का बन्धन बाधा नहीं पहुँचाता। परन्तु विद्यार्थी जीवन वह काल है जिसमें विद्यार्थी विद्यालय में रहकर विद्यार्जन करता है। इस विद्यार्जन की प्रक्रिया में एक क्रम होता है। जितनी अवधि तक विद्यार्थी विद्यार्जन करता है, उसका वह जीवन विद्यार्थी जीवन कहलाता है।

विद्यार्थी जीवन—विद्यार्थी जीवन जिन्दगी का स्वर्णिम काल होता है। इसी जीवन में विद्यार्थी अपने भविष्य के जीवन की आधारशिला रखता है। यहीं से सुन्दर और दृढ़ जीवन की पड़ी आधारशिला (नींव) पर उस विद्यार्थी के भविष्य का भवन खड़ा हो पाता है जो बहुत ही आकर्षक होगा।

विद्यार्थी जीवन में ही एक छात्र अपने शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक गुणों को विकास की एक दिशा प्रदान करता है। इन गुणों के विकसित होने पर ही वह विद्यार्थी एक ठोस व्यक्तित्व का धनी होता है।

आदर्श विद्यार्थी—विद्यार्थी का जीवन किसी तपस्वी के जीवन से कम कठोर नहीं होता। माँ सरस्वती की कृपा प्राप्त करना बहुत ही कठिन है। विद्या कभी भी आराम से, सुख से प्राप्त नहीं हो सकती। जीवन में संयम और नियमों के अनुसार चलना पड़ता है। विद्यार्थी के लक्षण—

"काक चेष्टा, बको ध्यानम्, श्वान निद्रा तथैव च।
गृहत्यागी, अल्पाहारी, विद्यार्थी पंचलक्षणम्।।"

उपर्युक्त पद्यांश में बताए गए लक्षणों वाला विद्यार्थी अपने जीवन में सदैव सफल होता है। यह जीवन साधना और सदाचार का है। इनका पालन करने वाला ही आदर्श विद्यार्थी होता है।

आधुनिक विद्यार्थी—आज हमारे देश की समाज व्यवस्था लड़खड़ा रही है। विद्यार्थी ने अपने जीवन की गरिमा को भुला दिया है। विद्यार्थी के लिए स्कूल मौज-मस्ती का स्थल रह गया है। वह अब विद्यादेवी की आराधना का मन्दिर नहीं रह गया है। वह तो उसके मनोरंजन तथा समय काटने का स्थल भर रह गया है। विद्यार्थी में उद्दण्डता और असत्यता घर बनाए बैठी है। परिश्रम करने से अब वह पीछे हट रहा है। उसका लक्ष्य केवल अंक प्राप्त करना, धोखा देना और चालपट्टी रह गया है। वह अनुशासनहीन होकर ही अपना कल्याण करना चाहता है। उसने विनय, सदाचार और संयम को पूर्णतः भुला दिया है। विद्यार्थी ने स्वयं को कलंकित बना लिया है।

Scanned with CamScanner

सुधार अपेक्षित—अनुशासनहीनता को दूर करने के लिए माता-पिता को बच्चों पर ध्यान देना चाहिए। विद्यालयों के वातावरण को सही बनाना चाहिए। अध्यापकों को विशेष रूप से विद्यार्थियों की प्रत्येक प्रक्रिया पर सख्त नजर रखनी होगी। उनके समक्ष अपने सद् आचरण का प्रभाव प्रस्तुत करना होगा।

उपसंहार—आज के विद्यार्थी कल के राष्ट्र के कर्णधार हैं। अत: इन्हें अपने अन्दर ऊँचे वैज्ञानिक के, ऊँचे विचारक के, ऊँचे चिन्तनकर्ता के महान् गुणों को अपने में विकसित करते हुए अपने अभिलषित लक्ष्य की ओर अग्रसर होना चाहिए। ज्ञानपिपासा, श्रम, विनय, संयम, आज्ञाकारिता, सेवा, सहयोग, सह-अस्तित्व के गुणों को अपने अन्दर विकसित कर लेना चाहिए। विद्यार्थी एक आदर्श नागरिक बन कर राष्ट्र की सेवा करते हुए राष्ट्र धर्म का पालन कर सकने में समर्थ होते हैं।

13. आधुनिक भारत में नारी

अथवा

भारतीय समाज में नारी का स्थान

[रूपरेखा—(1) प्रस्तावना, (2) प्राचीन काल में नारी, (3) मध्य युग में नारी, (4) आधुनिक युग में नारी, (5) पाश्चात्य सभ्यता, (6) उपसंहार।]

प्रस्तावना—नारी के बिना मानवता की कल्पना तक करना असम्भव है। वह माता, बेटी, पत्नी, देवी एवं प्रेयसी आदि रूपों से विभूषित है। नारी के बिना मानव अपूर्ण है। मानव पर उसका अमूल्य उपकार है। वह पुरुषों की सहभागिनी है, जीवनसंगिनी है।

प्राचीन काल में नारी—वैदिक काल में नारी का महत्वपूर्ण स्थान था। आध्यात्मिक एवं धार्मिक क्षेत्र में भी नारी की भूमिका अग्रणी थी। सीता, अनसूया, गार्गी एवं सावित्री इसके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। इनके नाम इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखे हुए हैं।

मध्य युग में नारी—मध्ययुग में नारी के गौरव का ह्रास हुआ। कबीर, तुलसी आदि सन्तों ने भी नारी को विकार एवं ताड़ना का पात्र ठहराया। मुसलमानों के अत्याचारों के फलस्वरूप उसे मकान की चारदीवारी में कैद कर दिया गया।

आधुनिक युग में नारी—राष्ट्रीय एवं सामाजिक चेतना जाग्रत होने के कारण वर्तमान में नारी की दशा में आशातीत सुधार हुआ है। राजा राममोहन राय एवं दयानन्द सरस्वती ने भारतीय नारी को पुरुष के समकक्ष होने के अधिकार से सम्पन्न कराया। उसके लिए शिक्षा के द्वार खोले।

आज की नारी उन्मुक्त होकर पुरुष के साथ कदम से कदम मिलाकर प्रतिपल उन्नति की मंजिल की ओर अग्रसर है। इन्दिरा गांधी, कमला नेहरू, सरोजिनी नायडू, महादेवी वर्मा एवं कल्पना चावला इसके ज्वलन्त उदाहरण हैं।

पाश्चात्य सभ्यता—पाश्चात्य सभ्यता के फलस्वरूप आज भारतीय नारी अपने प्राचीन आदर्शों और मान्यताओं को तिलांजलि दे रही है। भोग-विलास, मौज-मस्ती एवं 'खाओ पिओ मौज उड़ाओ' के कुपथ का अनुगमन कर रही है। करुणा, ममता, कोमलता एवं स्नेह को त्यागकर अपनी छवि को धूमिल कर रही है। आर्थिक दृष्टि से स्वतन्त्र होने की वजह से नारी आज विलासिता की ओर उन्मुख है।

उपसंहार—अत: आज इस बात की परम आवश्यकता है कि भारतीय नारी को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में पाश्चात्य सभ्यता का अंधानुकरण न करके प्राचीन उत्तम आदर्शों एवं मान्यताओं को स्वीकार करना चाहिए। ऐसा होने पर वह ऐसा स्थान प्राप्त कर सकेगी जो देवों के लिए भी दुर्लभ है।

14. किसी खेल का आँखों देखा वर्णन—क्रिकेट मैच

अथवा

एक आकर्षक मैच

[रूपरेखा—(1) प्रस्तावना, (2) मैच का अर्थ, (3) मैच खेलने का निश्चय, (4) क्रीड़ा स्थल पर, (5) मैच का शुरू होना, (6) हार-जीत की होड़, (7) खेल का समापन, (8) उपसंहार।]

Scanned with CamScanner

प्रस्तावना—छात्र तथा छात्राओं के मन-मानस में खेल के प्रति उत्कंठा तथा ललक एक स्वाभाविक प्रक्रिया है।

मैच का अर्थ—खेल व्यक्तित्व के विकास के लिए आवश्यक है। इसी हेतु विभिन्न प्रकार के खेलों का अस्तित्व मानव के समक्ष प्रकट हुआ। खेलों के माध्यम से खिलाड़ियों को एक उत्साह मिलता है। इसी बात को दृष्टिपथ में रखकर प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। खेल की प्रतियोगिता को ही मैच के नाम से सम्बोधित किया जाता है।

मैच खेलने का निश्चय—विगत वर्ष जनवरी के प्रथम सप्ताह में प्रिंसिपल महोदय ने क्रीड़ाध्यक्ष के माध्यम से यह आदेश प्रसारित किया कि 20 जनवरी को हमारे कॉलेज की टीम स्थानीय विक्टोरिया इण्टर कॉलेज की टीम से मैच खेलेगी।

क्रीड़ा-स्थल पर—20 जनवरी को करीब 9 बजे मैं क्रीड़ा-स्थल पर जा पहुँचा। मैच शुरू होने में अभी एक घण्टा शेष था।

इसी अन्तराल में दो निर्णायक क्रीड़ा-स्थल पर पधारे। इसी मध्य दोनों कॉलेजों की टीमें अपनी साज-सज्जा के साथ उपस्थित हुईं।

मैच का शुरू होना—दोनों टीमों के कप्तान तथा मैच निर्णायक मैदान के मध्य में स्थित खेल पट्टी के पास खड़े होकर 'टॉस' करने लगे। हमारे विद्यालय के कप्तान ने 'टॉस' जीता और पहले बल्लेबाजी करने का निर्णय लिया। हमारे दल के प्रारम्भिक बल्लेबाज अपने खेल का प्रदर्शन करने के लिए तैयार थे।

हार-जीत की होड़—क्रिकेट खेल का तो रोमांच ही निराला है। गेंद-बल्ले के इस खेल के सभी आयु वर्ग के लोग दीवाने होते हैं। हमारे बल्लेबाजों ने शुरू से ही तेज गति से रन बनाने प्रारम्भ कर दिये। दोनों ने मिलकर बिना आउट हुए 10 ओवरों में 60 रन कूट डाले, लेकिन तभी विपक्षी दल के गेंदबाज राकेश ने घातक गेंदबाजी करते हुए अपने दो लगातार ओवरों में हमारे तीन बल्लेबाजों को आउट कर दिया। अब हमारा स्कोर हो गया 72 रन पर तीन विकेट। अब खेलने के लिए हमारे दल का कप्तान मैदान में आया और आते ही पहली गेंद पर उसने शानदार छक्का जड़ा। धीरे-धीरे मैच के रोमांच के साथ-साथ हमारे विद्यालय की पारी भी आगे बढ़ने लगी। कुल मिलाकर हमारे विद्यालय के दल ने अपने कोटे के 30 ओवरों में 150 रन बनाये और विपक्षी दल को जीत के लिए 151 रन बनाने की चुनौती दी।

दर्शक बहुत ही आनन्द का अनुभव कर रहे थे। आधा घण्टे के विश्राम एवं अल्पाहार के पश्चात् विक्टोरिया इण्टर कॉलेज की टीम खेलने आयी। उन्होंने खेल का प्रारम्भ बहुत ही अच्छे तरीके से किया। प्रथम 9 ओवरों में उनके 40 रन बने।

यद्यपि हमारी टीम के गेंदबाज बहुत ही चतुर तथा जाने-माने थे, लेकिन इस समय वह लाचार से दृष्टिगोचर हो रहे थे। अब हमारे स्पिनरों ने गेंदबाजी के गुरुतर भार को उठाया। उन्होंने तेजी से विपक्ष के तीन खिलाड़ी जल्दी-जल्दी आउट कर डाले। वे अब तक मात्र 96 रन बना पाये थे। चौथे तथा पाँचवें खिलाड़ी भी स्पिनर अजय ने आउट कर दिये। विपक्षी हताश हो गये और मात्र 25 ओवरों में ही उनकी टीम कुल 117 रन बनाकर आउट हो गयी।

खेल का समापन—खेल समाप्ति के पश्चात् पुरस्कार वितरण का आयोजन किया गया। हमारे कॉलेज के खिलाड़ी क्रम से उत्साहित होकर पुरस्कार ग्रहण करने के लिए जा रहे थे। हमारे दल के कप्तान ने कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जिला-विद्यालय निरीक्षक से हाथ मिलाकर चल बैजयन्ती ग्रहण की। समस्त खिलाड़ियों तथा उपस्थित जन-समूह ने ताली बजाकर प्रसन्नता व्यक्त की। उत्साहवर्धन के लिए विपक्ष के खिलाड़ियों को भी सान्त्वना पुरस्कार प्रदत्त किये गये।

उपसंहार—खेल का महत्व इसलिए भी है कि इससे खेल की भावना का विकास होता है। यह भावना हमें खुशी के साथ जीने का सम्बल देगी। सहयोग, मैत्री तथा सद्भाव का पाठ इन खेलों के माध्यम से ही प्राप्त होगा। यह आज के युग की महती आवश्यकता है।

Scanned with CamScanner

15. नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति

[रूपरेखा—(1) प्रस्तावना, (2) नवीन शैक्षिक ढाँचा तथा पाठ्यक्रम, (3) पूर्व प्राथमिक वर्ग, (4) प्राथमिक वर्ग, (5) माध्यमिक वर्ग, (6) सेकण्डरी वर्ग, (7) उच्च शिक्षा, (8) उल्लेखनीय बिन्दु, (9) उपसंहार।]

प्रस्तावना—किसी देश की उन्नति का आधार उस देश की शिक्षा नीति होती है। भारत में चौंतीस वर्ष बाद नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति घोषित हो गई है।

नवीन शैक्षिक ढाँचा तथा पाठ्यक्रम—नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में वर्ष 5 – 3 – 3 – 4 के तहत शैक्षिक ढाँचे तथा पाठ्यक्रम को बाँटा गया है।

पूर्व प्राथमिक वर्ग—इसमें तीन वर्ष से आठ वर्ष तक के बच्चे शामिल होंगे, जिन्हें बुनियादी शिक्षा दी जाएगी। नर्सरी, के. जी. तथा यू. के. जी. में ऐसा पाठ्यक्रम रहेगा कि बच्चे खेल-खेल में पढ़ना सीख जाएँ। इसके बाद कक्षा एक और कक्षा दो की पढ़ाई कराई जाएगी।

प्राथमिक वर्ग—इस वर्ग में आठ से ग्यारह वर्ष के बालक तीसरी, चौथी तथा पाँचवीं की पढ़ाई करेंगे। इसमें प्रयोगों के द्वारा गणित, विज्ञान और कला की शिक्षा दी जाएगी।

माध्यमिक वर्ग—इसमें ग्यारह से चौदह वर्ष के बालक छठी, सातवीं तथा आठवीं कक्षाओं में अध्ययन के साथ ही कौशल विकास तथा स्थानीय दस्तकला का ज्ञान प्राप्त करेंगे।

सेकण्डरी वर्ग—इसमें कक्षा नौ से बारहवीं तक की पढ़ाई कराई जाएगी जिसमें विद्यार्थियों को अपनी इच्छा के अनुसार विषय चुनने की आजादी होगी। रटने से बचकर ज्ञान प्राप्ति पर बल दिया जाएगा। विद्यार्थी को बहुविषयक जानकारी दी जाएगी।

उच्च शिक्षा—स्नातक स्तर चार वर्ष का होगा। तकनीकी शिक्षण के साथ कला तथा मानविकी की पढ़ाई भी कर सकेंगे। चिकित्सा, इंजीनियरिंग, विधि आदि की शिक्षा आवश्यकताओं के अनुरूप व्यवस्थित ढंग से दी जाएगी। तीन वर्ष के बाद भी डिग्री दे दी जाएगी। शोध आदि को आवश्यकताओं के अनुसार बढ़ावा दिया जाएगा।

उल्लेखनीय बिन्दु—(1) पाँचवीं तक मातृभाषा में शिक्षा दी जाएगी। (2) कक्षा छः से ही कौशल विकास तथा व्यावसायिक शिक्षा प्रारम्भ कर दी जाएगी। (3) प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के लिए विशेष प्रावधान होंगे। (4) बुनियादी शिक्षा पर जोर रहेगा। (5) विद्यार्थियों को दबाव से छुटकारा दिलाया जाएगा। (6) सरकारी तथा निजी विद्यालयों में समान नियम, शुल्क आदि होंगे। (7) बच्चों को विषय चुनने की आजादी होगी। (8) अध्यापकों को पढ़ाने के अतिरिक्त अन्य कार्य नहीं दिए जाएँगे। (9) त्रिभाषा में राज्य ही भाषा का चयन करेंगे।

उपसंहार—यह शिक्षा नीति सुविचारित शिक्षा व्यवस्था की दृष्टि से प्रारम्भ की जा रही है। विश्वास है इसके परिणाम लाभकारी तथा देशहित में होंगे।

कुछ निबन्धों की विस्तृत रूपरेखा

1. इक्कीसवीं सदी का भारत

(1) प्रस्तावना—21वीं सदी का भारत विश्व का अग्रणी राष्ट्र होगा। उसमें सर्वत्र सुख-समृद्धि का साम्राज्य होगा। आन्तरिक एवं बाह्य दोनों प्रकार से सुदृढ़ एवं सुरक्षित शक्ति सम्पन्न राष्ट्र होगा।

(2) अग्रणी विकासशील देश—भारत संसार के विकासशील देशों में अग्रणी होगा।

(3) सुदृढ़ व्यवस्था—सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक दृष्टि से भारत सुदृढ़ राष्ट्र होगा।

(4) समुन्नत शिक्षा-दीक्षा—शिक्षा, तकनीक आदि दृष्टियों से भारत समुन्नत राष्ट्र होगा।

(5) सम्पन्न राष्ट्र—21वीं सदी में भारत संसार का सबसे सम्पन्न राष्ट्र होगा।

(6) उपसंहार—21वीं सदी का भारत सही अर्थों में भारतीय आदर्शों के अनुरूप होगा, इसमें अपने देश, भाषा, संस्कृति आदि होंगे। ऊँच-नीच, छुआछूत आदि का वहाँ नाम भी न होगा। हर हाथ को काम होगा तथा हर चेहरे पर मुस्कान होगी। यहाँ के निवासी मन, वचन, कर्म की एकरूपता से प्रेरित सद्गुणों को अपनाने वाले होंगे। मेरे सपनों का भारत महान देश होगा।

Scanned with CamScanner

2. भारतीय किसान

(1) प्रस्तावना—कृषि प्रधान भारत के किसान का परिचय और उसका जीवन स्तर।

(2) कड़ी मेहनत तथा सीमित साधन—दिन-रात एक करके परिवार के सभी सदस्य खेती में अन्न पैदा करते हैं।

(3) किसान जीवन की समस्याएँ—गरीबी, पानी की कमी, साधनों की कमी, औजारों की कमी का उल्लेख। पैदावार की उचित कीमत नहीं मिलती।

(4) शासकीय सहायता का अभाव—निर्धन किसान को खेती के उपकरणों, बीज, खाद आदि के लिए सहायता नहीं मिलती, यदि मिलती है तो बहुत कठिनाई के बाद।

(5) किसान समस्याओं का समाधान—(1) किसानों को कृषि उपकरणों, बीज, खाद आदि के लिए ऋण सुलभ किया जाए, (2) खेती लागत के अनुसार पैदावार का मूल्य निर्धारित किया जाए। (3) पैदावार को खरीदने के लिए क्रय केन्द्र पर्याप्त मात्रा में चलाए जाएँ।

(6) उपसंहार—कृषि प्रधान देश की रीड़ किसान हैं। किसान दु:खी तो देश दु:खी। इसलिए किसान को सभी सुविधाएँ सुलभ कराई जाएँ।

3. मनोरंजन के साधन

(1) प्रस्तावना—मनोरंजन की आवश्यकता एवं महत्व।

(2) मनोरंजन के साधन—खेल-कूद, सिनेमा, सर्कस, रेडियो, जादूगर, नाटक, संगीत, नृत्य आदि।

(3) यात्रा, भ्रमण, मेले—सांस्कृतिक, धार्मिक यात्रा, रमणीक स्थलों का भ्रमण तथा समय-समय पर लगने वाले मेलों में पहुँचकर आनन्द लेना।

(4) आधुनिक साधन—मोबाइल, कम्प्यूटर, इण्टरनेट आदि।

(5) मनोरंजन के लाभ—मानसिक तथा शारीरिक आनन्द मिलता है। थकान दूर होती है तथा कार्य करने की क्षमता बढ़ती है।

(6) उपसंहार—मनोरंजन जीवन में खुशियों का संचार करता है तथा तन-मन को स्वस्थ बनाता है।

4. किसी यात्रा का वर्णन

(1) प्रस्तावना—यात्रा की आवश्यकता तथा यात्रा के स्थान का चुनाव।

(2) यात्रा की तैयारियाँ—स्थान तथा मौसम के हिसाब से यात्रा के सामान-वस्त्र आदि की तैयारी। यात्रा की तिथियाँ निश्चित करना।

(3) यात्रा के साधन—यात्रा के हिसाब से साधन का चुनाव करना। यदि जहाज, रेलगाड़ी आदि से जाना हो तो आरक्षण कराना।

(4) यात्रा का प्रारम्भ—यात्रा के निकलने का वर्णन, साधन आदि का उल्लेख।

(5) मार्ग दृश्य आदि का आनन्द—मार्ग में जाते समय पड़ने वाले स्थानों, दृश्यों, पेड़-पौधों, नदियों, पर्वत, वन आदि के रोचक दृश्यों का वर्णन।

(6) यात्रा के स्थान का वर्णन—जहाँ की यात्रा पर गए वहाँ सौन्दर्य, स्थिति, दृश्य आदि का उल्लेख।

(7) वापसी का वर्णन—लौटते समय के मार्ग दृश्यों, घटनाओं आदि का उल्लेख।

(8) उपसंहार—स्मरणीय यात्रा के अनुभवों का उल्लेख।

5. वसंत ऋतु

(1) प्रस्तावना—विभिन्न ऋतुओं वसंत ऋतु के महत्व का उल्लेख।

(2) वसंत ऋतु का प्राकृतिक वैभव—हरियाली, रंग-बिरंगे फूल, फल, वृक्षों की शोभा, सुगन्धित हवा तथा मनोरम वातावरण का वर्णन।

(3) उल्लास तथा आनन्द—वसंत के मदमाते मौसम में हृदय में उमड़ने वाले हर्ष-उल्लास का वर्णन।

(4) स्वास्थ्यप्रद ऋतु—न सदी, न गर्मी समशीतोष्ण मौसम वाली वसंत ऋतु स्वास्थ्यवर्द्धक होती है।

Scanned with CamScanner

(5) सभी ऋतुओं में श्रेष्ठ—भारत की सर्दी, गर्मी, वर्षा, शरद एवं हेमन्त ऋतुओं में से वसंत ऋतु सुखद, आनन्ददायक तथा मनोरम होती है।

(6) उपसंहार—वसंत ऋतु की महिमा का वर्णन।

6. गंगा की आत्मकथा

(1) प्रस्तावना—विभिन्न नदियों में गंगा की महिमा का उल्लेख।

(2) गंगा का अवतरण—ब्रह्मा जी के कमण्डल से शिवजी की जटाओं में होकर हिमालय के शिखरों से पृथ्वी पर प्रकट हुई।

(3) गंगा सम्बन्धी लोक मान्यताएँ—धार्मिक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक।

(4) गंगा के जल की महिमा—गंगा स्नान का महात्म्य आदि।

(5) गंगा प्रदूषण—प्रदूषित तत्वों के गंगा में गिरने से गंगा के प्रदूषण का वर्णन।

(6) प्रदूषण मुक्त करने की आवश्यकता—शासकीय, सामाजिक तथा अन्य प्रयासों का उल्लेख।

(7) गंगा का महत्व—धार्मिक एवं कृषि आदि के संदर्भ में।

(8) उपसंहार—गंगा भारत की सांस्कृतिक तथा प्राकृतिक धरोहर।

7. विद्यालय का वार्षिकोत्सव

(1) प्रस्तावना—विद्यालय का परिचय, महत्व तथा उसके उत्सवों में वार्षिक उत्सव व महत्व।

(2) वार्षिकोत्सव की तैयारियाँ—तिथि का निश्चय, व्यवस्था, स्वागत, भोजन, खेल-कूद, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि की समितियों का गठन।

(3) खेल-कूद—विद्यालय खेल के मैदान पर बॉलीबाल, हॉकी, क्रिकेट, कबड्डी, दौड़ आदि खेलों की प्रतियोगिताएँ।

(4) सांस्कृतिक कार्यक्रम—कविता पाठ, गायन, नृत्य, नाटक आदि की प्रतियोगिताएँ।

(5) मुख्य आयोजन—अन्तिम दिन मुख्य आयोजन जिसमें विजयी विद्यार्थियों को पुरस्कार वितरण, मुख्य अतिथि का भाषण, प्राचार्य का व्याख्यान तथा विशिष्ट अंकों से परीक्षाएँ उत्तीर्ण करने वाले छात्रों को पुरस्कार।

(6) उपसंहार—आयोजन की सफलता तथा महत्व का उल्लेख।

8. किसी मेले का वर्णन

(1) प्रस्तावना—मेले का परिचय,

(2) यात्रा का वर्णन—मेले में जाने पर मार्ग की घटनाओं, दृश्यों का उल्लेख,

(3) मेला दर्शन—मेले के विविध दृश्य, कार्यक्रम आदि का वर्णन,

(4) मेले की भीड़—दुर्घटना, खान-पान आदि का वर्णन,

(5) मेले की व्यवस्था का वर्णन,

(6) मेलों का महत्व—जीवन में मेलों की क्या महत्ता है ?

(7) उपसंहार।

9. मेरी प्रिय पुस्तक

(1) प्रस्तावना, (2) प्रिय पुस्तक का परिचय, (3) अन्य पुस्तकों की तुलना में अच्छाइयाँ, (4) पुस्तक की विशेषताएँ, (5) जीवन में पुस्तक की उपयोगिता, (6) उपसंहार।

10. दूरदर्शन और छात्र

(1) प्रस्तावना—दूरदर्शन का महत्त्व, (2) उद्भव और विकास, (3) भारत में दूरदर्शन का विस्तार, (4) दूरदर्शन से लाभ, (5) दूरदर्शन का दोष, (6) छात्र दूरदर्शन के कौन-से कार्यक्रम देखें, (7) उपसंहार।

Scanned with CamScanner

2022 परीक्षा में सर्वोच्च सफलता हेतु अवश्य पढ़िए

परीक्षा अध्ययन

पुस्तकें

कक्षा 10 के सभी विषयों पर उपलब्ध

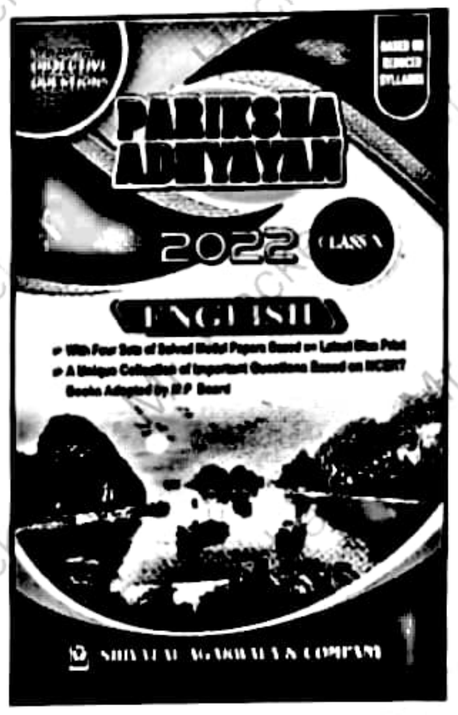

www.shivalal.com

Scanned with CamScanner